Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डहर बोल रहे हैं

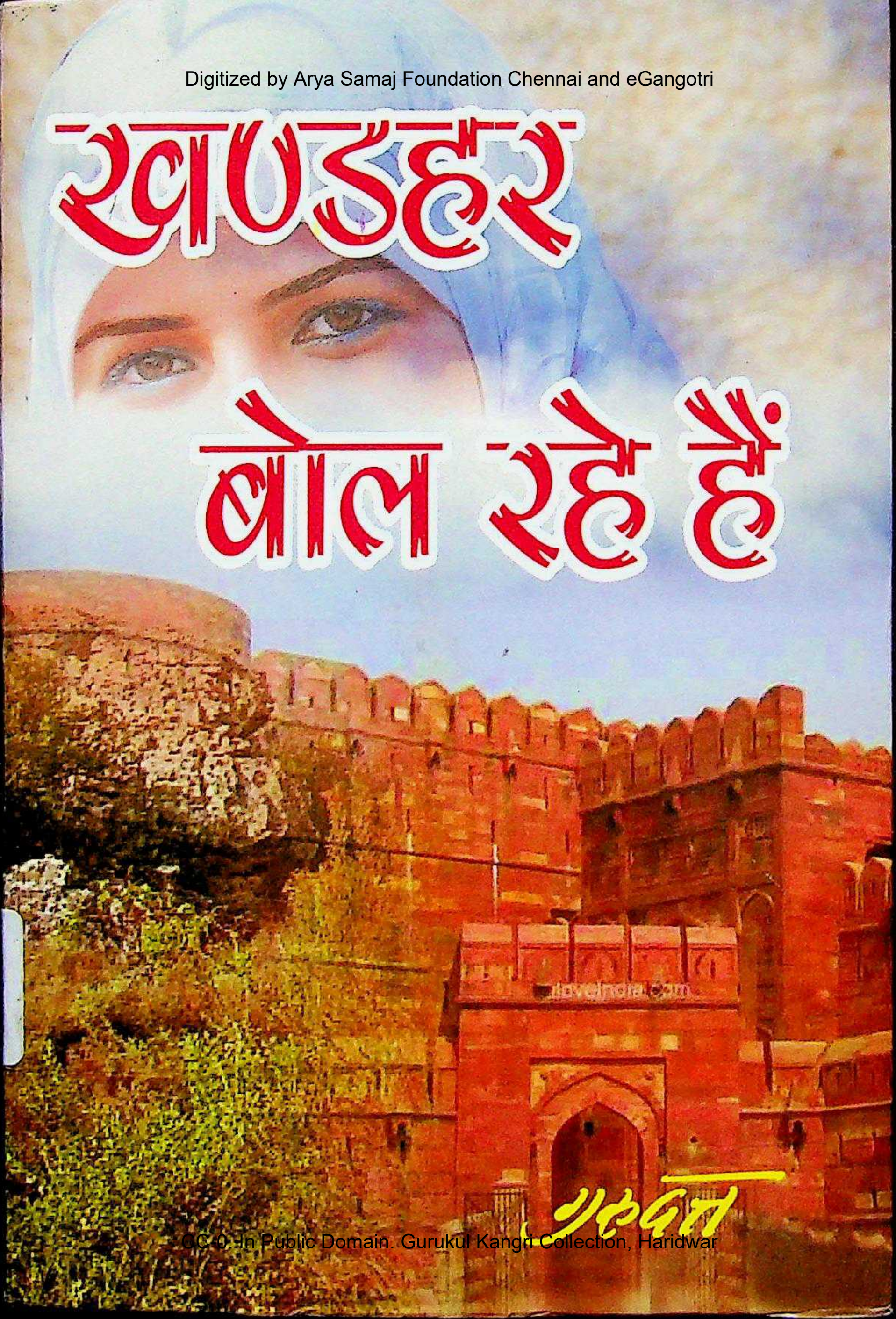

गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167897

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के

कुछ चुने हुए उपन्यास

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, (महाभारत पर) परित्राणाय साधूनाम्।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, भगवत भरोसे, घर की बात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डहर बोल रहे हैं

भाग - 3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डहर बोल रहे हैं

भाग-3

गुरूदत्त

Central Library
167897
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167897

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-K

© सुरक्षित

खण्डहर बोल रहे हैं
भाग-3

मूल्य : रु. 180/-
संस्करण : 2021
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन,
2 बी.डी. चैम्बर्स,
10/54 देशबंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप)
नई दिल्ली-110005
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट : www.hindisahityasadan.com
दूरभाष : 9213527666, 7065618655
मुद्रक : गोयल एन्टरप्राइजिज, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

Khandhar Bol Rahe hain Part-3
by Gurudatt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

"सब गधे इकट्ठे हो गये हैं।" शहंशाह अपनी रिश्ते में अम्मी, परन्तु मन से प्रेमिका और प्रत्यक्ष में बहन महताब बेगम को कह रहा था। शहंशाह अजमेर से अभी-अभी लौटा था और आगरा के शाही महल में पहुँचते ही महताब बेगम को बुला सामने बैठाकर बता रहा था। राजपूतों पर अपनी चतुराई से विजय की कहानी बताकर उसने प्रशंसा का उक्त वाक्य कहा था।

"भैया!" महताब ने पूछा, "इन गधों में तुम किन-किन को शामिल करते हो?"

"सबसे बड़ा गधा अकबर है। वह समझा था कि वह अपने बाप से भी ज़्यादा अक्लमन्द हो गया है। वह कल का छोकरा अपने बाप आलमगीर की ज़िन्दगी के हालात को बिना जाने उससे दुश्मनी करने चल पड़ा है।"

"तो भैया! क्या अपने बेटे को मरवा डाला है?"

"मरवा? नहीं बेगम। मुझे उस पर रहम आ गया था।"

"खैर, खुदा का शुक्र है कि ज़िन्दगी का दूसरा गुनाह-ए-अज़ीम करते-करते बच गये हैं। बाप और भाईयों का कत्ल आपके एहद की कारगुज़ारी तो कयामत तक तवारीख के वरक रौशन करती रहेगी। आप यह, वैसी ही एक दूसरी, नेकी नहीं कर सके।"

"आज क्या बात है महताब? मेरे इतने जोखम के काम से सही-सलामत लौटने पर खुश होने के बजाय जली-कटी सुनाने लगी हो। मैं तो तुम्हें एक खुशी की बात बताने आया था।"

"तो भैया! अपने गधों के कारनामों से पहले वह बात ही बता दो न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, तुम्हारा लाडला पुत्र मिला है। वह राजपूतों की ओर से लड़ने के लिए आया हुआ मालूम होता था।"

महताब का बाहर का साँस बाहर और भीतर-का-भीतर अटक गया। कुछ अनिष्ट की बात सुनने का भय उसके मन में समा गया था, परन्तु शहंशाह ने अगले ही साँस में कह दिया, "मगर वह हाथ में आकर ऐसे निकल गया जैसे मुट्ठी में से पारे की बूँद निकल जाती है।"

महताब ने दीर्घ और सुख का साँस लिया। शहंशाह ने आगे बताया, "जब सिपाही उसे बाँहों से पकड़े हुए सामने लाये तो मैंने उसे छोड़ देने के लिए कह दिया। मेरे कहने पर सिपाहियों ने उसे छोड़ दिया, इस पर भी उसे घेर कर खड़े रहे। मैंने सिपाहियों से पूछा, 'यह कहाँ मिला था?'

"सालार ने बताया, 'यह हुज़ूर से मिलने के लिए चला आ रहा था। यह डेरे के द्वार पर पहुँचा तो पहरेदार से बोला—मुझे शहंशाह से मिलना है।'

'नाम और काम लिख दो। इजाज़त होगी तो मिला देंगे।' दरबान ने कहा।

'ज़रूरत नहीं समझता। एक तरफ हट जाओ।'

"पहरेदार नहीं हटा तो इसने तलवार खींच ली। पहरेदार ने भी अपनी तलवार निकालनी चाही, मगर तलवार के वार ने उसके हाथ को ज़ख्मी कर दिया। पहरेदार ने शोर मचाया तो हम इसकी ओर भागे। यह पैंतरा बाँध खड़ा हो गया। हम दस थे और यह अकेला था। मैंने पूछा, 'क्या चाहते हो?'

'शहंशाह से मुलाकात।'

'इस बेचारे पहरेदार को ज़ख्मी क्यों किया है?"

'यह मुझे जाने से रोकता था।'

'यह अपना फर्ज़ अदा कर रहा था।'

'नहीं। यह फर्ज़ अदा करने के बजाय अपनी हुकूमत चला रहा था। इसे कहना चाहिये कि इत्तला कर देता हूँ। मैं इन्तज़ार कर लेता। अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहंशाह चाहते तो यह मेरे हाथ-पाँव बाँधकर वहाँ ले जा सकता था। यह तो मेरा नाम-धाम पूछ रहा था जो मैं बताना नहीं चाहता था। सब नाम बताने वाले नहीं होते।'

"इस पर हमने कहा, 'तो हम तुमको पकड़कर शहंशाह के पास ले चलते हैं।'

'मगर मेरी तलवार को मत छूना।'

'जहाँपनाह।' सालार ने कहा, 'हमने इसे बाँहों से पकड़ लिया और हुज़ूर के सामने ले आये हैं।'

"मैंने उससे पूछा, 'हिदायत हो ?'

'हाँ अब्बाजान।' उसे मुझे अब्बाजान कहते सुन सिपाही भौंचक्के हो हमारा मुख देखते रह गये।

"मैंने सिपाहियों को इशारे से वहाँ से चले जाने के लिए कहा तो सब खेमे से बाहर निकल गये। मैंने पूछ लिया, 'किसलिये आये हो ?'

"इस समय भी उसने हाथ में नंगी तलवार पकड़ी हुई थी। मेरे पूछने पर कि वह किस काम से आया है तो उसने तलवार म्यान में डाल ली और बोला, 'एक हज़ार तिलई मोहरें लेने आया हूँ।'

'क्या करोगे उनसे ?'

'इन बेवकूफ राजपूतों से बचकर भागने के लिए चाहियें।'

"मैं समझ गया था कि अपने मामा की भाँति वह मेरी चतुरायी को भाँप गया है। कुछ देर तक उसके मुख पर उसके मन की छिपी बात को जानने के लिए देखता रहा और जब उसकी निडर आँखों से कुछ नहीं जान पाया तो मैंने पूछा, 'पर तुम इन बेवकूफों के मुल्क में आये क्यों थे ?'

'आया था भैया अकबर को इन बेवकूफों से बचाने के लिए, मगर मेरे यहाँ पहुँचने से पहले ही वह आपके चकमे में आकर यहाँ से भाग गये हैं।'

'कब आये थे राजस्थान में ?'

'पन्द्रह दिन हुए मैं सूरत में था और वहाँ के एक जानकार मुगल सरदार से यह खबर मिली थी कि शहज़ादा अकबर ने बाप के खिलाफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बगावत कर दी है और यह खयाल कर कि वह अक्ल के धनी राजपूतों से धोखा खा जायेगा, उसे बचाने के लिए चल पड़ा था। मगर अब्बाजान, मेरे पहुँचने से पहले ही वह बाज़ी हार चुका था और अब उसके पड़ाव पर से ही आ रहा हूँ।'

'क्या-क्या देखा है वहाँ ?'

'उल्लू बोल रहे हैं। राजपूत तो रात के समय आपकी चिट्ठी पढ़ते ही अकबर भैया को सोता छोड़ भाग गये थे और राजपूतों को जाते देख मुगल सिपाही भी अपनी-अपनी तलवार उठा आपके डेरे में आ शाही फौज में शामिल हो गये हैं। दिन निकलने पर शहज़ादा साहब की नींद खुली तो डेरे को खाली देख अपने बच्चों को भी छोड़ भाग गया है। जब मैं वहाँ पहुँचा था तो अकबर की बीवी और बच्चे परेशानी में थे। बेगम की एक पुरानी खादिमा ने मुझे पहचान लिया और बेगम की परेशानी को बयान कर मुझसे मदद माँगने लगी। मैं उनको यहाँ लाने के लिए तैयार हो गया। बेगम और अकबर के पाँच बच्चों को हरम में पहुँचा दिया तो सोचने लगा था कि घर जाऊँ। देखा कि जेब खाली हो गयी है और इस डेरे में और किसी को न जानता हुआ मदद के लिए अब्बाजान के पास खर्चा लेने चला आया हूँ।'

"बेगम ! तुम्हारा भाई और लड़का बात इस तरीके से करते हैं कि उनके कहने में नुक्स निकालना निहायत ही मुश्किल होता है। मैंने उसी वक्त हरम से खबर मँगवायी तो पता चला कि अकबर की बीवी और बच्चे एक राजपूत सालार की ज़ेर-निगरानी में वहाँ पहुँचे और पता चला कि वह सालार हिदायत ही है तो मुझे उसकी बात पर यकीन आ गया। मैंने उससे पूछा, 'और अब कहाँ जाना चाहते हो ?'

'वापस सूरत। वहाँ मेरी बीवी और बच्चे हैं।'

'वहाँ क्या करते हो ?'

'सौदागरी करता हूँ।'

'तलवार के ज़ोर पर ?'

'अब्बाजान ! यह तो मरहट्टों से अपनी हिफाज़त के लिए रखी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन इसके चलाने की मश्क हर रोज़ करता रहता हूँ।'

'तुम मेरी नौकरी कर लो।'

'आपका तो मैं फरज़न्द हूँ। भला अब्बाजान की नौकरी कर अपना रुत्वा कम कर लूं ?'

'देखो, फरज़न्द तो हो मगर अर्ज़मन्द नहीं हो। तुमको अपनी बीवी के साथ महल में अपनी माँ के साथ रहने के लिए दावत दी थी और तुम अलीवर्दी खाँ को भी साथ लेकर भाग गये। अलीवर्दी खाँ तो बीजापुर की फौज में मुगलों से लड़ता हुआ मारा गया और उसकी बेगमों से पता चला था कि तुम अपनी बीवी को लेकर दक्खिन में कहीं दूर चले गये थे।'

'हाँ, अब्बाजान ! अब मैं सूरत में हीरे, मोती, जवाहरात का व्यापार करता हूँ। मेरी बीवी सुल्ताना और उससे तीन बच्चे मेरे साथ हैं।'

'उन सबको आगरा ले आओ।'

'उसमें एक ही शर्त है। मैं और मेरी माँ इकट्ठे किले के बाहर आज़ादी से रहेंगे। जब अलीवर्दी खाँ की नौकरी में था तो मैंने यही अर्ज़ की थी। अब्बाजान माने नहीं और माँ को आज़ाद करने की बजाय मुझे भी किले में कैद करने का हुक्म सादर कर दिया।'

"मैंने उसे उसके कहे मुताबिक एक हज़ार अशरफी दीं तो वह सलाम और कदमबोसी कर चल दिया। वह कह गया है कि जिस दिन मैं तुम्हे किले के बाहर रहने को मकान बनवा दूँगा, उसी दिन वह मेरे साथ शानाबशाना जंग में लड़ने के लिए आ जायेगा।"

महताब अभी तक चुपचाप आँखों से आँसू बहाती हुई अपने बच्चे की बात सुनती रही थी। जब शहंशाह बता चुके तो उसने पूछा, "और आपने भैया की बाबत नहीं पूछा ?"

"पूछा था। उसने बताया है कि शिवाजी लुटेरे के फौत हो जाने पर वह अपने वालदैन के पास हरिद्वार में रहने के लिए चला गया है।

"बताओ, अब क्या कहती हो ?"

"बताऊँ तो तब, जब आपने मेरी कोई भी बात मानी हो।"

"मैं समझता हूँ कि अब हालात बदल गये हैं। मैं मान जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो हिदायत की बात मान जाइये। यहाँ किले से बाहर एक छोटा-सा मकान बनवा दीजिये। मैं उसमें जाकर रहने लगूँगी और मैं हिदायत को ढूँढकर उसे आगरा में बुला लूँगी।"

शहंशाह ने कुछ देर तक आँखें मूँदकर विचार किया और फिर कहा, "अब राजपूतों के लिए सुलह करने के सिवाय दूसरा कोई चारा नहीं रहा। राना फौत हो चुका है। अकबर को धोखेबाज़ समझ राजपूतों के हौसले पस्त हो चुके हैं और मैं भी अब दक्खिन की सुध लेना चाहता हूँ।

"वहाँ मेरे बेवकूफ सरदारों ने सब गड़बड़-घोटाला कर रखा है। वहाँ से लौटकर तुम्हारे मुतल्लिक सोचूँगा।"

महताब ऐसे कई वायदे सुन चुकी थी और लम्बी साँस खींच बोली, "तो अब मैं जाऊँ?"

"क्या करोगी?"

"अपने भगवान् से प्रार्थना करूँगी कि आपके दिल में रहम और इन्साफ को पैदा करे।"

"ठीक है। तुम जाकर यह दुआ करो कि मैं अपनी इस नयी मुहिम में कामयाब हो जाऊँ और फिर अपने दिल की आरजू पूरी कर सकूँ।"

: २ :

जब से छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ था तब से मराठा राज-दरबार में भारी परिवर्तन हुआ था। पेड़ गाँव में मुगल शिविर के लूटने के उपरान्त राज्य में चित्र बदलने लगा।

राज्याभिषेक ने शिवाजी के सम्मुख एक स्वाभाविक समस्या उपस्थित कर दी। वह थी युवराज बनाने की। शिवाजी के दो लड़के थे। एक शम्भुजी और दूसरा राजाराम। दोनों भिन्न-भिन्न माताओं से थे। राजाराम की माता सूर्य बाई अपने पुत्र को युवराज बनाने का आग्रह करने लगी थी। उस समय राजाराम की आयु नौ वर्ष की थी और दरबार में कोई भी व्यक्ति उसको इस योग्य नहीं मानता था।

एक दिन विश्वनाथ अपने कार्यालय से अपने घर पर पहुँचा तो राज-प्रासाद की एक सेविका को द्वार पर बैठा देख वहीं रुक गया। सेविका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ को देख खड़ी हो गयी और उसके घर के भीतर जाने की प्रतीक्षा करने लगी। विश्वनाथ ने पूछ लिया, "यहाँ किसलिए आयी हो?"

"भीतर छोटी महारानीजी आयी हैं।"

"किसलिये?"

"यह मुझे पता नहीं।"

वह भीतर जाने की अपेक्षा गृह के बाहर बैठकघर में बैठ गया। इस समय हरिहर की पत्नी राजीव बाहर आयी और बोली, "मामाजी! महारानीजी भीतर बुला रही हैं।"

"मुझे?"

राजीव ने स्वीकृति में सिर हिलाया और खड़ी रही।

विश्वनाथ उठकर भीतर गया तो महारानी सूर्यदेवी को बैठा देख हाथ जोड़ प्रणाम कर प्रश्न-भरी दृष्टि में उसकी ओर देखने लगा। बात सूर्यदेवी ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "पंडितजी! बैठिये।"

विश्वनाथ सामने भूमि पर बैठ गया। सूर्यदेवी ने कहा "मैं आपसे एक अत्यावश्यक बात कहने आयी हूँ।"

"आज्ञा करिये?"

"महाराज के राज्याभिषेक के उपरान्त युवराज की नियुक्ति का भी निश्चय हो जाना चाहिये।"

"महारानीजी! अभी कुछ देर तक ठहरिये। इस समय इस विषय को खड़ा करने पर तो दरबार में फूट पड़ जायेगी।"

"तो कब फूट नहीं पड़ेगी?"

"जब शम्भुजी अपने कुकृत्यों से इतना बदनाम हो जाये कि उसका स्थानापन्न ढूंढना आवश्यक हो जायेगा। उस समय राजाराम की क्या वयस होती है; इस पर बहुत कुछ निर्भर होगा।"

"पर क्या शम्भु अभी पर्याप्त बदनाम नहीं हुआ है?"

"बदनाम तो है, परन्तु पर्याप्त नहीं। उसकी उच्छृंखलता का एक कारण यह भी हो सकता है कि उससे उत्तरदायित्वपूर्ण काम लिया नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता ।"

"उसे कई बार समर पर तो भेजा जाता रहा है ।"

"किन्तु उन समरों में वह सफल होकर लौटा है । मैं समर के अतिरिक्त कामों के विषय में कह रहा हूँ ।"

"और क्या काम होते हैं ?"

"महारानीजी ! राज्य-प्रबन्ध के कार्य समर-कार्य से भी अधिक महत्व के होते हैं । यदि राज्य-प्रबन्ध श्रेष्ठ न हो तो समर चल ही नहीं सकते ।"

"राज्य-प्रबन्ध तो तुम लोग करते हो । महाराज तो प्रबन्ध करते कभी देखे नहीं ।"

"महारानीजी ! ऐसी बात नहीं । वास्तव में सब कार्य महाराज ही करते हैं । यदि उनका हम पर अंकुश न हो तो हम परस्पर लड़ पड़ें ।"

"पंडितजी ! यह सब तो आप मेरी बात टालने के लिए कह रहे हैं ।"

"नहीं महारानीजी ! आप राजाराम को कुछ समय के लिए कार्यालय में भेज दिया करिये । यदि वह वहाँ आकर कार्यालय के कार्य में रुचि लेने लगे तो दस वर्ष में राजगद्दी उसकी हो जायेगी । अभी यह समय से पूर्व है ।"

"परन्तु महाराज का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है ।"

"तो उनको अपनी चिकित्सा करानी चाहिये । यदि मुझे कहें तो मैं किसी योग्य भिषगाचार्य का प्रबन्ध कर सकता हूँ ।"

"आप देखते नहीं कि वे दुर्बल होते जा रहे हैं ?"

"हाँ । राज्याभिषेक के उपरान्त वे बीमार हो गये थे, परन्तु अब तो वे सर्वथा स्वस्थ प्रतीत होते हैं । इस पर भी यदि आप अपनी स्वीकृति दें तो आपकी ओर से कह सकता हूँ कि वह अपने को किसी वैद्य को दिखायें ।"

"नहीं पण्डितजी । मैं उनसे चोरी से यहाँ आयी हूँ ।"

"तब मैं नहीं कहूँगा । इस अवस्था में आपको ही उन्हें कहना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अभी धर्म और देश को उनकी बहुत आवश्यकता है। उन्हें अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना चाहिये।"

"और युवराज-पद का निर्णय नहीं होना चाहिये ?"

"मैं अभी उसके लिए यह समय उपयुक्त नहीं समझता।"

सूर्यबाई उद्विग्न-चित्त उठकर चल दी। विश्वनाथ तथा उसकी पत्नी कल्याणी उसे द्वार तक छोड़ने आये। महारानी के चले जाने के उपरान्त विश्वनाथ इत्यादि भीतर को लौटने लगे तो विश्वनाथ के मुख ने निकल गया, "यह स्त्री महाराष्ट्र के भविष्य पर तुषारपात के समान सिद्ध होगी।"

"आप बचाने का यत्न करिये।" कल्याणी ने खिन्न चित्त से कहा।

"असम्भव प्रतीत होता है। इस पर भी यत्न करूँगा।"

"आप यत्न करेंगे तो ठीक हो जायेगा।"

"बहुत विश्वास है मुझ पर ?"

"तो इसमें भूल है कहीं ?"

इस समय ये दोनों भीतर के बैठकघर में पहुँच गये थे। विश्वनाथ ने बैठते हुए कहा, "देखो कल्याणी रानी! जब महारानीजी राजाराम को युवराज बनाने के लिए उतावली प्रकट कर रही थीं तब मैं यह विचार कर रहा था कि अब यहाँ से हमें अपना डेरा कूच करना चाहिये। बहुत अन्न खाया है इस राज्य का। अब कहीं बैठकर इस खाये हुए का प्राय-श्चित्त करना चाहिये।"

कल्याणी मुस्कराती हुई पति का मुख देख रही थी। विश्वनाथ ने शोक-मुद्रा बनाये हुए कहा, "राज्याभिषेक के समय से ही मैं देख रहा था कि यहाँ से बुद्धि का साम्राज्य समाप्त हो रहा है और पूर्वग्रहों की छाया गहरी होती जा रही है। मैं बहुत यत्न से काशीजी से प्रकाण्ड विद्वान् विश्वेश्वर भट्टजी को राज्याभिषेक के लिए लाया था, परन्तु वह विद्वत्वर सब-कुछ समझते हुए भी यहाँ के ब्राह्मणों के पाखण्ड के सामने झुक गये। मैंने कहा था कि महाराज से प्रायश्चित्त कराने की आवश्यकता नहीं। उनको नंगे पाँव देश-भर के मन्दिरों की मिट्टी छानने की आवश्यकता नहीं। वास्तविक प्रायश्चित्त तो वे कर चुके हैं। सब मन्दिरों से बड़े मन्दिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृ-भूमि को स्वतन्त्र करने का जीवन-भर का कठोर प्रयत्न तो सैकड़ों प्रायश्चित्तों का एक प्रायश्चित्त है। अब और अधिक की आवश्यकता नहीं।

"इस पर पण्डितजी बोले, 'इस मूर्ख जनता को भी तो समझाना है।'

"मेरा कहना था, 'महाराज ! यह भी समझाना कहा जाता है क्या कि उनकी बात मान ली जाये और उनको भ्रम में डालकर अपना काम किया जाये ? महाराज ! इसे अपना उल्लू सीधा करना कहते हैं।'

"परन्तु वह नहीं माने और महाराज शिवाजी की वास्तविक महिमा को प्रकट करने के स्थान इन जड़वत् देवी-देवताओं की महिमा को ही बढ़ोतरी दी गयी।

"परिणाम यह हुआ कि शम्भुजी के मित्र तान्त्रिक की चल गयी और पहला राज्याभिषेक व्यर्थ सिद्ध कर पुनः राज्याभिषेक कराना पड़ा। यह पिछले बीस वर्ष से चल रहे बुद्धिवाद को रद्द कर पुनः पुराने ढर्रे की प्रथा प्रचलित कर दी गयी।

"राज्याभिषेक की मेरी योजना थी। मैं कर्म से क्षत्रिय और ब्राह्मण पद को मानता हूँ और मैं महाराज शिवाजी को तो आरम्भ से ही एक वीर क्षत्रिय मानता था। यदि राज्याभिषेक अभी तक नहीं हुआ था तो वह राज्य न होने के कारण था। मैंने जब देखा कि हमने कुछ क्षेत्र ऐसा निर्माण कर लिया है जहाँ हमारा राज्य स्थिर हो चुका है, तभी राज्याभिषेक की योजना चलायी थी। यह इसलिये नहीं थी कि महाराज शिवाजी क्षत्रिय नहीं थे और उनको क्षत्रिय होने की स्वीकृति इन मूर्ख मराठा ब्राह्मणों से दिलवानी है। मैं कहता रहा था कि इस सब आडम्बर की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता इस बात की थी कि जनता और ब्राह्मण-वर्ग को बताया जाता कि शिवाजी महाराज जन्म से ही क्षत्रिय थे। उन्होंने अपने शौर्य और धर्म-कर्म से अपने को ही नहीं, वरंच अपने सात पीढ़ी तक के पूर्वजों का भी उद्धार कर दिया है।

"परन्तु यह सब-कुछ हुआ और तत्त्व की बात को छोड़कर हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीति-रिवाज के पीछे चल पड़े । एक बात और हुई है । जब हम केवल सिपाही-मात्र थे तो हम लूट-मार करते थे, परन्तु राज्याभिषेक के उपरान्त तो हम एक राज्य के सेवक एतदर्थ प्रजा के सेवक बन गए थे । पहले हम विजयदशमी के उपरान्त दूसरे राज्यों में घुस जाते थे और वहाँ की प्रजा को लूट-मार कर धन-धान्य ले आते थे और फिर अपने भण्डार में उसे जमा करा देते थे ।

"राज्याभिषेक के उपरान्त मैंने राज्य-परिषद् में यह प्रस्ताव किया था कि इस प्रथा को बन्द कर देना चाहिये । महाराज तो मेरी युक्ति को समझते थे । मैंने कहा था कि राजा न्याय की मूर्ति होता है और उसे बिना धर्म-अधर्म का विचार किये किसी का एक पैसा भी छीनना नहीं चाहिये । इस प्रथा का पहले जो-कुछ भी कारण रहा हो, अब राज्यासन पर बैठने के उपरान्त वह समाप्त हो गया है । राजा ने वेद-मन्त्रों द्वारा यह शपथ ली है कि वह न्याय-युक्त व्यवहार करेगा । सगे-सम्बन्धियों, इष्ट-मित्रों, प्रिय बन्धुओं का विचार छोड़कर सबके साथ न्याय करेगा । अतः यह लूट-मार अब बन्द होनी चाहिये ।

"परन्तु मेरे प्रस्ताव का किसी ने समर्थन तक नहीं किया । सबसे अधिक विरोध करने वाले अन्नाजी दत्तो थे । वह कहते थे कि शत्रु का सब-कुछ लूट लेना हमारा अधिकार है ।

"मैंने यह निवेदन किया था कि शत्रु तो राज्य है । शत्रु-राज्य की प्रजा को शत्रु नहीं मानना चाहिये ।

"मैंने एक यह सुझाव भी दिया था कि हम जो मुग़लों का विरोध करते हैं यह इस कारण नहीं कि वे देश में राजा हैं और मुगल हैं, वरंच इस कारण कि वे इस्लाम को बलपूर्वक हमारे गले से उतारने का यत्न कर रहे हैं । अतः इनकी हिन्दू प्रजा, जो हमारी भाँति ही पीड़ित है, उसे शत्रु समझना उचित नहीं ।

"दत्तोजी का कहना था कि यह बहुत कठिन है कि युद्ध के समय हिन्दू और मुसलमान में भेद किया जा सके । मैंने कहा, 'दत्तोजी, इसी कारण तो कहता हूँ कि हमारी शत्रुता राज्य से है, प्रजा से नहीं । राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सब-कुछ लूट लेना चाहिये, परन्तु प्रजा तो प्रजा है। वह शत्रु नहीं।'

"दत्तोजी ने सहज स्वभाव में कह दिया, 'उनके अधर्मी राजाओं के कारण हमें भारी सेना रखनी पड़ रही है। अतः हमारी सेना का खर्चा भी उनको देना चाहिये।'

"यही कारण है कि अब जलना पर धावे में मैं भी सम्मिलित नहीं हुआ। मेरा कहना था कि प्रजा में लूट मचाने के लिए मैं धावा बोलना अब उचित नहीं मानता।

"महाराज ने अनुकम्पा कर मुझे साथ चलने के लिए नहीं कहा। दत्तोजी ने मुझे व्यंग के भाव में 'धर्माधिकारी' कहा और सुना है कि जलना में सरकारी कोष तो था नहीं। वहाँ सैनिक-शिविर भी नहीं था और वहाँ की समर शुद्ध प्रजा को लूटने के लिए थी।

"मुझे बताया गया है कि कुछ धनी-मानी लोग अपनी स्त्रियों और धन-दौलत लेकर वहाँ के पीर सैय्यद जान मुहम्मद की दरगाह में चले गये थे। यह बात विख्यात हो रही थी कि किसी उपासना-स्थल को शिवाजी महाराज लूटते नहीं। परन्तु इस बार हमारे सैनिक दरगाह में घुस गये और न केवल वहाँ पनाह लिए लोगों का धन-दौलत लूट लाये हैं, वरंच स्त्रियों का शील भी भंग किया गया है।

"अतः जहाँ मेरा राज्याभिषेक से यह प्रयोजन था कि महाराज अब राजा हो गये हैं और उनके लिए सब स्थान की प्रजा समान है, शत्रुता केवल विपक्षी राजाओं से है; वहाँ दत्तोजी महाराज राज्याभिषेक का अर्थ यह समझे हैं कि हम राजाओं की श्रेणी में सम्मिलित हो गये हैं और आजकल के नरेशों की भाँति प्रजा को लूटना हमारा अधिकार हो गया है।

"गुरुजी महाराज अब जीवित नहीं। अंकुश रहा नहीं और राज्य में बुद्धि का दिवाला निकल रहा है।"

महारानी सूर्यबाईजी की भेंट के विषय में विश्वनाथ किसी से भी कहना नहीं चाहता था, परन्तु यह बात गुप्त रखनी कठिन हो गयी। महारानीजी के विश्वनाथजी से मिलने के लिए आने के कुछ ही दिन उपरान्त नीलकण्ठ मोरेश्वर ने विश्वनाथ को अपने घर आमन्त्रित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ ने पूछा, "मोरेश्वर जी ! क्या शुभ कार्य है जिसके लिए यह निमन्त्रण है।"

"पण्डितजी, आइयेगा तो बताऊँगा । एक अत्यावश्यक योजना है।"

"यही तो पूछ रहा हूँ ।"

"यदि यहाँ बताने की होती तो फिर आपको कष्ट ही क्यों देता ?"

"अच्छी बात है । आऊँगा ।"

मोरेश्वरजी के घर पर दस-बारह व्यक्ति उपस्थित थे । सूर्यबाई भी थी और अन्नाजी दत्तो उन सबके मुखिया बने बैठे थे । विश्वनाथ ने जब महारानी को वहाँ बैठे देखा तो समझ गया कि वहाँ क्या बात होने वाली है ।

वह अपने मन की बात कहना चाहता था, परन्तु उसके कुछ भी कहने से पूर्व दत्तोजी ने कहना आरम्भ कर दिया, "विद्वत्वर ! यह बात अब स्पष्ट हो गयी है कि महाराज का अन्तकाल समीप है । यद्यपि भविष्य-वाणी नहीं की जा सकती । इस पर भी यह दिखायी देता है कि उनका अन्तकाल कुछ अधिक दूर नहीं । जलना पर आक्रमण के उपरान्त वह खिन्न चित्त और शरीर से शिथिल अनुभव कर रहे हैं ।"

बात बीच में ही रोक कर विश्वनाथ ने कहा, "दत्तोजी ! इस भूमिका को छोड़िये । वास्तविक बात करिये । इस भूमिका की चिकित्सा से सम्बन्ध है और मैं समझता हूँ कि यहाँ हम में कोई भी वैद्य धन्वन्तरि नहीं है ।"

"ठीक है ।" मोरेश्वर ने कहा, "इस बात का आज की गोष्ठी से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं, परन्तु बात यह है कि हम राज्य के उत्तरा धिकारी के विषय में विचार करना चाहते हैं ।"

"हाँ, तो बताइये कि आप किसको उपयुक्त मानते हैं ?"

"भाई ! दो ही तो अधिकारी हैं । शम्भुजी और राजाराम । शम्भुजी के चरित्र की ख्याति ऐसी है कि वह राज्याधिकारी नहीं माना जा सकता ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु राजाराम अल्प-वयस्क होने के नाते राजा नहीं हो सकता।"

"यह ठीक है, परन्तु उसके पथ-प्रदर्शन के लिए एक संरक्षक समिति बनायी जा सकती है।"

विश्वनाथ चुप रहा तो मोरेश्वर आगे कहने लगा, "मेरा प्रस्ताव है कि पाँच विद्वानों की संरक्षक समिति बनायी जाये।"

"किस उद्देश्य से?" विश्वनाथ ने पूछ लिया।

"राज्य, राजा और युवराज के संरक्षण के लिए।"

विश्वनाथ का कहना था, "यह समिति राजा और राज्य की अनुमति से और यदि सम्भव हो तो युवराज की भी सम्मति से बनायी जा सकती है।"

इस पर महारानी सूर्यबाई पूछने लगी, "राज्य से क्या अभिप्राय है?"

"राज्य का अभिप्राय राज्य-परिषद् से है।"

"वह तो आप हैं, मोरेश्वरजी हैं और अन्नाजी हैं। शेष महाराजा हैं। उनका प्रातिनिध्य मैं करती हूँ।"

"महारानीजी! यह इस प्रकार नहीं। आगामी सप्ताह की परिषद् की बैठक में इस विषय पर विचार किया जाये और जो कुछ भी वहाँ की सामूहिक सम्मति हो, वह परिषद् की अर्थात् राज्य की सम्मति होगी।"

"तो बात कर लीजिये वहाँ पर।"

"ठीक है। अब मैं चलता हूँ। बात परिषद् में ही होगी।"

: ३ :

परिषद् के सम्मुख युवराज बनाने का विचार उपस्थित होने से पूर्व महाराज शिवाजी ने विश्वनाथ से विचार करना उचित समझा। महाराज ने विश्वनाथ को एकान्त में बुलाकर पूछ लिया, "पण्डित विश्वनाथ! क्या राजाओं के युवराज नियुक्त होने भी आवश्यक हैं?"

"हाँ महाराज। यदि कोई इस पद के योग्य हो तो अवश्य नियुक्त होना चाहिये।"

"क्या योग्यता होनी चाहिये युवराज में?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यौवन, क्षात्र-स्वभाव, विद्या, सद्चरित्र, प्रजा में ख्याति और राज्य-कार्य का अनुभव।"

"केवल राजा का बेटा होना मात्र गुण नहीं?"

"यह तो गौण है। उक्त गुणों के साथ यह गुण भी हो तो सोने पर सुहागा हो जायेगा। महाराज, आप तो किसी राज्याभिषिक्त राजा की सन्तान नहीं हैं। इस पर भी भारतवर्ष में यदि कोई राजा होने योग्य है तो वह आप हैं।"

"शहंशाह औरंगज़ेब नहीं?"

विश्वनाथ ने मुस्कराते हुए कहा, "वह मुगल सम्राट् तो सल्तनत को विनष्ट करने के गुण रखता है। आज से तीस वर्ष पूर्व मेरे पिताजी ने यह भविष्यवाणी की थी कि वर्तमान शहंशाह के मरने तक मुगल राज्य केवल दिल्ली और आगरा के बीच के क्षेत्र तक सीमित रह जायेगा।"

इस पर शिवाजी ने बात बदल दी। वे पूछने लगे, "हमारे राजकुमारों में से तुम किसको युवराज होने के योग्य समझते हो?"

"दोनों इस पद के योग्य नहीं। यदि आप इनमें से ही किसी को यह पद देने का विचार रखते हैं तो राजाराम इसके योग्य बनाया जा सकता है, परन्तु इसके पूर्व आपको एक तो शम्भुजी को बन्दी बनाकर कारागार में डाल देना होगा और राजाराम को माँ के कक्ष से निकाल किसी योग्य गुरु की सेवा में भेज देना होगा।"

"परन्तु वह गुरुजी से पढ़ता तो अब भी है।"

"आपके पुत्र के लिए दादा कोण्डदेव जैसा गुरु चाहिये।"

"वे तो अब हैं नहीं। हाँ, एक पण्डित विश्वनाथ है। यदि वह स्वीकार करे तो उसके पास राजाराम को पढ़ने भेजा जा सकता है।"

"परन्तु महाराज! सुना है कि पण्डित विश्वनाथ संन्यास लेने का विचार कर रहा है?"

"तब तो वह गुरु-पद स्वीकार कर लेगा।"

"हाँ। परन्तु वह तो जगत्गुरु बनना चाहेगा, किसी एक बालक का ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या मतलब ?"

"महाराज ! संन्यासी के लिए यह विधान है कि वह एक स्थान पर न रहे। वह परिव्राजक ही रहे।"

"तब तो बहुत कठिनाई होगी। क्या विश्वनाथ को पाँच वर्ष तक संन्यास लेने से रोका नहीं जा सकता।"

"हाँ। यह प्रस्ताव उससे किया जा सकता है। यदि वह स्वीकार कर ले और अपने घर को त्यागने की योजना स्थगित कर दे तो काम बन सकता है।"

"तो हम उससे यह प्रस्ताव करेंगे।"

"हाँ महाराज। करना चाहिये।"

बात यहीं समाप्त हो गयी। परन्तु महाराज शिवाजी ने यह प्रस्ताव विश्वनाथ से नहीं किया। विश्वनाथ ने इसका उत्तर ढूँढ़ रखा था। विश्वनाथ का विचार था कि पूना में अथवा राज्य-परिवार से दूर किसी अन्य नगर में राजाराम को ले जायेगा और उसे शरीर से कठोर, बुद्धि से तीक्ष्ण, ज्ञान से प्रबुद्ध और सतर्क मन का बनाने के लिए तथा राजकीय नीति-रीति सिखाने के लिए माँ के विकृत विचारों से पृथक् कर देगा।

परन्तु यह अवसर नहीं मिला। राज्य-परिषद् में अन्नाजी दत्तो के प्रस्ताव पर कि राजाराम को युवराज घोषित किया जाये, बहुत तर्क-वितर्क हुआ। हीराजी फरज़न्द तो दत्तोजी का समर्थन करता रहा, परन्तु विश्वनाथजी ने इसका घोर विरोध किया। विश्वनाथ का कहना था, "शम्भुजी को बुलाकर उसे राज्य-परिषद् की सम्मति से जीवन चलाने को विवश किया जाये। इस प्रकार उसे राजा के योग्य आचरण करने का अवसर देना चाहिये। साथ ही युवराज बनाने से पूर्व उसे पाँच वर्ष तक अपने चरित्र को ठीक रखने का अभ्यास करना चाहिये।

"पाँच वर्ष तक यदि वह अपने में राज्योचित लक्षण प्रकट न करे तो उसे उचित दण्ड दिया जाये और तब राजाराम के विषय में विचार किया जाना चाहिये। बड़े लड़के के रहते छोटे लड़के को युवराज घोषित करना नियम-विरुद्ध बात होगी। इसके लिए परिषद् को अपना स्पष्टीकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R0 89.9143
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
GUR-K

देना होगा और उस सफाई में यह पाँच वर्ष का परीक्षाकाल निर्धारित करना चाहिये।"

घोर विवाद के उपरान्त भी राज्य-परिषद् इस विषय पर कुछ निर्णय नहीं कर सकी। महाराज शिवाजी ने इस विषय में अपनी इच्छा व्यक्त नहीं की। वह मौन दोनों पक्ष की बातें सुनते रहे।

इसके कुछ ही दिन बाद महाराज बीमार हो गये। बीमारी की अवस्था में शम्भुजी, जो प्रायः पनहाला रहा करता था, रायगढ़ आया और अपने पिता से आग्रह करने लगा कि उसे युवराज घोषित कर दिया जाये। शिवाजी उस समय रुग्ण शैया पर लेटे थे और उनकी छोटी रानी समीप खड़ी पिता-पुत्र में होने वाली बातचीत सुन रही थी। शिवाजी ने पुत्र को समीप बैठाकर कहा, "देखो बेटा! यहाँ एक राज्य-परिषद् बनी हुई है और किसी को युवराज अथवा राजा बनाना उसी के अधिकार में है। तुम परिषद् के सदस्यों से मिल लो। मेरी अनुपस्थिति में मोरेश्वर त्र्यम्बक परिषद् के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं। उनसे मिल लो।"

"परन्तु पिताजी! आप अपनी आज्ञा कर दीजिये। आप राजा हैं और परिषद् वेतनधारी सेवकों की सभा। उसको आपकी आज्ञा का उल्लंघन करने का अधिकार नहीं।"

"यही तो तुम्हारा भ्रम है। देखो शम्भु, मैं राजा हूँ तो इस कारण कि परिषद् ने मेरा अभिषेक कराना उचित समझा है और तुम यदि युवराज बनोगे तो उसकी अनुमति से ही बनोगे। उनसे मिल लो। तुममें युवराज और राजा बनने से सब गुण विद्यमान हैं। तुमको युवराज बना दिया जायेगा।"

"महाराज! जो कुछ परिषद् में हुआ है, वह सब मुझे ज्ञात है। परिषद् में विश्वनाथ पण्डित के सम्मुख कोई बोल नहीं सकता और वह मेरा घोर शत्रु है।

"मैं तो यह कहता हूँ कि राजा बनते हैं अपने शौर्य और युक्ति से। परिषद् तो राजा बनने के उपरान्त निर्माण की जाती है। ऐसा ही मेरे साथ होगा। मैं यह भी देख रहा हूँ कि आपका यहाँ रायगढ़ में रहना

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167197

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय से रहित नहीं है। यदि आप तुरन्त मेरे साथ पनहाला नहीं चल देते तो आपके जीवन की घड़ियाँ शून्य होती दिखायी दे रही हैं।"

इतना कह शम्भुजी उठा और महाराज के चरण-स्पर्श कर राजप्रासाद से निकल गया। वह अभी प्रासाद के द्वार से निकला ही था कि सामने से विश्वनाथ पण्डित महाराज का स्वास्थ्य-समाचार लेने के लिए आता दिखायी दिया। शम्भुजी उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। विश्वनाथ ने दाहिना हाथ ऊँचा कर आशीर्वाद देते हुए कहा, "राजा शम्भुजी की जय हो। सुनाओ राजकुमार, स्वास्थ्य कैसा है ?"

"मेरा स्वास्थ्य तो ठीक है, परन्तु रायगढ़ में स्वास्थ्य ठीक दिखायी नहीं देता।"

"क्या दोष देखा है राजकुमार ने रायगढ़ में ?"

"आप नहीं जानते ? देखिये पण्डितजी ! महाराज बीमार हैं। राज्य-परिषद् में भविष्य के विषय में मतैक्य नहीं। राजाराम की माँ रानी-पद से राजमाता-पद प्राप्त करने के लिए उतावली प्रतीत हो रही हैं। इस पर भी आप हैं कि स्वाभाविक उत्तराधिकारी को बन्दीगृह में डाल देना चाहते हैं। क्या ये सब बीमारी के लक्षण नहीं ?"

"हैं तो बीमारी के लक्षण ही। राजकुमार, मेरी सम्मति मानो तो अब भविष्य में तुम यहीं रहना स्वीकार कर लो। मैं समझता हूँ कि महारानी सूर्यबाईजी को अपना उचित सम्मान मिल जायेगा और तुम भी अपनी उन्नति करने में समर्थ हो सकोगे।"

"किसी बड़े पेड़ के नीचे घास नहीं जमती। मेरे-जैसे छोटे-मोटे पौधों को बड़े पेड़ों के साये से बाहर रहकर ही अपनी उन्नति कर सकनी सम्भव है।

"मैं जा रहा हूँ, परन्तु मैं आपको सचेत कर देना उचित समझता हूँ कि पिताजी के उपरान्त यहाँ का राजा मैं बनूंगा और मैं नयी राज्य-परिषद् नियुक्त करूँगा।"

इतना कह शम्भुजी चल दिया। राजप्रासाद के बाहर उसका घोड़ा कसा हुआ खड़ा था। वह उस पर सवार हुआ और देखते-देखते दृष्टि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओझल हो गया।

विश्वनाथ महाराज के पास गया तो महाराज की शोचनीय अवस्था देख स्तम्भित-सा रह गया। शिवाजी अर्ध-चेतनावस्था में थे। रानी सूर्य-बाई वहाँ खड़ी थी। राजाराम को बुलाकर महाराज की शैया के पास खड़ा कर दिया गया और रानीजी ने महाराज का हाथ उठा राजाराम के सिर पर रखा और राजाराम की जय का घोष कर दिया।

इसके कुछ ही क्षणों बाद मध्याह्न के समय महाराज का देहावसान हो गया। यह संवत् १८३७ की चैत्र पूर्णिमा का दिन था।

राजमहल में महाराज के देहान्त के उपरान्त स्त्रियों तथा सेवक-सेविकाओं के रोने-धोने ने कोहराम मचा दिया और देखते-देखते यह समाचार पूर्ण राज्य-भर में फैल गया। रायगढ़ राजभवन के प्रांगण में चन्दन की चिता में महाराज का अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। तेरह दिन तक शोक रहा और क्रिया-कर्म समाप्त होते ही अन्नाजी दत्तो ने घोषणा कर दी, "राज्य-परिषद् ने यह निश्चय किया है कि महाराष्ट्र का राजतिलक राजाराम को दिया जायेगा। जब तक उसका राज्याभिषेक नहीं किया जाता तब तक पाँच सभासदों की संरक्षण समिति नियुक्त की जाती है। महारानी राजमाता सूर्यबाई जी इस संरक्षण समिति की अध्यक्षा होंगी। दत्तोजी पंत, नीलकण्ठ मोरेश्वर, हीराजी फरज़न्द और मेरे पिताजी इस समिति के सदस्य नियुक्त किये गए हैं।"

इस घोषणा के समय पाँच सौ सैनिक राजप्रासाद को घेरे हुए खड़े थे और दुर्ग में भी सैनिक अपनी बैरकों के सामने खुले मैदान में पंक्तिबद्ध खडे थे।

विश्वनाथ क्रिया-कर्म के रीति-रिवाज समाप्त होने पर जनसमूह में खड़ा नतमस्तक यह घोषणा सुन रहा था। उसने अनुभव किया कि महाराज के देहान्त के उपरान्त उसे चुपचाप परिषद् से निकाल दिया गया था।

विश्वनाथ मन में निश्चय कर चुका था कि उसे अब महाराष्ट्र छोड़ देना होगा। वह शम्भुजी को एक दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति मानता था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके राज्य में महाराष्ट्र का ह्रास वैसे ही निश्चित था जैसे कि औरंगजेब के राज्य से मुगल सल्तनत का विनाश निश्चित था।

अतः उसने अपने परिवार को महाराज की तेरहवीं से तीन दिन पूर्व ही रायगढ़ से सूरत के लिए विदा कर दिया था। हरिहर पहले ही अपने ममेरे भाइयों के साथ वहाँ रहने के लिए जा चुका था।

हरिहर जलना की लूट-मार और मराठा सेना का अत्याचार देखकर ही राज्य-कार्य छोड़ वहाँ से चला गया था। उसे सूरत नगर पसन्द था और वह अपने भाइयों तथा अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर वहाँ पहले ही चला गया था।

विश्वनाथ अपनी पत्नियों के साथ ही रायगढ़ में टिका था। युवराज पद के लिए राजाराम का नाम घोषित होते ही वह राजप्रासाद से निकल अपने गृह की ओर चल पड़ा। वहाँ जाकर उसने देखा कि उसके गृह पर सैनिकों का अधिकार हो चुका है और उसकी पत्नियाँ घर से बाहर खड़ी हैं। पत्नियाँ तो इस प्रकार की आशा कर रही थीं कि कदाचित् पण्डितजी को वन्दी बना लिया गया होगा और उनको रायगढ़ से जाने का प्रबन्ध स्वयं ही करना होगा। उन्होंने अपनी दासी को राजप्रासाद की ओर पण्डितजी के विषय में जानने के लिए भेजा था, परन्तु वह वहाँ से लौटी नहीं थी। कदाचित् पण्डित विश्वनाथ इस प्रकार चुपचाप वहाँ से चला आया था कि वह उसे देख नहीं सकी कि वह कब गया है।

दोनों गृह-लक्ष्मियों ने अपने पति को अकेले आते देख सुख एवं सन्तोष का अनुभव किया और अपने घर के द्वार से चल वे उन्हें मार्ग में ही जा मिलीं। कल्याणी ने पति के समीप पहुँचते ही कहा, "भगवान् की कृपा है कि आप सही-सलामत चले आये हैं। अब चलिये, हमें यहाँ से चल देना चाहिये।"

"तो घर से निकाल दी गयी हैं क्या ?"

उत्तर देने की आवश्यकता नहीं थी। तीनों दुर्ग के द्वार की ओर चल पड़े।

राज्य-परिषद् की बैठक महाराज के देहान्त के उपरान्त हुई थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु उसमें विश्वनाथ को बुलाया नहीं गया था और उस बैठक में ही राजाराम और संरक्षक समिति के विषय में निर्णय किया गया था। अन्नाजी का मत था कि विश्वनाथजी को बन्दी बना लेना चाहिये, परन्तु मोरेश्वर त्र्यम्बक, जो नीलकण्ठ का पिता था, परिषद् के उपाध्यक्ष होने के नाते अध्यक्ष था, इस बात पर सहमत नहीं हुआ। उसने सबको धमका दिया था कि राज्य-कार्य सँभालते ही ब्राह्मण की हत्या से कार्य-आरम्भ तो अपशकुन हो जायेगा। किन्तु उसने यह स्वीकार कर लिया कि 'यदि विश्वनाथ स्वेच्छा से रायगढ़ छोड़ न गया तो उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाये', इस पर विचार कर लिया जायेगा।

अतः विश्वनाथ जब दुर्ग से निकला तो द्वार पर तैनात सिपाही समझ रहे थे कि वह पदच्युत होकर वहाँ से जा रहा है। जिन लोगों को विश्वनाथ के पुराने कारनामे स्मरण थे, वे उस शानदार जीवन का ऐसा अन्त देखकर रो रहे थे।

विश्वनाथ द्वार से निकलने लगा तो द्वार पर खड़े सैनिकों ने झुककर नमस्कार की। विश्वनाथ ने हाथ ऊँचा कर आशीर्वाद दिया और द्वार से निकल गया। दुर्ग के बाहर नगर बस रहा था। वहाँ पहुँच विश्वनाथ ने एक रथ भाड़े पर लिया और उसमें पत्नियों-सहित बैठ रायगढ़ से पश्चिम की ओर चल दिया।

: ४ :

सूरत में पहुँच वह अपने भावी कार्यक्रम के विषय में विचार करने लगा था। इस समय तक उसका एक लम्बा-चौड़ा परिवार बन चुका था। उसके अपने आठ बच्चे थे। पाँच बड़ी पत्नी कल्याणी के और तीन लक्ष्मी के। इनमें पाँच लड़के थे। सबसे बड़ा लड़का कल्याणी का था। उसका नाम था जगन्नाथ। उसका विवाह हो चुका था और इसके दो सन्तान थीं। जगन्नाथ की बहन थी। उसका भी विवाह हो चुका था। वह अपने ससुराल पूना में थी। जगन्नाथ का एक छोटा भाई था वासुदेव। वह अभी अविवाहित था। लक्ष्मी की पाँच सन्तान थीं। उसका बड़ा लड़का गजाधर भी विवाहित था और उसके भी दो सन्तान थीं। गजाधर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो बहनें थीं। दोनों के विवाह हो चुके थे और दोनों अपने ससुराल में थीं। इसके दो छोटे अविवाहित भाई भी थे। इस प्रकार हरिहर और राजीव के भी तीन सन्तान थीं। सब मिल-मिलाकर उन्नीस प्राणी परिवार में हो गये थे।

विश्वनाथ ने एक दिन आराम किया और फिर हरिहर और जगन्नाथ को बुलाकर पूछने लगा, "क्या करने का विचार कर रहे हो ?"

जगन्नाथ ने बताया, "पिताजी ! मैंने तो यहाँ जौहरी की दुकान कर ली है। आपने हमें यहाँ आते समय बीस सहस्र हून दिये थे। उसमें से आधा धन मैंने दुकान में लगा दिया है। काम चल निकला है। विदेशीय सौदागर यहाँ आते हैं और मोती, पन्ने हीरे आदि बेचते और खरीदते हैं। बेचने वाले अपना माल रख जाते हैं और विकने पर मूल्य ले जाते हैं। उसमें से हम अपनी आढ़त ले लेते हैं। इस प्रकार इस समय दुकान में सौदागरों का कई लाख रुपये का माल मेरे पास पड़ा है। पिछले तीन मास में मैंने बीस सहस्र रुपये केवल आढ़त से पैदा किये हैं। अपना माल भी बेच रहा हूँ। उसमें से भी आय हो रही है।"

"और हरिहर ! तुम क्या कर रहे हो ?"

"मामाजी ! जब मैं यहाँ आया था तो जगन्नाथ दुकान ले चुका था। जब उसने दुकान पर रखे माल का मूल्य बताया तो मैंने यह विचार किया कि इतनी बड़ी पूंजी की रक्षा का प्रबन्ध भी करना चाहिए। मैंने बीस मराठे सिपाहियों का एक दस्ता तैयार किया है। वे सब-के-सब तलवार के धनी हैं और लड़ने-मरने के लिए तैयार हैं।"

"बस यही है तुम्हारे जीवन का लक्ष्य ?"

"नहीं मामाजी ! यह तो मैं प्रबन्ध कर रहा हूँ और वासुदेव तथा गजाधर को उस दस्ते के नेता के रूप में यहाँ तैयार कर रहा हूँ। मैं तो किसी बड़े राज्य में अपने गुणों का प्रदर्शन करने का अवसर ढूंढ रहा हूँ।

"मैं सुन रहा हूँ कि शहंशाह का छोटा लड़का अकबर बगावत करने की बात पर विचार कर रहा है। वह राजपूतों के शौर्य को देख उन पर लट्टू हो रहा प्रतीत होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं पिछले पन्द्रह दिन से उसकी किसी प्रकार से सहायता के विषय में विचार कर रहा हूँ। अभी योजना बना ही रहा था कि गजाधर सब बच्चों को लेकर यहाँ आ गया और बता रहा था कि महाराज का देहान्त हो गया है और आप भी राज्य की सेवा छोड़ने का विचार कर रहे हैं। तब से आपके आने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

विश्वनाथ ने कहा, "अकबर मूर्ख है। उसके साथी राजपूत बैल-बुद्धि हैं। अतः यदि उनमें किसी प्रकार की मिल-भक्त हुई तो वह कुछ अधिक काल तक चल नहीं सकेगी। मुझे तो इस संयोग में कुछ आशा दिखायी नहीं देती।

"इस पर भी देश में और कहीं कोई है जो इन तुर्कों के राज्य के विरुद्ध कुछ भी कर रहा हो?"

"देखो हरिहर! राजपूत तुर्कों का विरोध नहीं कर रहे। उनके लिए तुर्क और हिन्दुस्तानियों में कोई भेद नहीं। अभी तक तो ये दिल्ली की नौकरी करते रहे हैं। अपमानित और लज्जित किये जाने पर भी वे दिल्ली राज्य की भक्ति ही देश-भक्ति समझते रहे हैं।

"इस समय उनका आयोजन दिल्ली सम्राट् के विरुद्ध नहीं और न ही तुर्कों के अत्याचार और दुराचार के विपरीत है। यह तो जसवन्तसिंह के लड़के को बलपूर्वक मुसलमान बनाने के विरुद्ध है। यदि आज शहंशाह जसवन्तसिंह के लड़के को जोधपुर का शासक स्वीकार कर ले तो यही राजपूत पुनः दिल्ली के राजभक्त और उसकी ओर से हिन्दुओं से लड़ने के लिये हरहर महादेव करते हुए बजरंगबली के नारा लगाने वालों पर चील-कौओं की भाँति उमड़ पड़ेंगे।"

"तो फिर?"

"देखो हरिहर! जब मैं मात्र अट्ठारह वर्ष का युवक था और मेरा गौना आने वाला था कि मैं महाराज शिवाजी का तुर्कों के विपरीत आह्वान सुन आने वाली बीवी की लालसा छोड़ पूना को चल पड़ा था। न तो मेरे मन में किसी प्रकार के स्वार्थ की भावना थी और न ही महाराज शिवाजी में कुछ अपना राज्य स्थापित करने की लालसा थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों गुरु रामदासजी के आह्वान पर अपने जीवन की बाज़ी लगा बैठे थे। मेरे साथ कुछ और भी युवक थे। सब-के-सब महाराष्ट्र को तुर्कों से मुक्त करने की अभिलाषा से घर से अपने माता-पिता और बाल-बच्चों को छोड़ चल पड़े थे।

"राजपूतों में मुझे यह भावना लेशमात्र भी दिखायी नहीं देती। मैं राजाराम और शम्भुजी में भी इस प्रकार की भावना नहीं देखता। ये हिन्दू-पद-पादशाही स्थापित करने के लिए यत्न नहीं कर रहे। अब राजाराम की माँ की राजमाता बनने की महत्वाकांक्षा में सब-कुछ समाप्त हो रहा है।

"मार्ग में आते हुए मुझे पता चला है कि शम्भुजी ने अपने को महाराष्ट्र का राजा घोषित कर दिया है और अब भाई-भाई में युद्ध होगा। इस कारण मैं तो अपने जीवन-कार्य को और महाराज के जीवन-भर के विपुल प्रयास को मिट्टी में मिलते देख जीवन से उपराम हो पिताजी के पास हरिद्वार जाने का विचार बना चुका हूँ।"

"मामाजी! आपके लिए यह उचित भी है, परन्तु मेरा मन तो अभी तुर्कों को मार-मार कर देश से भगाने में रुचि रखता है। मैं तो अपने को मराठा नहीं मानता। मैं तो हिन्दू माँ के पेट से उत्पन्न एक हिन्दू युवक हूँ। हिन्दुस्तान मेरा देश है। मेरे शरीर में अभी अग्नि भी है वह एक प्रज्वलित ज्वाला की भाँति मन को प्रकाशित कर रही है।"

विश्वनाथ इस मातृ-भक्ति की ज्वाला को अपने निराशा से भरे विचारों से बुझाना नहीं चाहता था। वह बोला, "ठीक है। सूरत केन्द्र-स्थान रहेगा। यह पक्षी के घोंसलों के समान होगा। पक्षी दिन-भर की उड़ान के उपरान्त रात को यहाँ आकर विश्राम कर सकेगा।

"मैं तो तुम्हारी मामियों के साथ हरिद्वार के लिए चल दूंगा। पिताजी के दर्शन किये भी बहुत काल व्यतीत हो चुका है। अब तो उनके पास ही कुछ दिन रहने का दृढ़ संकल्प कर चुका हूँ।"

इस प्रकार योजना बन गयी और एक सप्ताह-भर विश्राम कर विश्वनाथ दोनों पत्नियों को लेकर उत्तर-पूर्व की ओर चल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ को गये अभी तीन दिन ही हुए थे कि सूरत में यह समाचार विख्यात हो गया कि अकबर और राजपूत मिलकर दिल्ली के शहंशाह के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं।

हरिहरनाथ यह समाचार पाते ही अकेला ही घोड़े पर सवार हो राजपूती पहरावे में अजमेर की ओर चल पड़ा। पन्द्रह दिन की निरन्तर यात्रा के उपरान्त यह नीमच से अजमेर को जाते हुए दुराहे से एक पड़ाव पहले अकबर के सैनिक शिविर में पहुँच गया। यह एक प्रहर दिन गये शिविर में पहुँचा था। शिविर उजड़ा पड़ा था। कुछ हीन चरित्र के मुगल सिपाही शिविर को लूट रहे थे।

हरिहर ने एक सिपाही को शाही डेरे के समीप पड़ी एक सोने की मुट्ठी वाली तलवार को उठा भागते देख बाँह से पकड़ खड़ा कर लिया। चोर इस प्रकार रंगे हाथ पकड़े जाने पर घूर कर इस राजपूत सिपाही की ओर देखने लगा तो हरिहर ने म्यान से तलवार निकाल ली। इस पर तो चोर के मुख की कठोर मुद्रा नरम पड़ गयी और वह बोला, "हुज़ूर ! यह लावारिस पड़ी थी।"

"नहीं। मैं तलवार की बात नहीं कर रहा। मैं तलवार के मालिक की बात पूछ रहा हूँ। ये सब लोग किधर गये हैं ?"

"भाग गये हैं। राजपूत तो रात ही चले गये थे। मुगल एक-एक, दो-दो कर दिन निकलते ही शाही फौज में जा मिले हैं।"

"और शहज़ादा अकबर ?"

"जान बचाने के लिए पाँव सिर पर रख भागा है। अपनी नयी बीवी को साथ ले गया है। बड़ी बीवी और बच्चों को छोड़ गया है।"

हरिहर ने चोर को छोड़ दिया और वह भी जान बची समझ भाग गया।

हरिहर अभी खड़ा विचार ही कर रहा था कि उसका इतनी भाग-दौड़ करना विफल गया। उस समय एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री खिदमतगारिन के पहरावे में उसके समीप जा खड़ी हुई।

"आप हिदायत हैं क्या ?" उस स्त्री ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने तो पहचाना गया जान हरिहर का हाथ तलवार के मुट्ठे पर चला गया। स्त्री ने कहा, "मैं एक बार महताब बेगम का एक पैगाम लेकर आपके पास आयी थी। यह आठ साल पहले की बात है। आप हज़रत अलीवर्दी खाँ के घर पर ठहरे हुए थे। बेगम ने बताया था कि आप उनके लड़के हैं।"

हरिहर को माँ की याद आ गयी। उसने हाथ तलवार के मुट्ठे से उठाकर कहा, "हाँ। तुमने ठीक पहचाना है।"

"हुज़ूर! शहज़ादा की एक बीवी तीन बच्चों के साथ खेमे में है। अगर किसी सवारी का इन्तज़ाम कर दें तो वह बेचारी शहंशाह के डेरे पर जा सकती है। मैं तो एक घण्टे से किसी सवारी को ढूँढ रही हूँ लेकिन कोई मिल ही नहीं रही।"

"शहंशाह का डेरा कहाँ है?"

"यहाँ से दो कोस के फासले पर है। पहले खयाल था कि शहंशाह फौज लेकर इधर आयेंगे। मगर शहज़ादी सोचती है कि अब वे किसलिए आयेंगे? यहाँ तो कुछ है ही नहीं।"

"अच्छा मौसी! मैं कोशिश करता हूँ। तुम खेमे के बाहर ठहरो।"

हरिहर पुनः अपने घोड़े पर सवार हो दूर एक बस्ती को देखने चल दिया। एक बैलगाड़ी वहाँ मिल गयी। वह उसे एक मुहर देने का वचन दे गाड़ीवान के साथ गाड़ी को ले आया।

चोर अकबर के खेमे को भी उखाड़ने का यत्न कर रहे थे और खादिमा हाथ जोड़ उनकी मिन्नत-समाजत कर रही थी। हरिहर को घोड़े पर सवार और बैलगाड़ी साथ देख चोर एक ओर खड़े हो गये। वे समझ गये थे कि खेमे का पक्षी तो बैलगाड़ी में चला जायेगा और पीछे कुछ-न-कुछ तो लूट में मिलेगा ही।

गाड़ी पर पर्दा किया गया और बेगम बुर्के में तीन बच्चों के साथ निकली और गाड़ी के पर्दे में घुस गयी। बैलगाड़ी चल पड़ी। हरिहर घोड़े पर सवार बैलगाड़ी के साथ-साथ चल पड़ा। खादिमा भी पैदल साथ-साथ थी। हरिहर को खादिमा ने ही यह बताया था कि राजपूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों चले गये ? उसका कहना था कि शहज़ादा साहब को शहंशाह ने कोई चिट्ठी लिखी है जो राजपूतों के हाथ लग गयी है। उससे राजपूतों को शक हो गया है कि शहज़ादा राजाओं को धोखा देकर सबको फँसा देगा। इस बात का पता चलते ही सब भाग खड़े हुए हैं।"

"और शहज़ादा किसलिये भाग खड़ा हुआ है ?" हरिहर ने पूछ लिया।

"उसे डर लग गया था कि अकेले में उसे पकड़कर कत्ल कर दिया जायेगा।"

हरिहरनाथ समझ गया और मन-ही-मन एक योजना बनाता हुआ शाही डेरे पर जा पहुँचा। अकबर की बीवी और बच्चे तो शाही हरम में चले गये और यह वहाँ से शाही डेरे के उस द्वार पर जा पहुँचा जिधर शहंशाह से मिलने वाले आते थे। प्रहरी ने रोका तो इसने तलवार निकाल ली। प्रहरी भी तलवार निकाल लड़ने के लिए तैयार हुआ तो हरिहर की तलवार बिजली की तेज़ी से प्रहरी के हाथ को घायल कर गयी।

प्रहरी ने हल्ला कर दिया और दस-बारह सिपाही हरिहर को घेर तलवारें निकाल एकत्रित हो गये।

जब हरिहर ने कहा कि वह शहंशाह से मिलने आया है और उसका काम खुफिया है इसलिए वह काम बता नहीं सकता, तब उसको बाँहों से पकड़कर शहंशाह के सामने उपस्थित किया गया।

शहंशाह ने हरिहर को अशर्फियाँ इस शर्त पर दी थीं कि वह उसके पक्ष में होकर औरंगाबाद में उससे मिले तो उसकी माँ को भी उसके साथ रहने की इजाज़त मिल जायेगी। हरिहर ने शर्त मंजूर कर ली थी और वह माँ को शाही हरम से बाहर करने की आशा मस्तिष्क में लिये हुए सूरत की ओर लौट गया।

औरंगज़ेब हरिहर से मिलने के उपरान्त एक सप्ताह तक अजमेर में रहा और फिर आगरा वापस चला आया।

महल में पहुँच उसने महताब को खुश करने के लिए यह सूचना दी थी कि उसका लड़का जीवित है और उसके लिए शहंशाह के दिल में अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हमदर्दी है।

राजपूतों से सुलह हो गयी। अकबर की दुर्घटना पर राजपूतों में फूट पड़ गयी थी। अधिकांश राजपूत यह समझते थे कि अकबर उनसे धोखा करने वाला था। दुर्गादास और उसके कुछ साथी समझते थे कि शहंशाह ने जाली चिट्ठी लिखकर भेजी है और अकबर को बदनाम कर बिना तलवार चलाये ही उसको परास्त कर दिया है।

शहंशाह अपनी चतुरायी पर बहुत गर्व कर रहा था और वह दक्षिण में भी कोई ऐसी ही चाल चलना चाहता था जिससे दक्षिण में दूर-दूर तक उसकी हुकूमत स्थापित हो जाये।

राजपूतों से संधि होते-होते एक वर्ष व्यतीत हो गया और वह संवत् १७३९ में ही औरंगाबाद पहुँच सका था।

: ५ :

हरिहर के पाँव में खुजली हो रही थी। वह अकबर की सेना में भरती हो शहंशाह को अपने हाथ दिखाने के लिए अजमेर गया था, परन्तु उसके वहाँ पहुँचने से पूर्व ही अकबर दक्षिण की ओर भाग निकला था और राजपूतों में दुर्गादास अपने साथ दो सौ राजपूतों को लिये हुए उसका पथ-प्रदर्शन कर रहा था।

इस समय तक शम्भुजी ने राजाराम और उसके सहायकों को कैद कर लिया था। अन्नाजी दत्तो और नीलकण्ठ मोरेश्वर को भी कैद कर लिया गया था। सूर्यबाई को विष देकर मरवा डाला गया था। राजाराम रायगढ़ में बन्दी बना लिया गया था। कई मराठे सरदार पकड़े गये थे और तोपों से उड़ा दिये गए थे।

शम्भुजी की एक ही नीति थी कि विरोधियों का बीज तक नाश कर देना चाहिए। नहीं तो यह बबूल के पेड़ की भाँति पुनः फूट पड़ेगा और बाद में पेड़ बन जाने पर काँटे बिछा सकता है।

राजाराम के कुछ सहायकों को हाथी के पाँव के नीचे कुचल डाला गया। इन कुचले जाने वालों में हीराजी फरज़न्द, बालाजी अवजी, प्रभु महादेव अनन्त इत्यादि प्रमुख थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सबने इतना आतंक फैलाया कि शम्भुजी के विपरीत किया जाने वाला विद्रोह निर्वीज हो गया प्रतीत होने लगा।

शम्भुजी ने पनहाला में अपनी राजधानी बना प्रबन्ध आरम्भ किया था और तीन मास में ही अपने शत्रुओं पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर वह बीस सहस्र मराठा सिपाहियों के साथ रायगढ़ के द्वार पर पहुँच गया। उसके वहाँ पहुँचते ही रायगढ़ के द्वार खुल गये और माघ की तृतीय संवत् १७३८ को उसे नियमितरूपेण राजतिलक कर दिया गया।

यद्यपि हरिहर शम्भुजी के लिये कुछ अधिक मान-प्रतिष्ठा नहीं रखता था, परन्तु उसके हाथ कुछ करने के लिए अकुला रहे थे और वह शम्भुजी के राज्याभिषेक का समाचार सुन सूरत से रायगढ़ जा पहुँचा।

यह अकबर के राजस्थान से भाग कर महाराष्ट्र आ जाने के कुछ ही मास बाद की बात थी। जब हरिहरनाथ रायगढ़ पहुँचा तो वहाँ राठौर राजपूतों का शिविर दुर्ग के बाहर लगा था। राजपूती पगड़ियों और पहरावे में सिपाहियों को शिविर के भीतर आते-जाते देख हरिहर शिविर के बाहर खड़ा हो विचार करने लगा कि ये कौन लोग हो सकते हैं? एक बड़ी आयु के सिपाही को एक खेमे के बाहर खड़े देख हरिहरनाथ ने हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछ लिया, "बाबा! यह किस सरदार का शिविर है?"

"कहीं बाहर से आये प्रतीत होते हो?"

"हाँ महाराज! सूरत से आ रहा हूँ। वैसे तो रायगढ़ का रहने वाला ही हूँ, परन्तु स्वर्गीय महाराज के स्वर्गवास करने से पूर्व ही यहाँ से चला गया था।"

राजपूत ने देखा कि सामने खड़ा युवक खूबसूरत और सुगठित शरीर वाला है। साथ ही उसके पास बहुत ही बढ़िया अरबी घोड़ा भी था। इससे युवक की रूप-राशि, पहरावे और सवारी से प्रभावित हो उसके विषय में और जानने के लिए वह अपना परिचय देने लगा—"हम राठौर हैं। हमारे राजा दुर्गादास महाराज शम्भुजी से मिलने आये हुए हैं।"

—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो भेंट हुई है ?"

"हाँ, राजा साहब दुर्ग में गये हुए हैं। आशा करते हैं कि आज भेंट हो जायेगी।"

"और शहज़ादा अकबर भी यहाँ है ?"

इस पर तो राजपूत सरदार अनिश्चित मन सामने खड़े युवक का मुख देखने लगा। वह निश्चय नहीं कर सका कि बताये अथवा नहीं। एकाएक राजपूत सरदार ने बात बदलते हुए कहा, "तुम्हारा घोड़ा तो बहुत बढ़िया है।"

"हाँ बाबा ! तीन सौ अशरफी में एक अरबी सौदागर से मोल लिया है।"

तीन सौ अशरफी की बात सुन सरदार के मन में युवक के लिए आदर बढ़ा ही था। उसने कहा, "मालूम होता है कि महाराज शम्भुजी की सेवा के लिए आये हो ?"

"नहीं बाबा ! मैं अपने देश की सेवा के लिए आया हूँ। इस आशा में कि महाराज भी यही कर रहे हैं। इनको अपना सहयोग देने आया हूँ।"

"बहुत कठिन है। युवक, यहाँ देश की सेवा से ऊपर अपनी सेवा करने की बात विचार की जाती है।"

"वह तो बाबा, सब करते हैं। अन्तर केवल मुख्य और गौण का है। हम देश की सेवा भी तो अपने सुख और सुविधा के लिए करते हैं। हम तो अपनी उन्नति का माध्यम देश की उन्नति मानते हैं।"

"तुम महाराज शिवाजी के समय की बात करते प्रतीत होते हो। मैं तो आज महाराज के देहान्त के उपरान्त की बात कर रहा हूँ।"

"देखो युवक ! मराठों के महाराज से मिल लो। नहीं तो हमारे राजा के पास आ जाना। तुमको काम मिल जायेगा।"

हरिहर विचार कर रहा था कि वह तो राजपूतों को मूर्ख समझता है, इस पर भी वह इन्कार हीं कर सका। वह नहीं जानता था कि शम्भुजी क्या समझेंगे और उसकी सेवाओं से लाभ उठाना चाहेंगे अथवा नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण उसने घोड़े पर बैठे-बैठे ही कहा, "धन्यवाद बावा ! तनिक महाराज शम्भुजी से मिल लूं; तदनन्तर ही इस प्रस्ताव पर विचार करूँगा ।"

हरिहर को इस राजपूत सरदार की बात रुचिकर लगी थी। क्योंकि वह राजपूतों को शौर्यवान समझता था, परन्तु ऐसे शौर्यवान् जो मोटी बुद्धि वाले हों और उस कहावत को चरितार्थ करते हों कि मूर्ख मित्र से बुद्धिमान शत्रु अच्छा होता है।

उसने घोड़े को एड़ लगायी और दुर्ग तक पहुँचने के लिए वेग से चढ़ाई चढ़ने लगा। दुर्ग के द्वार पर प्रहरियों ने हरिहर को पहचान लिया और उसे भीतर जाने का मार्ग दे दिया। प्रहरी हरिहर के लौट आने पर पण्डित विश्वनाथ के भी लौट आने की आशा करने लगे थे।

हरिहर राजप्रासाद के द्वार पर राजपूतों की एक मण्डली को खड़े देख समझा था कि वे दुर्गादास राठौर के साथी होंगे और कदाचित् उनका सरदार भीतर शम्भुजी से भेंट करने गया हुआ होगा।

वह द्वारपाल के सामने जा घोड़े से उतर कर बोला, "महाराज से भेंट के लिए मेरी प्रार्थना पहुँचा दो।"

द्वारपाल नया आदमी था। उसने हरिहरनाथ को पहचाना नहीं। यद्यपि वह समझ रहा था कि कोई मराठा सरदार है। इस पर उसे न जानने के कारण विनम्रता से पूछने लगा, "हुज़ूर ! क्या नाम बताया जाये ?"

"पण्डित हरिहरनाथ।"

द्वारपालों का आधा विस्मय विलुप्त हो गया। शम्भुजी के दरबार में ब्राह्मणों की वह महिमा नहीं रह गयी थी जो महाराज शिवाजी के काल में थी।

इस पर भी द्वारपाल ने एक कागज़ का टुकड़ा दे कहा, "पण्डितजी ! नाम लिख दें।"

हरिहरनाथ ने कलम ले कागज़ पर नाम लिख दिया और साथ ही लिख दिया, "भूतपूर्व धर्माधिकारी पण्डित विश्वनाथ का भांजा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारपाल तो नाम पढ़ नहीं सकता था। इस कारण उसने ड्योढ़ी में खड़े एक व्यक्ति को वह पर्चा दे दिया और वह लेकर भीतर चला गया।

राजपूतों की मण्डली भी इस मराठा युवक को बहुत बढ़िया अरबी घोड़े से उतर और नाम लिखकर देते देख रही थी। हरिहर के मुख पर तेज और उसकी आँखों की चमक ने इन राजपूतों पर भी जादू का-सा प्रभाव डाला था।

जब हरिहर नाम और परिचय लिखकर दे चुका तो वह द्वारपाल से पीछे हटकर अपने अश्व के समीप खड़ा होने लगा तब राजपूतों में से एक ने हरिहर के समीप जाकर नमस्कार की और पूछा, "आप कहाँ से पधारे हैं ?"

"मैं सूरत से आया हूँ।"

"महाराज से भेंट के लिए आये हैं ?"

"हाँ। आप लोग कौन हैं ?" हरिहर का अनुमान तो था कि वे दुर्गादास के साथी हैं, परन्तु वह अपने अनुमान का समर्थन चाहता था। उसके मन में बूढ़े राजपूत सरदार की बात स्मरण हो आयी थी। इस कारण वह इनके सरदार के विषय में और भी अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता था।

सामने खड़े राजपूत ने बताया, "हम अपने सरदार ठाकुर दुर्गादास राठौर के साथ महाराज शम्भुजी से मिलने आये हैं।"

"तो ठाकुर साहब भीतर गये हैं ?

"नहीं, वह भेंट के लिए बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"अच्छा ! कौन है वह ?"

"उन्होंने ही मुझे आपका परिचय प्राप्त करने के लिए भेजा है।" हरिहर को स्मरण था कि उसके मामा एक बार दुर्गादास से मिलने गये थे। वह जानते थे कि किस प्रकार राजपूत मराठों से मिलकर दिल्ली के राज्य पर अधिकार कर सकते हैं ? अतः मामा का परिचय दे वह अपना परिचय बढ़ाना चाहता था।

हरिहर जानता था कि दुर्गादास अकबर को लेकर दक्षिण में आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है और किसी प्रकार का मराठों से समझौता करना चाहता है। इससे उसके मन में दुर्गादास से मिलकर अधिक ज्ञान प्राप्त करने की लालसा जाग पड़ी। उसने सामने खड़े राजपूत से पूछा, "क्या मैं आपके राजा साहब के दर्शन कर सकता हूँ ?"

"हाँ, आइये।"

हरिहर ने अपना घोड़ा एक पेड़ के साथ बाँध रखा था। उसको वहीं छोड़ वह राजपूत मण्डली के सामने जा खड़ा हुआ। उस राजपूत सिपाही ने जो उसे अपने साथ वहाँ ले आया था, एक अधेड़ वयस के व्यक्ति की ओर देखकर कह दिया, "महाराज ! यह पण्डित हरिहरनाथ हैं और मराठा महाराज से मिलने के लिए सूरत से आये हैं।"

हरिहर ने अपना परिचय स्पष्ट देने के लिए कह दिया, "श्रीमान् ! मैं महाराज शिवाजी के अंगरक्षकों का नायक था। कदाचित् महाराज शिवाजी के मन्त्री पण्डित विश्वनाथ के विषय में आपको स्मरण होगा कि उनको एक बार आपकी सेवा में उपस्थित होने का अवसर मिला था।"

"ओह ! तो तुम उनके लड़के हो ?"

"मैं उनका भांजा हूँ।"

"और तुम महाराज शिवाजी के अंगरक्षकों के नायक थे ?"

"हाँ, श्रीमान्।"

"महाराज शिवाजी का देहान्त कैसे हुआ है ? यहाँ कई प्रकार की किंवदन्तियाँ प्रचलित हो रही हैं।"

"मैं उस समय यहाँ उपस्थित नहीं था। मैं तो पहले ही सेवा-कार्य छोड़कर चला गया था।"

"किसलिए ? अभी तुम्हारी आयु तो सैनिक-कार्य के उपयुक्त ही है।"

"मैं सैनिक-कार्य से ऊबा नहीं था। मैं तत्कालीन सेना के व्यवहार से ऊबकर सेवा छोड़ गया था। हम, मेरा अभिप्राय है कि मैं और मामाजी यह समझते थे कि महाराज का राज्याभिषेक हो जाने के उपरान्त उनका व्यवहार राज्योचित होना चाहिये था। उन्होंने राज्याभिषेक के अवसर पर पढ़े जाने वाले वेदमन्त्रों से यह शपथ ली थी कि वह प्रजा के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-पराये का विचार छोड़कर न्यायोचित व्यवहार करेंगे । अतः राज्याभिषेक के उपरान्त मामाजी ने मुगल प्रजा को लूटने से मना किया था । जलना की लूट का मामाजी विरोध कर रहे थे और वह राज्य के धर्माधिकारी थे ।

"हुआ यह कि जलना में नगर को लूटा गया । वहाँ सरकारी कोष नहीं था । लोग भाग कर एक सैयद की दरगाह में छुप गये । यह किंवदन्ति रही थी कि महाराज साधु, सन्त और महात्माओं को नहीं लूटते अथवा उनको कष्ट नहीं देते, परन्तु इस दरगाह के भीतर भी लूट मचायी गयी । यह समाचार भी प्राप्त हुए कि दरगाह के भीतर छुपी कई स्त्रियों का शील भंग किया गया ।

"मैं तो उस लूट के उपरान्त ही सेवा-कार्य छोड़कर सूरत चला गया था । मामाजी ने भी सेवा-कार्य से त्याग-पत्र दे दिया था, परन्तु महाराज के आग्रह पर वह कुछ काल के लिए सेवा पर बने रहने पर तैयार हो गये ।

"महाराज के देहान्त के उपरान्त राजाराम के पक्ष वालों ने मामाजी को स्वयं ही सेवा-मुक्त कर दिया ।"

"पर एक बात हमारी समझ में नहीं आयी ।" दुर्गादास का प्रश्न था, "कि शत्रु की प्रजा को क्यों न लूटा जाये ?"

"यह देश हमारा शत्रु नहीं है । यहाँ पर विधर्मियों का राज्य हमारा शत्रु है । देश की रहने वाली प्रजा का भी वह वैसा ही शत्रु है जैसे हमारा है ।"

"परन्तु महाराज शिवाजी तो सदैव से ही लूट-मार करते रहे थे ।"

"राज्याभिषेक से पहले और बाद की स्थिति में मामाजी और मैं भी अन्तर मानते थे । हम वचन की बहुत महिमा मानते हैं । राज्यारोहण के समय महाराज ने शपथ ली थी कि सबके साथ धर्म और न्याय का व्यवहार करेंगे । मामाजी के विचार में प्रजा की लूट इस शपथ के विपरीत थी ।"

दुर्गादास इस नवीन मीमांसा को समझने का अभी यत्न ही कर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि राजप्रासाद से द्वारपाल आया और बोला, "हरिहरनाथ को भीतर बुलाया है।"

राजपूत चकित रह गये कि वे हरिहर से पहले के आये हुए हैं और उनको बुलाने से पूर्व इस युवक को बुला लिया गया है, परन्तु वे एक अति महत्वपूर्ण कार्य से आये हैं। इस कारण एक साधारण-सी बात पर नाराज़ होने से उस महान् कार्य की सिद्धि में विघ्न पड़ सकता था। अतः वे अपना क्रोध भीतर-ही-भीतर पी गये।

: ६ :

हरिहर को शम्भुजी की अपेक्षा उनके पुरोहित कानूजी के सम्मुख उपस्थित किया गया। कानूजी कवि थे और कवि कैलाश के नाम से विख्यात थे। शम्भुजी के दरबार में वह धर्माधिकारी के रूप में स्वीकार किये जा रहे थे।

शम्भुजी भीतर अपने रनवास में था। दुर्गादास राठौर और हरिहर-नाथ की भेंट के लिए प्रार्थना रनवास में भेजी गयी थी और वहीं से ही यह आज्ञा कवि महोदय को आयी थी कि वह हरिहर से मिलकर पता करें कि वह क्या चाहता है? दुर्गादास के विषय में कोई आज्ञा नहीं थी।

हरिहर कवि कैलाशजी के सम्मुख उपस्थित हुआ तो वह परेशानी अनुभव करता हुआ एक क्षण तक खड़ा रह गया, परन्तु तुरन्त ही अपने पर नियन्त्रण कर उसने प्रणाम किया और आज्ञा के लिए सामने खड़ा रहा। कानूजी हरिहर का नाम तो सुन चुका था, परन्तु उससे पहले मिला नहीं था। इस कारण उसने इस युवक को सिर से पाँव तक देखा और उसकी रूप-राशि को पसन्द कर कहा, "बैठो हरिहर।"

हरिहर बैठ गया। कवि महोदय ने पूछा, "किस कारण महाराज से भेंट करने आये हो? मैंने तो सुना था कि तुम सूरत में जवाहरात का काम करते हो?"

"श्रीमान्! यह बात सत्य है कि मैं सूरत में हूँ, परन्तु यह पूर्ण सत्य नहीं कि मैं जौहरी का काम करता हूँ। वह तो मेरा भाई है जो यह कार्य करता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक ही बात है ।"

"जैसा समझिये ।" हरिहरनाथ इस व्यर्थ की बात पर वाद-विवाद चलाना नहीं चाहता था, परन्तु कवि महाराज ने बात के सूत्र को छोड़ा नहीं । उसने कहा, "महाराज को अभी जवाहरात की आवश्यकता नहीं। इसी कारण उन्होंने आपको मेरे पास भेज दिया है ।"

"मैं समझता था कि महाराज को रत्नों की भारी आवश्यकता है ।"

"तो तुम रत्न बेचने आये हो ?"

"बेचने नहीं पण्डितजी ! उनको भेंट-स्वरूप देने के लिए ।"

"हाँ, तो वह मुझे दे दो । मैं वह महाराज के पास पहुँचा दूँगा । वहाँ से उसकी पहुँच की सूचना मिल जायेगी ।"

"पण्डितजी, क्षमा करें । भेंट तो महाराज को स्वयं ही स्वीकार करनी चाहिये । इसमें दूसरे के द्वारा नहीं हो सकता ।"

"मैं महाराज का मुख्य मन्त्री हूँ । वह रत्न तुम मुझे दे सकते हो ।"

"इस रत्न के लिए मैं किसी बीच-बिचौले की आवश्यकता नहीं समझता । मेरा महाराज से निवेदन कर देना कि मैं उनसे ही मिलना चाहता हूँ और यह भेंट उनकी सेवा में स्वयं अर्पण करना चाहता हूँ ।"

कवि समझ रहा था कि उसका अपमान किया जा रहा है । इस पर भी वह मुस्कराता हुआ पूछने लगा, "कहाँ ठहरे हो ?"

"अभी कहीं नहीं । नीचे गाँव में जाकर ठहरने का विचार रखता हूँ ।"

"तो ठीक है । वहाँ ठहरो और महाराज के अवकाश की प्रतीक्षा करो । तुम कल द्वारपाल से पता कर जाना कि महाराज ने तुम्हारी भेंट स्वीकार करने के लिए कौनसा समय निश्चित किया है ?"

हरिहर उठ खड़ा हुआ और प्रणाम कर विदा होने लगा तो कानूजी ने कह दिया, "वह रत्न तो तुम स्वयं महाराज की भेंट करना, परन्तु क्या मैं तुमसे एक-दो बातें जान सकता हूँ ?'

"हाँ, आज्ञा करिये ?"

"बैठ जाओ । खड़े-खड़े बात नहीं हो सकेगी ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिहर पुनः बैठ गया। कालूजी ने पूछा, "तुम स्वर्गीय महाराज की नौकरी क्यों छोड़ गये थे ?"

"मैंने महाराज की सेवा इसलिए स्वीकार की थी कि महाराज महाराष्ट्र और भारत देश में धर्म की स्थापना के लिए लड़ रहे हैं। उस समय यह अनुभव हुआ था कि धर्म की अपेक्षा अधर्म का चलन हो रहा है। अतः सेवा-कार्य छोड़ चला गया था। अब नये महाराज के गद्दी सँभालने पर यहाँ आया हूँ।"

"तो इन महाराज की सेवा पाने की आशा करते हो ?"

"पण्डितवर ! सेवा ली नहीं जाती; सेवा की जाती है। जिसकी सेवा की जाती है वह कुछ देता नहीं, वरंच सेवा करने वाला कुछ देता है।"

"ओह ! तो तुम और अन्य सेवक महाराज को कुछ दे रहे थे ?"

"निस्सन्देह।"

"मैं समझता हूँ कि महाराज किसी के मोहताज नहीं हैं। इस कारण वह किसी से कुछ माँगने नहीं जा रहे।"

"परन्तु मैंने यह नहीं कहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि मैं स्वर्गीय महाराज के पास अपनी सेवायें देने आया था। उन्होंने उनको स्वीकार किया था तो मुझ पर कृपा की थी। यही सदा होता है।"

"अच्छा, छोड़ो इस बात को। यह बताओ कि पुनः सैनिक के रूप में कार्य करोगे ?"

"मैं धर्म के पक्ष में लड़ने-मरने के लिए सदा तैयार रहा हूँ और अब भी हूँ।"

"वह तो वर्तमान महाराज भी कर रहे हैं।"

"यही देखने के लिए आया हूँ।"

"तो तुम महाराज के कामों की परीक्षा करोगे ?"

"पण्डितजी ! आप सरल-सी बात को उलट-पुलट क्यों करते हैं ? मैं परीक्षा करने वाला कौन हूँ ? मैं तो उस अकिंचन की भाँति हूँ जो किसी पेड़ के नीचे बैठने का विचार कर रहा हूँ और बैठने के लिए स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख रहा हूँ।"

"यही तो परीक्षा होती है।"

"जी हाँ। परन्तु भूमि की नहीं, वरंच अपनी उस भूमि से अनुकूलता की परीक्षा है अथवा उस भूमि की अपने से अनुकूलता की परीक्षा है।"

"दोनों में अन्तर नहीं ?"

"हाँ, इन दोनों बातों का एक तीसरी बात से अन्तर है। वह यह कि मैं भूमि को अपने अनुकूल बनाने का यत्न नहीं कर रहा।"

"तो अपने को भूमि के अनुकूल करने का यत्न कर रहे हो क्या ?"

"इस विषय पर विचार करने का अवसर अभी नहीं आया।"

"मैं समझता हूँ कि तुम यहाँ काम नहीं पा सकोगे।"

"मुझे इसका भारी दुःख होगा। परन्तु पण्डितवर ! महाराज से भेंट का अवसर तो मिल सकेगा ? आप इतनी कृपा कर दीजिए। मैं आपका आभारी रहूँगा।"

"ठीक है। तुम नित्य द्वारपाल से पता कर जाया करना। यत्न किया जायेगा कि महाराज अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय निकाल तुमको दर्शन दे सकें।"

हरिहर पुनः उठा और पण्डित कविवर के आगार से बाहर निकल आया। प्रासाद के बाहर अभी भी दुर्गादास और उसके साथी खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। हरिहर के बाहर आते ही वे लपक कर उसके पास आ गये और पूछने लगे, "महाराज से भेंट हुई ?"

"नहीं। मुझे तो पुरोहित कवि कैलाशजी के समक्ष उपस्थित किया गया था और मैंने अपनी इच्छा कह दी कि मैं सीधा महाराज से बात करना चाहता हूँ। मुझे उत्तर मिला है कि उसके लिए मुझे कुछ दिन प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। पण्डितजी ने कहा है कि नित्य द्वारपाल से आकर पता कर जाया करूँ कि महाराज को मिलने का अवकाश है अथवा नहीं ?"

"तो आप कवि कालूषजी से मिले हैं। हम भी तीन दिन हुए उनसे मिले थे और हमें भी वही कहा गया है जो आपको कहा गया है। हम कल भी पता करने आये थे और आज फिर आये हुए हैं। आज हमारे विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अभी कोई आज्ञा नहीं आयी।"

हरिहर मुस्कराते हुए कहने लगा, "ऐसा प्रतीत हुआ है कि मुझे तो महाराज से भेंट करने का अवसर नहीं मिलेगा।"

"तो हम भी यही आशा करें ?"

"यह मैं कह नहीं सकता। आपको अभी प्रतीक्षा करनी चाहिये।"

परन्तु उनको भी अधिक प्रतीक्षा करनी नहीं पड़ी। द्वारपाल आया और एक पत्र दुर्गादास के हाथ में देकर चला गया। दुर्गादास पहले तो पत्र को देखता एवं विचार करता रहा कि इसका क्या अभिप्राय है ?

कुछ विचार कर दुर्गादास ने पत्र खोला और पढ़ने लगा। पत्र पढ़कर दुर्गादास ने पुनः वन्द कर अपनी जेब में रख लिया और अपने साथियों को कहने लगा, "अभी भेंट नहीं हो सकती। चलो आओ, अपने डेरे पर चलें।"

हरिहर अपने घोड़े को पेड़ से खोलने चल पड़ा। वह अभी घोड़ा खोल ही रहा था कि एक राजपूत उसके समीप आ उससे पूछने लगा, "राजा साहब पूछ रहे हैं कि आप कहाँ ठहरे हैं ?"

"अभी तो कहीं नहीं। नीचे गाँव में चलकर किसी के घर में ठहरने का प्रबन्ध करूँगा।"

"आप हमारे शिविर में भी ठहर सकते हैं। राजा साहब आपसे मित्रता बढ़ाना चाहते हैं।"

हरिहर ने कुछ देर तक विचार किया और फिर कहा, "राजा साहब से मेरा धन्यवाद-कह दीजिये। मैं राजा साहब की कृपा का फल भोगने आपके शिविर को चल रहा हूँ।"

राजपूत वर्ग तो पैदल ही वहाँ आया था और पैदल ही लौटे जा रहा था। अतः हरिहर भी अपने घोड़े की लगाम पकड़े हुए उनके साथ चल पड़ा। सब दुर्ग से निकल घाटी से उतर नीचे गाँव में जा पहुँचे और गाँव पार कर वे राजपूतों के डेरे के द्वार पर पहुँचे तो दुर्गादास ने एक सेवक को हरिहर के घोड़े की देख-रेख के लिए कहा और हरिहर को अपने साथ अपने खेमे में ले गया। वहाँ वह वृद्ध उपस्थित था जिसने हरिहर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजपूत सेना में भरती हो जाने के लिए पहले ही कहा था। उसने हरिहर को दुर्गादास के साथ आते देखा तो मुस्कराते हुए कहा, "तो आप आ गये हैं ?"

"हाँ बाबा।" हरिहरनाथ ने हाथ जोड़ प्रणाम करते हुए कहा, "मराठा दरबार का रूप बिगड़ गया है। जहाँ स्वर्गीय महाराज सूर्योदय से पूर्व उठ स्नानादि से निवृत्त हो पूजा में बैठ जाया करते थे वहाँ अब महाराज इस समय तक रनवास से भी बाहर नहीं निकले। उनके पुरोहित कहो अथवा मन्त्री कहो, कवि कैलाश भी अभी तक स्नानादि से निवृत्त नहीं हुए थे। पूजा तो कदाचित् वह करते ही नहीं प्रतीत होते। साथ ही उनके मुख से मद्य की गंध इस समय भी आ रही थी।"

दुर्गादास ने हरिहर को जाजम पर बैठने के लिए कहा और स्वयं भी बैठ गया। हरिहर और वह वृद्ध व्यक्ति बैठे तो दुर्गादास ने कह दिया, "हम इस पुरोहितजी को कवि कैलाश नहीं, वरंच कवि कालूष कहते हैं। इस कवि की करनी से न केवल महाराजा शम्भुजी का पतन निश्चय है, वरंच मराठा राज्य का भी सर्वनाश सम्भावित है।"

"मैं समझता हूँ।" हरिहर ने गम्भीर भाव में कहा, "कि देश के उद्धार की घड़ी टल गयी है। देश की स्वतन्त्रता की घड़ी कम-से-कम एक सौ वर्ष पीछे पड़ गयी है।"

"हाँ। सुना है कि महाराज शिवाजी को विष देकर मारा गया है। यह कुकृत्य उनकी रानी सूर्यबाई ने किया है। यदि महाराजा शिवाजी बीस-तीस वर्ष तक और जीवित रहते तो मुगल सम्राट् की कब्र दक्षिण में बन जाती और पूर्ण देश स्वतन्त्र हो गया होता।"

"यह विष की बात तो वर्तमान महाराजा ने अपने कुकृत्य को उचित सिद्ध करने के लिए चला दी प्रतीत होती है। महाराज शम्भुजी ने अपनी विमाता को विष देकर मरवाया है।"

"परन्तु क्या महाराज इतने बीमार थे कि यह उनकी स्वाभाविक मृत्यु समझी जाये ?"

"वैसे वह सब प्रकार से स्वस्थ थे। केवल उनके मन पर सम्भुजी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनैतिक कार्यों को देखकर दुःख होता था, परन्तु इससे उनकी मृत्यु की सम्भावना प्रतीत नहीं होती थी।

"मैं तो यहाँ से चला गया था, परन्तु मामाजी तो यहीं थे। महाराज को सामान्य पेचिश थी। उससे मृत्यु की आशा नहीं की जाती थी। वह तीन-चार दिन से कुछ अधिक रुग्ण नहीं रहे। मुझे तो यह कवि कानूष हत्यारा प्रतीत होता है। यह चरित्रहीन, कटु-भाषी, तामसी स्वभाव रखने वाला और तान्त्रिक है। ये सब लक्षण अशुभ हैं।"

इस पर दुर्गादास ने हरिहर को अपने मन की बात कह दी। उसने कहा, "मैंने अकबर को शहंशाह से विद्रोह करने के लिए तैयार किया है। इस कारण मैं अपना उत्तरदायित्व समझता हूँ कि इसको किसी निर्णयात्मक स्थिति पर पहुँचा कर छोड़ूँ।"

"राजा साहब!" हरिहर की सम्मति थी, "अकबर शहंशाह नहीं बन सकता। इसमें शहंशाह की गद्दी प्राप्त करने की योग्यता नहीं।"

"कैसे कहते हो यह?"

"मैं राजस्थान दो राह वाले शहज़ादा के पड़ाव पर गया था, परन्तु देर से पहुँचा था। जब वहाँ पहुँचा तो शहज़ादा का शिविर उजड़ चुका था। डेरे पर चोर और हत्यारे घूम रहे थे। वहाँ की अवस्था का कारण जान मैं समझ गया कि यह शहज़ादा शहंशाह जैसी दुर्लभ पदवी तक पहुँच नहीं सकता।"

"आप किस समय वहाँ पहुँचे थे?"

"मैं सूरत से भागा-भागा वहाँ पहुँचा था। दिन के बारह बज रहे थे। शहज़ादा का शिविर उजड़ा हुआ था। शहज़ादा की एक बेगम की खादिमा मिल गयी और उससे पूर्ण वृत्तान्त जान लिया था। उसे जानकर मैं इस परिणाम पर पहुँचा था कि शहज़ादा इस योग्य नहीं कि उसे हिन्दुस्तान जितने बड़े मुल्क की राजगद्दी मिल सके।

"शहज़ादा को प्रातः आठ बजे अपनी पत्नी के पलंग पर से जगाया गया था। उस समय मुगल सैनिक भाग-भागकर शहंशाह के शिविर को जा रहे थे। शहज़ादा आँखें मलता हुआ उठा और जब उसे बताया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि राजपूत तो रात को ही कूच कर गये हैं तथा मुगल सैनिक अब शहंशाह के शिविर को जा रहे हैं तो उसने अपनी एक बेगम को साथ लिया और अपने बच्चों को वहाँ ही छोड़ पश्चिम को भाग खड़ा हुआ।

"ये सब बातें एक नालायक सिपहसालार के लक्षण कहे जा सकते हैं। मैं तो एक बात जानता हूँ कि मैंदाने-जंग औरतों और बच्चों को साथ लेकर जाने का स्थान नहीं है। साथ ही बगावत करने से पहले अपने साथियों का चुनाव बहुत सावधानी से करना चाहिये था। न तो राजपूत विश्वास करने के योग्य थे और न ही गुजराज का हाकिम। इनके आश्रय बगावत जैसी बड़ी बात करनी मूर्खता थी। साथ ही जब अपने में इतनी भी सूझ-बूझ न हो कि मैंदाने-जंग में बीबी और बच्चों को लेकर जाना और जिस समय जंग सामने दिखायी देती हो तो उस समय दिन दिकलने तक बीबी के साथ सोते रहना समझ आये तब कामयाबी कैसे मुमकिन हो सकती थी ?

"राजा साहब ! आप भी ऐसे नालायक व्यक्ति को अपना शहंशाह बनाने के लिए भाग-दौड़ कर अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं।"

दुर्गादास अकबर के विषय में तो ये सब बातें जानता था और पसन्द नहीं करता था, परन्तु हरिहर से राजपूतों को भी भूल करने वाला कहा जाता सुन प्रसन्न नहीं था। उसने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछ लिया, "परन्तु आपने राजपूतों को विश्वास के अयोग्य क्यों कहा है ? क्या दोष देखा है आपने उनमें ?"

"आप यह बताइये कि आप राजपूतों का साथ छोड़ अकबर के साथ मारे-मारे किसलिए फिर रहे हैं ?"

"राजपूत यह समझने में भूल कर रहे हैं कि अकबर उनसे दगा कर रहा था।"

"और आप तो यह भूल नहीं कर रहे ?"

"हाँ। परन्तु उस समय स्थिति यह थी कि शहंशाह का पत्र सत्य ही समझ आ रहा था। मैं भी इसी छलना में छला गया था। यह तो बाद में जब शहज़ादा गुजरात की ओर भागा तो मुझे अपनी भूल का ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। कई राजपूत सरदार तो अभी भी ऐसे हैं जो उस पत्र को सत्य मानते हैं।"

"देखिये राजा साहब ! मैं उस समय पत्र पर सन्देह करने को गलत नहीं कह रहा। मैं उस सन्देह पर राजपूतों के मन की प्रतिक्रिया को मूर्खता कह रहा हूँ।"

"यदि आपकी स्थिति में महाराज शिवाजी होते तो शहज़ादे को हरम सहित बन्दी बना लेते और शहज़ादा के नाम पर शहंशाह की सेना पर रात के समय ही धावा बोल देते। एक बार शहंशाह को पकड़ पाते अथवा उसको कम-से-कम मैदाने-जंग से भगा सकते तो आगरा का तख्त उनके हाथ में आ जाता। तब शहज़ादा को ग्वालियर के दुर्ग में बन्दी रखा जा सकता था जिसमें वर्तमान शहंशाह ने अपने एक भाई को कैद किया था।"

दुर्गादास मुख देखता रह गया। फिर एक बात विचार कर पूछने लगा, "तो आप शम्भुजी को यही सम्मति देने आये हैं ?"

"आया तो था इसी निश्चय से, परन्तु पुरोहितजी ने तो शम्भु को भी पतन का मार्ग दिखा रखा है। पुरोहित का काम यह नहीं कि वह महाराज के द्वारपाल का काम किया करे। पुरोहित तो धर्म का मार्ग दिखाने के लिए होते हैं। यह तो स्वयं मद्य से बदमस्त हो राजा को रनवास में बन्द कर उसके द्वार की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता है।"

: ७ :

दुर्गादास को हरिहर के यह कटु वाक्य कि 'राजपूत विश्वास के अयोग्य और मूर्ख हैं,' पसन्द नहीं थे। इस पर भी वह अब उस समय की स्थिति पर विचार करता था तो हरिहर की बात में तत्व समझने लगा था। जो कुछ उसे महाराजा शिवाजी के विषय में ज्ञात था, उसका रहस्य हरिहर ने एक ही वाक्य में बता दिया था। शहज़ादा अकबर के साथ पाँच सहस्र मुगल सिपाही थे जो शहज़ादा की अकर्मण्यता और प्रत्येक बात को टालने की प्रवृत्ति को देख उसका साथ छोड़ रहे थे। ऐसी स्थिति में राजपूतों में यदि शिवाजी की-सी बुद्धि होती तो निस्सन्देह शहंशाह को सोये हुए पकड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते थे। राजपूत भी तो कम दीर्घसूत्री नहीं थे। उन्होंने अकबर के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए छः मास लगा दिये थे। अकबर से समझौता हो जाने पर भी राजपूत आधे मन से ही उसकी सहायता करने के लिए तैयार हुए थे। प्रत्येक निर्णय लेने में राजपूत कई-कई दिन तक विचार करते रहते थे।

इन सब बातों का शिवाजी के विद्युत् की भाँति समर में कूदने से तुलना कर वह हरिहर की बातों में तत्व समझ रहा था।

उस रात पुनः हरिहर से बात हुई। दुर्गादास और उसका वृद्ध मन्त्री दोनों थे। वृद्ध सुमेरसिंह राठौर ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "पण्डित हरिहर! आजकल तुम्हारे मामा कहाँ हैं?"

"वह अपने और स्वर्गीय महाराज के पूर्ण जीवन-कार्य को राज्य-परिवार के गृह-कलह में ध्वस्त होता देख निराश हो अपना परलोक सुधारने की आशा में हरिद्वार चले गये हैं।"

"और आप वर्तमान स्थिति में क्या करना चाहेंगे?"

"मैं तो अभी संसार से विरक्त होने की बात का विचार नहीं कर सकता। मैं दो आकर्षणों में फँसा हुआ हूँ। एक ओर सूरत के बाज़ारों में धन के अम्बार लगे हैं और दूसरी ओर अपनी हिन्दू जाति की दुर्दशा भयंकर स्वरूप धारण करती जा रही है। इन दो आकर्षणों के बीच खिचा हुआ में मानसिक रूप में कटा जा रहा हूँ।"

"तुम हमारी सेना में भरती हो जाओ। सालारे-जंग की पदवी तो तुरन्त ही मिल जायेगी।"

"मैं माँ की ओर से ब्राह्मण हूँ और बाप की ओर से एक मूर्ख, निपट, स्वार्थी क्षत्रिय की सन्तान हूँ। इस कारण आत्माभिमानी राजपूतों में मैं क्या प्रतिष्ठा पा सकूँगा, विचारणीय है।

"अभी विचार करने को समय दीजिये। एक-दो दिन में बता सकूँगा।"

"हाँ, विचार कर लीजिये। हम तो यह समझते हैं कि आप-जैसे सजग, सतर्क बुद्धि वाले जब धीर-वीर और दृढ़ निष्ट राजपूतों का सहयोग पा जायेंगे तो सफलता निश्चय है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सफलता से आपका क्या अभिप्राय है ?"

"हम आगरा राजस्थान का भाग समझते हैं और वहाँ का सिंहासन किसी राजपूत के अधीन होना चाहिये। जब आगरा हमारे अधीन आ जायेगा तो फिर सम्पूर्ण हिन्दुस्तान पर हमारा अधिकार निश्चित है।"

"योजना तो सुन्दर है, परन्तु जब आगरा की राज्यगद्दी पर बैठने का प्रश्न आया तो हम सब राजपूत और मराठे और कदाचित् पंजाब के सिक्ख भी परस्पर लड़ मरेंगे। राजा साहब, क्या यह सत्य नहीं कि अभी तक जयपुर और जोधपुर एक-दूसरे को शत्रु मानते हैं।"

"ये सब मानव दुर्बलतायें हैं, इस पर भी तो विजय प्राप्त करनी है। यदि आप हमारे साथ सम्मिलित हो जायें तो बुद्धि और शौर्य का समागम हो जायेगा और तब विजय निश्चय है।"

अगले दिन दुर्गादास इत्यादि शम्भुजी से भेंट का समय जानने गये तो हरिहर उनके साथ नहीं गया। हरिहर पूजा-पाठ के उपरान्त अपने भविष्य के विषय में चिन्तन कर रहा था। जो कुछ वह पिछले दिन रायगढ़ दुर्ग में देख आया था उससे वह सर्वथा निराश था। राजपूतों की बात पर वह विचार कर रहा था। उसके मन में संशय यह था कि राजपूतों में दुर्गादास स्वयं कुछ अधिक मान-प्रतिष्ठा नहीं रखता था। अब यह राजपूतों के विचार के विपरीत अकबर की सहायता के लिए चला आया है। इससे उसकी राजपूतों में साख निस्सन्देह कम हुई होगी। अतः इसके आश्रय राजपूतों को एकत्रित करने का यत्न तो मेंढकों को तुला के एक पलड़े पर एकत्रित करने के समान होगा।

वह अनिश्चित मन अपने खेमे से बाहर निकला तो उसे राजा साहब के वृद्ध मन्त्री के डेरे के बाहर चहल-पहल दिखायी दी। कुछ नये लोग डेरे में आये प्रतीत हुए थे।

हरिहर वहाँ जा पहुँचा और वहाँ खड़े व्यक्तियों से पूछने पर पता चला कि उदयपुर से कुछ लोग पत्र लेकर आये हैं।

"किसका पत्र है ?"

—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महारानीजी का।"

"क्या समाचार है वहाँ का ?"

"पत्र की बात तो पता नहीं। हाँ, यह समाचार है कि राजपूतों और आगरा के शहंशाह में सन्धि हो गयी है और इस सन्धि के द्वारा कई राजपूत राजाओं और महाराजाओं को पाँच-पाँच हज़ारी का पद मिला है।"

इस नयी परिस्थिति के प्रकाश में रात दुर्गादास के प्रस्ताव में कुछ सार नहीं रहा था। उसकी रुचि अब न तो यह जानने में रही कि जोधपुर से क्या पत्र आया है और न ही उसे अब राजपूत अभियान में सम्मिलित होने का उत्साह रहा। वह मन्त्री महोदय के खेमे के बाहर से ही अपने खेमे को लौट आया। अपना धोती-अँगोछा उठाया और अस्तबल में घोड़ा खोलने चला गया।

घोड़े पर जीन कस सवार हो वह राजपूत शिविर से बाहर निकल गया। वह रायगढ़ से कहीं दूर जाने का विचार करने लगा था। किधर और कहाँ जाये, वह समझ नहीं सका। अपने विचारों में निमग्न वह बिना घोड़े के जाने की दिशा की ओर ध्यान किये हुए चलता गया। घोड़ा दुलकी चलता हुआ जा रहा था। सवार अपने जीवन के अन्धकारमय भविष्य में दिशा-शून्य हुआ जा रहा था। कितनी ही देर तक वह चलता गया। कई मील का अन्तर वह पार कर गया। अब उसे भूख लगी तो उसने सिर उठाकर सूर्य की ओर देखा। सूर्य सिर पर आ गया था। भोजन करने का समय हो गया था। अतः उसने घोड़े की लगाम खींच उसे रोका और चारों ओर दृष्टि दौड़ायी। यह देखने के लिए कि कहीं कोई बस्ती दिखायी दे तो वह वहाँ कुछ खाने और तनिक विश्राम करने का प्रबन्ध करे।

दूर मार्ग से एक ओर हटकर कुछ झोंपड़ों का एक गाँव दिखायी दिया। उसने घोड़े को उधर ही मोड़ दिया। जंगली झाड़ियों में से और ऊबड़-खाबड़ भूमि पर से होता हुआ वह गाँव में जा पहुँचा। गाँव में पहले ही झोंपड़े पर पहुँच एक स्त्री को वहाँ भूमि पर बैठ मक्का पछोड़ते देख घोड़े को खड़ा कर उससे पूछने लगा, "यह कौन-सा गाँव है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री ने नज़र भर कर अश्वारोही की ओर देखा और उसे कोई राज्याधिकारी समझ कर वह उठी और झोंपड़े के भीतर चली गयी। हरिहर का विचार था कि वह अपने किसी पुरुष को बुलाने गयी है। इस कारण वह किसी पुरुष के आने की प्रतीक्षा करने लगा। उसका अनुमान ठीक था। शीघ्र ही झोंपड़े में से एक वृद्ध व्यक्ति लाठी की टेक लेता हुआ बाहर निकला और झुककर हाथ से सलाम कर पूछने लगा, "आप कहाँ जाना चाहते हैं ?"

इस प्रश्न से हरिहर को चेतना हुई। वह सतर्क हो कहने लगा, "बावा ! रायगढ़ से आ रहा हूँ। मार्ग भूल गया हूँ। यह कौनसा स्थान है ?"

"हुजूर ! यह बेनाम स्थान है। पिछले वर्ष ही तो हम यहाँ आये थे। समीप स्वच्छ जल की नदी देख हमने यहाँ ही डेरा डाल दिया। अब हमने कुछ भूमि जोत, बो खाने योग्य अन्न पैदा किया है। अभी तक हम जंगली बेर खा-खाकर निर्वाह करते रहे हैं।"

"बाबा !" हरिहर ने बात बदल दी, "मैं मध्याह्न-भर यहाँ आराम करना चाहता हूँ और यदि कुछ खाने को मिल जाये तो उसका मूल्य चुका दूंगा।"

वृद्ध मुस्कराकर बोला, "इस गाँव में बीस मकान हैं। सब युवक महाराज की सेवा के लिए रायगढ़ पहुँच गये हैं। दो-तीन मेरे-जैसे वृद्ध हैं। शेष स्त्रियाँ और बच्चे हैं।

"ठहरने को तो वह पीपल का पेड़ है। उसके नीचे तुम आराम कर सकते हो। एक चटाई बिछा देता हूँ। भोजन भी जैसा हम खाते हैं, मिल जायेगा।"

"ठीक है, बाबा।"

हरिहर ने घोड़े को पीपल के पेड़ के नीचे ले जाकर पेड़ के साथ बाँध दिया। वह घोड़े की जीन खोल भूमि पर बिछाने लगा कि इस समय वही स्त्री जो मक्की पछोड़ रही थी, झोंपड़े के भीतर से एक चटाई ले आयी। उसने चटाई पेड़ के साये में बिछा दी तो हरिहर ने उस पर जीन बिछा दी। स्त्री ने घोड़े की लगाम खोली और यह कह, "मैं इसे पानी पिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाती हूँ।" वह घोड़े को लेकर एक ग्रोर को चल दी।

हरिहर ग्रपने उत्तरीय उतार ग्रपने सिर के नीचे तकिया बनाने के लिए रख लेटने की तैयारी में था कि वह स्त्री घोड़े को जल पिला लायी ग्रौर फिर झोंपड़े से सूखा घास दोनों बाँहों में जितना भर सकती थी, उठा लायी ग्रौर घोड़े के सामने डाल दिया।

हरिहर समझ गया कि ये लोग जानते हैं कि घोड़े कैसे रखे जाते हैं। वह इस समय तक जीन पर लेट गया था।

स्त्री घोड़े के ग्रागे घास डाल हरिहर की चटाई के समीप ग्रा पूछने लगी, "मक्की उबली हुई है। ग्राप कहाँ बैठ कर खायेंगे ?"

"माँ।" हरिहर ने कहा, "जहाँ खिलाग्रोगी खा लूँगा।"

उस स्त्री ने देखा, विचार किया ग्रौर कहा, "तो झोंपड़े में ग्रा जाग्रो।"

हरिहर उठा ग्रौर उस स्त्री के पीछे-पीछे झोंपड़े में जा पहुँचा। झोंपड़े में रसोईघर सोने के कमरे से पृथक् था। एक युवती एक पतीली में मक्की उबाल रही थी। वृद्ध रसोईघर के एक कोने में बैठा था। उसके समीप एक कुछ मास का शिशु लेटा सो रहा था।

वृद्ध ने हरिहर को वहाँ बिछी एक चटाई पर बैठने को कहा ग्रौर युवती से कह दिया, "बेटा, परस दो।"

युवती उठी ग्रौर लोटे में जल ले हाथ धुला एक पत्तल हरिहर के सामने बिछा उस पर कलछी से पतीली में से उबली मक्की निकाल डालने लगी। साथ ही पत्तल के एक कोने में नमन ग्रौर मिर्च रख दी।

हरिहर को भूख लग रही थी। वह इस प्रकार का मोटा खाना देख मुस्कराया ग्रौर ग्राँखें मूंद एक क्षण तक परमात्मा का चिन्तन कर खाने लगा। जब हरिहर खा रहा था तो वृद्ध ने पूछा, "बेटा! किधर जा रहे हो ?"

"बाबा! महाराज की सेवा के लिए रायगढ़ गया था, परन्तु वहाँ की बात देख सेवा-कार्य के लिए मन नहीं माना ग्रौर एक दिन वहाँ ठहर वापस चला ग्राया हूँ।"

"किस प्रकार की सेवा के लिए गये थे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं स्वर्गीय महाराज शिवाजी के अंगरक्षकों का नायक था। महाराज के देहान्त से कुछ पूर्व छुट्टी पर घर गया था। अब नये महाराज शम्भुजी के राज्याभिषेक की बात सुन पुनः अपना काम पाने राजधानी में पहुँचा था। वहाँ दिन के ग्यारह बजे तक महाराज को रनवास से न निकलते देख लौट आया हूँ।

"मैं तो हिन्दू-पद-पादशाही की सेवा के लिए गया था, परन्तु वहाँ तो भोंसला परिवार के एक मूर्ख और विषय-लोलुप युवक की पादशाही देख लौट आया हूँ।"

वृद्ध भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। हरिहर चबा-चबा कर मक्की खा रहा था। कुछ देर विचार कर वृद्ध ने कहा, "मेरे पाँच पुत्र थे। चार स्वर्गीय महाराज की सेवा में लड़ते-लड़ते मारे गये हैं। पाँचवाँ जो सबसे छोटा था, अब राजसी आज्ञा से भरती कर लिया गया है। मैं पीछे इन स्त्रियों और एक शिशु की रक्षा के लिए यहाँ पड़ा हूँ।

"सुना है कि शहंशाह का बड़ा लड़का शाह आज़म एक बहुत बड़ी सेना लेकर मराठा राज्य को विध्वंस करने आया है और उसका विरोध करने के लिए महाराज शम्भुजी भी तैयारी कर रहे हैं और राज्य के प्रत्येक युवक को आज्ञा हुई है कि रायगढ़ छावनी में एकत्रित हो जायें।"

शाह आज़म का नाम सुन हरिहर के मन में एक बात स्फुरित हुई और वह विचार करने लगा। अकबर से तो शाह आज़म अधिक योग्य व्यक्ति है। यदि उसे शहंशाह की बगावत के लिए तैयार किया जाता तो वह अकबर से अधिक योग्य बागी सिद्ध होता।

हरिहर के मस्तिष्क में योजना बन रही थी और वह भोजन करता-करता अपने विचारों में लीन हो गया। वृद्ध ने उसे विचारों में खोया हुआ देख पूछ लिया, "क्या विचार कर रहे हो?"

"मैं विचार करता हूँ कि जब किसी दुर्ग को आक्रमण से पराजित नहीं किया जाता तो उसकी प्राचीर को सुरंग लगा बारूद से उड़ा दिया जाता है।"

"हाँ। परन्तु यहाँ सैनिकों के पास न तो बारूद होता है और न ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरंग लगाने के अन्य साधन ।"

"बाबा ! तुमने भी कभी सेना में कार्य किया है ?"

"हाँ । जब शिवाजी महाराज का प्रारम्भिक काल था और इन्होंने सह्याद्री पर्वतों के दुर्गों पर अधिकार करना आरम्भ ही किया था तब सिंहगढ़ दुर्ग पर अधिकार के समय मैं घायल हो गया था । जब मैं अपने घर पूना में आया तो फिर युद्ध-कार्य के लिए नहीं गया ।"

"बेटा ! उस समय मेरी आयु पैंतालीस वर्ष की थी जब घायल हो मैं घर पहुँचा तो फिर लड़कों ने मुझे सेना में जाने नहीं दिया । मेरे स्थान एक-एक कर चार इस यज्ञ में अपने जीवन की आहुति दे चुके हैं । पाँचवाँ अब गया है । क्या जाने भगवान् उसे भी अपने घर बुला ले ।"

"बाबा ! अब पूना में क्यों नहीं रहते ?"

"वहाँ मुगलों ने अपना अधिकार जमा रखा है, वहाँ रहने को चित्त नहीं करता ।"

"कितने पोते-पोतियाँ हैं तुम्हारी ?"

"भगवान् की कृपा है । पाँचों लड़कों की सन्तान हैं । अब तो एक पोता भी सेना में भरती हो गया है ।"

हरिहर देख रहा था कि सामने बैठा वृद्ध और इसका परिवार वास्तविक क्षत्रिय स्वभाव के हैं । इनके लिए जीवन-मरण एक खेल से अधिक नहीं ।

"हरिहर खाना समाप्त कर चुका था । वह उठा और झोंपड़े के बाहर जा हाथ धो कुल्ला करने लगा । वही युवती जिसने खाना परसा था, उसे हाथ धुलाने बाहर आयी ।

हरिहर ने कुल्ला किया और युवती की ओर देख पूछा, "बहन ! क्या नाम है तुम्हारा ?"

"रेवती ।" युवती ने कहा और पूछा, "भाई साहब ने बताया नहीं कि कहाँ के रहने वाले हैं ?"

हरिहर समझ गया कि उसके अपने विषय में प्रश्नों के उत्तरों को टालने की बात यह युवती समझ गयी है । इससे वह गीले हाथों से आँखों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पोंछ ठण्डा करते हुए मुस्कराया और बोला, "जाँव गाँव का रहने वाला हूँ, परन्तु वह गाँव अभी भी मुगलों के अधीन है।"

दोनों भीतर आ गये। वृद्ध अपनी पतोहू को अतिथि से बात करते देख प्रश्न-भरी दृष्टि में उनकी ओर देखने लगा। हरिहर ने उसका समाधान करने के लिए कह दिया, "मैंने बहन का नाम पूछा तो यह भी मेरा नाम-धाम जानने की इच्छा करने लगी है।"

"इच्छा तो मैं भी कर रहा था, परन्तु शिष्टाचार के नाते पूछने का हठ नहीं कर सका। दो बार परिचय प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त कर चुका हूँ।"

हरिहर ने अब पुनः चटाई पर बैठते हुए कहा, "बाबा! मैं यह समझा था कि आपने औपचारिक ढंग से पूछा है। अच्छा तो लीजिये, बताता हूँ। "मेरे नाना जाँव गाँव के रहने वाले हैं। यह वही गाँव है जहाँ जगत् गुरु रामदासजी का जन्म हुआ था। मेरे पिता आगरे में रहते थे और मेरा बचपन मुगलों के साथ रहते हुए व्यतीत हुआ है। मेरा नाम हरिहर है और अब मैं सूरत में रहता हूँ।"

"रायगढ़ से मैं सूरत के लिए ही रवाना हुआ था, परन्तु मार्ग भूल गया हूँ।"

"हाँ। यह मार्ग तो बुरहानपुर को जाता है। वहाँ तुम मुगल शहंशाह के दक्षिण राज्य की राजधानी में पहुँच जाओगे।"

"अब मैं सूरत नहीं जा रहा। मैंने विचार किया है कि शत्रु के दुर्ग को बारूद से उड़ा देना चाहिये।"

बूढ़ा समझा कि पथिक व्यर्थ की शेखी बखान कर रहा है। इस पर भी वह केवल मुस्कराकर ही अपना सन्देह प्रकट करता रहा। हरिहर उठा और झोंपड़ी से बाहर चला आया।

तीसरे प्रहर के समाप्त होने पर वह पूर्व की ओर चलने का निश्चय कर उठा। जब वह जाने लगा तो उसने जेब में से मुट्ठी-भर रजत-मुद्रायें निकालीं और वृद्ध को देते हुए कहा, "यह बहन रेवती के लिए भाई हरिहर का आशीर्वाद सूचक दे देना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेटा ! इसका यहाँ कभी भी उपयोग नहीं हो सकता । यहाँ न कुछ बेचने को है ग्रौर न मोल लेने को ।"

"इसे रखना चाहिये । कभी संकट के समय सहायक हो सकता है ।"

यह कह हरिहर घोड़े पर सवार हो पूर्व की ग्रोर चल पड़ा । वह शहज़ादा शाह ग्राज़म को ढूंढने का विचार कर रहा था ।

: ८ :

राजा दुर्गादास की भेंट महाराज शम्भुजी से हुई । कदाचित् इस दिन भी पुरोहित कानूजी दुर्गादास को टाल देता, परन्तु उन्हें दो सूचनायें प्राप्त हुई थीं ग्रौर इन सूचनाग्रों से शम्भुजी ग्रपना कार्यक्रम बदल रहा था । ग्रतः उसे ग्रकबर को ग्रपने क्षेत्र में रोक रखना ग्रावश्यक प्रतीत हो रहा था ।

एक सूचना तो यह थी कि शहज़ादा शाह ग्राज़म को बहुत बड़ी सेना देकर बीजापुर विजय के लिए भेजा गया है, परन्तु शहंशाह को उस पर सन्देह हो गया है कि वह बीजापुर विजय करने में जान-बूझकर ढील कर रहा है । इस कारण यह समझा जा रहा था कि शहज़ादा की नयी बेगम शहरयार बानो उसे ऐसा करने से मना कर रही है । शहंशाह का विचार था कि बीजापुर-जैसे दुर्वल राज्य को तो साठ सहस्र सेना ग्रौर भारी तोपखाने के ग्रस्तित्व से ही मिटाया जा सकता था ग्रौर शहज़ादा के पास तो बहुत कुछ होते हुए भी वह ग्रागे नहीं बढ़ रहा । वह ग्रौरंगाबाद में पड़ा ग्राराम कर रहा था ।

यह बात ठीक थी । शहरयार बानो बीजापुर के ग्रल्प ग्रायु सुल्तान शाह सिकन्दर की बड़ी बहन थी ग्रौर उसके दिल में ग्रपने भाई के लिए सहानुभूति बीजापुर पर ग्राक्रमण में बाधक हो रही थी ।

शहंशाह को सन्देह होते हुए ही शहज़ादा को हुक्म हो गया कि वह रायगढ़ की ग्रोर कूच कर मराठा राज्य पर ग्रधिकार कर ले । उसे यह सन्देश गया कि एक वर्ष में या तो शम्भुजी को जीवित पकड़कर ले ग्राग्रो, ग्रन्यथा उसको समाप्त कर दो ।

यह भी समाचार था कि शहंशाह ग्रौरंगज़ेब स्वयं बीजापुर पर ग्राक्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण करने का विचार रखता है।

इन समाचारों से यह आवश्यक समझा गया कि महाराज शम्भुजी को रायगढ़ से किसी अन्य स्थान पर चला जाना चाहिये और अकबर को शाह आज़म से भिड़ा देना चाहिये। इस कारण अब दुर्गादास से मिलना आवश्यक हो गया।

दुर्ग से बुलावा आने पर दुर्गादास हरिहर को अपने पूजा-पाठ में लीन छोड़ शम्भुजी को मिलने चल पड़ा। वह विस्मय कर रहा था कि यह एकाएक बुलावा किसलिए आया है ? अभी तक शहंशाह की जोधपुर के महाराज से सुलह का समाचार राजपूतों को नहीं मिला था। इस कारण दुर्गादास अपने सेवकों के साथ विस्मय करता हुआ दुर्ग में राजप्रासाद के बाहर जा खड़ा हुआ। आज उसे द्वारपाल के द्वारा भीतर सूचना भेजने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उसे आया देख द्वारपाल लपककर आया और झुककर सलाम कर बोला, "महाराज आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

दुर्गादास आज इतनी सतर्कता देख चकित था। वह अपने सेवकों को बाहर छोड़ द्वारपाल के साथ भीतर चला गया। इस दिन भेंट पर्याप्त लम्बी हुई। एक घण्टा लग गया उसे बाहर आने में। बाहर आ अपने साथियों को साथ ले अपने शिविर को चल पड़ा।

उसकी अनुपस्थिति में जोधपुर से दूत समाचार लेकर आये थे और जब दुर्गादास को यह बात पता चली तो वह वृद्ध मन्त्री के डेरे पर जा पहुँचा। उसे तुरन्त भीतर पहुँचा दिया गया। वृद्ध महोदय ने दुर्गादास को बैठने का संकेत कर कहा, "यह दूत जोधपुर से महाराणा का पत्र लाया है। वह पत्र तुम पढ़ लो।"

इतना कह उसने अपने सामने रखा पत्र उठाकर दुर्गादास के हाथ में दे दिया। पत्र में लिखा था—

'सरदार सुमेरसिंहजी को महाराणा का आशीर्वाद मिले। शहज़ादा अकबर की नालायकी को देख राजपूतों के दिल बैठने लगे थे; इस कारण शहंशाह के किंचित्मात्र संकेत पर ही हम संधि करने पर तैयार हो गये। अब संधि हो गयी है। दोनों ओर से हस्ताक्षर हो गये हैं और मुगल सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापस आगरा लौट गयी है। केवल जयपुर और अजमेर में सांकेतिक सेना की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ रह गयी हैं।

'अतः हम समझते हैं कि शहंशाह हमसे आशा करते हैं कि राजपूत शहज़ादा अकबर की सहायता छोड़ दें और हो सके तो उसे शहंशाह के हवाले कर दें। साथ ही हम समझते हैं कि दुर्गादास को अब अपने राज्य में आकर अपना काम सम्भालना चाहिये।

'हमारे लिए राजस्थान की प्रजा की रक्षा और खुशहाली प्रथम कर्तव्य है। हमें मराठा सरदारों से मेल-जोल वन्द कर देना चाहिये। यदि कभी आगरा पर मुगल शक्ति दुर्वल हुई तो वहाँ पर राज्य करना राजपूतों का अधिकार है, मराठों का नहीं।

'सुना है कि शहंशाह भी दक्षिण की ओर कूच कर रहा है। अतः हमें अब अपने घर का प्रवन्ध ठीक कर आगरा पहुँचने की तैयारी करनी चाहिये। अब वह अवस्था नहीं रही जो अकबर के आने के समय थी। उस समय काबुल और कन्धार प्रवल राज्य थे। आज वे दुर्वल हो चुके हैं। अतः अब आगरा, दिल्ली हमारे लिए नियत हैं।

'अब आप दुर्गादास को लेकर वापस आ जाइए।'

पत्र पढ़कर दुर्गादास विचार करने लगा कि निश्चय ही यह समाचार शम्भुजी को मिल चुका होगा। तभी उसके व्यवहार में परिवर्तन हुआ है। वह उस दूत के सम्मुख कुछ कहना नहीं चाहता था। इस कारण उसने मन्त्री महोदय से कहा, "वावा ! इस दूत के ठहरने और खाने-पीने का प्रवन्ध कर दो।"

वृद्ध ने ताली बजायी। एक सिपाही भीतर आया तो वृद्ध महाशय ने उसे दूत के विषय में उचित आज्ञा दे उसको विदा कर दिया। दूत के बाहर जाते ही दुर्गादास ने कहा, "वावा ! हम राजपूतों में सब हरामखोर हो गये हैं। हमारा समाचार मराठा महाराज को हमसे भी पहले मिल गया है। उसने इस समाचार से अपनी नीति पर विचार भी कर लिया है और यह दूत हमारे पास कम-से-कम एक दिन बाद आया है।"

"एक दिन नहीं दुर्गादास ! एक मास की देरी से आया है। सन्धि हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तीन मास हो चुके हैं और जोधपुर से सामान्य रूप में भी आने में एक मास से अधिक नहीं लगना चाहिये।"

"अब यह तो विदित नहीं कि यह प्रमादी व्यवहार दूत का है अथवा यह महाराणा की सूझ-बूझ में देरी है। कुछ भी हो; अब हम क्या करें?"

"मैं समझता हूँ कि वह मराठा सरदार जो कल से यहाँ है, कह रहा था कि राजपूत मूर्ख हैं, उसको बुलाकर पूछो। वह इस नयी परिस्थिति में हमें अकबर से कैसा व्यवहार करने को कहता है?"

"प्रश्न यह है।" दुर्गादास ने पूछा, "हम पुनः अकबर से मिलने जायें अथवा नहीं। मिलने जायें तो उसे क्या और कितना बतायें? यदि उसको छोड़ना ही है तो क्या वापस जोधपुर जायें अथवा बुन्देलखण्ड को लौट जायें?"

"मेरा मन कहता है कि हमने दोराहे पर भूल की थी। अकबर के साथ बातचीत में इतनी देर नहीं लगानी चाहिये थी जितनी कि हमने लगायी थी। सन्धि तो एक दिन में हो जानी चाहिये थी। यदि हम अजमेर पर वर्षा-ऋतु समाप्त होते ही आक्रमण कर देते तो अब तक हम आगरा पहुँच चुके होते, परन्तु बातचीत में ढील हुई। तदनन्तर आक्रमण करने में देर की। जब शहंशाह का पत्र हमारे अधिकार में आया था तो शहज़ादे को अपनी बीवियों सहित घेरे में ले रात को शहंशाह पर आक्रमण कर देना चाहिये था। ये सब भूलें हमने कीं।

"अब मराठों से बातचीत करें अथवा न। अकबर को अपने शतरंज के खेल का मोहरा बनायें अथवा न?

"यदि बनाना है तो कैसे? राजपूत मराठों का भी विश्वास नहीं करते। कुछ लोग तो यह समझते हैं कि मुगलों से मराठे हमारे बड़े शत्रु हैं।"

दुर्गादास ने एक सेवक हरिहर को बुलाने भेजा, परन्तु सेवक तुरन्त लौट आया और उसने बताया, "वह मराठा सरदार घोड़े पर सवार हो दुर्ग की ओर जाते देखा गया है। वह अभी वहाँ के लौटा नहीं।"

अब हरिहर की प्रतीक्षा होने लगी। वह नहीं लौटा। एक सेवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायगढ़ भेजा गया। वहाँ से पता चला कि कल वाला मराठा युवक वहाँ नहीं आया।

जब उसके चले जाने का विश्वास हो गया तो दुर्गादास और वृद्ध मन्त्री में विचार होने लगा कि क्या किया जाये ?

दुर्गादास ने शम्भुजी से हुआ वार्त्तालाप सुनाया। दुर्गादास ने बताया, "शम्भुजी का कहना है कि वे बीस सहस्र मराठा सिपाही अकबर को देंगे। हमें चाहिए कि दस सहस्र राजपूत सिपाही एकत्रित कर हम आगरा पर आक्रमण कर दें। अकबर अपने सहायकों को आगरा में लिखे। इस प्रकार चालीस सहस्र की सेना लेकर बुरहानपुर पर आक्रमण कर दिया जाये।

"शहंशाह वहाँ पहुँच गया है और उसने शाह आज़म को रायगढ़ पर आक्रमण का आदेश दे दिया है। वह स्वयं बीजापुर पर आक्रमण करना चाहता है। जब शहंशाह बीजापुर पर जाने की तैयारी में हो तो एकाएक अकबर बुरहानपुर पर आक्रमण कर दे। शहंशाह वापस आगरा की ओर भागेंगे और शाह आज़म बीजापुर की ओर। शम्भुजी पनहाला में शाह आज़म से दो-दो हाथ करने जा रहा है।"

इस सब बात को सुन वृद्ध महाशय ने कह दिया, "मुझे मराठों पर किंचित्-मात्र भी विश्वास नहीं। मुझे तो महाराणाजी की सम्मति पसन्द है कि हमें बुंदेलखण्ड को लौट जाना चाहिये और अपने राज्य को सुदृढ़ बनाने का कार्य आरम्भ कर देना चाहिये।"

"बाबा ! मेरी सम्मति यह है कि एक बार तो हमें शहज़ादा के पास चलना चाहिये और उसे समझाना चाहिये कि वह अपने बाप से सुलह कर ले। साथ ही उसे शम्भुजी का सन्देश दे देना चाहिये।"

"और उसके उपरान्त हमें क्या करना चाहिये ?"

"यह बात तो वहाँ की परिस्थिति जानकर ही बतायी जा सकती है।"

"परिस्थिति तो बन चुकी है। हमारी शहंशाह से संधि हो चुकी है। हम संधि भंग करने वाले राजपूत के रूप में विख्यात होना नहीं चाहते। इस कारण हम कोई ऐसा काम नहीं कर सकते जिससे यह सिद्ध हो कि हम संधि भंग करने वाले हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम संधि की शर्तें नहीं जानते। न ही हम यह जानते हैं कि संधि किस-किस के मध्य हुई है। एक बात और विचारणीय है कि संधि करने वालों को क्या-क्या बात अनिवार्य रूप में माननी चाहिये ?

"शहंशाह ने जयपुर और अजमेर में एक-एक मन्दिर की ईंट-से-ईंट बजा दी है। वे सब मन्दिर कौन बनवायेगा ? यदि हम बनवायेंगे तो क्या विश्वास है कि वे फिर तोड़ नहीं डाले जायेंगे ?"

"यह मन्दिर-मस्जिद राज्यान्तर्गत न हैं और न होने चाहियें। हमें यह मान लेना चाहिये कि यह ग़ैर-ज़िम्मेदार इशख़ास ने किया है।"

"उन ग़ैर-ज़िम्मेदार इशख़ास को पकड़ कर दण्ड देना तो हमारा अधिकार है।

"ठीक है, परन्तु अपने ही भाईयों में वैमनस्य को शान्त करने का उपाय भी तो होना चाहिये। इस उपाय में यदि कुछ हानि भी सहन करनी पड़े तो सहन करनी चाहिये। हम सब मन्दिर नये बनवा लेंगे।"

"इस पर भी यह बात संधि की शर्तों में आनी चाहिये। यदि यह बात नहीं तो मैं उस संधि को स्वीकार नहीं करूँगा।"

"देखो दुर्गादास ! एक बात महाराणा ने स्वीकार की है कि राजपूत हतोत्साहित हो रहे थे। इस कारण संधि करनी पड़ गयी है। जब राजपूतों का साहस बँधेगा तब फिर संधि भंग की जा सकती है।"

"कुछ भी हो बाबा ! हमें अकबर के साथ हुई बातचीत का भी ध्यान करना चाहिये। हमने उसे भी कुछ वचन दिये हैं। उनका पालन भी उतना ही आवश्यक है जितना कि शहंशाह से विवश हो की गयी संधि का।"

इस बात पर वृद्ध राजपूत निरुत्तर हो गया और मौन रह गया। अतः यह आज्ञा हो गयी कि अगले दिन राजपूत शिविर भंग होगा और पाली की ओर कूच किया जायेगा।

: ६ :

नाम का शहंशाह और वास्तव का बाग़ी शहज़ादा पाली के समीप एक गाँव में ठहराया गया था। इस गाँव का नाम शहंशाह की स्मृति में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पादशाहपुर रखा गया था ।

पूर्ण गाँव कच्चे मकानों का बना था । उनमें से एक बड़ा-सा मकान अकबर को रहने के लिए दे दिया गया। अन्य मकान अकबर के साथ आये सैनिकों को दे दिये गए । राजपूतों ने तो अपने खेमे लगा अपना शिविर पृथक् बना लिया था । सब मुगल और राजपूत मिलकर तीन सहस्र व्यक्ति थे । अकबर की एक पत्नी भी उसके साथ थी ।

दुर्गादास जब रायगढ़ से लौटा तो वह डेरा डालने के स्थान पर जाने से पूर्व अकबर से मिलने गया । अकबर बहुत ही निराशा और हतोत्साह था । आगरे के महलों में रहने वाला एक बिना नाम वाले गाँव के एक मिट्टी के कच्चे मकान में रहता हुआ अत्यन्त कष्ट अनुभव करता था । खाने-पीने का सामान भी अपर्याप्त और अत्यन्त घटिया था ।

अकबर के मुगल सिपाही भी धीरे-धीरे कम होते जाते थे । प्रतिदिन पाँच-दस के लापता होने की सूचना मिल जाती थी । सालारों का तो सदा यही कहना होता था कि इस क्षेत्र की औरतें जादूगरनी हैं । सिपाही उनके चंगुल में फँस जाते हैं तो वह उनका भोग करती हैं और फिर मार कर उनका मांस पका खा जाती हैं ।

अकबर को सालारों की ये बातें उसकी दिलजोही के लिए कही गयी प्रतीत होती थीं । वह राजस्थान में अपने सिपाहियों को भाग-भाग कर अपने बाप के सैनिक-शिविर की ओर जाते देख चुका था, परन्तु यहाँ सिपाही भाग कर कहाँ जाते होंगे, वह नहीं जानता था ।

बहुत यत्न करने पर वह एक दिन इस रहस्य को जान गया था । जिस दिन दुर्गादास शम्भुजी से भेंट कर लौटा था उसी दिन कुछ सिपाही एक मुसलमान पीर को पकड़कर अकबर के सामने लाये । सिपाहियों ने बताया, "यह शख्स शहंशाह-ए-आला के सैनिकों में आपके लिए बेएतमादी (अविश्वास) पैदा कर रहा था ।"

अकबर ने एक लम्बी दाढ़ी और सिर पर लम्बे बाल रखे तथा नीले रंग के वस्त्र और गले में तसबीह पहने हाथ-पाँव बँधे व्यक्ति को सामने खड़े देखा तो उसे पकड़ कर लाने वाले व्यक्तियों से पूछने लगा, "यह कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और इसे यहाँ क्यों लाये हो ?"

"हुज़ूर !" सालार ने कहा, "हम तो इसको वहीं दण्ड देने वाले थे, परन्तु दुर्गादास के प्रबन्ध में यह सम्भव नहीं था। अब इससे आप ही बातचीत कर जान सकते हैं। हमें यह कोई एक बात तो बताता नहीं।"

अकबर उससे प्रश्न पूछने ही वाला था कि दुर्गादास के आने की सूचना मिली। अकबर ने उसे भी भीतर बुला लिया। दुर्गादास सामने हाथ-पाँव से बँधे एक पीरों के कपड़ों में व्यक्ति को खड़ा देख प्रश्न-भरी दृष्टि में अकबर की ओर देखने लगा।

अकबर ने बताया, "यह कोई बाहरी व्यक्ति शिविर में घूम रहा था। सालार-ए-जंग ने इससे इसका हुलिया माँगा तो यह ठीक जवाब नहीं दे सका। इसलिए वह इसे पकड़ कर ले आया है।"

दुर्गादास ने पूछना आरम्भ किया, "हज़रत ! क्या नाम है आपका ?"

"मुहम्मद अख्तर।"

"यहाँ किसलिए घूम रहे थे ?"

"घूम तो रहा था खुदा की बनी इस दुनिया को देखने। घूमते-घूमते पता चला कि यहाँ दीनदारों का एक डेरा लगा है। इसलिए खाने-पीने की सहूलियत की उम्मीद में यहाँ आ पहुँचा था। यहाँ आकर पता चला कि ये दीनदार तो यहाँ की काफिर प्रजा से भी गये-गुज़रे हैं। किसी को भी पेट-भर खाना नहीं मिल रहा।

"यह जान मैं सिपाहियों को बता रहा था, उन पहाड़ियों से दूसरी ओर शहंशाह दिल्ली के एक शहज़ादा की फौज डेरा डाले पड़ी है। वहाँ हर रोज़ खाने को पुलाव और शोरबा मिलता है। रात के वक्त नाच-गाने वालियाँ भी मुयस्सर होती हैं। इस बदहाली में क्यों पड़े हैं ? वहाँ चले जाओ तो खुदा की रहमत बरसती मिलेगी। इस पर ये लोग मेरे हाथ-पाँव बाँध मुझे यहाँ ले आये हैं।"

दुर्गादास समझ गया कि यह फौज में बग़ावत फैलाने का काम कर रहा है, परन्तु वह यह भी जानना चाहता था कि यह स्वयं घूमता हुआ यहाँ आ पहुँचा है अथवा किसी ने इसे यहाँ भेजा है। वह अभी इस विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पूछना ही चाहता था कि एक सालार ने कहा, "हुज़ूर ! इससे यह भी पूछिये कि शहंशाह की बावत यह क्या कहता था ?"

"हाँ, हज़रत ! इन शहंशाह-ए-हिन्द के मुतल्लिक ग्राप क्या इरशाद फरमाते हैं ?"

"यह मैं सबके सामने नहीं बता सकता। हुज़ूर, ग्राप ग्रगर इनको यहाँ से हटा दें तो कुछ ग्रर्ज़ इनकी बावत भी कर सकता हूँ।"

दुर्गादास ने विचार किया कि मैं तो यहाँ से जाऊँगा नहीं। इस कारण किसी प्रकार के भय की ग्राशंका न करते हुए सालारों को कमरे से बाहर प्रतीक्षा करने को कह उस पीर से पूछने लगा, "हाँ, तो बताइये साहब ! इनके मुतल्लिक ग्राप क्या कहते हैं ?"

"ग्रभी-ग्रभी बुरहानपुर से ग्रा रहा हूँ ग्रौर वहाँ शहंशाह ग्रागरा की फौज को देखकर यह कहना चाहता हूँ कि इन कुछ सौ राजपूतों के भरोसे यह जी नहीं सकते। चालीस हज़ार सिपाहियों के साथ शाह ग्राज़म यहाँ से तीन-चार पड़ाव पर पड़ा है। उसे ग्रभी तक यह पता नहीं कि बगावत करने वाले यहाँ हैं। ग्रगर उसको पता चल गया तो ये साहब पकड़ कर बुरहानपुर पहुँचा दिये जायेंगे ग्रौर इनका हशर भी वही होगा जो शहंशाह के बड़े भाई दारा का हुग्रा था।"

"तो तुम।" दुर्गादास की समझ में बात ग्रा गयी ग्रौर उसने पूछ लिया, "शहंशाह के राजदूत बनकर यहाँ ग्राये हो ?"

"मैं शहंशाह ग्रब्दुल मुजफ्फर मुहीमुद्दीन मुहम्मद ग्रौरंगज़ेब बहादुर ग्रालमगीर पादशाह गाज़ी का एलची नहीं हूँ। मैं उस खुदावन्द करीम का एक ग्रदना खादिम हूँ जो परवरदिगार ग्रपने बन्दों की परवरिश के लिए फिकरमन्द रहते हैं। मैं उसी का यह हुक्म लेकर ग्राया हूँ कि शहज़ादा ग्रकबर को खुद-ब-खुद शहंशाह ग्रालमगीर के कदमों में चला जाना चाहिये। खुदा की रहमत का वही एक दरवाज़ा इनके लिए खुला रह गया है। ग्रगर यह ग्रपने दिल से कुफ्र को निकाल कर दुनिया में सबसे बड़े दीन के हिमायती के कदमों में चले जायेंगे तो यह खुदा के घर में जगह पायेंगे। नहीं तो शैतान इनको घसीट कर दोजख में ले जायेंगे ग्रौर फिर खुदा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहमत का हाथ वहाँ तक नहीं पहुँच सकेगा।"

दुर्गादास इस पीर मुहम्मद अख्तर की बात को समझ रहा था। उसे विश्वास हो गया था कि यह झूठ बोल रहा है कि यह औरंगज़ेब का भेजा जासूस ही है। यह झूठ ही अपने को खुदा दोस्त और खुदा का बन्दा बता रहा है। इन्हीं शब्दों में शहंशाह औरंगज़ेब अपने मुसलमान शत्रुओं के डेरे में बगावत फैलाने के लिए अपने को प्रकट किया करता था। वह एक महीना भर अकबर के डेरे से गैर-हाज़िर रहकर लौटा और इतने ही काल में उसने अनुभव किया था कि अकबर के साथियों की संख्या में भारी कमी हुई है।

इस पीर मुहम्मद अख्तर की बातें सुन वह समझ गया कि इसके कथन अथवा इस जैसे और जासूसों के कथन से मुगल सिपाही अकबर को छोड़कर भाग रहे हैं।

दुर्गादास ने इस पीर की ओर देखकर कहा, "हज़रत! आप अपने ही बयान से दो अपराधों के अपराधी सिद्ध हो गये हैं।

"एक तो यह कि आप मुझे काफिर कह रहे हैं। यह हम सहन नहीं कर सकते। दूसरा अपराध यह है कि आप शहंशाह के लड़के को दिल में कुफ्र भरा हुआ कह रहे हैं।

"ये दोनों अपराध क्षमा के योग्य नहीं। इस कारण आपको यह दण्ड दिया जाता है कि सब मोमिनों के सामने आपकी करतूत बताकर आपको नंगा कर दिया जाये। मेरा मतलब यह है कि नकली पहरावा जो आपने पहन रखा है उतारकर आपको वहाँ भेज दिया जाये जहाँ से आप आये हैं।"

पीर मुहम्मद अख्तर समझ रहा था कि वह सहज ही छूट रहा है। उसने कहा, "मैं आपको काफिर नहीं मानता।"

"तो क्या मानते हो?"

"आप तो खुदा दोस्त एक दीनदार आदमी हैं। भला आपको मैं काफिर कैसे कह सकता हूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैं तो दीनदार नहीं हूँ। मैं हिन्दू हूँ और इस पर भी अपने को काफिर नहीं मानता।"

"पर मैं तो राजपूतों के सरदार दुर्गादास की बात कह रहा था उसने ही शहज़ादा को वरगला कर अपने बाप के खिलाफ किया हुआ है।"

"और वह दुर्गादास मैं हूँ।" दुर्गादास ने कहा। उसने ताली वजा सिपहसालारों को भीतर बुला लिया और आज्ञा दे दी, "इसको दो अपराधों का दोषी पाया गया है। एक तो यह कि शहंशाह अकबर को धमकी दे रहा है और दूसरे यह कि मुझे काफिर कह रहा है।

"इन अपराधों का दण्ड यह है कि इसे पिदर और ब्रादर कुश औरंगज़ेब का भेजा हुआ जासूस घोषित कर इसे नंगा कर खेमे से निकाल दिया जाये।"

सालार उस पीरों के वेश में जासूस को ले गये। उसके बाहर चले जाने पर दुर्गादास ने शम्भुजी से भेंट का वृत्तान्त बताया। उसने कहा, "एक सप्ताह से ऊपर भेंट के लिए प्रतीक्षा करने पर हमें एक पत्र मिला। पत्र शम्भुजी के पुरोहित का लिखा हुआ था। उसमें पुरोहितजी ने लिखा था, 'महाराज को बहुत प्रसन्नता है कि मुगल शहंशाह अकबर द्वितीय ने आगरा के तख्तो-ताज पर अपना दावा पेश किया है। वह अपने राज्य की ओर से उनके दावे की हद मुमकिन तरीके से ताईद करेंगे। मगर उस ताईद में हम क्या कर सकते हैं और हमको क्या करना चाहिये, यह सब गौर तलब है। इसके लिए वक्त दरकार है।

'तब तक के लिए महाराज चाहते हैं कि शहंशाह अकबर अपने ज़राय इकट्ठे करें। हम भी अपनी ताकत का जायजा लगायेंगे। तब महाराज जल्दी ही शहंशाह से मिलकर मुहिम की तजवीज़ पर गौर करेंगे।

'तब तक के लिए शहंशाह अकबर और उसके साथियों को चाहिये कि अपनी ताकत को फरोग दें।

'इस वक्त महाराज एक ज़रूरी काम से रायगढ़ से बाहर जा रहे हैं। इस वजह से राजा दुर्गादास से मिल नहीं सकते। मिलने से कुछ नतीजा भी नहीं निकलेगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हुजूर ! इस पत्र के मिलने पर हम लौट अपने शिविर में चले आये थे। हम अगले दिन वापस कूच करने की योजना बनाने लगे थे। एकाएक अगले दिन बहुत सुबह रायगढ़ दुर्ग से एक दूत आया और हमें फौरन महाराज से भेंट करने के लिए दुर्ग में उपस्थित होने के लिए कह गया।

"इसलिए मैं फौरन वहाँ पहुँचा और जाते ही भेंट हुई। भेंट में यह बात तय हुई कि महाराज वीस सहस्र मराठे शहंशाह की मदद के लिए भेज देंगे और हम राजस्थान से आपकी मदद के लिए जितने हो सकें सैनिक मँगवा लें। यह सेना शीघ्र तैयार कर लेनी चाहिये और शाह आज़म, जो आपको पकड़ने के लिए बढ़ रहा है, उसको शिकस्त देकर भगा दिया जाये।"

"जहाँ तक महाराज के आपसे मिलने की बात है, वह तो वे बहुत जल्दी वक्त निकाल कर यहाँ आयेंगे। तब आगरा पर आक्रमण की तैयारी की जायेगी।"

अकबर ने कहा, "मराठा फौज कब आने वाली है ?"

"हमें यह बताया गया है कि हमको अपने आदमियों के साथ तैयार हो जाना चाहिये। आज़म अभी बीजापुर से चलने वाला है। मराठा सेना उसको जंग देगी। यदि मुमकिन हुआ तो शहंशाह तक पहुँचने से पहले ही; नहीं तो जहाँ शहंशाह होंगे।"

"यह सब तो कुछ भी न हुआ।" अकबर ने निराशा प्रकट करते हुए कहा।

"यह एक वचन मात्र है और मराठों के वचन का क्या कहा जा सकता है ?"

"अब हमें क्या करना चाहिये ?"

"मैं समझता हूँ कि आप शहंशाह के सालारे-जंगों को एक गश्ती चिट्ठी लिखिये और देखिये कि कौन-कौन आपकी हिमायत के लिए आते हैं ?"

"मैं राजस्थान में सेना भरती करने जा रहा हूँ। राजपूत सिपाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर सुमेरसिंह के अधीन यहाँ रहेंगे। हमको अभी शाह आज़म से टक्कर लेने से बचना चाहिये। जब तक अपनी पूरी तैयारी न हो जाये तब तक आमना-सामना नहीं होना चाहिये।"

"देखिये जहाँपनाह! यह शम्भुजी के अपने हक में है कि वह शहज़ादा आज़म को महाराष्ट्र में घुसने न दे और वह अपने राज्य की रक्षा के लिए उससे मोर्चा लेगा। आप यहाँ पर सुरक्षित हैं।"

"मैं देखता हूँ कि कितनी सहायता राजस्थान से ला सकता हूँ। मैं कल यहाँ से चल दूँगा और वर्षा आरम्भ होने से पूर्व मैं लौटने की कोशिश करूँगा। राजपूत सेना तो गुजरात के रास्ते से ही यहाँ आ सकेगी।"

अकबर के मन में एक दूसरी ही बात थी। उसने कहा, "राजा दुर्गादास! यहाँ हालत यह है कि एक ही महीने में आधे के करीब सिपाही भाग गये हैं। आज इस पीर के लिबास में इस जासूस को देख मैं समझा हूँ कि और भी लोग तरह-तरह के लिबासों में यहाँ घूम रहे हैं और यहाँ अगर यही हालत जारी रही तो तुम्हारे राजस्थान से लौटने तक यहाँ एक भी मुगल सिपाही नहीं रह जायेगा।"

"जहाँपनाह! आप भी कोशिश करिये कि इनके दिमाग में अपने वालिद साहब के खिलाफ किसी किस्म का जज़बा पैदा हो जाये। तब ही ये लोग अपना जानो-माल आप पर न्योछावर करने के लिए तैयार हो सकेंगे।"

"मैं इस बात को समझ रहा हूँ। मगर मैं अपने को गाज़ी, अपने बाप से ज़्यादा कट्टर मुसलमान, साबित कर नहीं सकता और मुसलमान फौज को इस्लाम से ज़्यादा कोई भी बात मायल नहीं करती।

"सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि हिन्दू मुझे धोखेबाज कट्टर मुसलमान का लड़का होने की वजह से मेरा इतबार नहीं करते और मुसलमान मुझे आगरा के गाज़ी शहंशाह के खिलाफ देख मेरा साथ नहीं देते।

"मैं तो हिन्दू हो जाता, अगर हिन्दू मुझे अपने में शामिल करने को तैयार होते। मगर यह आपकी जाति में मुमकिन नहीं।"

"हाँ। मगर हिन्दू भी तो अब हिन्दू के नाम पर लड़ने-मरने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार नहीं। इसका कारण यह है कि हमारे सन्त, महात्मा हिन्दू-मुसलमान में भेद नहीं मानते। परन्तु आप हिन्दू अच्छे और बुरे में भेद करते हैं और यह कहते हैं कि अच्छा और बुरा जन्म से होता है। जो हिन्दू के घर में पैदा हो गया वह अच्छा ही है और जो अहिन्दू के घर में पैदा हुआ वह अच्छा हो नहीं सकता।"

"तब तो मेरे लिए कोई रास्ता नहीं है।"

"हाँ। आपके लिए शहंशाह बनने का मार्ग मज़हब नहीं है। आपको तो मज़हबों से ऊपर उठकर कोई ऐसा नारा लगाना चाहिये जिससे हिन्दू-मुसलमान दोनों आपकी हिमायत कर सकें।"

"यह क्या हो सकता है ?" अकबर का प्रश्न था।

"यह मैं तो सोच नहीं सका। मगर इन दिनों शिवाजी का एक एहलकार मिला था। वह स्वर्गीय मराठा महाराज के अंग-रक्षकों का नायक था। वह कहता था कि मुसलमानों के पिछले पाँच सौ वर्ष के व्यवहार से तो हिन्दू-मुसलमान एक ही छत्रछाया में लाये जाने मुमकिन नहीं। कम-से-कम कई सौ वर्ष तक यह नहीं हो सकेगा। तब तक हिन्दुओं को एक ध्वज के नीचे एकत्रित होकर अपना राज्य स्थापित करना चाहिये। कुछ काल के लिए मुसलमानों को हिन्दुओं के मातहत रहना होगा। बाद में दोनों मज़हबों में एकमयता पैदा हो जायेगी।

"मगर यह मुमकिन नहीं। इस्लाम का मज़हब ही हुकूमत है। अगर हुकूमत न रही तो इस्लाम भी नहीं रहेगा। हमारे बानी-उल-इस्लाम हज़रत मुहम्मद साहब तो तब तक तबियत में बैचेनी महसूस करते रहे थे जब तक उनको एक राज्य नहीं मिल गया।"

"नहीं हुज़ूर ! मेरा इल्म तो यह बताता है कि वह हुकूमत के लिए इतने बेचैन नहीं थे जितने कि अपने खयाल के पैराओ बनाने के लिए।"

"मेरे उस्ताद ने यह नहीं बताया।"

दुर्गादास ने बात बदल दी। वह डरता था कि कहीं हज़रत के विषय में कोई ऐसी गुस्ताखी की बात न कह बैठें जिससे यह मासूम मुसलमान भी भड़क उठें। उसने कहा, "खैर, छोड़िये इस बात को। तो मैं कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ से चल देना चाहता हूँ। बुंदेलखण्ड में जाकर आपके नाम पर भरती करने की कोशिश करूँगा।"

अकबर ने दुर्गादास को जाने की स्वीकृति देने के लिए कह दिया, "खुदा हाफिज़।"

: १० :

हरिहर रायगढ़ से चल एक पन्द्रह-बीस झोंपड़ों के गाँव में उबली मक्की नमक-मिर्च लगाकर खा और मध्याह्न में आराम कर पूर्व की ओर चल पड़ा। उसका विचार था कि शहज़ादा आज़म से मिलना चाहिये। औरंगज़ेब के सब शहज़ादे, अकबर और शाह आज़म के अतिरिक्त अन्य सभी हरिहर के बचपन के परिचित थे।

शाह आज़म तो बीजापुर के क्षेत्र में था और औरंगज़ेब बुरहानपुर में था। जब हरिहर मार्ग में एक गाँव में बीमार पड़ा था तो इसे समाचार मिला कि मराठे घुड़सवार बहुत बड़ी संख्या में बुरहानपुर की ओर जाते दिखायी दिये हैं।

सूचना देने वाला उस घर का स्वामी वैद्य ब्राह्मण था जिसमें हरिहर ठहरा हुआ था। यह था पण्डित शिवशंकर खर्वे। हरिहर यात्रा में गाँव के शिव-मन्दिर में रात को सोया तो ज्वह-ग्रस्त हो गया था। प्रातः उसने किसी वैद्यराज का पता पूछा तो पण्डित शिवशंकर का मकान बता दिया गया। वैद्यजी ने हरिहर को देखा तो पूछ लिया, "युवक! तुम किधर से आये हो और कहाँ जा रहे हो?"

"पण्डितजी! रायगढ़ से आ रहा हूँ और औरंगाबाद जा रहा हूँ।"

इस सूचना से पण्डित शिवशंकर परेशानी में मुख देखता रह गया। उसे मौन अपना मुख देखते पा हरिहर ने पूछ लिया, "क्या बात है वैद्यराज?"

"तुम कुछ समय के लिए जा नहीं सकोगे। यह मंथर ज्वर है। शीघ्र ठीक नहीं हो सकेगा। कहाँ ठहरे हो?"

"शिव मन्दिर में।"

"वह स्थान ठीक नहीं। तुम मेरे घर में आ जाओ। बाहर बैठकघर में तुम्हारे लिए खाट लगवा देता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पण्डितजी ! आपको बहुत कष्ट होगा।"

"तुम किसी भले परिवार के घटक प्रतीत होते हो। मन्दिर में तो ज्वर में विषमता आ जायेगी। वहाँ सेवा के लिए कौन रहेगा ?"

हरिहर वैद्यजी के यहाँ रह गया। उसने अपना घोड़ा और अन्य वस्त्र वहाँ से मँगवा लिये।

हरिहर को वैद्यजी के यहाँ ठहरे एक मास से ऊपर हो चुका था। ज्वर शान्त हो गया था, परन्तु दुर्बलता अधिक कष्ट दे रही थी और वैद्यजी ने केवल दूध ही लेने को कहा हुआ था। इस कारण यात्रा चल नहीं सकती थी।

वैद्य शिवशंकर प्रायः हरिहर से महाराज शिवाजी के काल की बातें सुनने में रुचि रखता था और यह जानकर कि हरिहर स्वर्गीय महाराजा के दरबार में रहा है, उसकी बातें सुनता रहता था। दोनों में विचार-ऐक्य हो रहा था।

एक दिन पण्डित शिवशंकर घर के बाहर से आया तो हरिहर को बताने लगा, "आज तो बहुत से मराठे घुड़सवार बुरहानपुर जाते दिखाई दिये हैं।"

"कितने होंगे ?"

"पाँच-दस हज़ार तो होंगे।"

"साथ खेमे भी थे ?"

"नहीं। वे तो आँधी की भाँति दक्षिण से आये और उत्तर को चल दिये।"

"उनका नेता कौन था ? इसका कुछ पता चला है ?"

"वे गाँव में ठहरते तो पता चलता। सब एक समान ही थे।"

हरिहर समझ नहीं सका था कि यह धावा किधर हो सकता है ? उस स्थान से उत्तर की ओर बड़ा नगर बुरहानपुर ही था और वहाँ उसकी सूचना अनुसार शहंशाह औरंगज़ेब साठ सहस्र सेना के साथ टिका हुआ है। वह यह समझ नहीं सका था कि ये चार-पाँच सहस्र मराठे वहाँ क्या करने जा रहे हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवाजी के काल की एक परम्परा तो उसे स्मरण ग्रा गयी थी कि ग्रभी भी मराठा सेना बिना किसी प्रकार के भारी बोझे को साथ लिये जा रही थी।

एक सप्ताह ग्रौर व्यतीत हो गया था। जब हरिहर उठकर गाँव में घूमने लगा था। मध्याह्न का समय था ग्रौर उसने देखा कि मराठा सैनिक उत्तर से वापस लौट रहे हैं। वे बहुत प्रसन्न थे ग्रौर धड़ाधड़ घोड़े भगाते हुए गाँव में से निकल गये।

हरिहर सड़क के किनारे खड़ा हो सैनिकों को जाते देखता रहा। उसे कुछ ऐसा प्रतीत हुग्रा कि सेना के बीचोंबीच शम्भुजी जा रहा था। महाराज के बढ़िया ग्रश्व के ग्रतिरिक्त ग्रन्य कुछ भी लक्षण नहीं थे जिनसे वह दूसरों से विलक्षण प्रतीत हो सकता था। हरिहर को घोड़ा देखकर सन्देह हुग्रा तो उसने बहुत ध्यान से घुड़सवार की ग्रोर देखा ग्रौर पहचान गया।

हरिहर ने संख्या गिनने का भी यत्न किया। घुड़सवार पंक्तिबद्ध नहीं थे। इस कारण गिनती करनी सुगम नहीं थी। इस पर भी हरिहर ने यत्न किया। उसका ग्रनुमान था कि लगभग पाँच सहस्र ही थे। ग्रभिप्राय यह कि मरने वालों की संख्या बहुत कम थी। कुछ घोड़ों पर बहुत-सी गाँठें लदी हुई थीं। ग्रर्थात् उन पर लूट का माल लदा था।

हरिहर घर पर ग्राया तो पण्डित शिवशंकर भी सैनिकों को लौटता देख ग्राया था। उसने एक बात ग्रौर बतायी। उसने बताया, "गाँव के एक रहने वाले ने बताया है कि कल मराठा सैनिकों की एक टुकड़ी घोड़ा-गाड़ियों में बहुत माल लादकर दूसरे मार्ग पर जाते देखी गयी है।'

हरिहर समझ गया कि कदाचित् एक टुकड़ी मुगलों को छलने के लिए है। कौन-सी ? वह कह नहीं सका।

इसके दो दिन उपरान्त यह बात पूर्ण महाराष्ट्र में विख्यात हो गयी कि बुरहानपुर नगर का बाहरी क्षेत्र लूट लिया गया है ग्रौर वहाँ से कई करोड़ रुपये की सम्पत्ति मराठे लूटकर ले गये हैं।

यह भी विख्यात हो गया कि शहंशाह के सैनिकों को पता तब चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब लूट-पीट कर मराठे लौट चुके थे ।

हरिहर इस समाचार से बहुत प्रसन्न था और मन में विचार करने लगा था कि उसका महाराज शम्भुजी से नाराज़ होकर चला आना ठीक था अथवा नहीं ?

इस पर जब वह कवि कैलाश का रूप और बात करने का ढंग स्मरण करता था तो वह अपने निर्णय को ठीक ही समझता था। उससे उसे घृणा हो गयी थी ।

इस घटना के दो-तीन दिन बाद हरिहर ने जाने की इच्छा प्रकट की तो वैद्यजी ने उसकी नाड़ी एवं पेट की परीक्षा की और फिर जाने की स्वीकृति दे दी। स्वीकृति देते हुए वैद्यजी ने पूछा, "अब किधर जाने का विचार है ?"

"मैं शहज़ादा आज़म के पास जा रहा हूँ और यदि उसके मन में विश्वास जमा सका तो उसको अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह पर तैयार करने का यत्न करूँगा।"

"इससे क्या होगा ?"

"शत्रु के दुर्ग के नीचे बारूद रखकर उसकी एक प्राचीर उड़ा दूँगा। तब महाराज शम्भुजी के सैनिकों को दुर्ग में घुसने की सुगमता हो जायेगी।"

शिवशंकर इतनी दूर की सूझ-बूझ नहीं रखता था। इस कारण विस्मय में मुख देखता हुआ चुप रहा ।

हरिहर की सूचना के अनुसार शहज़ादा आज़म औरंगाबाद में टिका हुआ था और उसे आज्ञा थी कि बीजापुर को विजय करके लौटे। बीजापुर की सीमा पर छुट-पुट झगड़े और झड़पें हो रही थीं, परन्तु पूर्ण स्तर पर आक्रमण की योजना नहीं बन रही थी ।

इसका कारण थी शहरयार बानो। यह बीजापुर के सुल्तान सिकन्दर आदिल शाह की बड़ी बहन थी। सम्वत् १७३३ में जब मुगलों के साथ बीजापुर की संधि हुई थी और सुल्तान बीजापुर की मृत्यु हुई थी तब उसका लड़का सिकन्दर आदिल शाह चार वर्ष का बच्चा था और राज्य के सरदारों के हाथ में चला गया। उनमें ईर्ष्या-द्वेष भड़क उठा और गृह-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध आरम्भ हो गया। परिणाम यह हुआ कि औरंगज़ेब ने बहादुर खाँ को एक बड़ी सेना देकर आक्रमण के लिए भेज दिया। वह जब उस स्थिति में भी बीजापुर को विजय करने में सफल नहीं हुआ तो उसे वापस बुलाकर दिलेर खाँ को दक्षिण का गवर्नर बना भेज दिया और उसने बीजापुर के गृह-युद्ध का लाभ उठा एक दल को अपने साथ मिलाकर बीजापुर के मुगल सम्राट् के अधीन कर दिया। सिदि मासूद ने जयचन्द की भूमिका निभायी और सुल्तान की बहन को शाह आज़म की पत्नी बना भेज दिया।

इस संधि से मुगल सल्तनत को कई लाभ हुए, परन्तु औरंगज़ेब का विचार कि बीजापुर शिवाजी को पराजित करने में मुगलों की सहायता करेगा, पूर्ण नहीं हुआ।

जब शिवाजी का देहान्त हुआ तो औरंगज़ेब ने मराठों को दुर्बल समझ पुनः इस राज्य को अपने राज्य में सम्मिलित करने का यत्न आरम्भ कर दिया। दिलेर खाँ ने शहंशाह की यह नीति चलाई कि शत्रु के घर में फूट डलवा दी जाये और उस फूट का लाभ उठाकर शत्रु का नाश कर दिया जाये परन्तु वह उसको पूर्ण नहीं कर सका। न तो वह बीजापुर को मराठों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए तैयार कर सका और न ही मराठों के घर में फूट का लाभ उठा सका।

शहंशाह उससे निराश हुआ तो शहज़ादा आज़म को दक्षिण का सूबेदार बनाकर भेज दिया। शहज़ादा आज़म अपनी नयी बीवी को लेकर औरंगाबाद में पहुँच गया और बीजापुर वालों को मराठों के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार करने लगा।

यहाँ तक तो उसकी बीवी सहरयार बानो ठीक समझती थी, परन्तु इसके आगे किसी प्रकार की बात के लिए वह अपने पति को रोकती रहती थी।

एक दिन उसने अपने पति को समझाया, "भला आप अपने वालिद शरीफ की नीति को गलत समझते हुए भी पालन करने का यत्न किसलिए करते हैं ?"

"क्योंकि वह मेरा बाप है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और क्या मैं बिना बाप के पैदा हुई हूँ ? मेरे भी पिता रहे हैं। माँ अब भी बीजापुर के महलों में रहती है। मेरा भाई है जो वहाँ का सुल्तान बनने वाला है। भला मैं किसलिए अपने सब सम्बन्धियों के खिलाफ राय दे सकती हूँ ?"

"मैं मर्द हूँ और तुम औरत हो। हुकूमत में मर्द की बात चलती है, औरत की नहीं।"

"ठीक है, आप चलाइये। मैं आज से अपने को मलिका कहना छोड़ देती हूँ और आज से आपकी बान्दी ही समझ लेती हूँ।"

"यह कैसे हो सकता है ? तुम मेरी मलिका हो।"

"तो मेरी बात मानिये। बीजापुर को छोड़िये। उनसे इतनी ही आशा रखिये कि वह मुगल शहंशाह के शत्रु के सहायक नहीं होंगे।"

शहरयार बानो के सौन्दर्य से तथा सभ्य एवं सुसंस्कृत व्यवहार से शहज़ादा अति प्रभावित था। इस कारण वह जब उसकी युक्तियों से निरुत्तर हो जाता था तो आक्रमण की तैयारी बन्द कर देता था।

एक दिन समाचार आया था कि बुरहानपुर के बाहरी क्षेत्र में शम्भुजी ने आक्रमण किया और वहाँ की जनता की करोड़ों रुपये की सम्पत्ति लूट-कर ले गया है।

इस पर शहरयार बानो ने शोक प्रकट दिया, परन्तु शहज़ादा को प्रसन्नता अनुभव हुई। शहरयार ने बताया, "यह मराठा सरदार बहुत ही बहादुर है। यह एक बहुत ही शोक का अवसर है कि ऐसे बहादुर आदमी को हम अपना शत्रु बना रहे हैं। यह कमज़ोरों की नीति है कि वे अपने को बहादुरों का मित्र नहीं बना सकते।"

"कमज़ोर तो नहीं कह सकती, बेगम ! हाँ, कुछ कमअक्ल वाला कहा जा सकता है।"

"देखिये महाराज ! कमअक्ल ही कमज़ोर होते हैं। यह यकीन जानिये कि वह दिन दूर नहीं जब आपकी सल्तनत सिकुड़नी शुरू हो जायेगी।"

"परन्तु यह किसी तरह भी बहादुरी का काम नहीं कहा जा सकता। यह तो चोर-डाकुओं की बात ही कही जा सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और शत्रु के दल वालों में अपने जासूसों द्वारा झूठे वायदे कर शत्रु दल वालों को लड़वा देना और फिर जिनसे वायदे किये हैं, वह भी पूरे न करना बहादुरी है क्या ?"

शहज़ादा आज़म भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। बात ठीक थी। शहज़ादा के बाप ने कोई भी जंग लड़कर नहीं जीती। सदा धोखेधड़ी से ही शत्रु को परास्त किया था। उस धोखेधड़ी की तुलना में शम्भुजी का चोरी-चोरी आक्रमण तो ठीक ही था।

इस प्रकार की दलीलों से वह बीजापुर को अपना मित्र बनाना ठीक समझने लगा था और आक्रमण करने को मुगल साम्राज्य के लिये अहित-कर मानने लगा था।

इन दिनों ही हरिहर एक मुगल के पहरावे में शहज़ादा के दरबार में आ उपस्थित हुआ। उसने दीदार हासिल करने और कुछ भेंट में देने की याचिका की थी और जब उसे शहज़ादा के सामने उपस्थित किया गया तो हरिहर ने मुगलिया ढंग पर झुककर तीन बार हाथ हिला सलाम अर्ज़ की और फिर अपनी जेब से सुपारी के आकार-विस्तार का एक हीरा एक मखमली डिबिया में भेंट-स्वरूप सम्मुख रख दिया।

शहज़ादा ने हीरा उठाया और बहुत ध्यान से देखा। उसे असली हीरा जान अपने एक ओर रख पूछ लिया, "आपका नाम क्या है ? कहाँ से आये हैं और किस गर्ज़ से आये हैं।"

"हुज़ूर ! नाम है मिर्ज़ा हिदायत-उल्ला उर्फ हरिहरनाथ। इस वक्त आ रहा हूँ सूरत से और अर्ज़ी है खिदमत हासिल करने के लिए।"

: ११ :

शहज़ादा ने हिदायत को बचपन की अवस्था में ही देखा था। उस समय से इस समय के हिदायत में अन्तर तो पड़ा था, परन्तु उसके मुख की मुस्कराहट में अन्तर नहीं आया था और यह मुस्कराहट उसकी अपनी माँ से मिलती थी। इसी मुस्कराहट ने औरंगज़ेब को महताब बेगम के सम्मोहन में बाँधा हुआ था और इसके कारण ही वह हिदायत को अपने पास रखने के लिए लालायित रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहज़ादा ने अपनी माँ जो एक ईरानी स्त्री थी, से सुन रखा था कि उसका बाप अपने बाप की बेगम को अपनी बेगम बनाना चाहता था और उस बेगम ने अपने पुत्र समान व्यक्ति की बीवी बनने के स्थान जल कर मर जाना उचित समझा था। वह मरने से तो बच गयी थी, परन्तु अत्यन्त कुरूप हो गयी थी और वह थी बेगम महताब। शाह आज़म ने महताब को देखा था और सामने बैठे शख्स के मुख पर भी महताब की-सी मुस्कराहट देख समझ गया।

शहज़ादा यह भी जानता था कि महताब एक हिन्दू की लड़की है और उसका भाई तथा लड़का शिवाजी की सेवा में कार्य कर रहे हैं।

शहज़ादा ने जब हिदायत का नाम सुना तो सब इतिहास स्मरण कर हँस पड़ा। हँसते हुए उसने पूछा, "और मराठा बागी की नौकरी का क्या हुआ ?"

हिदायत ने अपना नाम जान-बूझकर बताया था और वह चाहता था कि अपने असली रूप में ही शहज़ादा से मिले।

शहज़ादा को हँसते देख उसने कहा, "हुज़ूर ! महाराज शिवाजी जिनकी खिदमत में मैं था, स्वर्गवासी हो गये हैं। अतः उनके सब खिदमतगार निकाल दिये गए हैं। मैं एक वर्ष से सूरत में रह रहा हूँ। तबीयत ने जोश मारा है और मैं अब अपने खानदान वालों की खिदमत के लिए हाज़िर हो गया हूँ।"

"मगर तुम तो हमारे दुश्मन के साथ रहे हो। भला हमारे यहाँ नौकरी की उम्मीद किस तरह कर सकते हो ?"

"मेरे लिए दोनों बराबर हैं। मैं शिवाजी को आपका शत्रु नहीं मानता था। अगर वह आपके शत्रु थे तो उन्हीं मायनों में जिसमें आप उनके शत्रु हैं।"

"मगर हम तो शहंशाह हैं।"

"आपके खानदान को किसने शहंशाह बनाया है ?"

"हमारी कुव्वत-ए-बाज़ू ने।"

"और उसी कुव्वत-ए-बाज़ू से आप दक्खिन के शहंशाह बनने जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं ?"

"हाँ । इरादा तो यही है ।"

"और महाराज शिवाजी आपकी कुव्वत को अपनी कुव्वत से दक्खिन का शहंशाह बनने से रोक रहा था । वह एक हद तक ही कामयाब हुआ था कि परमात्मा ने उसे बुला लिया ।"

"इसीलिए तो हम समझते हैं कि अब हम यहाँ के शहंशाह बन जायेंगे ।"

"ठीक है । बन सकें तो बनिये । यह तो कुव्वत-कुव्वत का मुकाबला है । मराठे अभी तक ज़िन्दा हैं ।

"मगर हुज़ूर ! इससे मेरा क्या ताल्लुक है ? मैं तो हुज़ूर की खिदमत के लिए आया हूँ ।"

"क्या खिदमत करोगे ?"

"मैं यह कोशिश करूँगा कि आपकी हुकूमत जितनी है उतनी कायम रह सके । ऐसा मालूम होने लगा है कि दूसरे आपसे ज़्यादा कुव्वत वाले हैं ।"

"तो वह दिल्ली और आगरा पर कब्ज़ा क्यों नहीं कर सके ?"

"गज़नी वालों को भी तो हिन्दुस्तान में पाँव जमाने में चार सौ साल लगे थे । हुज़ूर, हुकूमतों के मसले इसी तरह चलते हैं । आखिर आपके खानदान वाले भी तो दक्षिण में अपनी हुकूमत बनाने की कोशिश पिछले डेढ़ सौ साल से कर रहे हैं ।"

"और अब हम कामयाब हो रहे हैं ?"

"ऐसे ही जैसे कि बुरहानपुर में शहंशाह-ए-अजीम कामयाब हो रहे हैं ।"

शहज़ादा को विदित था कि मुग़ल सैनिक अपने-अपने हरम में सो रहे थे कि मराठा सिपाही नगर को लूट रहे थे । इस पर वह मुस्कराया और कहने लगा, "मराठों के डाके के वक्त मुगल सिपाही एक दूसरे काम में मशगूल थे । वे शहज़ादा के लिए सिपाही तैयार कर रहे थे ।"

हरिहर भी मुस्कराया और बोला, "मेरे मामा पण्डित विश्वनाथ आपके वालिद साहब के भी मनसबदार रहे हैं और महाराज शिवाजी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी सलाहकार का काम करते रहे हैं। उनकी भी कोशिश यही रही थी कि शहंशाह दक्खिन के मामले में दखल न दें। यहाँ के लोगों को अपनी किस्मत खुद बनाने दें। शमाली हिन्द क्या कम इलाका है ? उस पर ही आपका खानदान कनायत करे तो अभी भी मुगलिया खानदान की हुकूमत कायम रह सकती है।

"हुज़ूर ! मैं सूरत में रहता हूँ और देख रहा हूँ कि दूर देशों से आये कुछ लोग हमारे यहाँ के लोगों से ज़्यादा समझदार और सूझ-बूझ रखने वाले हैं। अगर इस मुल्क के लोग आपस में लड़ते रहे तो वे यहाँ अपनी हुकूमत कायम कर लेंगे। तब मुगल, पठान और शमाली व दक्खिनी हिन्दुस्तानियों को उनकी अतायद कबूल करनी पड़ेगी। यह एक बहुत ही बुरा समय होगा।"

"यही बात हमारी बेगम कहती है ?"

"तो वह ठीक कहती हैं। इस वक्त का तकाज़ा यह है कि दिल्ली के शहंशाह बीजापुर, गोलकुण्डा और दीगर दक्खिनी रियासतों से सुलहनामे कर लें और इन गोरे रंग की कौमों को यहाँ से भगा देने का कोई बन्दोबस्त करें।"

"मगर यह राय तो शहंशाह को देनी चाहिये। हमारी हैसीयत तो इस वक्त एक गुज़ारेदार की-सी है। हम अपने आप कुछ नहीं कर सकते। एकाएक शहंशाह का हुक्म आया है और हमें उसको आँखें मूंद मानना पड़ता है।"

"मगर मैं उनके यहाँ नौकरी नहीं कर सकता और जब मामाजी जैसे बात करने में होशियार शख्स उनको नहीं समझा सके तो मैं क्या कर सकूँगा ? मैं तो आपके पास आया हूँ जिससे होने वाले शहंशाह को अपना मुस्तकबिल बनाने और महफ़ूज़ रखने में अपनी राय दे सकूं।"

"तो तुम मुझे अपने वालिद साहब से बगावत करने के लिए कहने आये हो ?"

"खुदा परवरदिगार मुझे इस कुफ्र से बचायें। अगरचे आपके खानदान की रवायत में यह है कि बड़ों से बगावत की जाये, मगर हुज़ूर, मैं आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी राय देने की गुस्ताखी नहीं कर सकता ।"

"तो तुम हमें क्या करने को कहते हो ?"

"मैं चाहता हूँ कि ग्राप शहंशाह-ए-ग्रज़ीम से मिलें ग्रौर उनसे ग्रपने पर रहम करने की ग्रर्ज़ करें । ग्राप उस ग्रर्ज़ी में यह कहें कि वह ग्रपनी ज़िन्दगी के कारनामों को हद से बाहर मत ले जायें । जो कुछ खुदावन्द करीम ने उनको दिया है उस पर कनायत करें ग्रौर बकाया काम ग्रब ग्रपने लवायकीन के लिए छोड़ दें ।

"उनसे एक बात ग्रौर कहें कि जिस दिन बीजापुर फतह हुग्रा उसी दिन मराठा हुकूमत इतनी ज़बरदस्त हो जायेगी कि ग्रागरा ग्रौर दिल्ली की जड़ें हिला देने की तौफीक इसे हासिल हो जायेगी । बीजापुर मराठा ताकत पर रोक का काम कर रहा है ग्रौर बीजापुर के तबाह होते ही मराठों का सीधा हमला ग्रागरा पर होगा ।"

यही बात शहरयार उसे कहती रहती थी । बेगम का यह कहना था कि किसी दोस्त को मार डालने से ग्रपने को नुकसान पहुँचाने वाला होता है ।

शाह ग्राज़म इस बात को समझता था मगर शहंशाह की सबसे ज़बर-दस्त दलील यह थी कि जो हकूमत ग्रपनी जागीर बढ़ा नहीं सकती, वह कम होनी शुरू हो जाती है ग्रौर बेगम यह कहा करती थी कि जो शख्स ग्रपनी तौफीक से बड़ा लुकमा मुँह में डालकर निगलना चाहता है वह लुकमा गले में फँसकर उस शख्स की मौत का सामान पैदा कर सकता है ।

ग्राज हिदायत को वही युक्तियाँ देते सुन उसे ग्रपने वालिद साहब की भूल का यकीन होने लगा था । वह हिदायत की युक्ति पर ग्रभी विचार ही कर रहा था कि हिदायत ने कह दिया, "हुज़ूर ! ज़माने की सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि कुछ लोग दूसरे मुमालक में भेजे जायें ग्रौर वे उन लोगों से जंग के तरीके सीखकर ग्रायें । तब हिन्दुस्तानियों को उनसे ग्रागाह कर इन फिरंगियों को यहाँ घुसने से रोकें ।"

शहज़ादा इन सब बातों को सुना करता था ग्रौर उन पर विचार किया करता था । उसकी बेगम भी लगभग यही बात कहा करती थी, मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी कठिनाई शहंशाह को समझाने की थी। शहंशाह में एक खूबी थी। वह थी उसकी इस्लामी कट्टरता। शहंशाह ने अपने जीवन-भर में इस जनून को छाती से लगा रखा था और इसी के कारण इस मदात्य रोग से ग्रसित लोग उनके चारों ओर घूमा करते थे। उनकी दृष्टि में इस्लाम के मुकाबले में कोई भी युक्ति जँचती नहीं थी। युक्ति यह थी कि दुनिया का कोई भी भाग इस्लामी हुकूमत से बाहर रहना ठीक नहीं और इसके लिए जो भी कुर्बानी दी जाये, वह कम है।

वह देखता था कि शहंशाह के इस कट्टरपन से उनको भी ऐशो-आराम का अवसर मिल रहा है। इससे सन्तोष भी अनुभव होता था। मगर शहरयार बेगम की युक्तियाँ कम बलशाली नहीं होती थीं। अब हिदायत को सामने बैठ वहीं बातें करता सुन वह निरुत्तर हो रहा था।

एकाएक उसके मन में एक ख्याल आया और वह मुस्कराकर पूछने लगा, "हिदायत! हमारी बेगम से यह सब बातें सीख कर तो नहीं आये?"

"कितनी उमर है हुजूर, उनकी?"

"तुमसे तो छोटी ही उमर की है।"

"हुज़ूर! मैंने उसके कभी दीदार हासिल नहीं किये। मैं नहीं जानता कि वह क्या कहती हैं। हाँ, मैं दूसरे पक्ष वालों से बातचीत कर चुका हूँ और इस बात को समझ चुका हूँ कि मुल्क की मौजूदा हालत में क्या किया जाना चाहिये?"

इस समय एक बाँदी आयी और झुककर सलाम कर बोली, "जहाँपनाह! बेगम साहिबा खाने के लिए इन्तज़ार कर रही हैं।"

"ओह!" शहज़ादा के मुख से निकल गया और वह उठते हुए कहने लगा, "कहाँ ठहरे हो हिदायत साहब?"

"हुज़ूर! अभी तक तो सराय में ही कयाम है। अगर तो हुज़ूर ने किसी किस्म की खिदमत लेने की ख्वाहिश ज़ाहिर की तो फिर अच्छी तरह से रहने का इन्तज़ाम कर लूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर हम तो जल्दी ही यहाँ से कहीं दूर भेजे जा रहे हैं।"

"यह मुझको मालूम है और यही अर्ज़ कर रहा हूँ कि अगर खिदमत करने का मौका मिला तो फिर उसके मुताबिक ही रहने का इन्तज़ाम कर लूँगा।"

"अच्छा, ऐसा करो कि हमारे अर्दली को सराय का नाम बता दो और हम अपनी राय से तुमको आगाह कर देंगे।"

"शहज़ादा आज़म उठ सामने रखे हीरे को अपनी जेब में रख बैठक-घर के पिछले दरवाज़े से महल के ज़नानखाने में चला गया।

हरिहर बैठक-घर से निकलने लगा तो अर्दली ने सामने आ झुककर सलाम किया और सराय का नाम और उस कोठरी का नम्बर पूछ लिया जिसमें हरिहर रहता था।

हरिहर सराय में जा पहुँचा और वहाँ अपनी खाट पर लेटा हुआ विचार करने लगा कि उसके शाह आज़म से इस भेंट का क्या परिणाम हो सकता है?

वह जानता था कि एक ज़माना था जब शहंशाह ने उसे पकड़कर महल में कैद कर देने की आज्ञा दे दी थी और वह कल्पना कर रहा था कि यहाँ भी वैसी ही बात हो सकती है। एक बात तो उसकी समझ में आ रही थी कि शहंशाह के दोनों बड़े लड़के इस तीसरे लड़के आज़म को बाप की मृत्यु के उपरान्त पानी भी पीने नहीं देंगे। सबसे बड़ा लड़का मुहम्मद सुल्तान तो अब था नहीं। इस पर भी दूसरा लड़का मुअज्ज़म भी उसी माँ की सन्तान था जिसका उसका बड़ा भाई था। आजकल वह कंधार के लाम पर था। तीसरा लड़का शाह आज़म था। यह और अकबर एक ही माँ के पुत्र थे। शाह आज़म इस समय दक्षिण को विजय करने की अपने पिता की योजना में सहायता कर रहा था। वह उतना ही कट्टर मुसलमान था जितना कि उसका पिता औरंगज़ेब। साथ ही वह अपने पिता की भाँति ही चतुर भी था। हिदायत इस शाह आज़म को तैयार करना चाहता था। उसकी बीजापुर में पली पत्नी उस पर प्रबल प्रभाव रखती प्रतीत होती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी समझ में यह तो आ गया कि शहज़ादे को अपने बाप के विरुद्ध भड़काया तो जा सकता है, परन्तु वह शहंशाह बनने के योग्य नहीं है। यह बात उसकी अपनी योजना के अनुकूल थी। एक सरल चित्त और मोटी बुद्धि वाले को आसानी से बरगलाया जा सकता है।

इस प्रकार विचार कर वह अपने वार्त्तालाप का परिणाम देखने के लिए उत्सुक था। वह सराय में ठहरा हुआ किसी प्रकार का हल्ला कराना नहीं चाहता था। इस कारण उसने सराय वाले को बताया था कि वह सूरत का एक जौहरी है और जवाहरात बेचने के लिए भिन्न-भिन्न राजधानियों में घूम रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

विश्वनाथ सूरत से चल राजस्थान को पार कर अजमेर, जयपुर से होता हुआ आगरा पहुँच गया। इस समय शहंशाह औरंगज़ेब राजपूतों से सन्धि करने अजमेर गया हुआ था। विश्वनाथ शाही शिविर से बचता हुआ चला आ रहा था। वह समझता था कि उसे शाही दरबार से आये अट्ठारह वर्ष के लगभग हो चुके हैं और उसे आशा नहीं थी कि कोई दरबारी उसे पहचान सकेगा। सम्वत् १७१९ में वह औरंगज़ेब का दरबारी भी था और बन्दी भी। तब उसे अपनी बहन को देखने का अवसर भी मिलता रहता था।

तदुपरान्त वह पुनः शिवाजी की सेवा में आ गया था। अब शिवाजी की मृत्यु के उपरान्त वह राजाराम की नौकरी स्वीकार नहीं कर सका। वह समझता था कि उसके संरक्षक एवं उसकी माता सूर्यबाई में वह भावना नहीं जो स्वर्गीय महाराज शिवाजी में थी।

विश्वनाथ की योजना यह थी कि पाँच विद्वानों की एक राज्य-समिति बनायी जाये जो राज्य-भार सँभाले। शम्भुजी सेनाध्यक्ष हो और वह स्वयं शासन समिति का सदस्य हो। राजाराम युवराज घोषित किया जाये, परन्तु उसको कुछ अधिकार न हो।

यह योजना राजाराम की माता को पसन्द नहीं थी और वह राज्य-कार्य से पृथक् हो चला आया था।

विश्वनाथ को शहंशाह का किंचित्-मात्र भी विश्वास नहीं था। इस कारण वह न तो स्वेच्छा से औरंगज़ेब के पास जाना चाहता था और न ही उसके किसी दरबारी द्वारा पहचाने जाने पर पकड़ कर उसके सम्मुख ले जाया जाना पसन्द करता था। वह इसमें सफल भी हो गया। अजमेर में वह एक दिन ठहरा और बिना किसी प्रकार की कठिनाई के जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा पहुँचा। वहाँ से आगरा में एक सराय में ठहरा हुआ था कि उसके मन में बहन से मिलने की इच्छा उत्पन्न हो गयी। वह विचार करता था कि यदि मिलना सम्भव न हो तो उसका समाचार प्राप्त किया जाये।

इस आशा में वह सराय के मुहाफिज़ के पास जा पहुँचा। यह कोई बनिया था। विश्वनाथ तीर्थ-यात्री ब्राह्मण के रूप में था। सिर के बाल और दाढ़ी-मूँछ बढ़ रही थीं। कमर में धोती बँधी थी और शरीर के ऊपर का भाग नंगा था। मोटा-सा यज्ञोपवीत उसके ब्राह्मण होने का चिह्न था। सराय के मुहाफिज़ ने ब्राह्मण देवता को बैठते देखा तो पूछ लिया, "देवता! क्या चाहते हो?"

"आपसे एक खुफिया बात जानना चाहता हूँ।"

लाला हँस पड़ा और बोला, "जब बता दूँगा तो फिर वह खुफिया कैसे रहेगी?"

"एक तिजोरी में बन्द कर बाहर रायों को ताला लगाकर।"

इस पर तो सराय का मुहाफिज़ गम्भीर हो ब्राह्मण का मुख देखने लगा। आखिर उसने पूछ लिया, "कितना बड़ा ताला है तुम्हारे पास जो किसी रहस्य को लगाया जा सकता है? अथवा यों कहो कि ताला तो सब रहस्यों को लगा रहता है। उसकी चाबी होनी चाहिये।"

"वह मेरे पास है।"

"हाँ, तो बताओ क्या जानना चाहते हो?"

"आगरा के किले के भीतर शाही महल है और उसमें कुछ औरतें रहती हैं। एक के विषय में कुछ जानना चाहता हूँ।"

"वह तुम्हारी क्या लगती है?"

"यह रहस्य है इस औरत का। उसके लिए कुंजी तुम्हारे पास होनी चाहिये। ऊपर के लिए ताली मैं दे दूँगा।"

"शहंशाह शाहजहाँ के समय यह अति सुगम था, परन्तु अब वह ज़माना नहीं रहा। न हरम में वह औरतें रही हैं और न ही उनके दरोगे वही हैं।"

"यह मैं जानता हूँ। मगर लालाजी, उन दिनों सोना-चाँदी आगरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नालियों में बहता था और अब तो दरोगे भूखे मरते हैं। जो बात तब एक सौ रुपये में हो सकती थी, वह अब पाँच रुपये में होती है। मस्जिद के चूहे के लिए एक मिठाई का लुक्मा उसे बेईमान बनाने के लिए काफी होता है।"

"बहुत समझदार हो पण्डित।"

"हाँ, लालाजी! यहाँ की बहुत बातें जानता हूँ।"

"अच्छा देखो, बीस रुपये लूँगा और तुम्हें हरम के किसी जानकार से मिला दूँगा। उस मस्जिद के चूहे से तुम खुद बात कर लेना।"

विश्वनाथ समझ गया कि यह फोकट में बीस रुपये माँग रहा है, परन्तु राजसी कामों में विश्वनाथ रुपया व्यर्थ की वस्तु समझता था। इस कारण विश्वनाथ ने धोती की अंटी से बीस रुपये निकाल मुहाफिज़ के सामने रख दिये। लाला ने रुपये जेब में रखे और कह दिया, "अपने कमरे में प्रतीक्षा करो।"

विश्वनाथ सराय की ऊपर की मन्ज़िल के एक कमरे में रहता था। औरतों के साथ आने वाले यात्रियों को इन्हीं कमरों में ठहराया जाता था। वह सराय वाले से मिलकर ऊपर अपनी पत्नियों के पास जा रहा था कि उसके बगल के कमरे में से एक ओजस्वी युवक कमर से दो तलवारें लटकाये हुए निकला और सराय के बाहर जाने के लिए सीढ़ियों की ओर जाने लगा तो विश्वनाथ मार्ग छोड़ एक ओर हो गया।

उस युवक ने एक मराठा ब्राह्मण को मार्ग छोड़ते देख आदर से हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया। उस युवक के दो पग पीछे दो अन्य लोग कमर से तलवार लटकाये हुए चले आ रहे थे। इस प्रकार इनको जाते देख विश्वनाथ समझ गया था कि यह कोई रईसज़ादा है।

एक बात विश्वनाथ को भली प्रतीत हुई थी। उस युवक ने हाथ जोड़ कुछ झुक कर नमस्कार की थी। यह उसके सिर पर बड़ी-सी चोटी और गले में मोटा-सा यज्ञोपवीत देखकर ही किया गया था। विश्वनाथ इसका अर्थ यह समझा था कि किसी रईस का लड़का है, परन्तु ब्राह्मणत्व के लिए मन में आदर का भाव रखता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह युवक सीढ़ियाँ उतर दृष्टि से ओझल हो गया और विश्वनाथ अपने कमरे में आ पहुँचा। विश्वनाथ की दोनों पत्नियाँ लक्ष्मी और कल्याणी उसके साथ ही हरिद्वार जा रही थीं।

विश्वनाथ के आने पर कल्याणी पति के मुख पर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगी। विश्वनाथ ने पत्नियों के सामने बैठ बताया, "सराय वाले को बीस रुपये इस प्रयोजन से दे आया हूँ कि वह शहंशाह की हरम के जानकार किसी व्यक्ति से मिला देगा।"

"और यदि न मिला सका तो ?"

"तो बीस रुपये बात करने के प्रतिकार में।"

"यह तो कुछ न हुआ।"

"यहाँ ऐसा ही चलता है। इतना देने पर भी यह काम भय से रिक्त नहीं। यह भी सम्भव है कि यह नगर के कोतवाल को यह सूचना दे दे कि इस सराय में ऐसा व्यक्ति ठहरा है जो शाही हरम की औरतों से सम्पर्क बनाना चाहता है।"

लक्ष्मी इस सूचना के भय से काँप उठी, परन्तु विश्वनाथ ने मुस्कराते हुए कहा, "लक्ष्मीजी ! इस भय से निवारण का एक उपाय मैंने विचार किया है।"

"क्या ?"

"हम अभी नगर देखने के विचार से यहाँ से चलेंगे और तुम दोनों को किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर रख आऊँगा। जाते समय सराय वाले से कह जाऊँगा कि हम सैर करने जा रहे हैं और दीपक जलने के कुछ बाद में आयेंगे।

"मैं उस समय अकेला जाऊँगा और छुप कर देखूंगा कि इस सराय वाले ने दगा तो नहीं किया। यदि कुछ भी सन्देह हुआ तो दूर से देख ही लौट जाऊँगा और फिर यहाँ नहीं आऊँगा।"

"और यह यात्रा का सामान ?"

"यह दण्डस्वरूप छिन गया मान लूंगा।"

"तो हम नकदी साथ ले चलें ?" कल्याणी का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ। कोई भी मूल्यवान वस्तु यहाँ छोड़नी नहीं चाहिये।"

लक्ष्मी और कल्याणी को अपने पति की सूझ-बूझ पर विश्वास था। अतः दोनों उठीं और वह सब-कुछ ज़ेवर इत्यादि जो अपने साथ ले जा सकते थे, बटोर कर अपने शरीर पर बाँध लिये। तदनन्तर तीनों कमरे से निकले और कमरे को ताला लगा चल दिये। जाने से पूर्व विश्वनाथ ने सराय वाले से अपने जाने का कारण बताकर यह भी बता दिया कि वह दीपक जलने के उपरान्त ही लौट सकेगा।

"कहाँ जा रहे हैं, पण्डितजी ?"

"मेरे नगर में कुछ परिचित लोग हैं। उनसे मिलने जा रहा हूँ।"

इस प्रकार विश्वनाथ गया और ताज बीबी के रोज़े के पिछवाड़े यमुना के तट पर शिव-मन्दिर में जा पहुँचा। शिवाजी के जयपुर के महल में बन्दी बनाये जाने के समय वह इसी मन्दिर में रहता हुआ शिवाजी को छुड़ाने का षड्यन्त्र चलाता रहा था और उसके पुजारी से भली-भाँति परिचित था।

पुजारी भी विश्वनाथ को देखते ही पहचान गया और मुस्कराते हुए बोला, "महाराज ! क्या फिर किसी को छुड़ाने की योजना है ?"

विश्वनाथ खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "एक प्रकार की चालाकी एक ही बार चल सकती है। अब वैसी कोई बात नहीं। हम हरिद्वार तीर्थ-यात्रा के विचार से जा रहे थे। सराय में ठहरे थे, परन्तु सराय वालों की सूरत-शक्ल देख वहाँ रहना ठीक समझ नहीं आया और इनको लेकर यहाँ चला आया हूँ।

"दो-तीन दिन तक यहाँ रहने का विचार है। क्या यहाँ इनके रहने का प्रबन्ध हो सकेगा ?"

पुजारी ने कुछ विचार किया और कह दिया, "यहाँ नहीं। यदि ये कष्ट करें तो मेरे घर पर चलें। वहाँ किसी प्रकार का भय नहीं होगा।"

अतः विश्वनाथ पत्नियों के साथ पुजारी के घर पर जा पहुँचा और रात होने पर अँधेरे में दीवारों के साथ-साथ चलता हुआ सराय पर जा पहुँचा। वहाँ भी अँधेरे में सराय वाले की नज़रों से बच कर ऊपर की मन्ज़िल पर जा अपने कमरे की बगल में अँधेरे में खड़ा हो देखने लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि कोई संदिग्ध व्यक्ति तो वहाँ खड़ा नहीं है।

विश्वनाथ ने देखा कि तीन व्यक्ति उसी की भाँति अँधेरे में तीन भिन्न-भिन्न स्थानों पर छिपे खड़े हैं। विश्वनाथ समझ गया कि सराय वाले ने दगा करके उसे पकड़वाने का प्रबन्ध किया है। अतः वह वहाँ से चुपचाप चले आने ने लिए सीढ़ियों की ओर घूमा।

ज्यों ही उसने सीढ़ी की ओर पग उठाया कि किसी ने पीछे से कंधे पर हाथ रख कहा, "कहाँ जा रहे हैं ?"

एक बार तो विश्वनाथ के पूर्ण शरीर में कँपकँपी हो उठी, परन्तु शीघ्र ही उसने अपने को नियन्त्रण में कर पूछा, "परन्तु आप कौन हैं ?"

इस पर कंधे पर हाथ रखने वाला व्यक्ति विश्वनाथ के सामने आ गया और अँधेरे में विश्वनाथ को लगा कि यह वही है जो बगल वाले कमरे के रईसज़ादे का अंगरक्षक बना हुआ था। इस पर भी निश्चय से जानने के लिए विश्वनाथ ने पूछ लिया, "तुम यहाँ अँधेरे में छिपे-छिपे क्या कर रहे थे ?"

इस पर सामने खड़े व्यक्ति ने भी पण्डित को पहचान लिया और कहा, "ओह ! आप बगल वाले कमरे में ठहरे पण्डितजी हो ?"

विश्वनाथ की हँसी निकल गयी और उसने कहा, "तो हम दोनों चोर नहीं।"

"हैं तो दोनों चोर।" सामने खड़े व्यक्ति ने कहा, "दोनों कुछ चोरी कर रहे थे अथवा करने का यत्न कर रहे थे।

"इधर आइये पंडितजी ! तनिक प्रकाश में आओ तो बात हो जाये।"

विश्वनाथ शस्त्रहीन था। दूसरा व्यक्ति अभी भी कमर से तलवार लटकाये हुए था। विश्वनाथ को जिस बात का भय हुआ था वह अब न देख उस व्यक्ति के साथ चल पड़ा। साथ के कमरे में से वही युवक जो उसको उधर ले जाने वाले का मालिक था, निकल आया। उसके हाथ में नंगी तलवार थी।

विश्वनाथ के साथ आ रहे व्यक्ति ने कहा, "महाराज ! यह तो बगल के कमरे वाले पण्डित हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! इनको भीतर ले आओ ।"

कमरे के भीतर कमरा था। बाहर के कमरे में अँधेरा था। विश्वनाथ वहाँ गया तो उसे अँधेरे में तीन-चार व्यक्ति खड़े समझ आये और उनकी नंगी तलवारें भीतर के कमरे से आ रहे प्रकाश में चमक रही थीं।

विश्वनाथ समझ रहा था कि ये लोग भी शहंशाह के सिपाहियों से कम भयानक नहीं। इस पर भी अब तो वह वहाँ था और एक क्षण में ही वह भीतर के कमरे में ले जाया गया। उसके भीतर जाते ही बाहर और भीतर के कमरे के द्वार बन्द कर दिये गए और वह तेजस्वी युवक एक ऊँची मसनद पर बैठ गया। उसके बैठने पर विश्वनाथ को बैठने को कहा गया।

विश्वनाथ ने एक दृष्टि अपने चारों ओर दौड़ायी। उसे उस युवक के रूप-राशि के अतिरिक्त अन्य कुछ भी रईसों की-सी बात वहाँ दिखायी नहीं दी थी।

विश्वनाथ को पकड़कर भीतर लाने वाले व्यक्ति ने बताया, "यह पण्डितजी अँधेरे में सीढ़ियाँ चढ़ एक अँधेरे कोने में खड़े हो गये। मैंने समझा कि यह कोई मुसलमान जासूस है। मैं कुछ देर तक इन्हें वहाँ खड़े देखता रहा। यह हमारे बगल वाले कमरे की ओर ही देख रहे थे। इनका उधर देखना मेरा अनुमान ही है। जब ये हिले-डुले नहीं तो मैंने समझा कि किसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस कारण इनके किसी साथी के आने से पहले ही इनका काम तमाम करने के विचार से मैंने इनके कंधे पर हाथ रख पूछा, 'कहाँ जा रहे हो ?'

"ये काँप उठे। इन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ ? इसके उपरान्त आकाश में तारों के घुसमुसे प्रकाश में हम दोनों एक-दूसरे को पहचान गये और इनकी बात जानने के लिए मैं इन्हें यहाँ ला रहा था कि हुजूर बाहर आ गये।"

इस पर मसनद पर बैठे युवक ने पूछा, "अब बताइये, पण्डितजी ! क्या बात है ?"

विश्वनाथ ने एक क्षण तक ही विचार किया और अपने अँधेरे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े होने की सफाई देते हुए कहा, "मैंने सराय के मालिक से कुछ खुफिया काम करने को कहा था। काम शाही महल से ताल्लुक रखता है। मुझे सन्देह था कि सराय का मालिक मुझसे दगा करेगा और मेरे काम की इत्तला शहर कोतवाल को दे देगा। इस पर शहर कोतवाल मुझे पकड़ने के लिए सिपाही भेज देगा। मैं विचार कर रहा था कि कोतवाल के सिपाही मेरे कमरे के बाहर छुपे खड़े होंगे और मेरे वहाँ पहुँचते ही मुझ पर झपकेंगे। मैं पकड़ा जाना नहीं चाहता था, इस कारण मैं देख रहा था कि सराय वाले ने दगा किया है अथवा नहीं ?"

विश्वनाथ की सफाई ठीक समझ उस युवक ने कह दिया, "क्षमा करें। हमने गलत समझा था। इस कारण आपको कष्ट हुआ है। आप जा सकते हैं।"

"परन्तु मेरे मन में यह जानने की इच्छा हो रही है कि आपके आदमी बाहर अँधेरे में खड़े किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ?"

"जिसकी आप आशा कर रहे थे। हमें भी भय हो गया था कि सराय का मालिक कहीं यह न समझ बैठे कि हम सशस्त्र घूम रहे हैं। और अवश्य बहुत धनी होंगे। इस कारण हमें मरवा कर हमारा धन लूट लिया जाये।"

विश्वनाथ ने कमरे के चारों ओर देखकर कहा, "समझा तो मैं भी कुछ ऐसा ही था, परन्तु कमरे की हालत देख समझ रहा हूँ कि मेरा अनुमान ठीक नहीं है। तदपि कुछ बात तो है जिसकी रक्षा के लिए इतनी सावधानी बरती जा रही है।

"देखिये जी ! मैं आपको अपना परिचय देता हूँ। मैं महाराज शिवाजी की राज्य-परिषद् का सदस्य रहा हूँ। मेरा पद धर्माधिकारी का था। महाराज के देहान्त पर मैं काम से रिक्त हो गया हूँ। नये राजा ने नयी परिषद् बनायी है। मैं छुट्टी पर हरिद्वार यात्रा को जा रहा हूँ।

"मेरा नाम विश्वनाथ है। मैं दिल्ली में एक लम्बे काल तक रहा हूँ। इस कारण यहाँ के शहंशाह की आदत को जानता हुआ सतर्कता का व्यवहार रख रहा हूँ।"

"शहंशाह की किस आदत को आप जानते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शहंशाह की दृष्टि का राज्य इस्लामी है। जो मुसलमान नहीं, उसे राज्य में जीवित रहने का अधिकार नहीं। वह जीने का अधिकार मोल देकर खरीद सकता है। मैं भी जब तक यहाँ रहा हूँ मोल देता रहा हूँ। यहाँ जो भी मुसलमान के अतिरिक्त रहता है, मोल देकर ही रह सकता है। सबके रहने का पृथक्-पृथक् मूल्य है। मेरा कुछ अधिक है। इसी कारण मैं दूसरों से कुछ अधिक सावधानी का व्यवहार बरतता रहा हूँ।"

"मगर सुना है कि यहाँ रहने का अधिकार तो औरंगज़ेब के भाईयों को भी नहीं मिला। उसने यह अधिकार अपने पिता को भी नहीं दिया।"

"जी। मैं यह जानता हूँ, परन्तु इसकी वजह तो वही है जो मैंने बतायी है। उसका यह स्वभाव हो चुका है कि वह जिस बात को जैसा समझता है, उसमें दोष नहीं देखता। वह समझता है कि इस्लाम को जैसा उसने समझा है वही ठीक है। उसके बाप और भाई के मस्तिष्क में इस्लाम का जो स्वरूप था, वह उसके मन का स्वरूप नहीं था।"

"आप उसके बाप और भाई से मिले हैं?"

"मैं तो नहीं। हाँ, मेरे पिताजी तो वर्तमान शहंशाह के वालिद शरीफ़ के ज्योतिषी रहे हैं।"

"और वे शहंशाह शाहजहाँ के इस्लाम के विषय में क्या कहते हैं?"

पिताजी का कहना है कि स्वर्गीय शहंशाह शाहजहाँ इस्लाम को सुख-भोग का एक साधन मानते थे। इस्लाम के मतानुयाईयों को स्वर्ग में औरतें, शराब, राग-रंग, फल-फूल मिष्ठान मिलने की बात कही है और शहंशाह समझते थे कि वह इन सब जन्नत की वस्तुओं को इस भूमि-तल पर लाने की सामर्थ्य रखते हैं और वह सामर्थ्य का ही प्रयोग कर रहे हैं। शहंशाह का यह भी कहना था कि यह सामर्थ्य भी तो खुदावन्द ताला की ही दी हुई है। वह जो कुछ भी कर रहे हैं उसी रहीम-करीम की रहमत और करम से ही कर रहे हैं।"

सामने बैठा युवक हँस पड़ा और हँसते हुए बोला, "और यह औरंगज़ेब इस्लाम के किस स्वरूप को स्वीकार करता है?"

"देखिये जी! वर्तमान शहंशाह भी अपने को दीनदार मानता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बाप को ईमान से गिरा हुआ मानता था। इसके दीन का मेरा अनुभव है। वह मैंने इसकी सेवा में कुछ दिन तक रहकर बनाया है। यह शहंशाह इस्लाम के मायने समझता है गैर-मुसलमानों को गुलाम मानना। उनकी सब प्रिय वस्तुओं को छीन लेना अथवा उनको विनष्ट कर देना। वह समझता है कि इस संसार में खुदावन्द ताला ने उसको भेजा ही इसलिए है कि खुदावन्द ताला और उनके पैगम्बर हज़रत वली-उल-इस्लाम पर ईमान न लाने वालों को तहे-तेग कर दिया जाये अथवा उनको गुलाम मान उनसे काम लिया जाये।

"वर्तमान शहंशाह इस्लाम का यह ही रूप मानता है और स्वर्गीय शहंशाह जन्नत वाले स्वरूप को इस्लाम मानते थे।"

"और पण्डितजी ! आप इसमें से किसको ठीक मानते हैं ?"

"मैं तो मुसलमान नहीं हूँ। इसलिए मैंने इस्लाम के स्वरूप को समझने का कभी यत्न नहीं किया।"

"आप औरंगज़ेब के साथ रहते हुए क्या काम करते थे ?"

"गुलाम का। मेरा मतलब है कि उनकी इच्छाओं को बिना किसी टीका-टिप्पणी के पूरा करना मेरा काम रहा है। उस काल में मुझे कभी भी अपने मन की बात करने की स्वीकृति नहीं थी।"

"तो फिर खिदमत से निकाले किसलिये गए थे ? अब तो आप उसकी खिदमत में मालूम नहीं होते।"

"नहीं। अब मैं किसी की भी सेवा में नहीं हूँ। महाराज शिवाजी की सेवा में भी कई बार मेरे मन की बात और उनके मन की बात में अन्तर हो जाता था। इस पर भी उन्होंने कभी मुझे अपने मन की बात के विपरीत करने को नहीं कहा।

"यहाँ शहंशाह औरंगज़ेब की खिदमत में यह बात नहीं थी। एक दिन मैंने कहा था, 'इन्सान में एक रूह रहती है। वह हमेशा नेकी की ओर देखती रहती है। इस कारण यदि इस्लाम की सब नेक बातों तक ही उसे सीमित कर दें तो गैर-मुसलमान स्वेच्छा से इस्लाम को स्वीकार कर लेंगे।'

"शहंशाह का कहना था कि, 'क्या ज़रूरत है उनके इस्लाम को स्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की। उनके लिए तो दोज़ख की आग में जलना-भुनना ही ठीक होगा।' "

"हम तो इससे विपरीत बात समझे हैं। हमने सुना है कि उनके 'मुताहसिव' देश में घूम-घूमकर इस्लाम की तबलीग कर रहे हैं।"

"हाँ, यह तो है, परन्तु वह तो काफ़िरों को तहे-तेग करने के लिए ही घूम रहे हैं। हिन्दुओं में कुछ लोग स्वेच्छा से इस्लाम स्वीकार कर रहे हैं। वे इस दुनिया में मुसलमानों को मिली सुख-सुविधा को ही प्राप्त करना चाहते हैं। एक ओर तो वह सब कठिनाइयाँ हैं जो गैर-मुसलमानों को सहन करनी पड़ती हैं। ये कठिनाइयाँ शहंशाह के हुक्म से रायज की गयी हैं। दूसरी ओर एक बार इस्लाम स्वीकार करने पर सब प्रकार की सहूलियतें मिलने लगती हैं। वे दोज़ख की आग से बचने के लिये ही यह करते हैं।

"इस कारण मेरा अनुमान यह है कि गैर-मुसलमान होने की कठिनाइयों से बचने के लिए अधिकांश इस्लाम स्वीकार कर रहे हैं।"

"परन्तु जानते हो आज से सात वर्ष पूर्व हिन्दुओं के एक गुरु को और उसके साथ उसके एक भक्त को मार डाला गया था और उनकी जान बख्शी जा सकती थी अगर वे इस्लाम स्वीकार कर लेते ?"

"हाँ, सुना तो है। मगर मैं इसको अपवाद समझता हूँ। कदाचित् यह एक उदाहरण बनाने के लिए था। गुरुजी महाराज हिन्दुओं के पूज्य और ईश्वरीय शक्ति के स्वामी माने जाते थे। उनकी हत्या हिन्दुओं को यह बताने के लिए थी कि खुदाई ताकत केवल मुसलमान पीर-पैगम्बरों में होती है। हिन्दुओं के गुरुओं में नहीं।"

"और हिन्दू यह समझ गये हैं क्या ?"

"सब-के-सब तो नहीं समझे। इस पर भी बुद्धिशील मानवों को एक बात तो समझ जानी चाहिये कि सामान्य बुद्धि के जन-मानस में यह बात अंकित करना हमारा काम है कि प्रकृति के नियमों से कोई भी ऊपर नहीं। तलवार तो सबके सिर को काटेगी ही। चाहे वह किसी निम्न श्रेणी का आदमी हो अथवा किसी गुरु, पीर, पैगम्बर की श्रेणी का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुरुजी महाराज की रक्षा गुरु के शिष्यों के हाथ में है। परमात्मा के नहीं। यह बात दक्षिण के एक महात्मा समर्थ गुरु रामदासजी ने बतायी थी। उनका यह कहना था कि राम तो श्रेष्ठ-जनों के हृदयों में है। जब श्रेष्ठ जन अपनी और अपनों की रक्षा नहीं करते तो समझ लो कि भगवान् उनको छोड़ कहीं अन्यत्र चला गया है।

"इसी से मैं कहता हूँ कि यदि यह बात गुरुजी की संगत वालों के हृदयंगम हो चुकी होती तो आज पंजाब में एक भी मुसलमान जीवित नहीं रहता।"

युवक सामने बैठे ब्राह्मण की इस ओजमयी बात को सुन फड़क उठा था। उसके भुज-दण्ड फड़कने लगे थे। साथ ही उसके मुख से अपने ही मन की बात सुन उसकी आँखों की चमक द्विगुणित हो गयी थी।

परन्तु वह युवक अभी इस ब्राह्मण पर विश्वास नहीं करता था। इस कारण वह अपने मन की बात कह नहीं सका। वह युवक ब्राह्मण देवता से पूछने वाला था कि समर्थ गुरु रामदास अब कहाँ हैं कि बाहर खड़ा प्रहरी भीतर आया और कहने लगा, "महाराज! इन पण्डितजी के कमरे के बाहर खड़ा सराय का सेवक इनको बुला रहा है।"

इस बात को सुनते ही युवक का हाथ तलवार के मुट्ठे पर चला गया, परन्तु विश्वनाथ ने सूचना देने वाले व्यक्ति से पूछा, "सेवक अकेला है अथवा दो-तीन हैं ?"

"वह अकेला ही है।"

"तब चिन्ता नहीं करनी चाहिये। देखो युवक!" विश्वनाथ ने युवक को सम्बोधन कर कहा, "सरकारी कर्मचारी कभी अकेला नहीं घूमता। वह प्रायः भीरु होता है।

"अच्छा तो फिर मिलूँगा। मेरे प्रश्न का उत्तर तो अभी मिला नहीं।"

"हमारे प्रश्न का उत्तर तो मिल गया है।" युवक ने कहा।

विश्वनाथ ने प्रश्न-भरी दृष्टि में युवक की ओर देखा तो युवक हँस पड़ा। विश्वनाथ समझ रहा था कि सराय के मालिक से जो बात दिन के समय कही थी, उसी के विषय में कुछ बात है। इस कारण वह उठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर युवक को ग्राशीर्वाद दे कमरे से निकल गया ।

विश्वनाथ के कमरे से निकलते ही युवक ने ग्रपने एक सेवक को कहा, "सुच्चालाल ! इन पण्डितजी के साथ जाग्रो ग्रौर देखो कि ये किधर जा रहे हैं ?"

सेवक सुच्चालाल विश्वनाथ के पीछे-पीछे सराय वालों के कार्यालय में जा पहुँचा । विश्वनाथ को सराय वाला ग्रभी बैठा ही रहा था कि सुच्चालाल वहाँ जा पहुँचा । उसे ग्राया देख सराय वाले ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

"मैं पण्डितजी का ग्रंगरक्षक हूँ ।"

सराय वाले को पण्डितजी के किसी ग्रंगरक्षक की सूचना नहीं थी । उसकी किताब में लिखा था कि पण्डित विश्वनाथ ग्रपनी दो पत्नियों सहित कमरा नम्बर तीन में ठहरा है । इस कारण उसने प्रश्न-भरी दृष्टि में विश्वनाथ की ग्रोर देखा । विश्वनाथ यह नहीं समझ सका कि यह व्यक्ति साथ के कमरे वाले युवक ने जासूसी के लिए भेजा है ग्रथवा सत्य ही किसी संकट में रक्षा के लिए । ग्रतः उसने भी बात गोल-मोल कर दी ग्रौर कहा, "हाँ लालाजी ! मैंने ग्रपना एक ग्रंगरक्षक ग्राज ही नियुक्त किया है । परन्तु भाई !" उसने सुच्चालाल की ग्रोर देखकर कहा, "यहाँ किसी प्रकार का भय नहीं । तुम बाहर ठहरो, जब ग्रावश्यकता होगी तो भीतर बुला लूंगा ।"

सराय वाले ने सुच्चालाल को कह दिया, "हाँ, तुम बाहर ठहरो । यहाँ चोर-डाकू नहीं रहते ।"

सुच्चालाल मुस्कराता हुग्रा बाहर चला गया । विश्वनाथ ने सराय वाले को बताया, "इस व्यक्ति को मैंने सराय वालों से रक्षार्थ नहीं रखा । यह तो रात के समय ग्रागरा नगर की गलियों में लुट-पिट जाने से बचने के लिए रखा है ।"

"ग्रच्छा तो यह देखो !" सराय वाले ने समीप बैठी एक स्त्री की ग्रोर संकेत कर कहा, "यह शाही हरम की एक ग्रदना खिदमतगारिन हैं । ग्राप इनसे बात कर लीजियें ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं इससे पृथक् में बात करूँगा।"

"हाँ। देखो नूरी ! सब कुछ तुम इनसे निश्चय कर लेना। मेरे पास अब आने की आवश्यकता नहीं है।" लाला का अभिप्राय लेन-देन के विषय में निश्चय करने का था।

विश्वनाथ उस स्त्री को लेकर कमरे को चल पड़ा। सुच्चालाल पण्डित विश्वनाथ के साथ ही ऊपर की मंज़िल को चल पड़ा। विश्वनाथ ने सुच्चालाल से पूछ लिया, "तो तुम्हारे मालिक ने तुम्हें मेरी रक्षा के लिए भेजा था ?"

"हाँ, यही बात उनके मन में रही होगी। इस पर भी उन्होंने कुछ बताया नहीं। केवल यह कहा कि पण्डितजी के साथ जाऊँ।"

ऊपर की मंज़िल में पहुँच विश्वनाथ ने अपने कमरे का द्वार खोलते हुए कहा, "अच्छा भाई ! अब तुम जाकर बता दो कि मैं अपने कमरे में सुरक्षित पहुँच गया हूँ।"

विश्वनाथ उस स्त्री को कमरे में ले गया। वहाँ दीपक जला रोशनी की और द्वार भीतर से बन्द कर लिया। सुच्चालाल मुस्कराता हुआ अपने मालिक को पूर्ण व्यवस्था बताने के लिए चल पड़ा।

भीतर उस स्त्री ने कहा, "आपका यह नौकर हम पर किसी नाजायज़ अम्ल का शक कर रहा है।"

"वह तो है ही। मगर जो अम्ल एक शख्स की नज़र में नाजायज़ होता है वही किसी दूसरे की नज़र में सही अम्ल भी हो सकता है। इसलिए किसी के समझने से इन्सान डरा नहीं करते।"

वह स्त्री मुख देखती रह गयी। विश्वनाथ ने समय व्यर्थ न गँवाने के लिए उस स्त्री से पूछ लिया, "सराय वाले ने मेरे विषय में क्या बताया है ?"

"उसने तो यही बताया है कि एक परदेसी भला आदमी है। वह हरम के अन्दर की कुछ बात जानना चाहता है। अगर मैं उसको कुछ बता सकूँगी तो वह मुझको काफी इनाम देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ। उसने ठीक कहा है। मगर इनाम की रकम उस बात की सच्चाई पर निर्भर करती है जो मैं जानना चाहता हूँ।"

"इससे पहले कि मैं कुछ पूछूँ क्या तुम मुझको यह बता सकती हो कि आजकल हरम में कितनी बेगमें हैं ?"

"पहले से तो बहुत कम हैं। इस पर भी शहंशाह की कोई भी बेगम शहंशाह के साथ नहीं गयीं। दो-तीन खिदमतगारिन साथ गयी हैं। एक बात और बता देना चाहती हूँ। अब जवान शहज़ादियाँ बाहर के आदमियों से मेल-मुलाकात नहीं रखतीं। सबको शादी कर लेने की इजाज़त है।"

"देखो बहन खादिमा ! मेरा मतलब तुम समझी नहीं। मैं यह नहीं पूछ रहा जो तुम समझ रही हो। मैं एक औरत के हरम में होने की बात जानना चाहता हूँ। वहाँ किसी महताब बेगम को तुम जानती हो ?"

सामने बैठी स्त्री स्तब्ध बैठी रह गयी। विश्वनाथ उसके मुख पर बदलते रंग देख रहा था। वह स्त्री पहले तो घबरायी; फिर परेशानी की झलक उसके मुख पर दिखायी दी और अन्त में वह आश्वस्त और प्रसन्न प्रतीत हुई। इस मन:स्थिति में उसने पूछ लिया, "और आपका उनसे क्या ताल्लुक है ?"

"वह मेरी बहन है।"

"मैं कुछ यही समझी थी। पहले तो मैं डरी थी। मैं समझ नहीं सकी थी कि आप इन बेगमजी का नाम कैसे जानते हैं ? फिर मुझे चिन्ता लग गयी कि वह तो दुनिया में किसी से ताल्लुक नहीं रखती और उसका नाम कैसे महल के बाहर आ गया ? मगर आपके मस्तक की बनावट उन बेगम साहिबा के मस्तक से मिलती देख मैं समझने लगी थी कि आप उसके कोई सम्बन्धी हो सकते हैं।

"मैं बेगम साहिबा की खिदमत में नहीं हूँ। इस पर भी मैं यह जानती हूँ कि उनके मुताल्लिक यह हुक्म है कि दूसरी बेगमें उनसे न मिला करें। उनकी एक खिदमतगारिन है रहमत। अगर आप चाहें तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं उसको आपके पास भेज सकती हूँ ?"

"ठीक है। उसको कहना कि बेगम का भाई यहाँ सराय में तीन-चार दिन के लिए ठहरा हुआ है और उनकी राज़ी-ख़ुशी की खबर जानने की ख्वाहिश करता है।"

"यह हो जायेगा। मैं तो कुछ और समझी थी।"

"क्या समझी थीं, खादिमा बहन ?"

"मैं एक शहज़ादी अशरफ बानो की खिदमत में हूँ। वह अभी ग्यारह-बारह साल की बच्ची है। मैं समझी थी कि आपका उससे कुछ काम हो सकता है। उसके ननिहाल के लोग कभी-कभी उसकी खबर करने आते हैं।"

"मैं तो हिन्दू हूँ।"

"उसके ननिहाल के लोग भी हिन्दू ही हैं। शहज़ादा आज़म ने राजस्थान के एक गरीब राजपूत की लड़की से शादी की थी और वह अशरफ बानो उसी शादी का नतीजा है। जब से उनके हरम में बीजापुर की शहज़ादी आयी है तब से अशरफ की माँ शहज़ादा की नज़र से उतर गयी है। अशरफ की माँ यहाँ हरम में है और शहरयार बानो उनके साथ-साथ लाम पर रहती है।"

"और इस अशरफ बानो की माँ का क्या नाम है ?"

"इनका हिन्दुआना नाम तो मैं जानती नहीं। हाँ, यहाँ हरम में वह चाँद बेगम के नाम से मशहूर हैं।"

"अच्छा देखो बहन ! यह लो, तुम्हारे यहाँ तकलीफ करने का इनाम है। तुम महताब बेगम की खिदमतगारिन को यहाँ भेजोगी और अगर यह बात महल में न फैली कि महताब का भाई यहाँ सराय में रहता है तो इतना ही और भी तुमको दे दूँगा।"

इतना कह विश्वनाथ ने दस रुपये उस स्त्री के सामने रख दिये। खादिमा ने रुपये उठा अपने कुर्ते की जेब में रख लिए और पूछा, "तो मैं जाऊँ ?"

"हाँ। और बहन की खादिमा को कल दोपहर के वक्त यहाँ आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कहोगी तो मशकूर रहूँगा ।"

शहंशाह औरंगज़ेब के राज्य को आये पच्चीस-छब्बीस वर्ष हो चुके थे और इतने काल में शाही हरम का नक्शा बदल चुका था । शाहजहाँ के काल में हरम एक आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था और बेगमात अनेकानेक प्रकार की वस्तुएँ खरीदने के लिए खिदमतगारिनों को बाज़ार में भेजती रहती थीं और खिदमतगारिनें प्रत्येक खरीदे माल में अपना कमीशन निकाल लेती थीं । जब किसी सुन्दर युवक की खरीद की जाती थी तो ऐसा करने वाली सेविकाएँ माला-माल हो जाती थीं । उस समय बेगमों के पास रुपया भी बहुत मात्रा में होता था ।

मगर अब पूर्ण राज्य में मितव्ययता से काम लिया जा रहा था । सल्तनत का अधिक धन शाही समरों पर व्यय होता था अथवा मुताह-सिबों के घावों पर व्यय होता था । सेना की संख्या बहुत बढ़ गयी थी और साथ ही मुसलमान होने पर वजीफे और इनामों की भरमार थी । इन खर्चों का परिणाम यह हो रहा था कि शाही महल मस्जिदों की भाँति साज़ो-सामान से खाली और त्याग-तपस्या के उदाहरण बन रहे थे ।

इस कारण दस रुपये भी शाही महल की खादिमा को सैकड़ों के समान लगे ।

: ३ :

विश्वनाथ को शाही महल की खादिमा के साथ बातचीत करने में चार-पाँच मिनट से अधिक नहीं लगे और जब वह स्त्री बाहर निकल सीढ़ियाँ उतर गयी तो विश्वनाथ भी बाहर निकलकर कमरे को ताला लगाने लगा तो अँधेरे में खड़ा सुच्चालाल सामने आ पूछने लगा, "बहुत जल्दी छुट्टी दे दी है इस औरत को ?"

"हाँ । उससे इतना ही काम था ।"

"और अब कहाँ जा रहे हैं ?"

"मेरी पत्नियाँ नगर में एक मित्र के घर में ठहरी हुई हैं । मैं उनके पास जा रहा हूँ ।"

विश्वनाथ नीचे गया तो सुच्चालाल अपने मालिक के कमरे में आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित पर की गयी जासूसी का वृत्तान्त बताने लगा।

सब बात सुन उस युवक ने कहा, "यह पण्डित तो काफी बड़ी आयु का प्रतीत होता है।"

"हाँ महाराज ! और वह औरत पण्डितजी से बड़ी आयु की थी। मैंने उसे सराय वाले के कमरे में बैठे देखा था। वह कम-से-कम पचास वर्ष की उमर की लग रही थी।"

"तो कोई गड़बड़ की बात नहीं है।"

"दोनों में स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध तो प्रतीत नहीं हुआ।"

"तब कोई अवश्य राजसी बात हो रही है।"

"कुछ ऐसा ही मालूम हो रहा है। पण्डित का छिप-छिप कर आना भी इसी बात का समर्थन करता है। परन्तु महाराज, हमें यहाँ से कब चलना है ? हमारे पर भी सन्देह हो सकता है।"

"मैं इस पण्डित से अभी कुछ महाराज शिवाजी के विषय में जानना चाहता हूँ।"

"वह अभी-अभी अपने कमरे को ताला लगा कर चला गया है। इसका अर्थ है कि वह अभी यहाँ आयेगा।"

"ठीक है। मैं उससे मिलना चाहूँगा।"

"इस पर उसे अपना कुछ नाम-धाम बताना होगा।"

"यह मैं स्वयं बताऊँगा। तुम लोग इस विषय में मौन रहना। यदि वह विश्वस्त प्रतीत हुआ तो उसे ठीक-ठीक बता दूंगा, अन्यथा अपना कोई जाली नाम बताना होगा।"

विश्वनाथ अगले दिन मध्याह्न के भोजन के उपरान्त पुनः सराय में आया तो सराय के मालिक लाला ने पूछ लिया, "पण्डितजी ! रात कहाँ रहे हैं ?"

"अपने एक सम्बन्धी के घर में ही रहा हूँ। वहाँ सुख-सुविधा अधिक है।"

"तो यह सराय का कमरा छोड़ रहे हैं ?"

"नहीं। जो काम मैं यहाँ करने आया हूँ वह किसी सम्बन्धी के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नहीं हो सकता । वताइये, मुझे कोई पूछता हुआ तो नहीं आया ?"

"आया था । एक औरत थी । यह रात वाली से कुछ अच्छी मालूम हुई है । मैं तो जानता नहीं था कि आप कहाँ हैं और कब आयेंगे । इस कारण वह निराश हो लौट गयी है ।"

"मैंने तो रात वाली औरत से मध्याह्नोत्तर मिलने की वात कही थी ।"

"ऐसा मालूम होता है कि वह आपसे अधिक बेताब मालूम होती है।"

"होगी तो फिर आयेगी ।"

"हाँ । आप यहाँ प्रतीक्षा कर सकते हैं ।"

"नहीं । मैं अपने कमरे में हूँ । यदि कोई आयेगा तो वहाँ भेज दीजियेगा ।"

विश्वनाथ ऊपर की मंज़िल पर गया तो अपने कमरे के बाहर एक युवती को खड़े देख समझ गया कि वही उसकी खोज में आयी थी ।

जब विश्वनाथ कमरे के बाहर पहुँचा तो उस औरत ने पूछ लिया, "आप पण्डित विश्वनाथ हैं ?"

"हाँ, बेटी ! क्या नाम है तुम्हारा ?"

"मैं राधा थी और फिर रहमत हो गयी और अब फिर राधा हूँ ।"

विश्वनाथ समझ गया कि यह अदल-बदल उसकी बहन का कार्य है । उसने कहा, "ठीक है । आओ, भीतर आ जाओ ।"

विश्वनाथ ने कमरा खोला और उस स्त्री को भीतर ले जाकर बिठाया । बैठते ही उस स्त्री ने पूछा, "ये बगल के कमरे में कौन लोग हैं ?"

"मैं जानता नहीं । इनका मालिक तो कोई बिहारी अथवा अवध का रहने वाला मालूम होता है, परन्तु उसके सेवक पंजाबी हैं ।"

"वे बार-बार आपके विषय में पूछते थे कि आप कहाँ गये हैं ? मैं कहाँ से आयी हूँ ? आपसे मुझे क्या काम है और आप मेरे क्या लगते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुमने क्या जवाब दिया है ? मुझे बता दो जिससे मैं तुम्हारे झूठ को सत्य ही बताऊँ ।"

"मैंने तो यही कहा है कि मैं आपको नहीं जानती । मेरी एक सहेली कल रात आपसे मिलने आयी थी और मैं उसी का एक सन्देश लेकर आयी हूँ ।

"जब वे कई बार पूछ चुके तो मैंने कह दिया कि मैं यहाँ के कोतवाली में इत्तला कर दूँगी कि आप मुझे बहुत तंग कर रहे हैं ।

"इस पर वे मुझसे पूछने तो नहीं आये, मगर मुझ पर नज़र रख रहे हैं और मैं समझती हूँ कि अब भी वे मुझे और आपको कमरा बन्द कर बैठे देख चुके हैं ।"

"खैर छोड़ो । तुम तो मेरी बेटी के बराबर हो । अगर वे कुछ दूसरी बात समझे हैं तो मूर्ख हैं । बताओ, तुमको रात आने वाली खादिमा ने क्या बताया है और तुमने महताब बेगम से मेरे विषय में कुछ कहा है ?"

"हाँ । उनके कहने पर ही मैं आयी हूँ । रात वाली खादिमा का नाम है अशरफी । मैं हूँ राधा । अशरफी ने आज बहुत सुबह मुझको मिलकर बताया कि बेगम साहिबा के भाई इस सराय में ठहररे हुए हैं और बहन के सेहत और आराम की बात जानने की ख्वाहिश करते हैं ।

"मैंने अपनी बेगम साहिबा से कहा तो उन्होंने मुझे आपके नाम यह पत्र दिया है और कहा कि फौरन उसका यह पत्र आपको दे दूँ । मैं आयी तो पता चला कि आप कहीं रात से ही लापता हैं । मैं लौट गयी और अशरफी से पूछा तो पता चला कि आप दोपहर के बाद मिलने की बात कह रहे थे । मैं चौथाई घण्टे से यहाँ प्रतीक्षा कर रही हूँ । इस बार मैंने सराय वाले से नहीं पूछा । वह आँखें फाड़-फाड़ मेरी ओर देखता रहा था ।"

विश्वनाथ ने बहन का पत्र पढ़ा और फिर अपने झोले में से कलम, दवात और कागज़ निकाल मराठी में पत्र लिख दिया । वह पत्र राधा को देकर उसने कहा, "बेगम बहन से कहना कि मैं अभी दो-तीन दिन तक यहाँ रहूँगा ।"

राधा गयी तो सुच्चालाल कमरे में आ गया । उसने कहा, "हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालिक आपके दर्शन करना चाहते हैं। अगर आपको आपत्ति न हो तो वे यहाँ भी आ सकते हैं।"

"वह आ जायें तो मैं अपना सौभाग्य मानूंगा।"

सुच्चालाल गया तो विश्वनाथ अपनी कलम, दवात और कागज़ समेट ही रहा था कि वही युवक जो रात विश्वनाथ से वातचीत करता रहा था, कमरे में आ गया और हाथ जोड़ प्रणाम कर सामने बैठ बोला, "आप हम लोगों से अधिक चतुर और अनुभवी प्रतीत होते हैं।"

"यह स्वाभाविक नहीं क्या ? मैं समझता हूँ कि आपकी वयस पन्द्रह-सोलह वर्ष की होगी और मैं इस समय पैंतालीस वर्ष का हूँ। मेरी आठ सन्तान हैं। दो पत्नियाँ हैं। मैंने इस युग के दो महान् व्यक्तियों की सेवा की है और सबसे बढ़कर गुरु समर्थ रामदासजी के उपदेश सुने और हृदयंगम किये हैं। इससे आपसे अधिक अनुभव रखना किसी प्रकार विस्मय करने की वात नहीं हो सकती।"

"हाँ। इसी कारण मैं आपके विषय में कुछ और जानने के लिये आया हूँ।"

"हाँ, पूछिये ?"

"आप आगरा से किधर जा रहे हैं ?"

"मैं अपनी पत्नियों के साथ हरिद्वार जा रहा हूँ। वहाँ मेरे वृद्ध माता-पिता रहते हैं।"

"अगर मैं भी आपके साथ चलूँ तो आप कैसा अनुभव करेंगे ?"

"मैं सुखी और निर्भय अनुभव करूँगा। आप दो तलवारें लगाये हुए हैं और आपके तीनों सेवक खड्गधारी हैं। इस संगति में मैं और मेरी पत्नियाँ सुख अनुभव करेंगी।"

वह युवक मुस्कराया और बोला, "हाँ, आप कोई राजा-रईस होंगे और हम आपके अंगरक्षक।"

"आपका रूप और तेज देखकर तो आपको कोई भी मेरा सेवक नहीं मानेगा। आप मेरे पुत्र भी नहीं हो सकते। मेरा रूप-रंग आपसे विलक्षण है। आपके शरीर की ऊँचाई और चौड़ाई भी मुझसे विलक्षण है। होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कि आप कोई बहुत बड़े ज़मींदार दिखायी देंगे और मैं आपका मुंशी। ये अन्य सेवक मेरे अधीन आपके अंगरक्षक ही समझे जायेंगे।"

"चलो ऐसे ही सही। मैं आपके साथ हरिद्वार चलूंगा। वहाँ से आप मेरे साथ चलेंगे।"

"यह मैं अभी नहीं बता सकता।"

"मैं आपसे एक बहुत आवश्यक काम लेना चाहता हूँ।"

"काम जानने के बाद ही साथ चलने की बात कह सकूँगा।"

"वह बात तो मैं बताऊँगा ही। देखिये, मैं बताता हूँ कि रात आपसे बातों के उपरान्त मैंने यह समझा कि आप सराय वाले पर सन्देह कर रहे हैं कि उसने कहीं कोतवाल को आपकी सूचना न दे दी हो और कोतवाल से आप डरते थे।"

"मुझे कुछ यह ऐसा लगा कि आप औरंगज़ेब के कारिन्दों द्वारा पकड़ा जाना नहीं चाहते। साथ ही आपका रात एक क्षण में सेवक सुच्चालाल की बात को सतर्कता से स्वीकार करना यह प्रकट करता है कि आप सत्य ही शिवाजी के सलाहकारों में रहे हैं।

"इन सब बातों को जानकर मैंने यही विचार किया है कि आपकी संगति में कुछ समय तक रहकर देश की बात को और अधिक समझूँ।"

"ठीक है, श्रीमान्! आपकी बातों को सुनकर मैं यह जानने के लिए उत्सुकता अनुभव कर रहा हूँ कि आप कौन हैं जो देश की बात जानने के लिए चिन्तित हो रहे हैं?"

"हाँ। यदि आप मेरे आपके साथ चलने पर आपत्ति नहीं कर रहे तो मैं बताऊँगा ही कि मैं कहाँ से आया हूँ और किधर जा रहा हूँ?"

विश्वनाथ हँस पड़ा। हँसकर बोला, "तब तो आप कोई महान् योगी ही होंगे। उसके अतिरिक्त कौन है जो यह बता सकता है कि वह कहाँ से आया है कहाँ जा रहा है?"

अपनी बात का यह अर्थ समझकर तो वह युवक भी हँसने लगा। हँसते हुए उसने कहा, "मेरा यह मतलब नहीं था। मैं तो इस पार्थिव शरीर की बात ही कह रहा था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीमान् ! यह भी एक सरल बात नहीं। शरीर के विषय में जानना भी अध्यात्म का एक अंग ही है। विरले ही इसे जान पाते हैं।"

"मैं इस शरीर के मूल तत्व की बात नहीं कह रहा। मैं इस स्थूल पंचभौतिक शरीर की बात ही बताने की कहूँगा। देखिये, आज से सात वर्ष पूर्व यहाँ दिल्ली में पंजाब के एक महानात्मा की हत्या करने का यत्न किया गया था। उस महानात्मा ने मरने से पूर्व लिखकर बता दिया था कि कातिल ने सिर तो काट दिया, परन्तु सर नहीं काट सका।

"मूर्ख हत्यारा इसका अर्थ नहीं समझ सका और सिर और सर में अन्तर पर ही विचार करता रह गया। उन महापुरुष का सर से अभिप्राय जीवात्मा से था। उसी से यह शरीर सरता है। इस कारण वह शरीर का सर है। आत्मा की हत्या नहीं हो सकी थी। इसी से उन्होंने कहा था कि सिर तो काट दिया है, परन्तु आत्मा की हत्या नहीं कर सके। आत्मा स्वतन्त्र है और वह किसी से विवश नहीं किया जा सकता कि अपनी मान्यताओं का त्याग कर दे।"

विश्वनाथ समझ गया कि सामने बैठा युवक जीवन के रहस्य को समझता है। वह अब उसकी बात को अधिक ध्यान से सुनने लगा था। युयक ने एक-दो क्षण विचार किया और फिर कहा, "उस महानात्मा ने मेरे लिये इस संसार में आने का द्वार खोल दिया है। मुझे इस बात का गौरव है कि मैं उनकी सन्तान हूँ। साथ ही मैं वचनबद्ध हूँ कि उनकी हत्या का बदला लूँ।

"मेरा नाम गोविन्द है। और मैं उसका बदला लेने का उचित ढंग विचार कर रहा हूँ।"

विश्वनाथ ने तुरन्त उठकर गोविन्दजी के चरण-स्पर्श किये और हाथ जोड़ सामने खड़े होकर कहा, "महाराज ! मैंने आपके पूज्य पिजाजी का पूर्ण इतिहास जाना है। यद्यपि हमारी, मेरा अभिप्राय है कि समर्थ गुरु रामदासजी की जीवन-पद्धति आपके प्रातःस्मरणीय पिताजी की पद्धति से विलक्षण है, इस पर भी मैं उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। उनके पूर्ण विशेष रूप में उनके अन्त के, इतिहास की बात जानकर तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठता है ।

"महाराज ! हम, मेरा अभिप्राय है महाराज शिवाजी की राज्य-परिषद्, देश-भर के समाचार एकत्रित करती रहती थी । हमें देश में हो रहे घोर अन्याय और अत्याचार का विस्तृत ज्ञान रहता था और जिस दिन हमें स्वर्गीय गुरुजी महाराज की हत्या का एवं उनके एक शिष्य भाई मतिदास की निर्मम हत्या का समाचार मिला था, उस दिन महाराज शिवाजी सहित हम सबने दिन-भर शोक मनाया था । व्रत रखा था और इस क्रूरता का बदला लेने का संकल्प किया था । हमने अपने संकल्प को पूर्ण करने का यत्न किया है । संकल्प बहुत बड़ा था और वह एक जीवन काल में पूर्ण नहीं हो सका । महाराज शिवाजी चल बसे और मैं उस संकल्प के लिए किसी प्रकार का प्रयास न होता देख वहाँ से चला आया हूँ ।

"यह मेरा परम सौभाग्य है कि आपके दर्शन हो गये । यह जानकर चित्त अति प्रसन्न हुआ कि आप भी उस हत्या का बदला लेने का संकल्प किये हुए हैं ।"

"तो आप मेरे साथ चलेंगे ?"

"पहले तो आप मेरे साथ चल रहे हैं न ? तब तक मैं आपके विषय में और आप मेरे मन की बदले की कल्पना के विषय में जान जायेंगे; तदनन्तर हम दोनों देखेंगे कि हम कहाँ तक साथ-साथ चल सकते हैं ?"

"हम चलेंगे ।" गोविन्द ने कहा ।

गुरु गोविन्द उठ खड़े हुए । विश्वनाथ ने पुनः चरण-स्पर्श करते हुए कहा, "महाराज ! मुझे दो-तीन दिन यहाँ और काम है । तब मैं यहाँ से हरिद्वार जाना चाहूँगा । कई वर्ष से माता-पिता के दर्शन का सौभाग्य नहीं मिला । अब समाचार मिला है कि वे बहुत वृद्ध हो गये हैं और मैं कुछ दिन तक उनकी सेवा करना चाहता हूँ । आप तब अपना निवास-स्थान बता दीजियेगा और मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा ।"

: ४ :

विश्वनाथ शिव-मन्दिर के पुजारी के निवास-स्थान पर पहुँचा तो उसकी पत्नियाँ उत्सुकता से अपनी ननंद का सुख-समाचार सुनने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक्षा कर रही थीं।

विश्वनाथ पत्नियों की उत्सुकता देख मुस्कराया और एकान्त में बैठ बोला, "आशा अनुसार नील ने पत्र भेजा है।"

कल्याणी ने पत्र लेने के लिए हाथ बढ़ा दिया। विश्वनाथ ने मुस्कराते हुए अपनी जेब से पत्र निकाल देते हुए कहा, "वह तुम दोनों को नमस्कार कहती है।"

लक्ष्मी भी पत्र के लिए उतावली हो रही थी। इस कारण कल्याणी ने ऊँचा-ऊँचा पढ़ना आरम्भ कर दिया।

नीलमणि ने लिखा, 'भैया ! ईश्वर से सदा तुम्हारे दीर्घ और सुखी जीवन की याचना करती रहती हूँ। दो मास हुए पिताजी का सन्देश आया था और उन्होंने लिखा था कि विश्वनाथ से मिलने को चित्त करता है। सो भैया, आपको हरिद्वार जाना चाहिये और उनके चरण-स्पर्श कर इस पतित बेटी की ओर से क्षमा-याचना करना। मैंने जीवन की एक महान् भूल से माता-पिता को भारी कष्ट दिया है और उनके मन को क्लेश पहुँचाया है।

'पिछले वर्ष शहंशाह अजमेर से आये थे तो हरिहर से भेंट की बात बता रहे थे। इससे एक बात को जान कर सन्तोष हुआ है कि वह मन और बुद्धि से सजग और सतर्क है। हिन्दुओं की भांति वह निरुत्साह और निरुद्देश्य नहीं हो गया।

'मैं अभी भी आशा करती हूँ कि मैं इस पिंजरे से छूट जाऊँगी, परन्तु अब मैं वैसे भागने का यत्न नहीं करना चाहती जैसे कि एक बार पहले किया था। मैं आशा करती हूँ कि शहंशाह अपने अन्त काल से पूर्व अपने किये कर्मों पर पश्चात्ताप करेगा और मुझे भी छोड़ देगा।

'पिताजी ने एक बार यह भविष्यवाणी की थी कि मैं सम्वत् १७७० में यह कलेवर छोड़ूँगी। मैं जानती हूँ कि यह शहंशाह के मरने के उपरान्त होगा। यद्यपि मन में माँ के चरण छूने की उत्कट इच्छा है, परन्तु नहीं जानती कि यह सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा अथवा नहीं ? सो भैया, मेरी ओर से उनके चरण छूकर मेरे मन की अभिलाषा बता देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दोनो भाभियों के चरण-स्पर्श कर मुझ हीन-दीन बहन की नमस्कार कहना। उनकी सेवा का सौभाग्य पा सकूँ, यही अभिलाषा है।

'महल में भी ईश्वर की बहुरंगी सृष्टि विद्यमान है और उसे देख-देख चित्त प्रभु की महिमा का गान करता रहता है। यहाँ अति पतित जीव भी हैं जो पशुओं की भाँति दिन-रात मद्य, माँस, विषय-भोग और नृत्य-संगीत में रत रहते हैं और इस रेगिस्तान में नखलिस्तान भी है। शहंशाह की एक लड़की है। उसने विवाह करना स्वीकार नहीं किया और दिन-रात खुदा की इबादत में लीन रहती है। उसे देख चित्त को सन्तोष होता है कि कर्म-फल अति प्रबल हैं। कोई उसे टाल नहीं सकता।

'दक्षिण को लौटते समय भी यदि आगरा से होकर जाना होगा तो इस जेलखाने में सन्देश भेजने का यत्न करना।

'मैं अपनी खादिमा राधा के द्वारा बाहर के समाचार पाती रहती हूँ, यद्यपि महल के भीतर मैं अछूतों की भाँति समझी जाती हूँ। शहंशाह का हुक्म है कि मुझसे न कोई मिले और न कोई मुझसे बोले। यहाँ तक कि उस कक्ष में जिधर मैं रहती हूँ, कोई न आये। वही शहज़ादी बाप से बगावत कर मेरे पास आती है और घण्टों ही मेरे पास बैठ इस लोक और परलोक की बातें करती रहती है।'

नीचे नीलमणि के हस्ताक्षर थे।

विश्वनाथ ने बताया, "मैंने बहन को तुम दोनों के विषय में लिखा है और अपने हरिद्वार जाने के संकल्प की बात भी बतायी है। मैंने लिखा है कि अभी दो-तीन दिन तक यहाँ रहूँगा। इससे आशा करता हूँ कि एक पत्र उसका और आयेगा।"

वह पत्र भी आया और तब विश्वनाथ ने आगरे से चलने का प्रबन्ध कर दिया। आगरे से चलते समय विश्वनाथ का संग बड़ा हो गया था। एक रथ था। उसमें दोनों स्त्रियाँ यात्रा कर रही थीं। विश्वनाथ एक भाड़े के अश्व पर सवार था। गुरु गोविन्द राय और उसके तीनों साथी अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित बढ़िया घोड़ों पर सवार थे। यह सब ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कोई राज्य-लक्ष्मी रथ में सवार हो जा रही है और उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ अश्वारोही संरक्षक हैं और एक सामान्य अश्व पर सेवक हैं।

मार्ग पर जो कोई भी मिलता था, वह रथ में बैठी स्त्रियों को झुक कर सलाम करता था और गुरु गोविन्द राय की ओर आदर-युक्त भाव में देखता था। साथ में विश्वनाथ बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये एक सामान्य अश्व पर था।

आगरा से मथुरा, दिल्ली, मेरठ इत्यादि स्थानों से होते हुए यह यात्रियों का संग जा रहा था। प्रतिदिन दस-बारह मील यात्रा होती थी और फिर डेरे डाल दिये जाते थे। खेमे इत्यादि साथ थे और जो मार्ग में रानी बनी रहती थीं, पड़ाव पर रसोई बनाती थीं और सब लोग खाते थे।

मार्ग-भर में देश के विषय में चर्चा चलती रही थी। एक दिन गुरुजी महाराज और विश्वनाथ में देश के उद्धार की बात हो गयी। विश्वनाथ जान गया था कि गुरुजी महाराज मिट्टी के माधव नहीं। वे एक ज्योतिर्मय जीवित आत्मा हैं और यह स्पष्ट था कि यह आत्मा वर्तमान काल में अपने पद-चिह्न छोड़ जायेगी जो चिरकाल तक जनता को उनके जीने का मार्ग बताते रहेंगे।

विश्वनाथ उन पद-चिह्न छोड़ने वाले को चलने के लिए अपने मन से मार्ग-दर्शन करने का यत्न कर रहा था। इससे एक दिन दिल खोलकर बात हो गयी।

विश्वनाथ का कहना था, "देशोद्धार का अर्थ है देश में बसे लोगों का उद्धार। परन्तु महाराज, उद्धार तो जीवित प्राणी का होता है। मृत-प्राय व्यक्ति का उद्धार क्या होगा?"

"उसे जीवन-दान किया जा सकता है।"

"वह आपके समुदाय के गुरुओं ने देने का यत्न किया है।"

"हाँ। तो क्या वे दे नहीं सके?"

"मुझे तो वह दिखायी नहीं देता। देखिये महाराज, समर्थ गुरु रामदासजी ने भी जीवन-दान देने का उपाय किया था और वह अपने जीवन-काल में ही सफल हो गये थे। महाराष्ट्र में एक नव-चेतना का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचार हो गया। स्वराज्य की भावना जागृत हो गयी और हर हर महादेव का घोष करते हुए नव-युवक इन तुर्कों पर लपक पड़े कि वे भाग खड़े हुए थे।

"इसके विपरीत आपके एक-दूसरे के उपरान्त नौ गुरु हो गये किन्तु आप एक इंच-भर भूमि को भी अपने अधिकार में नहीं कर सके।"

"तो यह दोष गुरुओं की करनी से उत्पन्न हुआ है?"

"उनकी करनी से तो नहीं कहा जा सकता। इस पर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि इन महापुरुषों की शिक्षा एकांगी थी। वह शिक्षा हृदय को स्पर्श तो कर रही प्रतीत होती है, परन्तु उसका प्रभाव शरीर के अन्य किसी अंग पर नहीं है। आपके समुदाय में न तो कहीं मस्तिष्क है और न कहीं भुजायें।"

"मैं समझा नहीं।"

"देखिये भगवन्! समाज को एक मानव-शरीर की भाँति सर्वांगीण होना चाहिये। जैसे मनुष्य में सिर, बाहें, उदर और पेट होते हैं। इसी प्रकार समाज में ये चारों अंग सुचारु रूप से कार्य करने वाले होने चाहियें। आपके गुरुओं ने हृदय उत्पन्न करने का यत्न तो किया है, परन्तु न इस समाज-रूपी मानव का सिर है, न बाँहें।"

"सिर कहाँ से लायें?"

"जब माँ के पेट में बच्चा बनने लगता है तो पहले एक पिण्ड ही बनता है। यह पिण्ड एक समान ही होता है। बाद में इसमें विभाजन होता है और भिन्न-भिन्न अंग बनने लगते हैं।

"आपका समाज दो-ढाई सौ वर्ष में अभी तक उस विभाजन की स्थिति तक नहीं पहुँच पाया। यह अभी तक उस पिण्ड के समान ही है जो माँ के पेट में दस-पन्द्रह दिन तक ही रहता है और उस काल उपरान्त की स्थिति अभी आपके समाज में नहीं आयी।"

"इसका अनुमान तो मैं भी लगा रहा हूँ। अपने गुरु, मेरा अभिप्राय है कि पिताजी के देहावसान के उपरान्त मुझे एक भी व्यक्ति नहीं मिला जो मेरा मार्ग-दर्शन कर सके। मैं फारसी पढ़ गया हूँ और अब एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डितजी से संस्कृत पढ़ रहा हूँ। फारसी पढ़ाने वाला मुल्ला है। वह इस्लाम के गुणानुवाद गाता रहता है और संस्कृत पढ़ाने वाले ब्राह्मण देवता भगवती चण्डी की उपासना के लिये कहते रहते हैं। मुझे दोनों में अपना मार्ग दिखाई नहीं देता।"

विश्वनाथ मन में विचार कर रहा था क्या महाराज शिवाजी की भाँति यह युवक तैयार हो सकेगा ? शिवाजी की भाँति चपल शरीर और सतर्क बुद्धि के लक्षण यहाँ दिखायी नहीं देते थे। इस पर भी एक सुन्दर तेजोमय शरीर तो था।

हरिद्वार में तो पण्डित त्रिभुवनकीर्ति अति दुःखी थे। वह अपने परिवार के विखण्डित हो जाने के दुःख में घुलते हुए अब जीवन-यात्रा के अन्तिम पड़ाव पर पहुँच गये अनुभव करते थे। वह बहुत जीर्ण-शीर्ण और दुर्बल हो चुके थे।

विश्वनाथ उनसे सात-आठ वर्ष पूर्व मिलने आया था और इस काल में वह जीवन के पचास वर्ष पार कर गये प्रतीत होते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि सौ वर्ष से ऊपर की वयस प्राप्त वृद्ध हैं जो खाट-से-खाट हो चुके हैं।

विश्वनाथ के उनकी सेवा में पहुँचने के कुछ ही दिन में उनका देहान्त हो गया। इस देहान्त में महाराष्ट्र पर शम्भुजी जैसे चरित्रहीन व्यक्ति के राजा हो जाने का समाचार भी एक कारण था।

पण्डित त्रिभुवनकीर्ति अपने जीवन की व्यर्थता पर पश्चात्ताप तो करता था, परन्तु अब अपने लड़के के जीवन को भी व्यर्थ जाता देख वह सहन नहीं कर सका।

पिताजी के देहान्त पर विश्वनाथ अपनी माता चन्द्रमुखी के विषय में विचार करने पर विवश हो गया। कल्याणी के आग्रह पर चन्द्रमुखी पुत्र के अस्थिर जीवन की भागीदार बनने के लिए तैयार हो गयी।

दूसरी ओर विश्वनाथ गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा था कि वह गुरु गोविन्द राय के जीवन से सम्बद्ध हो अथवा नहीं ? गोविन्द राय आग्रह कर रहा था कि यह मराठा ब्राह्मण उसके साथ आनन्दपुर चले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहाँ रहता हुआ उनके समुदाय में मस्तिष्क का काम करे।

तेरह दिन के क्रिया-कर्म के लिए हरिद्वार में रहना अनिवार्य हो गया। इस सब काल में गुरु गोविन्द राय भी हरिद्वार में ही रहा और नित्य प्रति विश्वनाथ से मिलता रहा। वह निरन्तर आग्रह कर रहा था कि विश्वनाथ आनन्दपुर चले।

तेरहवीं हो जाने के उपरान्त एक दिन परिवार की गोष्ठी हुई और यह निश्चय हो गया कि विश्वनाथ आनन्दपुर जायेगा। उसकी दोनों पत्नियाँ और माताजी साथ ही जायेंगी।

विश्वनाथ के परिवार का यह निर्णय सुन गोविन्द राय फड़क उठा और दो दिन में ही सबने आनन्दपुर का मार्ग पकड़ लिया।

मार्ग में युवक गुरु ने अपने युवा मस्तिष्क के उद्गार बता दिये। उसने एक दिन विश्वनाथ के साथ-साथ घोड़े को चलाते हुए कहा, "पण्डितजी! हमारे परिवार में पिताजी की दूसरी हत्या है जो इन मुगलों ने की है और मैं तब तक स्वयं को पितृ ऋण से मुक्त नहीं मान सकता जब तक एक भी मुगल पंजाब में विद्यमान है।"

विश्वनाथ मुस्कराया और पूछने लगा, "पंजाब से आपका क्या सम्बन्ध है? आपको तो आनन्दपुर की बात करनी चाहिये।"

"आनन्दपुर में तो अब भी कोई मुगल नहीं है।"

"और आपको फारसी कौन पढ़ाता है?"

"वह तो तुर्क है। वह मुगल नहीं।"

"दोनों में अन्तर क्या है?"

"तुर्क पठान हैं। उनका राज्य मुगलों ने छीन लिया था, इसलिए वे परस्पर शत्रु हैं।"

"और मेरा राज्य तुर्कों ने छीना था। इस कारण हम उनके शत्रु हैं।"

इस पर गुरु गोविन्द राय ने पूछ लिया, "और हमने किसका राज्य छीना था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसा कोई दावेदार नहीं । इस कारण हमसे किसी को शत्रुता करने का अवसर नहीं ।"

"इससे तो यह सिद्ध हो गया कि हम किसी के शत्रु नहीं ।"

विश्वनाथ गुरु की बात सुन खिलखिलाकर हँस पड़ा । हँसता हुआ बोला, "महाराज ! आप ठीक कहते हैं । हम किसी के शत्रु नहीं, परन्तु ये तुर्क, पठान, मुगल और अब जो एक अन्य जाति के लोग आ रहे हैं, वे हमें अपना शत्रु मानते हैं। इस कारण हम क्या करें ? यही तो समस्या है ।"

"पर वे ऐसा क्यों मानते हैं ?"

"इसलिए कि हमारी देश-रूपी माता को अपनी पत्नी बना प्रयोग करना चाहते हैं ।"

गुरु गोविन्द राय के माथे पर त्योरी चढ़ गयी । यह देख विश्वनाथ ने कहा, "हम यह पसन्द नहीं करते । इसका विरोध करते हैं तो वे हमें अपना शत्रु मानते हैं । उनकी इच्छाओं की पूर्ति में हम बाधक जो हो रहे हैं ।"

"तो फिर ?"

"अब स्थिति यह है कि हम 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' समझने वाले उनको शत्रु नहीं कह सकते और वे हमें अपना शत्रु मान दिन-रात हमारी हत्या करने के लिए घूमते रहते हैं ।"

"हमारे गुरु, महात्मा, साधु, सन्त तो यह कहते फिरते हैं कि सब भगवान् की माया है । माया से ग्रसित हम कल्याण का मार्ग छोड़ नहीं सकते । हम इसे मिथ्या अस्तित्व-हीन और दुःख, क्लेशों के घर-संसार को छोड़ शीघ्रातिशीघ्र ब्रह्म-धाम में पहुँचने की चिन्ता करते हैं और वे हमारी दृष्टि के सम्मुख ही हमारी माँ से दुराचार करने में संकोच नहीं करते । हम उनको भाई मानते हैं । वे हमको भीरु और नपुंसक समझ हमारे चूतड़ों पर लात लगाते हैं ।"

गुरु गोविन्द राय वस्तुस्थिति को तो समझता था और दिन-रात होने वाले अत्याचार को वह देख रहा था । उसके लिए कठिनाई यह थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि यह सब कुछ अनुभव करता हुआ भी वह किसी प्रकार इसका विरोध करना नहीं जानता था।

वह विश्वनाथ के कथन को अनुभव करने लगा था कि समुदाय में मस्तिष्क का कार्य करने वालों का अभाव है।"

आनन्दपुर में पहुँच विश्वनाथ को गुरुजी ने अपना मुख्य परामर्शदाता नियुक्त किया और फिर उसकी योजना का विस्तार होने लगा।

विश्वनाथ ने देखा कि अथाह जन-समुद्र आनन्दपुर में गुरुजी के दर्शनार्थ आता था और भेंट-स्वरूप धन, वस्तु तथा मिठाई समर्पित कर जाता था।

जहाँ शिवाजी को महाराष्ट्र में लूट-मार से धन एकत्रित करना पड़ता था, यहाँ उसके बदले जनता में गुरुओं के प्रति श्रद्धा-भक्ति कार्य कर रही थी।

एक दिन विश्वनाथ ने कह दिया, "महाराज! आज पैदल सेना वह कार्य नहीं कर सकती जो घुड़सवार कर सकती है। इस कारण आपको घुड़सवार सेना का गठन करना चाहिये।

"सुना है कि आपके पितामह ने एक बार ऐसी घोषणा की थी कि जो लोग गुरुजी के चरणों में घोड़ा भेंट करेंगे वे परम कल्याण के भागी होंगे। आप भी ऐसा ही करिये।"

अतः अगले ही दिन यह आज्ञा जारी हो गयी और गुरुजी के अधीन अश्वारोही सेना तैयार होने लगी।

: ५ :

हरिहर को विदा कर शहज़ादा आज़म अपने हरम में जा पहुँचा। उसकी बेगम शहरयार बानो अपने पति की प्रतीक्षा में खड़ी थी। शहज़ादा को आया देख उसके मुख से अकस्मात् निकल गया, "खुदा का शुक्र है कि आपको इस खादिमा की भी याद आयी है।"

"बेगम! मैं तो आने के लिए बेताब हो रहा था, मगर एक बहुत ही जरूरी काम से रुका पड़ा था। देखो बेगम, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ?"

शहज़ादा ने अपने अँगरखे की जेब में से वह डिबिया निकाल ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो हरिहर उसे भेंट में दे गया था।

शहरयार ने उत्सुकता से हाथ बढ़ा पूछा, "क्या है ?"

शहज़ादा ने डिबिया खोली और उसमें से चमचमाते हीरे को निकाल बेगम के हाथ में रख बोला, "देखो कैसा है ?"

शहरयार ने हीरे को हथेली पर रख देखते हुए कहा, "बहुत बढ़िया है। कहाँ से लाये हैं ?"

"यह मेरी रानी के माथे पर दौनी में लगेगा तो रानी का हुस्न सौ गुना बढ़ जायेगा।"

शहरयार का खाना खाने में देर होने से आया हुआ क्रोध शान्त हो गया और वह हीरे को देख पूछने लगी, "किसी बहुत अमीर को लूट लिया मालूम होता है।"

"लूटा नहीं बेगम ! एक व्यक्ति है जो हमारे परिवार में भाई के तौर पर पला है। वह आज आया और यह तोहफे के तौर पर मुझे दे गया है।"

"कौन है वह ?" दोनों खाने के लिए दस्तरखान पर बैठ गये थे। शहरयार ने हीरा अपनी जेब में रख लिया था।

शाह आज़म ने बैठते हुए कहा, "आगरा के महल में एक निहायत ही बदसूरत बेगम रहती है। नाम है महताब बेगम। उसका एक लड़का है हिदायतुल्ला। एक वक्त वह शिवाजी के अंगरक्षकों का सालार था। अब उसके फौत हो जाने पर वह बेकार हो हमारे पास नौकरी के लिये आया है। मालूम होता है कि जब उस मराठा बागी ने सूरत को लूटा था तो उसके अंगरक्षकों के सालार को उस लूट में यह मिला होगा और वह घूम-घुमाव कर हमारी बेगम के चेहरे को रौशन करने के लिये यहाँ आ गया है।"

महताब बेगम का नाम सुन शहरयार गम्भीर हो आगरा के महल की कुछ बात स्मरण करने लगी थी। जब वह वहाँ पहुँची थी तो उसकी भेंट महताब से हुई थी और उसकी बातों से वह अति प्रभावित हुई थी।

वहाँ की खादिमाओं से उसने महताब का कुछ इतिहास और उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदसूरत होने की घटना का वृत्तान्त भी सुना था। अतः उसके लड़के हिदायत की बात सुन वह उन सब बातों को स्मरण कर गम्भीर हो गयी थी।

उसे चुप देख शहज़ादे ने पूछा, "बेगम! खामोश क्यों हो गयी हो?"

"आपके मुआज़िज वालिद शरीफ के कारनामों की बातें याद कर अपनी आकबत की बात सामने आ गई थी।"

"क्या नया कारनामा याद आ गया है? आखिर वालिद शरीफ का कोई एक कारनामा हो तो ध्यान में आये।"

"मैं इस वक्त तो अपनी महताब की बात ही याद कर रही थी। उस बेचारी को वहाँ किसलिए बन्द कर रखा है?"

"यह तो मैं जानता नहीं। एक बार माँ ने बताया था कि वालिद शरीफ उससे मुहब्बत करते थे और वह उनके बड़े भाई की बीवी थी। दोनों में बात बनी नहीं और यह जलकर खुदकशी करने में बदसूरत हो गयी थी।"

"तो आप कुछ नहीं जानते? देखो मुझे अम्मी महताब ने बताया है कि उनका आपके बाबा शहंशाह शाहजहाँ से निकाह पढ़ाया गया था और उनसे उनका एक लड़का भी है।"

"उन शहंशाह के दो लड़के अपनी माँ पर आशिक हो उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए बेताब थे और जहाँ हिन्दुस्तान की सल्तनत दोनों में झगड़े की वजह थी वहाँ यह बेगम भी झगड़े की आग में घी बन गयी। जब आपके ताऊ जान का सिर ज़ल्लाद ने उड़ा दिया तो आपके वालिद शरीफ अम्मी महताब को शाह दारा की बीवी ज़ाहिर कर उस पर अपना हक जमाने दौड़ पड़े। माँ को बेटे का बिस्तर गर्म करना पसन्द नहीं था और जब यह बात जबरदस्ती की जाने लगी तो वह एक शमादान के पास पहुँच अपने कपड़ों को आग लगा मशाल की भाँति जल उठी। आग बुझा दी गयी और वह खूबसूरत औरत जिस पर तीन-तीन शहंशाह लट्टू हो रहे थे, बदसूरत महताब रह गयी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह वहुत ही खौफनाक कहानी है ।"

"हाँ। यही याद कर उसके लड़के को देखने की ख्वाहिश करने लगी थी ।"

"क्या करोगी देखकर ?"

"कुछ नहीं । उस खूबसूरत महल के खण्डहर की गूँज सुन दिल को तस्कीन महसूस करूँगी ।"

"तो तुम चाहती हो कि उसे नौकर रख लूँ ?"

"वह हकीकत में आपके बाप का भाई है । आपके खानदान का एक रुक्न है। उसे किसी बड़ी फौज का सालारे-जंग बना उसे नेकनामी हासिल करने का मौका देना चाहिये ।"

"मुझे डर है कि तुम कहीं उसके साथ भाग न जाओ ।"

शहरयार हँस पड़ी और हँसते हुए बोली, "हमारे खानदान में यह रवायात नहीं कि शाही खानदान की लड़कियाँ आवारा-गर्दी करती फिरें।"

"मैं सोच रहा हूँ कि हिदायत को अपने साथ रखने से वालिद साहब की नाराज़गी और भी बढ़ जायेगी ।"

"वह तो बढ़ेगी ही । यह इस वजह से नहीं कि आपमें कुछ गलती है । वल्कि इस वजह से कि उनकी ज़िन्दगी-भर का काम दक्षिण की भट्टी में जन-भुन कर खाक हो रहा है । सुना है क्या हुआ है ?"

"क्या हुआ है ?"

"हुआ यह है कि शहंशाह की अज़ीम की चार बड़ी फौजें चारों ओर से एक चूहे को पकड़ने के लिए भेजी गयी थीं और ऐसा मालूम होता है कि चारों पछाड़ खा वापस लौट आयी हैं और आपको अब उस पहाड़ी चूहे को पकड़ने के लिए भेजा जा रहा है ।"

"यह खबर तुमको किसने दी है ?"

"आप अपने महल के दरोगा को भेज कर पूछ लीजिये कि यह खबर दुरुस्त है या गलत ।"

"यह बूढ़े मियाँ क्या चाहते हैं ? कुछ समझ में नहीं आ रहा । पंजाब बागी हो रहा है; क्योंकि उनके एक पीर को दिल्ली बुलाकर कत्ल करा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया था। बंगाल में खुदमुख्त्यार हुकूमत कायम हो गयी है। दखिन में अपनी पूरी ताकत से भी यह कामयाब नहीं हो रहे और अपनी नाकामयाबी का इलजाम आप पर लगाने के लिए आपको बुरहानपुर बुलाया जा रहा है। राजस्थान फिर बागी हो उठा है। रह गया दिल्ली और आगरा। मैं समझती हूँ कि उसे भी दुश्मन के हाथ में देकर ही ये मरेंगे।"

"पर बेगम ! मैं क्या करूँ ? कुछ समझ में नहीं आ रहा। जो कोई भी शहंशाह को सब्र और इस्तकबाल रखने की बात कहता है तो उनके खुशामदी पिट्ठू, जिनकी उनके दरबार में भरमार है, कहने लगते हैं कि वह काफिरों से मिल गया है। वह मुल्क में इस्लामी हुकूमत कायम करने में हारज हो रहा है।

"तुम शिया हो। सुन्नी शियों को भी काफिर मानते हैं और इसीलिये शहंशाह के दरबारी समझते हैं कि मैं भी काफिर हो गया हूं।"

"खैर, अब तो आपको बुरहानपुर में हाज़िर होने का हुक्म आने ही वाला है। आप वहाँ जाकर अपने वालिद साहब को समझाने की कोशिश करियेगा। जो कुछ हासिल हो गया है उसको मज़बूती से पकड़ कर नहीं रखेंगे तो वह भी हाथ से जायेगा। एक फकीर सरमद का कहा सही हो जायेगा। उसने कहा था कि मुगलों के जाँ-नशीं दिल्ली की सड़कों पर दो-दो रुपये पर बिकेंगे।"

"अगर मुझे बुरहानपुर जाना पड़ा तो तुम कहाँ रहोगी ?"

"मैं आपके साथ चलूंगी।"

"बहुत मुश्किल होगी।"

"क्या मुश्किल है ?"

"पहले ही शहंशाह तुमसे नाराज़ हैं और मेरे उनको समझाने पर वे समझेंगे कि तुम ही मुझे ये बातें समझा रही हो और वह फतवा दे सकते हैं कि तुम्हें तलाक दे दिया जाये और मेरे लिये कोई और ढूंढी जायेगी।"

"जो भी हो। आपको अपने ख्याल से सही राय देनी चाहिये। उसका जो कुछ भी नतीजा हो, हमको बर्दाश्त करना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे डर है कि मेरी भी हालत अकबर की तरह न हो जाये।"

"होने दीजिये। तब आप दोनों भाई मिलकर बगावत को और तेज़ कर दें।"

"मैं समझता हूँ कि हिदायत को साथ ले चलूं। वह भी कुछ ऐसी ही बात कह रहा है।"

"हाँ। उसके दीदार करा दीजिये। जाली के बाहर बैठ कर आप लोग बातें करियेगा और मैं जाली के पीछे बैठ कर सुनती रहूँगी, इस तरह दीदार भी हो जायेंगे।"

"बीच में बोलोगी तो नहीं ?"

"अगर मेरी बात हुई और आपने कुछ गलत बताया तो उसकी तरदीद करनी ही पड़ेगी।"

"भला तुम्हारे मुतल्लिक मैं गलत बात क्यों बताऊँगा ?"

"मैं अम्मी के बेटे को देखना चाहती हूँ।"

"तुम उसे अम्मी क्यों कहती हो ?"

"उनके बेटे को भाई कहने के लिये।"

"ओह ! बहुत दूर की बात सोच रही हो।"

"हाँ। यह औरतों की आदत है। वे माँ, भाई, बहन सबको अपना बनाती फिरती हैं। एक कमज़ोर शख्स के लिये यही तो दुरुस्त रवैया है।"

अगले ही दिन शहज़ादा अपने सिपहसालारों को बुला उनसे बात-चीत करने लगा। उसे शहंशाह का हुक्म मिल चुका था कि वह फौरन बुरहानपुर लौट आये।

जाने से पूर्व वह अपने सैनिकों को होशियार कर देना चाहता था। साथ ही यह बताना भी नहीं चाहता था कि शहंशाह उससे नाराज़ है। इस कारण उसने सालारों को एकत्रित कर कहा, "मैं शहंशाह से कुछ नयी हिदायत लेने के लिये बुरहानपुर जा रहा हूँ। इसलिये दिलेर खाँ को अपनी जगह पर सालारे-जंग मुकर्रिर कर रहा हूँ।"

शहज़ादा आज़म ने अपने अधिकार की मोहर दिलेर खाँ के हाथ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे दी और खुद अपने बुरहानपुर जाने की तैयारी में लग गया। जाने से पूर्व उसने सराय से हिदायत उल्ला को बुलवाया और उसे अपनी निजी बैठकघर में बैठाकर नयी परिस्थिति से परिचित कर दिया।

बैठकघर का बड़ा कमरा बीचोंबीच जाली से दो हिस्सों में बँटा हुआ था। एक हिस्से में शहज़ादा जाली की ओर पीठ करके बैठा हुआ था। उसी हिस्से में जाली के सामने हिदायत को बैठने के लिए कहा गया। उसका मुख जाली की ओर था। बैठक के बाहरी भाग में रोशनी थी और जाली के पीछे अँधेरा था।

शहज़ादा ने हिदायत उल्ला को बैठाकर कहा, "देखो भाई हिदायत! यहाँ तुमसे मुलाकात के बाद इन्कलाब हो गया है। मुझे हुक्म हुआ है कि मैं फौरन बुरहानपुर लौट जाऊँ। इसलिए अब मैं किसी को इस सेना में तैनात नहीं कर सकता। इस पर भी मैंने यह फैसला किया है कि तुम भी मेरे साथ चलो। जब मैं फिर किसी मुहिम पर भेजा जाऊँगा तो तुमको साथ ले चलूंगा।"

इस आदेश को सुन हिदायत गम्भीर भाव में विचार करने लगा कि वह इस प्रस्ताव को स्वीकार करे अथवा न करे।

इस पर शाह आज़म ने पूछ लिया, "क्यों? सोच क्या रहे हो?"

"यही कि आपके साथ चलना मंजूर करूँ अथवा नहीं?"

"क्यों, मेरे साथ चलने में क्या दिक्कत है?"

"आपके साथ चलने में तो कोई दिक्कत नहीं, मगर शहंशाह के सामने जाने से डरता हूँ। वे मुझे कैद कर लेंगे।"

"क्यों?"

"इसलिए कि मैंने उनकी खिदमत में रहने से इन्कार कर दिया है। मेरी एक शर्त थी। वह उन्होंने पूरी नहीं की और मैंने उनकी खिदमत में रहने से इन्कार कर दिया है। मेरे इन्कार करने पर उन्होंने मुझे कैद कर रखने का हुक्म जारी कर दिया था, मगर मैं महाराज शिवाजी की नौकरी कर चुका था और उनसे सीख चुका था कि कैसे जाल कुतर कर कैद से छूटा जा सकता है। मैं भी जाल कुतर कर निकल गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी पिछले साल मैं अजमेर में उनके सामने हाज़िर हुआ था। नौकरी पाने के लिए नहीं, बल्कि सफर खर्च के लिए एक हज़ार रुपया खरायत माँगने के लिए। उन्होंने रुपया दिया और मुझे वहीं रह जाने के लिए कहा था। मैंने इन्कार कर दिया और एक शर्त उनके सामने रख दी थी। वह उन्होंने मानी नहीं और मैं वहाँ से चला आया। मुझे मालूम हुआ है कि वह एक बार फिर मुझे कैद करने का इरादा रखते थे और मेरे उनके सामने से चले आने के बाद उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए अपने मुतास्सिबों के गिरोह को भेजा था। मगर वह समझे थे कि मैं सूरत की ओर भागा जा रहा हूँगा और हकीकत यह थी कि मैं अज़मेर की ही एक सराय में कई दिन के लगातार सफर की थकावट दूर कर रहा था और मैं सूरत को सीधे रास्ते से नहीं गया। वहाँ से मैं बुन्देलखण्ड की ओर चला गया था और फिर बुरहानपुर की ओर से होता हुआ सूरत पहुँचा था।"

"शहंशाह की इस बहादुरी का कारनामा किसने बताया है?"

"आपकी खिदमत में ही एक सालारे-जंग बहादुर खाँ है। वह कल मुझे सराय में शराब पीता हुआ मिला था। यह वही आदमी था जिसने मुझे शहंशाह से मुलाकात करने के लिए जाने पर रोका था और मैं तलवार से उसका सिर कलम कर देना चाहता था, मगर वह भाग खड़ा हुआ। इस पर भी उसके हाथ की दो अंगुलियाँ कट गयी थीं। कल वह मुझे अपना हाथ दिखाकर कह रहा था कि वह मुझे उमर-भर नहीं भूल सकता।

"मैंने जब बताया कि मैं आपकी खिदमत पाने के लिए यहाँ आया हूँ तो उसने मुझे शहंशाह जिनको बचपन में मैं अब्बाजान कहा करता था, के कारनामे की बात बता दी। उसने बताया है कि मुतास्सिबों का वह गिरोह मुझे ढूंढता हुआ सूरत तक गया था और मेरा कहीं पता न पा लौट आया था।"

"तो फिर क्या खयाल है बुरहानपुर चलने के मसलह पर?"

हरिहर अभी इस विषय पर मौन हो विचार कर रहा था कि जाली के पीछे से आवाज़ आयी, "और भाई जान हिदायत साहब! आपकी क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्त थी जो शहंशाह अज़ीम ने नहीं मानी ?"

हरिहर विस्मय में शहज़ादा का मुख देखने लगा। शाह आज़म की हँसी निकल गयी। हँसते हुए बोला, "यह मेरी नयी बीवी बेगम शहरयार बानो है। यह भी तुममें दिलचस्पी रखती है।"

हरिहर ने तुरन्त गम्भीर हो और उस जाली की ओर मुख कर झुक कर हाथ को तीन बार माथे की ओर ले जाकर सलाम कर दिया और खड़े-खड़े ही बोला, "बेगम बहन! मेरी शर्त यह थी कि मेरी माँ जिन्हें शहंशाह ने महल में कैद कर रखा है, छोड़ दी जायें। उन्हें मेरे साथ रहने की इजाज़त दी जाए। तब ही मैं उनकी नौकरी मंजूर कर सकता हूँ।"

"तो तुमने अपनी माँ को देखा है ?"

"मौज़ूदा हालत में तो नहीं। मगर जब वह अपने पूरे जाहो-जलाल में थी तब देखा था। बहुत दिन की बात है। तब मैं चार-पाँच साल की उमर का था। उन्होंने मुझे गोद में बिठाया था। मेरा मुख चूमा था। मुझे इस वक्त भी उनकी वह शक्ल-सूरत अच्छी तरह से याद है और उनके प्यार को इस वक्त भी महसूस करता हूँ।

"सुना है कि अब उनकी सूरत-शक्ल बहुत कुछ बिगड़ चुकी है, मगर उनकी एक खादिमा एक बार मिली थी और कहती थी कि वह अभी भी मेरे लिए अज़हद मुहब्बत रखती हैं। वह मेरी माँ हैं और मैं उनकी कदम-बोसी के लिए हमेशा बेताब रहता हूँ।"

हिदायत की आवाज़ यह कहते-कहते भर्रा उठी थी। उस आवाज़ से यह विदित होता था कि वह अपने आँसू भीतर-ही-भीतर पी रहा है।

हरिहर जब कह चुका तो जाली के पीछे से एक, पहले जैसी दबी हुई आवाज़ आयी, "भाईजान! आप हमारे साथ बुरहानपुर चलिए, वहाँ यह कोशिश की जायेगी कि आपकी अम्मीजान को आपके साथ महल से बाहर रहने की इजाज़त मिल सके।"

"शुक्रिया बेगम बहन! मैं शहज़ादा साहब की खिदमत में हाज़िर रहूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

बुरहानपुर में भारी हलचल थी। चार शाही फौजें शम्भुजी को मार कर अथवा जीवित ही पकड़कर लाने के लिए भेजी गयी थीं और चारों-की-चारों बहुत बुरी तरह पराजित होकर वापस लौट रही थीं।

उत्तर कौंकण को सैयद हसनअली खाँ के अधीन एक प्रबल सेना भेजी गयी थी। एक दूसरी सेना शहाबुद्दीन खाँ के अधीन नासिक को भेजी गयी थी। तीसरी, रूह उल्ला खाँ और शाह आलम के अधीन अहमदनगर को भेजी गयी थी और चौथी सेना शाह आज़म के अधीन बीजापुर की सरहद पर भेजी गयी थी।

शाह आज़म तो छोटी-मोटी झड़पों से अधिक कुछ कर नहीं सका। वास्तव में वह कुछ करना भी नहीं चाहता था। उसका उद्देश्य तो केवल यह था कि बीजापुर से किसी प्रकार की सैनिक सहायता और रसद-पानी शम्भुजी की सेना को न जा सके और शेष तीनों सेनाओं को पूना तक पहुँच पूरे महाराष्ट्र को कुचल डालना था।

मगर हुआ यह कि तीनों सेनायें बुरी तरह घायल होकर वापस बुरहानपुर की ओर लौट रही थीं और उनके सालारे-जंग पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे।

जब शाह आज़म का काफिला बुरहानपुर में पहुँचा तो शेष तीनों सालारे-जंग वहाँ पहले पहुँच चुके थे और शहज़ादा के पहुँचते ही सब सालारे-जंगों की एक बैठक शहंशाह के बैठकघर में हुई। शहंशाह उसमें खुद हाज़िर थे।

सबके वहाँ पहुँचते ही बातचीत आरम्भ कर दी गयी। सबने अपनी-अपनी पराजय के कारण वर्णन किये। रूह उल्ला खाँ और शाह आज़म ने बताया, "बारिश न होने की वजह से पानी की बहुत किल्लत हो गयी थी और जिन कुओं में पानी था उनमें ज़हर डाल दिया गया था नतीजा यह हुआ कि किसी किस्म की लड़ाई के पहले ही आधी फौज तबाह हो गयी और बकाया फौजी भाग खड़े हुए।

"मजबूर हमने सबको अहमदनगर छोड़ मशरक की ओर लौटने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुक्म दे दिया है। फौज लौट रही है। हम इत्तला देने के लिए पहले लौट आये हैं।

"नासिक भेजी गयी फौज जो शहाबुद्दीन के अधीन थी वह नासिक तक पहुँच ही नहीं सकी थी। मार्ग में ही छापामार मराठों ने फौज का नाक में दम कर दिया और फौज ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया है।

"इसी प्रकार की बात सैयद हसन अली खाँ के अधीन सेना की थी। सेना में बहुत-से सिपाही अपने शिविरों को छोड़ गोआ के क्षेत्र में चले गये थे।"

"और तुम बताओ साहबज़ादे! तुम क्या कहते हो?" शहंशाह ने शाह आज़म से पूछा।

"अब्बाजान!" शाह आज़म ने कहा, "मैंने तो वह काम, जो मुझको दिया गया था, पूरा कर दिया है। मैंने एक दाना राशन का बीजापुर से महाराष्ट्र में जाने नहीं दिया।"

"मगर यह काम तो ऐतियातन था। असल काम तो बीजापुर पर काबज़ होना है।"

"यह काम मैंने किसी और के लिए छोड़ दिया है।"

"किसके लिए?"

"जिसको आप हुक्म देंगे।"

"पर तुम क्यों नहीं करते इस काम को?"

"क्या इसके भी बताने की ज़रूरत है अब्बाजान? अपने ही लोगों पर बिला वजह हमला नहीं किया जा सकता।"

"मगर वजह तो है।"

"क्या वजह पैदा हो गयी है?"

"हमें अपनी हुकूमत दखिन में कायम करनी है।"

"मैं बीजापुर की हुकूमत को अपनी ही हुकूमत समझता हूँ। वहाँ का मालिक शाह सिकन्दर अपना ही है। वह हर तरह से मदद करने के लिये तैयार है।"

"नहीं। तुम नहीं समझते। सियासियत में रिश्तेदारी की परवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं की जा सकती।"

"ठीक है अब्बाजान ! मैं यही कह रहा हूँ। बीजापुर के कायम रहने में मैं अपनी सियासत का फायदा समझ रहा हूँ। मैं दखिन में एक अपनी मददगार रियासत बना रहा हूँ।"

"मगर यह होगा नहीं। दो तलवारें एक म्यान में नहीं रह सकतीं।"

"मैं एक म्यान में दो तलवारें नहीं डाल रहा। मैं तो दो तलवारें अलहदा-अलहदा म्यानों में डाल दोनों को अपनी कमर से बाँधने का इंतजाम कर रहा था।"

"ओह ! तो तुम भी बगावत करोगे ?"

"किससे अब्बाजान ?"

"मुझसे।"

"आपने मेरा क्या बिगाड़ा है ?"

"बिना बिगाड़े भी तो बगावत हो सकती है।"

"जैसे आपने की थी ?"

"बहुत गुस्ताख होते जाते हो।"

"अब्बाजान ! मैं तो आपको इतमीनान दिलाने के लिये कह रहा हूँ कि मैं वह कुछ नहीं कर रहा जो हमारे अब्बाजान ने किया था।"

"तो फिर तुम एक बात करो।"

"फरमाइये।"

"तुम शम्भुजी और अकबर को पकड़ कर हमारे सामने हाज़िर करो।"

"कोशिश कर सकता हूँ।"

"हाँ। तुम आज ही अहमदनगर के लिये रवाना हो जाओ और वहाँ से तभी लौटना जब हमारा यह काम पूरा कर लो।"

"बहुत अच्छा, जहाँपनाह।"

"आज शाम तक बताना कि इस मुहिम के लिये तुमको कितना रुपया चाहिये।"

"शाम तक अपने मोदी से पता करके बताऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन है तुम्हारा मोदी ?"

"हुक्म हो तो उसको साथ लेकर हाजिर हो जाऊँ ?"

"हाँ, ले आओ। ज़रा हम देखना चाहते हैं कि तुम्हारा मोदी किस तरह मुहिम के खर्चे का हिसाब लगाता है।"

शाम के वक्त शाह आज़म हरिहर को साथ लेकर शहंशाह की बैठक में हाज़िर हो गया। औरंगज़ेब हिदायत उल्ला को सामने खड़ा सलाम करता देख अवाक् रह गया।

कितनी देर तक मौन बैठे रहने के उपरान्त उसने शहज़ादा से पूछा, "यह किसे ले आये हो यहाँ ?"

"अब्बाजान ! यह मेरा मोदी है।"

"पर यह तो बागी है।"

"इस पर मुकद्दमा चलाया जाये और इसे सफाई का मौका दिया जाये।"

"हमारी सल्तनत में मेरा फरमान आखरी होता है। उसके बाद कोई अदालत नहीं जिसमें हमारे हुक्म को रद्द करने की अर्ज़ी दी जा सके।"

"पर अब्बाजान !" अब हरिहर ने बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "आपके हुक्म को भी रद्द करने वाला एक है।"

"कौन है वह ?"

"खुदावन्द करीम है। कई बार वह आपके हुक्म को रद्द कर चुका है।"

"क्या किया है उसने रद्द, और अपने एक दीनदार खलीफा के हुक्म को कब रद्द किया है ?"

"देखो अब्बाजान ! एक बार आपने मराठों के सरदार शिवाजी को कैद कर रखा था और खुदाबन्द करीम ने उसको भाग निकलने का रास्ता बता दिया।

"फिर एक बार आपने अपने एक फरज़न्द अर्जमन्द को कैद करने का हुक्म दिया था और वह उसी करीम रहीम की मदद से अपनी बीवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को साथ लेकर बच निकला था।

"एक बार और आपने अपने इस फरज़न्द को पकड़ कर मार डालने का हुक्म अपने मुतास्सिबों को दिया था और तब भी खुदा ने आपके फरज़न्द को बचा लिया था।"

"लेकिन अब तुम बच कर नहीं जा सकते।"

शहंशाह ताली बजाने लगे तो हिदायत जो इस बात के लिये तैयार खड़ा था, लपक कर शहंशाह के दोनों हाथों को अपने दोनों हाथों में पकड़ कर खड़ा हो गया। ताली बजने नहीं दी। इस समय तक शाह आज़म ने अपनी तलवार निकाल ली। उसने कहा, "अब्बाजान! अब मैं जाता हूँ। आप बूढ़े हो गये हैं और हुकूमत करने के लायक नहीं रहे। इस पर भी मैं बगावत नहीं करूँगा।"

शहंशाह विचार कर रहा था कि वह शोर मचाये अथवा न मचाए। वह अभी निश्चय नहीं कर सका था कि हिदायत ने शहंशाह को छोड़ा और शाह आज़म के साथ बैठकघर से बाहर निकल गया।

ये दोनों महल से बाहर निकल घोड़े पर सवार हो चल दिए। हरिहर तो अपने साथ तलवार लाया नहीं था और शहज़ादा को तलवार लेकर महल में जाने की इजाज़त थी।

ये दोनों घोड़ों पर सवार हो तुरन्त शहर से निकल जंगल की ओर भाग खड़े हुए। एक सपाटे में दो-तीन मील दूर जाकर दोनों ने घोड़ों की लगामें खींच लीं और शहज़ादा खड़ा हो पूछने लगा, "हिदायत! यह तो बहुत बुरा हुआ है।"

"हाँ। मगर आप तो अपने मुकर्रिर काम को करने के लिये जा सकते हैं। मैं अब नगर में वापस नहीं जाऊँगा।"

"देखो, तुम ऐसा करो कि सीधे यहाँ से अहमदनगर चले जाओ और मेरी वहाँ इन्तज़ार करो।"

"मैं भी यही ठीक समझता हूँ। आप यहाँ से लौट जाइये।"

हरिहर ने दक्षिण का मार्ग पकड़ा और शाह आज़म लौट आये। उसके लौटने तक नगर में अँधेरा हो चुका था। जब वह अपने महल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचा तो उसने देखा कि निवास-स्थान के द्वार पर दोहरा पहरा बैठा था। एक तो शहज़ादा के सिपाही थे जो शहरयार ने अपनी हिफाज़त के लिये नियुक्त किये हुए थे और दूसरे शाही सिपाही थे जो किसी को भी वहाँ से भागने से रोकने के लिये शहंशाह ने नियुक्त किये थे।

शाही सिपाहियों को हुक्म था कि शहज़ादा के महल से कोई भी शख्स बाहर न जा सके। शहरयार ने अपने सिपाहियों को हुक्म दे रखा था कि शाही सिपाही भीतर न आने पायें। उसने अपने साथ आये दो सौ-के-दो सौ सिपाही वहाँ मुकर्रिर कर रखे थे।

जब शहज़ादा घोड़े पर सवार वहाँ पहुँचा तो शाही सिपाहियों ने भीतर जाने का मार्ग छोड़ दिया। वे तो किसी को बाहर जाने से रोकने के लिए नियुक्त हुए थे। हाँ, उन्होंने शहज़ादा के अकेले लौटने की सूचना शाही महल में भेज दी।

शहज़ादे ने घोड़े की लगाम अपने एक सिपाही को दे कह दिया, "इसे आराम कराओ।" इतना कह वह स्वयं भीतर महल में चला गया।

शहरयार बानो को भी सूचना पहुँच चुकी थी कि शहज़ादा साहब आ गए हैं। वह तुरन्त अपने कक्ष से निकल आयी। उसने हाथ में नंगी तलवार पकड़ी हुई थी।

शहज़ादा उसे देख हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "वाह रे, मेरे मुहाफिज़ ! क्या हुआ है यहाँ ?"

"आइये, अन्दर आ जाइये।"

शहज़ादा बेगम के पीछे-पीछे बेगम के कमरे में पहुँचा तो बेगम ने बताया, "आपके जाने के बाद मैंने एक जासूस को आपके पीछे भेजा था। वह आपकी नकलो-हरकत की इत्तला देने के लिए था। आपके जाने के चौथाई घण्टे बाद ही वह लौट आया और उसने बताया कि आप और मोदी साहब दोनों शहंशाह के दीवानखाने में से निकल घोड़ों पर सवार हो तेज़ी से जंगल की ओर भाग गये हैं।

"मैं सब समझ गयी और मैंने उसी समय अपने सिपाहियों के सालार

—९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बुला हुक्म दे दिया कि महल को घेर लो और किसी को भी भीतर न आने दो।

"मेरे सिपाही तैनात करने के कुछ ही लहमा बाद शाही सिपाही आ गये और तब से दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े हैं।"

"मैं बेचैनी से आपकी खबर जानने की इन्तज़ार कर रही थी।"

"ठीक है। मगर अभी शहंशाह को सूचना गयी है कि मैं आ गया हूँ और किसी किस्म की दूसरी कार्यवाही की उम्मीद करनी चाहिए।"

"देखिये हजरत! आपके बाप ने आपके बड़े भाई को दरगौर कर रखा है। आपके एक छोटे भाई को तंग कर बगावत पर आमादा कर दिया है और अब आप पर बे-बुनियाद इलज़ाम लगा आपको कैद करने का इरादा ज़ाहिर किया है। मैं यह नहीं होने दूँगी। इस महल में खून की नदी बह निकलेगी और तब ही वे आपको या मुझको पकड़ पायेंगे।"

"फिक्र न करो बेगम! यह कुछ नहीं होगा। अगर हमारे ये बीजापुरी सिपाही वफादार रहे तो कुछ नहीं होगा। होगा यह कि शहंशाह या तो इन सिपाहियों को रिश्वत दे, खरीदकर इन्हें मुझसे दगा करने पर आमादा कर देंगे, या फिर शहंशाह मुझसे सुलह करने की कोशिश करेंगे।

"हमें उनकी इन चालाकियों का मुकाबला करने का इन्तज़ाम करना चाहिये। वह आज तक किसी से भी सीधे लड़ नहीं सके।"

शहरयार ने फौरन अपने सिपाहियों के सालार को बुला कह दिया कि वे सब लड़ने के लिए तैयार रहें। साथ ही यह सावधानी बरतने के लिए भी कहा गया कि, "शहंशाह का कोई एहलकार सिपाहियों को बरगला हमारे खिलाफ न कर सके। किसी को भीतर मत आने दो।"

"हुज़ूर! अगर शहंशाह खुद अकेले आना चाहें तो फिर?"

"तो आने दो।"

"तलवार लिये हुए भी?"

"हाँ। हमने अभी उनकी तलवार छीनने का हक हासिल नहीं किया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

हुआ वही जैसा शहज़ादा ने कहा था। शहंशाह का एक अर्दली आया और शहंशाह का हुक्म सुना गया।

"हुज़ूर ! शहंशाह चाहते हैं कि शहज़ादा साहब और बेगम साहिबा उनके साथ बैठकर खाना खायें।"

शहज़ादा अभी विचार ही कर रहा था कि अर्दली को क्या उत्तर दे कि शहरयार ने जो पर्दे के पीछे खड़ी अर्दली की बात सुन रही थी, बोल उठी, "हुज़ूर ! अर्दली से कह दीजिये कि हम खाना खा चुके हैं और उनके हुक्म की तामील में अहमदनगर के लिए रवाना होने के लिए तैयार खड़े हैं।"

शहज़ादा की समझ में आ गया कि शहरयार किस बात की आशा में इन्कार कर रही है। इस कारण उसने भी अर्दली की ओर देख कह दिया, "हाँ। बेगम साहिबा की अर्ज़ी वहाँ बता देना।"

अर्दली गया तो शहज़ादा पर्दे के पीछे खड़ी बेगम के पास आ कहने लगा, "शहंशाह का दावतनामा नामंज़ूर कर तो हमने उन्हें और ज़्यादा नाराज़ होने का मौका दे दिया है।"

"मुझे यह यकीन हो रहा है कि या तो शहंशाह हमें खाने में ज़हर देकर हमारा काम तमाम करने का इरादा रखते हैं या हमें किसी मज़-बूत किले में कैद कर ज़िन्दगी की घड़ियाँ गिनने के लिए मजबूर करने वाले हैं।"

"तो ?"

"तो यहाँ से कूच कर देना चाहिये। इन सिपाहियों को साथ लेकर यहाँ से तुरन्त चल देना चाहिये। बकाया बात यहाँ से दस मील के फासले पर पहुँच कर सोच लेंगे।"

नौकरानियों को हुक्म हो गया कि ले जाने लायक सामान बाँधकर ऊँटों पर लदवा दिया जाय।

सालार को हुक्म हो गया कि सब-के-सब बीजापुरी सिपाही आधे घण्टे में यहाँ से चलने के लिये तैयार हो जायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सालार अभी अपने अधीन सिपाहियों को शहज़ादा साहब का हुक्म सुना ही रहा था कि शहंशाह की सवारी आती दिखायी दी। सब होशियार हो अपने-अपने स्थान पर जा खड़े हुए।

शाही सिपाही भी और बीजापुरी सिपाही भी पंक्तियाँ बाँधे खड़े हुए तो पंक्तियों के बीच में से शहंशाह की पालकी आ महल के द्वार पर भूमि पर रख दी गयी और उसमें से शहंशाह बाहर निकल महल में जा पहुँचे।

उस समय शहज़ादा साहब और बेगम का सामान तेज़ी से बाँधा जा रहा था। गठरियाँ बँधी हुई इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं और नौकर-नौकरानियाँ उनको उठा-उठाकर एक ओर कौने में रख रहे थे।

इस प्रकार सामान बाँधते हुए सब लोग शहंशाह को आया देख काम छोड़ खड़े हो बा-अदब सलाम करने लगे।

"कहाँ है शहज़ादा साहब ?" शहंशाह ने एक से पूछा।

"जहाँपनाह ! दोनों भीतर कपड़े बदल कर जाने की तैयारी कर रहे हैं।"

एक नौकरानी की ओर देख शहंशाह ने कहा, "इत्तला करो कि हम आये हैं।"

"इत्तला कर दी गयी है।"

"तो फिर ?"

"जहाँपनाह ! तशरीफ रखिये। वे ज़रूर कपड़े पहन रहे होंगे। नहीं तो फौरन खिदमत में हाज़िर हो जाते।"

शहंशाह चारों ओर कोई स्थान देखने लगे थे जहाँ पर बैठ कर वे लड़के की तैयारी की इन्तज़ार कर सकें। ठीक इसी समय शाह आज़म अपने हरम से निकला और शहंशाह को फर्शी सलाम कर सामने खड़ा हो गया।

"कहाँ है तुम्हारी बागी बेगम ?"

"हुज़ूर ! यहाँ कोई बागी बेगम नहीं है। एक है जो हमेशा शहंशाह-ए-अज़ीम की उमर दराज़ के लिये दुआ किया करती है। वह यहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवाना होने से पहले गुसल कर रही हैं और अगर शहंशाह अज़ीम साथ की बैठकघर में तशरीफ रखने की तकलीफ गवारा करें तो बेगम दो-चार मिनट में ही हाज़िर हो सकेगी। उनको इत्तला कर दी गयी है।"

शहंशाह बैठकघर में चला गया। शहज़ादा उनके पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँचा। बकाया नौकर-नौकरानियों को बाहर दालान में ही ठहरने के लिए कह दिया गया।

बैठक में पहुँचते ही शहंशाह ने शाह आज़म से पूछा, "कहाँ की तैयारी हो रही है ?"

"हुज़ूर ने हुक्म दिया है कि अहमदनगर में पहुँच वहाँ से मुहिम की रहनुमाई के लिए जाऊँ। इसलिए वहीं जाने की तैयारी कर रहा हूँ।"

"इस वक्त रात में ही ?"

"हुज़ूर ! दिन के वक्त धूप और गर्मी होती है। इस वक्त ठण्डे-ठण्डे में दस-बारह मील निकल जायेंगे और दिन के वक्त किसी ठण्डी जगह पर पड़ाव डाल आराम करेंगे।"

"बहुत समझदार हो गये हो।"

"हुज़ूर ! आपने यह बात सीखने का मौका दिया है और फिर वह हमारा मोदी इस इलाके का जानकार है। उसकी भी यही राय है।"

"हाँ, वह कहाँ है ?"

शहज़ादा शहंशाह की बात का उत्तर देने ही वाला था कि बेगम कपड़े पहन और ऊपर बुर्का ओढ़े हुए बैठकघर में आ गयी और झुककर सलाम कर सामने खड़ी हो गयी। शहज़ादा ने कहा, "हुज़ूर ! यह है मेरी निहायत ही प्यारी बेगम शहरयार बानो, सुल्तान बीजापुर की बड़ी बहन।"

"यह हमसे भी पर्दा करेगी ?"

शहरयार ने इस बात का जवाब दिया, "जहाँपनाह ने अभी तक मुझे अपने खानदान में शामिल करने का कोई सबूत नहीं दिया। हमारे यहाँ रिवाज है कि घर के बड़े-बुज़ुर्ग बहू को कुछ नज़र-न्याज़ देते हैं तो बहू पर्दा उठाती है। आपने अभी तक इस खादिमा को वह फख्र नहीं बख्शा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! मगर इस वक्त तो हम इस मतलब के लिए कुछ लेकर आये नहीं। यह रस्म तो आगरा पहुँचने पर ही अदा की जा सकेगी।"

"मैं आपके वायदे का यकीन करती हूँ और आपके आगरा पहुँचने की इन्तज़ार कर सकती हूँ। इसी वायदे के बिना पर अपने शरा के मुताबिक हासिल खाविन्द के मुअज़िज वालिद शरीफ की कदम-बोसी करती हूँ।"

इतना कह शहरयार ने मुख से बुर्का ऊपर उठा लिया और जमीन पर घुटनों के बल हो शहंशाह के कदमों के समीप की भूमि चूम ली। अब वह खड़ी हो जेब से वही हीरा निकाल सामने कर बोली, "जहाँपनाह! मैं तो हुज़ूर के दरबार में हाज़िर होने के वक्त मुनासिब नज़र अपने घर पर भूल नहीं सकी। हुज़ूर, बीजापुर की यह अदना नज़र मन्ज़ूर फरमाई जाये।"

"ओह !" आश्चर्यचकित-सा शहंशाह हीरे की ओर और अपने सामने खड़ी सुन्दरतम युवती को देखता रह गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि किसको अधिक खूबसूरत समझे, हीरे को या शहरयार बानो को।

शहंशाह ने डिबिया को बहू के हाथों पर से उठा लिया और उसमें से हीरा निकाल दो अंगुलियों में पकड़ उसमें से सामने जल रहे शमादान में से रोशनी देख बोला, "यह तो बहुत बढ़िया है। बीस-तीस हज़ार रुपये से कम दाम का नहीं हो सकता।"

"हुज़ूर ! ऐसे सुल्तान बीजापुर के खजाने में बहुत हैं और वे वक्त-वक्त पर हुज़ूर के कदमों में नजर होते रहेंगे।"

"हम उनको खुद अपने जोरे-बाज़ू से हासिल करने जा रहे हैं।"

"तो हुज़ूर ! इस ख़ादिमा की एक पेशीनगोई भी सुन लीजिए। जिस दिन बीजापुर और गोलकुण्डा राज्य सफा हस्ती से मिटेंगे उसी दिन दिल्ली और आगरा की हुकूमत का भी फातिमा पढ़ा गया समझिये।"

"तो तुम यह बद्दुआ दे रही हो ?"

"नहीं हुज़ूर ! मैं आपको आज से तैंतीत-चौंतीस साल पहले एक हिन्दू नजूमी के लगाये नजूम की याद दिला रही हूँ। अगर हुज़ूर उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्त की बात याद करने की कोशिश करेंगे तो मेरी बात को एक याद दिहानी ही समझ सकते हैं।"

"ओह ! तुम उस नजूमी से कहाँ मिली हो ?"

"मैं उसकी लड़की से आगरा के शाही महल में मिली हूँ ?"

"तो यह उसकी बद्दुआ है ?"

"आली हज़रत ! यह इस तरह नहीं। वह बेचारी तो किसी का भी बुरा नहीं सोचती। उसके मुख से तो सबके लिए नेक बात ही निकलती है। यह तो उसने आपको तम्बीह की है कि खुदा के कामों में दखल देने वाले उससे बच नहीं सकते।

"वह कहती थी कि हिन्दुस्तान का नक्शा ऐसा बना है कि शमाल और जनूब दोस्त तो रह सकते हैं, मगर एक-दूसरे के मातहत नहीं। जब यह एक-दूसरे को मगलूब करने की कोशिश करेंगे तो दोनों किसी तीसरी ताकत के मातहत हो जायेंगे।"

"मैं औरतों की इन बातों को गलत समझता हूँ। दुनिया बहादुर आदमियों की ठोकरों के आगे लुढ़कती रहती है। नहीं बेगम, यह यकीन जानो कि अब बीजापुर के खातमे के दिन आ गये हैं। इसके बाद गोल-कुण्डा की बारी आयेगी और तब मराठों को सफा हस्ती से मिटा दूंगा। खुदावन्द ताला मुझे कान में हर रोज़ कह जाते हैं कि जब तक ये तीनों काम पूरे नहीं हो जाते तब तक मेरे लिए जन्नत में जगह खाली नहीं।"

"खुदा आपको जन्नत बख्शे।"

"यह इतना बढ़िया हीरा तुम, मेरा मतलब है कि तुम्हारे खानदान के लोग कहाँ से पा गये हैं और यह अभी तक हमारी नज़र क्यों नहीं किया ?"

"यह तो मेरे मरहूम वालिद साहब या उनके कोई बुजुर्ग ही बता सकते हैं कि उनको यह हीरा कहाँ से मिला है ? मगर आपकी नज़र करने का फख्र तो मुझे अभी-अभी ही हुआ है, जब मैं गुसलखाने में सफर के लायक कपड़े पहन रही थी। मैंने समझा कि हुज़ूर इस नाचीज़ बेगम के गरीबखाने में तशरीफ लाये हैं तो आपकी कुछ नज़र करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर इसकी याद आ गयी और यह लेकर हाज़िर हो गयी हूँ।"

"तो तुम लोग जा रहे हो ?"

"हाँ, अब्बाजान ! आपके हुक्म की तामील करनी है।"

"अच्छा तो जाओ। मैं यह देखने आया था कि कहीं तुम भी अकबर की तरह बागी तो नहीं हो गये।"

"वह अभी नातजुरबेकार कम उमर का बच्चा है। उसे तो समझाने की ज़रूरत है।"

"और तुम समझ गये हो ?"

"मैं तो जब से यह बहू मिली है, आपका गुलाम बनकर हुक्म भी तामील कर रहा हूँ।"

"यही तो हम देखना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि अकबर और शम्भुजी को पकड़कर जल्द-अज़-जल्द हमारे सामने हाज़िर करो। देखें, तुम इसे किस तरह पूरा करते हो।"

शहंशाह उठ खड़े हुए और बैठकघर के बाहर को चले तो शहज़ादा और बेगम भी उनके पीछे-पीछे चल पड़े। दरवाज़े तक पहुँचने से पहले शहंशाह खड़े होकर घूमकर शहज़ादा से पूछने लगे, "हिदायत को कहाँ भेज दिया है ?"

"वह हमारे अगले पड़ाव के लिये जगह तलाश करने गया है। वह कोशिश करेगा कि हमारे वहाँ पहुँचने से पहले कोई जगह तलाश कर हमारे लिये खेमे लगवा रखे।"

'ओह ! और मुहिम के खर्चे के लिए धन-दौलत ?"

"उसने राय दी है कि वह अहमदनगर में पहुँचकर आपसे माँग ली जायेगी।"

"और तब तक के लिये क्या होगा ?"

"कुछ तो वहाँ दारोगा के पास होगा ही।"

शहंशाह इसका मतलब समझने के लिये दोनों शहज़ादा और बेगम का मुख देखने लगा। शहंशाह की परेशानी का कारण समझने के लिये शहरयार ने पूछ लिया, "जहाँपनाह किस फिकर में पड़ गये हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम हिदायत से मिलना चाहते थे ?"

"उसकी समझ में आ गया था कि आप उसे हिरासत में लेकर मरवा डालना चाहते हैं।"

"वह गलत समझा है। हमने पहले भी उसको हिरासत में लेने का इरादा नहीं किया था और अब भी नहीं था। हम उसे अपने फरज़न्द की तरह अपने पास रखना चाहते हैं।"

"पर हुज़ूर! उसकी गलतफहमी दूर करने का वह तरीका नहीं था जो आप शाम के वक्त करना चाहते थे। आपने कहा था कि अब खुदावन्द ताला उसको बचा नहीं सकेगा। उसने आपके इस दावे को झूठा ज़ाहिर करने के लिये यहाँ से भाग जाना मुनासिब समझा है।"

'लेकिन तुम उसके साथ न होते तो वह वहाँ से भाग नहीं सकता था।"

"जहाँपनाह! कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि खुदावन्द ताला ने उसे बचाने के लिये मुझे अपना एक औज़ार बना लिया है।"

'बहुत खुदा दोस्त हो गये हो।"

"हुज़ूर! यह सब आपकी तालीम का ही असर है।"

"अच्छा, हम उसको चिट्ठी लिखेंगे। उसे कहना कि जवाब दे।"

आधे घण्टे में शाह आज़म अपने बीजापुरी सिपाहियों के साथ दक्षिण की ओर चल दिया।

: ८ :

औरंगज़ेब को शाह आज़म, उसकी बेगम शहरयार बानो और हिदायत का एक स्थान पर एकत्रित हो जाना उसकी तजवीज़ों के लिये ठीक प्रतीत नहीं हुआ। वह समझ रहा था कि ये तीनों ज़रूर किसी किस्म की साज़िश करेंगे और सम्भव है कि ये लोग मुगल सेना को लेकर अकबर के साथ मिल जायें और फिर शम्भुजी तथा दुर्गादास की सहायता से आगरा पर कब्ज़ा कर लें।

उस रात जब वह शहरयार का सौन्दर्य और सतर्कता देख अपने शयनागार में लौटा तो रात-भर यही विचार करता रहा कि यह स्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको पकड़कर वैसे ही आगरे के किले में बन्द करा सकती है जैसे स्वयं उसने अपने बाप को किया था।

आज ज़िन्दगी में पहली बार उसे अपने बाप की विवशता और निस्सहायता का दुःखद दृश्य आँखों के सामने घूमने लगा था। यह तो वह अब भी मस्तिष्क में से निकाल नहीं सका कि उसकी बहन जहाँआरा एक बदकार औरत थी और उसकी बदकारी के कारण ही दरबार में सब प्रकार की खराबियाँ उत्पन्न हो रही थीं। उसका बाप उन बदकारियों को न केवल सहन करता था, वरंच उनमें सहायक भी होता था।

मगर वह देखता था कि अब उसके तीस साल की हुकूमत में क्या बदकारी समाप्त हो गयी है? आगरा के महल में अब भी बदकारी चलती थी। पहले महल की स्त्रियाँ महल से बाहर के पुरुषों से सम्बन्ध बनाने के लिये लालायित रहती थीं और अब तो महल के अदना नौकरों को वह अपनी संगति का उपहार देती रहती थीं।

देश-भर में उसका खुदा दोस्त होना और इस्लाम की तबलीग करने वाला शहंशाह होना मशहूर था, परन्तु वह जब अपनी गिरहबान में मुँह डालकर कर देखता था तो मन-ही-मन लज्जित होता था कि उसके चारों ओर सब प्रकार की कुफ्र की बातें होती रहती थीं।

वह देख रहा था कि जो चालाकियाँ वह अपने शत्रुओं से कर उनको पराजित करता था, वे सब उसके अपने लड़के और पोते अब उससे ही खेल कर उसे धोखा दे जाते थे।

वह समझ रहा था कि आज़म भी उससे किसी प्रकार की धोखा-धड़ी खेल रहा है। उसे आज़म के सलाहकारों में हिदायत का होना एक अपशकुन प्रतीत हुआ था।

रात-भर सोच-विचार से वह एक योजना बना पाया था। उन दिनों शम्भुजी का सितारा तेज़ था। उसने न केवल शाही सेना को भारी पराजय ही दी थी, वरंच उसके देखते-देखते बुरहानपुर को भी लूट लिया था। शहंशाह के मस्तिष्क में दो बातें समा गयी थीं। एक तो यह कि जब तक बीजापुर और गोलकुण्डा राज्य विनष्ट नहीं हो जाते तब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शम्भुजी को पराजित नहीं किया जा सकता। जब तक शम्भुजी जीवित और फल-फूल रहा है तब तक अकबर की तलवार उसके सिर पर लटकती रहेगी। बीजापुर तथा गोलकुण्डा को विजय करने के लिये शम्भु का ध्यान किसी दूसरी ओर ले जाना आवश्यक था।

उसके ध्यान को दूसरी ओर करने के लिये उसने एक योजना बना ली और उस पर अमल करने के लिये शम्भुजी के दरबार के सबसे प्रभावी व्यक्ति को खरीद लेने का यत्न आरम्भ कर दिया। शम्भुजी के पुरोहित कानूजी अर्थात् कवि कैलाश, का प्रभाव राज्य की नीति पर देख उसको प्रभावित करने का यत्न किया गया।

कानूजी के गाँव के कुछ लोग बुलाये गए। वे प्रयागराज के क्षेत्र के रहने वाले थे और उनको समझा-बुझा तथा भारी इनाम की आशा देकर पनिहाल भेज दिया गया। उन दिनों शम्भुजी ने इसे ही अपनी राजधानी बना रखा था।

प्रयागराज के कुछ ब्राह्मण पनिहाल पहुँचे तो उनका भली-भाँति स्वागत किया गया और तब वे लोग गोआ की पुर्तगाली बस्ती के धन-दौलत की प्रशंसा करने लगे।

कवि कैलाश के ससुराल वालों में से एक व्यक्ति वेणीमाधो तो यह कहने लगे, "पण्डितजी! यदि गोआ को लूटने का प्रबन्ध हो जाये तो कई वर्ष की कमाई एक ही स्थान से मिल सकती है।" कवि कैलाश के तामसी मस्तिष्क में गोआ पर आक्रमण की बात बैठ गयी और वह महाराज शम्भुजी को इस काम के लिये तैयार करने लगा।

जब गोआ-विजय की योजना बनने लगी तो यह समझा गया कि बिना नौ सेना को सुदृढ़ किये गोआ पर आक्रमण करना तथा उसे अधिकार में रख सकना कठिन होगा। अतः अपनी नौ सेना को सुदृढ़ करने की योजना बन गयी।

मराठा नौ सेना सिद्दियों से कई बार पराजित हो चुकी थी। इस कारण शम्भुजी ने अंग्रेज़ों की सहायता से सिद्दियों को पराजित करने की योजना बनायी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि कैलाश को न तो सिद्दियों से कुछ मिलने की आशा थी और न ही वम्बई के अंग्रेज़ों से। उसका मन पुर्तगालों को लूटने पर लगा हुआ था। इस कारण उसने अंग्रेज़ नौ सेना और सिद्दियों की नौ सेनाओं में आमना-सामना कराने के लिये एक मुसकट के अरवी नौ सेना के ऐडमिरल को रिश्वत देकर जहाज़ प्रैसिडैण्ट पर आक्रमण करा दिया।

अरवी जनरल तो मारा गया और यह घोषित किया गया कि यह अरवी ऐडमिरल सिद्दियों के कहने पर आक्रमण करने पर तैयार हो गया है। एक बार तो अंग्रेज़ सिद्दियों के विपरीत हो गये। इस अवसर से लाभ उठा शम्भुजी ने गोआ पर आक्रमण कर दिया।

इस आक्रमण में औरंगज़ेव का अपनी सब सेनाओं को वापस बुरहानपुर बुला लेना सहायक हो गया। शाह आलम, दिलेर खाँ और शाह आज़म सबको आज्ञा गयी कि अपनी सेनाओं को लेकर बुरहानपुर लौट आयें।

मुगल सेना के महाराष्ट्र को छोड़कर चले जाने की बात किसी की समझ नहीं आयी। इस पर भी शम्भुजी के हाथ खाली हुए तो वह गोआ पर आक्रमण कर बैठा।

वास्तव में यह औरंगजेव की महान चाल थी। इससे एक बात यह हुई कि कवि कैलाश ने शम्भुजी को गोआ पर आक्रमण करने पर राज़ी कर लिया। दूसरा यह कि विशाल मुगल सेना बीजापुर पर आक्रमण के लिये बुरहानपुर में एकत्रित हो गयी। तीसरी बात यह हुई कि औरंगज़ेब को अपने लड़कों पर विश्वास नहीं रहा था और उसके मस्तिष्क में बार-बार अपने वालिद शहंशाह शाहजहाँ के अन्त का चित्र आने लगा था। उसको विश्वास होता जाता था कि उसके लड़के वही बात करेंगे जो उसने अपने पिता से की थी। उसे किसी स्थान पर कैद कर वे स्वयं परस्पर लड़ मरेंगे। वह अपने साथ सबसे अधिक सेना रखे हुए था।

अपनी सब सेनाओं को वापस बुला लेने से उसने अपने शेष दोनों पुत्रों को सेना रहित कर दिया। उसे सबसे अधिक भय था अकबर से। अकबर की शम्भुजी से सुलह ही अधिक भय का कारण था। इसका इलाज उसने यह किया कि शम्भुजी को विदेशियों से युद्ध में उलझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। उसका विचार था कि अकबर इस युद्ध में अवश्य मारा जायेगा। शम्भुजी की भी शक्ति इतनी क्षीण हो जायेगी कि तब वह सुगमता से पराजित किया जा सकेगा।

शाह आज़म से भी उसको भय लगने लगा था। वह समझ रहा था कि उसकी बीवी शहरयार बानो उसको अपनी सेना ले अपने भाई शाह सुल्तान सिकन्दर के साथ मिला देगी। इस कारण शाह आज़म को भी अहमदनगर से वापस बुला लिया गया और उसे भी अपने सालारे-जंग की पदवी से पृथक् कर दिया गया।

अहमदनगर में शाह आज़म को पहुँचे अभी दो दिन ही हुए थे कि हिदायत अपने वचन के अनुसार वहाँ पहुँच गया। शाह आज़म ने जब शहंशाह से हुई अपनी बातचीत बतायी तो हिदायत ने भी शहज़ादा को अपना अनुमान बता दिया।

उसने कहा, "हुज़ूर! आपको इस जगह पर बहुत देर तक नहीं रखा जायेगा। इसलिये आपको यहाँ से किसी दूसरी जगह को चलने के लिये तैयार रहना चाहिये।"

"हिदायत साहब! किस बिना पर यह बात कह रहे हो?"

"शहंशाह के और हकीकत में आपके सब बुजुर्गों में यह फतूर समाया हुआ है कि बीजापुर और गोलकुण्डा को तबाह किये बिना मुगल राज्य के लिये दक्षिण का मार्ग खुल नहीं सकता। इसी काम के लिये अब आपको औरंगाबाद की जगह अहमदनगर भेज दिया गया है। यह हुक्म आपको दिन के वक्त दिया गया था और रात को शहंशाह आपकी बेगम से मिले थे। मुझे यकीन हो रहा है कि बेगम साहिबा से मिलने के बाद वह आप पर अपना ऐतबार खो चुके हैं। बेगम जैसी होशियार औरत के आपके साथ होने पर कोई भी सही दिमाग आपसे यह उम्मीद नहीं कर सकता कि आप उसके भाई की सल्तनत को तबाह कर देंगे।

"इसलिये आपकी बेगम से बातचीत के बाद शहंशाह अपनी चाल को बदल लेंगे।"

"हिदायत! मैंने तो सुना था कि तुम तो एक बहुत अच्छी सूझ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूझ रखने वाले मशीर रहे हो लेकिन इस किस्म की भौंदी बातें बताकर तुम अपनी सूझ-बूझ पर शक पैदा करने पर मजबूर कर रहे हो।"

"मेरी बात गलत हो सकती है। मैं इस बात को तसव्वर कर सकता हूँ कि कोई ज़बरदस्त दलीलबाज शहंशाह के पास पहुँच गया हो और वह उनको इस योजना से मना कर सका हो जो उन्होंने दखिन के बारे में बना रखी है। मगर हुज़ूर, मुझे तो इस वक्त मुगल सल्तनत में कोई ऐसा शख्स नहीं दिखायी देता जो इस तबाह हो रही सल्तनत को बचाने के लिये कुछ भी कर सके।"

शाह आज़म को हिदायत की बात पसन्द नहीं आयी। इस पर भी उसने पूछ लिया, "तो भाई जान! मुझको क्या राय देते हैं?"

"मेरी राय तो यह है कि जब आपको इस मुहिम से वापस बुलाया जाये तो आप अपने लिये उत्तर में कोई सूबेदारी माँग वहाँ चले जाइये। इसमें आपको आगरा की गद्दी सम्भालने में सहूलियत हासिल हो जायेगी।"

शहज़ादा ने बात बदल दी और पूछ लिया, "आप अब क्या काम करना चाहते हैं?"

हिदायत ने कहा, "मेरे मामा महाराज शिवाजी के धर्माधिकारी थे। वह कहा करते थे कि कोई भी सल्तनत अथवा मुहिम बिना काबिल जासूसी महकमा के चल नहीं सकती। इसलिये मैं इसी महकमे को हाथ में लेना चाहता हूँ।"

"मगर मेरे पास इस बात के लिये काफी धन नहीं और शहंशाह इसके लिये मुझे कुछ देंगे नहीं। वह यह नहीं चाहेंगे कि सल्तनत में दो जासूसी महकमे चलें।"

"तलवार से तो मैं मुगल साम्राज्य की मदद के लिये अपने को ना-काबिल पाता हूँ। इस हालत में मैं आपसे छुट्टी पाना चाहूँगा।"

"अच्छा, ऐसा करो कि तुम कुछ दिन यहाँ रहो। तब तक तुम्हारी पेशीनगोईं का भी इम्तहान हो जायेगा और फिर मैं तुमको अपने साथ अपने मशीर के तौर पर रख सकूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिदायत को अपनी गैर-हाज़री में कुछ नक्शा बदला हुआ दिखायी दिया। वह समझ गया कि अब शहज़ादा के दिल में वह गर्मी नहीं रही जो बुरहानपुर में पहुँचने से पहले थी। उसने बताया, "मैं यहाँ की सराय मुगलिया में ठहरा हुआ हूँ और मेरा नाम यहाँ मिर्ज़ा हिदायत उल्ला लिखा हुआ हैं। मैं यहाँ अभी कुछ दिन रहूँगा और कहीं दूसरी जगह जाने से पहले मिलने की कोशिश करूँगा।"

उसी दिन शाह आज़म अपनी बेगम से मिला तो उसने हिदायत उल्ला के विषय में बताया, "अम्मी महताब का लड़का आज मिलने आया था।"

"सच ?" शहरयार ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा।

"हाँ। वह कहता था कि हमें यहाँ से वापस बुला लिया जायेगा।"

"क्यों ?"

'उसने बताया है कि जब तक तुम मेरे साथ हो, शहंशाह मुझ पर ऐतबार नहीं कर सकते। शहंशाह समझते हैं कि तुम मुझे बीजापुर पर हमला नहीं करने दोगी।"

इस पर शहरयार सतर्क हो पूछने लगी, "वह शहंशाह के दिल की बात कैसे जानता है ?"

'वह कहता था कि वह हमारे बुजुर्गों की तवारीख पढ़कर यह अन्दाज़ लगा रहा है कि शहंशाह के दिमाग में भी दखिन फतह करने का फतूर मौजूद है और बेगम शहरयार शाह सिकन्दर की बहन हमें शहंशाह के मनसूबों में मददगार नहीं होने देगी।"

"और आप भी यही समझते हैं ?"

"मुझे हिदायत की एक बात तो समझ में आने लगी है। वह यह कि यह सल्तनत मुगलिया के हक में नहीं कि दखिन की मुहिम जारी रखी जाये।"

अपने पति की इस बात को सुन शहरयार गम्भीर विचार में निमग्न हो गयी। वह टुकर-टुकर शहज़ादा का मुख देखती रही। शहज़ादा भी अपनी बात का प्रभाव बीवी के मन पर जानने के लिये चुप रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहरयार ने ही मौन भंग किया। उसने कहा, "मगर आपको अपना यह खयाल शहंशाह को नहीं बताना चाहिये।"

"क्यों ?"

"मैं वजह नहीं बता सकती। आप कोशिश कर देख लीजिये। यह इतनी अच्छी बात है कि मुझे यह बात अपनी किस्मत में लिखी दिखायी नहीं देती।"

"तो तुम भी वही पसन्द करती हो जो हिदायत कहता है ?"

"देखिये हुज़ूर ! मैं यह जानती हूँ कि आपके शमाल की ओर चले जाने से मुगल दरबार में भाई जान का एक दोस्त नहीं रहेगा। खुदा न करे कहीं उसकी सल्तनत खत्म हुई तो उसका कोई भी तो मददगार यहाँ नहीं रहेगा। उस वक्त उसके साथ क्या बीत सकती है ? इसका खयाल कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मगर आपके फायदे की बात का खयाल कर मैं आपके लिये हिदायत साहब की बात निहायत ही मुनासिब समझती हूँ।"

"और तुम भी यही समझती हो कि मुझे जल्दी ही अहमदनगर से वापस बुला लिया जायेगा ?"

"मुझे तो हिदायत बहुत ही समझदार और सियासत को समझने वाला शख्स मालूम होता है। यह ठीक ही मालूम होता है कि उसकी रगों में मुगलिया खून बह रहा है और यह भी ठीक मालूम होता है कि उसको दिमाग अपनी माँ का मिला है और उसमें मराठा सूझ-बूझ मौजूद है।"

"हमारे खानदान का यह रिवाज है कि बहुत समझदार लोगों को अपने पास न रखा जाये।"

"यह क्यों ?"

"समझदार लोग नासमझों को बेदखल कर देते हैं।"

"बेदखल ? कहाँ से ?"

"अपनी मलकीयत से। इस दुनिया में दो ही चीज़ें हैं जिनकी मलकीयत नायाब होती है। एक, ज़मीन और दूसरी, औरत। मुझे दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मुतल्लिक डर लगने लगा है।"

"ज़मीन की बात तो मैं जानती नहीं। हाँ, आपकी औरत की बात मैं जानती हूँ। वह आपसे अज़हद मुहब्बत करती है।"

"और क्या वह मुहब्बत मेरी ज़मीन, मेरा मतलब है कि मेरा शहंशाह का लड़का, जो सल्तनत का वाली है, की वजह से नहीं?"

"हुज़ूर! यह मुझ पर बेइन्साफी की जा रही है। मैं तो आपके साथ एक गरीब की झोंपड़ी में भी चलकर रहने को तैयार हूँ।"

शाह आज़म समझ नहीं पा रहा था कि उसकी बीबी उसकी किस सिफ्त पर लट्टू हो रही है।

इस वार्त्तालाप ने बेगम शहरयार के मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव उत्पन्न किया और कई प्रकार के बुरे-बुरे विचार उसके मन में पैदा होने लगे थे।

एक ओर तो उसे यह लग रहा था कि हिदायत को शहंशाह के मन की बात जानने का कोई विश्वस्त साधन होगा और दूसरे, उसे अपने भाई का भविष्य नितान्त अन्धकारमय लगने लगा था। वह हिदायत से मिलकर उससे सारी बात को और गहराई तक जानने की इच्छा करने लगी थी और दूसरे वह मौजूदा हालात में अपने लिये उचित व्यवहार जानना चाहती थी।

रात-भर वह परेशान रही। सुबह उठते ही उसकी खादिमा उसके शयनागार के बाहर उसकी इतन्ज़ार करती मिली।

वह अपने साथ अपने मायके से दो सौ सिपाही और एक दर्जन बाँदियाँ लेकर आयी थी। उनमें से लोग छुट्टी पर बीजापुर जाते रहते थे और वहाँ से लौटते रहते थे। वे लोग बीजापुर के नवीन समाचार लाकर देते रहते थे। कई बाँदियाँ इन सिपाहियों से सम्बन्ध रखती थीं और वह बाहर की खबरें लाकर बेगम को बताती रहती थीं।

आज भी वह बाँदी अपने किसी मित्र बीजापुरी सिपाही के पास रात रहकर आयी थी और वहाँ से बहुत समाचार सुनकर आयी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उन खबरों को वेगम को बताना चाहती थी। मगर शयनागार में शहज़ादा साहब के होने के कारण वह बाहर द्वार पर ही बैठी इन्तज़ार कर रही थी।

बेगम अपने भविष्य के विषय में विचार करती हुई रात बहुत देर तक जागती रही थी। अतः वह दिन चढ़े तक सोती रही। शहज़ादा तो पहले भी बहुत गहरी नींद सोने वाला था और दिन के समय देर से उठा करता था।

बेगम उठी और शौचादि के लिये जाने के लिये शयनागार से निकली तो अपनी एक अति चतुर बाँदी रुखसाना को शयनागार के बाहर खड़ी देख उसके मुख पर देखने लगी।

रुखसाना-ने झुक कर सलाम अर्ज़ की और अर्थ-भरी दृष्टि में बेगम के मुख पर देखती रही। शहरयार समझ गयी कि वह कुछ पृथक् में बात करना चाहती है।

इस कारण बेगम बाँदी को अपनी बैठक में ले गयी।

: ६ :

रुखसाना को सामने बैठा बेगम ने पूछा, "क्या बात है रुखसाना? बहुत परेशान मालूम होती हो?"

"हाँ हुज़ूर! यहाँ अफवाहें उड़ने लगी हैं कि आप पर और आपकी ही वजह से शहज़ादा साहब पर शक की नज़र से देखा जाता है। आपको काबू में रखने के लिये हमारे बीजापुरी सिपाहियों को बरखास्त किया जा रहा है।"

"और उनको कहाँ भेजा जा रहा है?"

"जहाँ, उनके सींग समायें।"

"और भी? या बस इतनी ही बात है?"

"बातें तो और भी हैं, मगर इतनी क्या कम हैं?"

"पहले सब बता दो, फिर देखूँगी कि कौन ज़्यादा अहम है और कौन कम।"

"दूसरी बात जो सीधी आपसे ताल्लुक रखती है वह यह कि बीजापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आयी सब बाँदियों को वापस बीजापुर भेजने का इन्तज़ाम किया गया है। कल रात आगरा से एक दर्जन मातवर बाँदियाँ आयी हैं और वे हमारी जगह पर तैनात होने वाली हैं।"

"और ?"

"और यह कि शहज़ादा साहब को शहंशाह अपने नज़दीक रखना चाहते हैं। यहाँ की सालारी वह किसी दूसरे को देना चाहते हैं।"

"किसको ?"

"अभी तक तो कोई आया नहीं। मगर यह उम्मीद की जाती है कि दिलेर खाँ यहाँ पहुँचने वाला है और वही शहज़ादा साहब के वापस जाने का हुक्म लाने वाला है।"

"यह सब बातें तुमको किसने बतायी हैं ?"

"हुज़ूर !" बाँदी का कहते-कहते मुख लाल हो गया, "एक मेरे आशना हैं। वह दो महीने की छुट्टी से कल रात लौटे थे। वह अहमदनगर आते हुए रास्ते में औरंगाबाद ठहरे थे। शहंशाह के वहाँ पहुँचने की अफवाह गरम थी और साथ दिलेर खाँ को वहाँ से हटाकर यहाँ भेजने की बात हो रही थी।

"मैं रात उनकी खिदमत में रही हूँ। उन्होंने ही ये सब बातें बतायी हैं। जहाँ तक बीजापुरी सिपाहियों के वापस जाने और बाँदियों को बदले जाने की अफवाह है, यह तो कल आगरा से यहाँ आयी बाँदियों के साथ कुछ सिपाहियों के आने पर फैली है।"

बेगम इस सूचना को अपने पति को बताकर अपने भावी व्यवहार का निश्चय करना चाहत थी। अतः उसने रुखसाना को विदा करते हुए कहा, "ये सब बातें किसी तरह से भी ज़्यादा फिकर करने की नहीं हैं। जो कुछ होगा, वह हम उसके होने पर सोच-समझ लेंगे। जहाँ तक तुम्हारे यहाँ रहने का सम्बन्ध है, अगर तुम अपने महबूब के साथ जाना चाहोगी तो तुमको रुखसत दे दूँगी। वरना तुमको मैं अपने पास रखना चाहूँगी।"

रुखसाना बेगम की खिदमत में प्रसन्न थी। इस पर भी वह अपने प्रेमी को भी छोड़ना नहीं चाहती थी। इस कारण वह अनिश्चित-मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी रही। बेगम ने उठते हुए कहा, "अब तुम जाओ। मैं तुमसे दोपहर के खाने के बाद मिलूँगी।"

रुखसाना गयी तो शहरयार वापस अपने शयनागार में जा पहुँची। शहज़ादा अभी भी गहरी नींद सो रहा था। शहरयार उसके पलंग पर लेट उससे आलिंगन कर नींद से जगाने का यत्न करने लगी।

आखिर शहज़ादा साहब के शरीर में गर्मी उत्पन्न हुई तो उसने कस-कर बेगम को छाती से लगाकर पूछा, "क्या वक्त हो गया है?"

"हज़रत! दिन चढ़ आया है। बाहर बाग में तो परिन्द-चरिन्द अपने बाल-बच्चों की देखभाल में लग गये हैं।"

"ओह! पर क्या करूँ, तुमने अभी तक कोई बाल-बच्चा बनाया ही नहीं। बनाया होता तो मैं भी उठकर उनकी देखभाल करने में लग गया होता।"

"बिना पैदा करने की तकलीफ उठाये कई बाल-बच्चे तो हैं।"

"अच्छा! कहाँ हैं?"

"उठिये! ऐसा मालूम होता है कि बाहर इन्कलाब बरपा हो रहा है।"

इस पर तो शहज़ादा उठकर पलंग पर बैठ गया और चिन्ता व्यक्त करते हुए बेगम के मुख पर देखने लगा। बेगम ने पलंग से उठते हुए कहा, "आप फौरन गुसल वगैरा से फारिग हो जाइये। शायद हमको लम्बे सफर की तैयारी करनी पड़ेगी।"

"क्या हुआ है?"

"आपके लिये तो कुछ फिकर की बात मालूम ही नहीं होती। सिर्फ आपके मुअजिज वालिद शरीफ ने आपको याद फरमाया है। मैं भी आपके साथ चलूँगी। मुझे कुछ ऐसा समझ में आ रहा ने कि मैं बन्दी बनाकर औरंगाबाद ले जायी जाऊँगी, जहाँ खयाल है कि शहंशाह पहुँच गये होंगे।"

"तो हिदायत का अन्दाज़ ठीक मालूम होता है।"

"कुछ उससे भी ज्यादा है। उसकी तो पूरी बात समझ में नहीं आयी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहज़ादा गुसलखाने में चला गया। बेगम भी गुसल कर तैयार हो नाश्ता करने के लिये खाने के कमरे में अपने खाविन्द की प्रतीक्षा करने जा बैठी।

इस समय तक रुखसाना की बात सब नौकर-नौकरानियों में फैल गयी प्रतीत होती थी। खाना परोसने वाले खानसामे मुख लम्बा किये हुए थे और सब भयभीत तथा सहमे हुए मालूम होते थे।

शहज़ादा गुसल कर और नये कपड़े पहन खाने के कमरे में आया और दस्तरखान पर बैठ गया। बेगम वहाँ पहले ही बैठी थी। शहज़ादा के बैठते ही खाना लगा दिया गया। सेब, अंगूर और नाशपाती थीं। साथ में दूध था। दूध में केसर और कस्तूरी मिली थी। एक अन्य तश्तरी में पिस्ता, बादाम, किशमिश था। इनमें कहीं-कहीं एक-आध लवंग भी रखा था।

नाश्ता आरम्भ हुआ तो सब नौकर-नौकरानियाँ खाने के कमरे से बाहर हो गये। कमरा खाली देख शहज़ादा ने ही बात आरम्भ की। उसने बताया, "रहमत का मुख लम्बा हो रहा है।"

"हाँ। मुझे तो कुछ ऐसा लगता है कि रुखसाना रात-भर रोती रही है।"

"पर यह सब क्यों?"

"रुखसाना ने बताया है कि हमारे बीजापुरी सिपाहियों को बरखास्त कर दिया गया है। हमारी बाँदियों को वापस बीजापुर भेजने का इन्तज़ाम मुकम्मल हो चुका है और आपको हुक्म हुआ है कि मुझे अपने साथ लेकर औरंगाबाद पहुँचा चायें।"

"यह बात तो हिदायत ने भी बतायी थी कि मुझे इस मुहिम के लायक न समझ वापस बुलाया जा रहा है।"

"मगर हुआ तो उससे बहुत ज़्यादा है।"

"हिदायत कमाल का आदमी है। मैंने उससे पूछा कि वह क्या काम करेगा तो वह कहने लगा कि वह मेरे महकमा जासूसी को तन्ज़ीम देना चाहता है। उसका खयाल है कि इस महकमे पर ही सल्तनत का दारो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मदार होता है।"

"तो फिर क्या खयाल है आपका ?"

"मैंने उसे कहा था कि मैं अभी तक सल्तनत का सुल्तान नहीं हूँ। इसलिये मैं इस महकमे की ज़रूरत नहीं समझता।"

"मगर आप तो शहंशाह बनने की तैयारी में हैं न ? आपको इस महकमे की ज़रूरत तो है ही।"

"अभी शहंशाह की सेहत बहुत अच्छी है। मैं समझता हूँ कि वह बीस-पच्चीस साल तक और जियेंगे और तब तक मैं बूढ़ा हो जाऊँगा।"

शहरयार हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "मैं एक लड़के के अपने वालिद के खिलाफ बगावत को गुनाहे-अज़ीम समझती हूँ। इसलिये मैं आपको अपने वालिद साहब की उमर कम करने की बात नहीं कह सकती। इस पर भी मैं एक बात समझती हूँ कि मैं आगरा के शाही हरम में सदा कैद होने के लिये तैयार नहीं हूँ।"

"और अगर हुक्म ऐसा ही हुआ तो क्या करोगी ?"

"मैं हरम को आग लगा उसमें खुद जल मरूँगी।"

"मैं समझता हूँ कि नौबत यहाँ तक नहीं पहुँचेगी। जल मरने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं सोचता हूँ कि मुझे हिदायत को अपने साथ रखना चाहिये। वह दूर की बात को समझता है और उसकी राय से फायदा उठाना चाहिये।"

"ठीक है। उसे रख लीजिये। उसे बुलाइये और मैं भी उससे जाली के पीछे बैठकर बातचीत करना चाहूँगी।"

"और जाली के बाहर बैठकर क्या हरज है ?"

"आपके वालिद शरीफ को पता चल गया तो उनको मेरे खिलाफ एक और शिकायत मिल जायेगी।"

"मगर वह खुद तो तुमको पर्दा उठाने के लिये कह रहे थे।"

"वह तो मेरे वालिद के बराबर हैं। हिदायत की बात दूसरी है।"

"तो हिदायत से डर मालूम होता है ?"

"हुज़ूर ! बुरहानपुर जाते हुए तो मैं उससे पर्दा नहीं करती थी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको अपना बड़ा भाई ही समझी थी। अब भी मेरे दिल में उसके लिये वही जज़बा है। अब फर्क यह पड़ गया है कि आपके वालिद शरीफ मुझे आपसे अलहदा करने के वहाने ढूँढ रहे हैं।"

"हाँ, तुम्हारी बात में कुछ वज़न तो है।"

"बकाया उससे राय करने के बाद बताऊँगी।"

खाना खाने के बाद हिदायत को सराय मुगलिया से बुलाया गया। शहज़ादा ने उससे अपनी निजी बैठक में मुलाकात की। बैठकघर में जाली के पीछे बेगम शहरयार बानो बैठी थी।

आज़म ने हिदायत को बैठते ही बता दिया, "जाली के पीछे बेगम बैठी है और वह भी हमारी गुफ्तगू में हिस्सा लेना चाहती है।"

हिदायत ने जाली की ओर देखा और झुककर सलाम कर दी।

जाली के पीछे से आवाज़ आयी, "भाई जान! बैठिये। मैं शहंशाह के लड़के की बेगम की हैसियत से बातचीत नहीं कर रही। मैं आपको अपना बड़ा भाई समझती हूँ। यह आपसे पर्दा तो शहंशाह की नाराज़गी से बचने के लिये है।"

"ठीक है बेगम बहन! यह होना ही चाहिये। फरमाइये, किसलिये बुलाया है?"

उत्तर शहज़ादा ने दिया। उसने कहा, "आलम शहंशाह के मुतल्लिक आपने कुछ अन्दाज़ लगाया था। उसी की बात आपके सामने करने के लिये आपको बुलाया गया है।"

"हाँ हुज़ूर! मैंने यह अर्ज़ की थी कि आपको शहंशाह वापस अपने पास बुला रहे हैं; क्योंकि उनका आप पर ऐतबार नहीं रहा कि आप बीजापुर और शम्भुजी किसी के भी खिलाफ कुछ भी कार्रवाही करेंगे।

"मगर हुज़ूर! इसके बाद तो कुछ और भी खयाल जहाँपनाह शहंशाह के दिमाग में आये हैं और वे खयाल किसी मुतास्सिब के बताये मालूम होते हैं।"

"तो अब मुतास्सिब भी शाही खानदान के अन्दरूनी मामलों में दखल देने लगे हैं।"

Central Library Gurukul Kangri University Haridwar 167897

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ हुज़ूर ! जब भी इन मुतास्सिबों को किसी मामले में दखल देना होता है तो वे पहले उस मामले को हिन्दू-मुसलमान का रंग देते हैं और फिर उस फरीक को तबाह करने का हुक्म दिलवा देते हैं जिसे वे हिन्दू का रंग दिये होते हैं ।"

"पर मैं तो पक्का दीनदार मुसलमान हूँ । मैं शराब नहीं पीता । नाच-रंग, गाना-बजाना नहीं सुनता । हर रोज़ अल्लाह ताला और उसके रसूल हज़रत की दरगाह में सजदा करता रहता हूँ ।"

"मगर आप बीजापुर को तबाह करने के लिये तैयार नहीं और बीजापुर की रियासत मराठा राज्य को तबाह नहीं करती । इसलिये आप मराठों की हिमायत करते हैं और क्योंकि मराठे हिन्दू हैं, इसलिये आप मुसलमानों की मुखालिफत कर रहे हैं ।

"बस आपके हिन्दू होने में यही दलील है । शहंशाह अपने खानदान में किसी हिन्दू को देख नहीं सकते ।"

"तो अब मुतास्सिब यह समझने लगे हैं कि अब मुसलमान हिन्दू हो सकते हैं ?"

"हिन्दू तो आपको हिन्दू मानेंगे नहीं और आपने अपने-आपको कट्टर दीनदार मुसलमान बताया है, मगर इससे क्या होता है ? मुतास्सिब दल के मुसलमान आपको मुसलमान नहीं मानते और आपको हिन्दू समझते हैं ।"

शाह आज़म मुस्कराया और पूछने लगा, "तो फिर क्या करना चाहिये ?"

"देखिये हुज़ूर ! मुझे एक मातबर ज़रिये से पता चला है कि शम्भुजी गोआ की सरकार के साथ जंग में मशगूल हो गया है और अपनी सब फौज जो एक लाख के करीब है, को लेकर शहंशाह बीजापुर की सरहदों पर जा पहुँचे हैं । मैं समझता हूँ कि बीजापुर बच नहीं सकता । इतनी बड़ी फौज का मुकाबला करने की ताकत उसमें नहीं है । इसलिये आप सुल्तान सिकन्दर, बेगम साहिबा के भाई साहब को बचाने की कोशिश करें ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप भी यही चाहते हैं ?"

"मेरे चाहने या न चाहने का सवाल नहीं। यह एक असलीयत है कि बीजापुर की रियासत सफा हस्ती से गायब हो जायेगी। उसके मलबा से शाह सिकन्दर को बचाने की कोशिश करनी चाहिये।"

"और यह किस तरह से हो सकेगा ?"

"आपको औरंगाबाद जाने का हुक्म कल तक मिलने वाला है। आप वहाँ चले जाइये और शहंशाह पर इखलाकी दबाव डालकर बेगम बहन के भाई साहब की जान-बख्शी करवाने की कोशिश करिये।"

शाह आज़म तो मुख देखता रह गया, परन्तु जाली के पीछे से आवाज़ आयी, "भाई जान ! आप बेगम बहन के साथ चल सकेंगे क्या ?"

"मैंने एक बात का फैसला किया है कि मैं अब किसी मुगल की नौकरी नहीं करूँगा। हाँ, अगर बेगम बहन एक भाई की हैसीयत से किसी किस्म की राय करना चाहती है तो चलूँगा। मैं ज़ाहिर नहीं हो सकूँगा। हाँ, खुफिया तौर पर साथ रहूँगा।"

: १० :

बात यह थी कि उन दिनों शहरों की सरायों में ऐसे सिपाहियों की भीड़ हो रही थी जो बदअमनी में स्वतन्त्र रहकर अपने भाग्य को उज्ज्वल करने की कोशिश करते रहते थे। ये लोग सारे देश के समाचार रखते थे और जहाँ कहीं भी युद्ध होने की सम्भावना होती थी, उसकी खबर पा वे वहाँ पहुँच जाते थे और युद्ध के उपरान्त घायल और मरे सिपाहियों के भूषण, नकदी और हथियार उतार लेते और फिर जीवन का रस लेते थे।

हिदायत सराय में इन लोगों से मिलता रहता था और उनकी खबरों को सुन, उन पर मनन कर अपने परिणाम निकाल लेता था। इन्हीं कल्पनाओं के आधार पर वह अपनी भविष्यवाणी शाह आज़म को बता रहा था।

यह समाचार तो बुरहानपुर से ही आया था कि जिस रात शहंशाह शहज़ादे को पकड़कर किसी किले में कैद कर देने का हुक्म दे चुका था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर बीजापुरी सिपाहियों से महल में ही युद्ध हो जाने को पसन्द न कर शहज़ादा को वहाँ पकड़ने की योजना बदल चुका था। वह शहज़ादा और शहरयार से मिला था। शहंशाह शहरयार का सौन्दर्य देखकर समझ गया था कि वह आस्तीन का साँप जब तक शहज़ादा के साथ रहेगी तब तक वह शहज़ादा को गुलाम बना अंगुलियों पर नचाती रहेगी।

इस कारण शहज़ादा को बेगम से पृथक् करने और उसे कैद करने की योजना बुरहानपुर में कार्यान्वित न कर किसी दूसरे नगर में ही करने का विचार बना लिया गया था।

इस समाचार के आधार पर ही हिदायत ने शेष कल्पना कर ली थी।

जब हिदायत ने शहज़ादा के साथ औरंगाबाद जाना स्वीकार किया तो बेगम ने पूछ लिया, "हमें शहंशाह का हुक्म यहीं ही वसूल करना चाहिये या औरंगाबाद में जाकर हुक्म से पहले ही इसकी मुखालिफत करनी चाहिये ?"

"मैं समझ रहा हूँ कि आपके बीजापुरी सिपाहियों को पहले निकाला जायेगा। मुमकिन तो यह होगा कि आपको फौरन बिना सिपाहियों के औरंगाबाद बुलाया जायेगा। सिपाहियों को यहाँ रखने का ही हुक्म होगा और आपको यह उम्मीद दी जायेगी कि आप जल्दी ही यहाँ लौट रहे हैं।

'ज्यों ही आप अपने सिपाहियों से अलहदा हुए कि उनको बरखास्त कर यहाँ से बीजापुर के लिये रवाना कर दिया जायेगा और आपको औरंगाबाद में ही रख लिया जायेगा।"

"बादशाही फौज में तो मेरा बहुत रसूख है और यदि वहाँ शाही फौज में रहते हुए मेरे साथ किसी किस्म की बदसलूकी की गयी तो फौज में बगावत होने का अन्देशा नहीं है क्या ?"

"कुछ नहीं होगा हुजूर ! अब तक आपको शाही मुतास्सिबों ने फौज में एक काफिर के तौर पर मशहूर कर दिया होगा।"

"फौज में राजपूत बहुत कम तादाद में हैं। जो हैं वे भी अपनी आवाज़ में असर नहीं रखते। बकाया पठान, तुर्क और मुगल़ हैं और वे सब-के-सब मज़हबी दीवाने हैं। उनमें आपको काफिर मशहूर कर उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके खिलाफ किया जा चुका होगा। आपको अब उनसे किसी किस्म की उम्मीद नहीं करनी चाहिये।"

जाली के पीछे से सवाल किया गया, "पर भाई जान ! किया क्या जाये ?"

"आपको शाही हुक्म की अदूली नहीं करनी चाहिये। औरंगाबाद को जाने का हुक्म मिलते ही आपको रवाना हो जाना चाहिये। अपने बीजापुरी सिपाहियों को साथ ले चलने पर इसरार करिये। यह कह दीजिये कि आप इनसे ऊब गये हैं और आप इनको औरंगाबाद में पहुँच कर छुट्टी देने वाले हैं। मगर इनको अपने साथ रखिये। हो सके तो और बीजापुरी सिपाही भरती करिये।

"वहाँ चलकर आपके अमल का दारोमदार शहंशाह के अमल पर मुनस्सिर होगा।"

इसके उपरान्त अवस्था में द्रुत गति से परिवर्तन होने लगे। आगरा से आयी बाँदियाँ ज़बरदस्ती हरम सराय में पहुँच गयीं और बेगम की बाँदियों को काम से पृथक् करने लगीं। यद्यपि शहरयार आगरा से आयी बाँदियों को मुँह लगाना नहीं चाहती थीं, मगर वे निशंक हरम के काम-काज करने लगीं और बीजापुरी बाँदियों को काम करने से मना करने लगीं।

बाँदियों के दोनों दलों में जूतमज़ार हो जाता यदि शहरयार उनको शान्ति रखने के लिये न कहती रहती।

एक दिन रात को दिलेर खाँ वहाँ शाही फरमान के साथ आ पहुँचा। शाही फरमान इस प्रकार था—

'शम्भुजी अपनी मराठा सेना के साथ गोआ में मशगूल है। इसलिये यह मौका है कि बीजापुर का काम तमाम कर दिया जाये। इसलिये हम खुद अपनी वसीह फौज से बीजापुर पर हमला करने वाले हैं।

'इसलिये हम चाहते हैं कि शाह आज़म फौरन यहाँ चला आये और हमारे साथ इस हमले में शरीक हो। वह अपनी बेगम शहरयार को साथ ले आये तो ठीक ही होगा। हमारा इरादा है कि शाह आज़म बीजापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सूबेदार बनाये जायें। इस ओहदे पर बीजापुरी शहज़ादी का साथ होना बहुत फायदेमन्द होगा और बेगम को भी अपने हुस्न और लियाकत से वहाँ की प्रजा में इतमीनान और ऐतवार बैठाने में मदद देनी चाहिये।

'अभी बीजापुरी सिपाहियों को साथ न लाया जाये। उनको हम बीजापुर के खिलाफ मुहिम पर शामिल करना नहीं चाहते।'

दिलेर खाँ रात को ही शहज़ादा साहब के दरबार में हाज़िर हो शाही फरमान देकर जवाब की प्रतीक्षा करने लगा। शाह आज़म ने फरमान पढ़ा और फिर उसे लपेट कर अपनी जेब में रख लिया। दिलेर खाँ जवाब की प्रतीक्षा करता रहा। जब शहज़ादा ने जवाब में कुछ नहीं कहा तो दिलेर खाँ ने पूछा, "हुज़ूर ! मेरे लिये क्या हुक्म है ?"

"आपके लिये इस फरमान में कुछ नहीं लिखा।"

"एक फरमान मुझे भी दिया गया है।"

"उससे हमारा कुछ ताल्लुक नहीं। मेरे फरमान में उसका जिक्र नहीं है।"

"मगर मेरे फरमान में कुछ आपके मुतल्लिक है।"

"क्या है ?"

"जब आप इसके मुतल्लिक अपने रवैये का ऐलान नहीं करते तब तक मैं उसकी बात आपको बता नहीं सकता।"

"आप जानते हैं कि इसमें क्या लिखा है ?"

"हाँ हुज़ूर ! यह शहंशाह ने मुझे खुद पढ़कर सुनाया है।"

"तो सुन लो। मैं इसके मुताबिक जल्द-अज़-जल्द और जहाँ तक मुमकिन हो सका, अमल करूँगा।"

"मेरा ताल्लुक आपके दो सौ से ऊपर मुहाफिज़ों से है।"

"आपका उनसे उतना ही ताल्लुक है जितना कि आपका मेरी ज़िन्दगी से है। मैं आपके मातहत नहीं हूँ।"

"हुज़ूर ! मैं शहंशाह की नुमायन्दगी करता हूँ।"

"नुमायन्दगी का परवाना दिखाओ।"

"यह तो जब दिखाऊँगा जब आप शाही फरमान मानने से इन्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे।"

"वह मैं क्यों करूँगा ? मुझे शहंशाह से किसी किस्म की शिकायत नहीं है।"

"तो मैं आपसे कल बकाया बात करूँगा।"

"हाँ। अब आप जा सकते हैं।"

दिलेर खाँ कमरे से निकला तो शहज़ादा ज़नानखाने में चला गया। वहाँ पहुँचते ही शहरयार ने शिकायत की। उसने बताया, "मेरी तीन बाँदियों को ज़बरदस्ती पकड़कर आपके जाँ-नशीं ने अपनी खिदमत में ले लिया है। उनमें रहमत भी है।"

रहमत शहरयार की सब बाँदियों से अधिक खूबसूरत और समझदार थी। जब उनको ले जाने के लिये सिपाही आये तो वह चीख-पुकार करने लगी।

शहरयार ने बताया, "अगर मैंने उनको यह कहा होता कि उनको चुपचाप सालारे-जंग की खिदमत अदा करनी होगी तो वे जाने के लिये मानती नहीं और बीजापुरी सिपाही उन सिपाहियों का काम तमाम कर दिये होते।"

"अब क्या करना होगा ?" आज़म ने बेगम को शाही फरमान दिखाते हुए पूछा।

बेगम ने फरमान पढ़ा और बताया, "हिदायत को मैंने यहाँ की हालत बता उसकी राय माँगी है। मैं उसके जवाब की इन्जार कर रही हूँ।"

"पर यह हुक्म ?"

"इसकी भी बात हो जायेगी। मेरी एक बांदी उसको सराय में मेरी चिट्ठी देने गयी है।"

अभी रात का खाना ही खाया जा रहा था कि हिदायत का उत्तर आ गया। हिदायत ने लिखा था, 'मेरी राय वही है जो मैंने दोपहर के वक्त अर्ज़ की थी। सिर्फ इतनी अर्ज़ और है कि दिलेर खाँ से बिना किसी किस्म की बातचीत के चल देना चाहिये। यहाँ यह अफवाह है कि आपको अपनी बेगम साहिबा के साथ औरंगाबाद में कैद करने के लिये बुलाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है ।'

पत्र को पढ़कर शहरयार ने शहज़ादा से अपने मन की बात कह दी। उसने कहा, "हमारे लिये अब दो ही रास्ते हैं । या तो यहाँ से भाग कर अकबर के पास चला जाये । या हिदायत की बात मान औरंगाबाद के लिये चल देना चाहिये ।"

"मैं हिदायत की राय के मुताबिक अमल को ठीक समझता हूँ और कल सूरज निकलने से पहले यहाँ से रवाना हो जाना चाहिये ।"

"ठीक है । अपने सिपाहियों को हुक्म हो जाना चाहिये कि सुबह चलने के लिये तैयार हो जायें ।"

दिन निकलने से पहले शहज़ादा, बेगम, उसकी सब बाँदियाँ और दो सौ के लगभग बीजापुरी सिपाही औरंगाबाद की ओर चल पड़े । दिलेर खाँ अभी सो ही रहा था कि यह काफिला चल दिया ।

रुखसाना और रहमत रात दिलेर खाँ के शयनागार में रहीं और दिन चढ़ने पर उनको अपनी मालकिन के पास शुक्रिया के साथ भेज दिया गया । ये दोनों बाँदियाँ जब शहज़ादा के महल में पहुँचीं तो वह खाली पड़ा था । शहज़ादा अपने पूरे अमला के साथ रवाना हो चुका था। रुखसाना और रहमत उलटे पाँव दिलेर खाँ के खेमे में जा पहुँचीं। दिलेर खाँ अभी गुसल कर बाहर निकला ही था कि उसे बताया गया कि वे लौंडियाँ जो रात यहाँ रही हैं, वापस आ गयी हैं ।

"उनको बुलाओ ।" दिलेर खाँ इसका मतलब नहीं समझ सका ।

जब बाँदियाँ सामने हाज़िर हुईं तो वह पूछने लगा, "क्या चाहती हो ?"

"हम कहाँ जायें ? हमारी मालकिन और उनके सब घर के लोग चले गये हैं ।"

"कहाँ ?" दिलेर खाँ ने आश्चर्य में पूछा ।

"हुज़ूर ! हम नहीं जानतीं । हमारे वहाँ पहुँचने से पहले ही महल खाली कर दिया गया है । वहाँ हमारा वाकिफ कोई नहीं ।"

"अच्छी बात है । तुम वहाँ चलो । मैं अभी वहीं आता हूँ और उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान में ठहरूँगा ।"

"हम अपने मालिक के पास जाना चाहती हैं ।"

"आज से मैं तुम्हारा मालिक हूँ । अब जाओ । वहाँ मेरी इन्तज़ार करो ।"

"वहाँ से बाहर निकल रहमत ने अपनी साथिन को कहा, "यह सालारे-जंग जी नहीं सकता ।"

"ऐसा कैसे कहती हो ?"

"बस मैं कहती हूँ । इसने मेरे साथ जबर-जनाह किया है और इसकी यही सज़ा है ।"

बाँदियों को शहज़ादा के महल को भेज वह अपने दस वफादार सिपाहियों को लेकर वहीं जा पहुँचा । वहाँ जाकर उसे पता चला कि बीजापुरी सिपाही और बाँदिया भी शहज़ादा के साथ चली गयी हैं । वह उनको बरखास्त करने आया था ।

इसके बाद उसने सालारे-जंग का पद सम्भाला और फौज को हमले के लिये संगठित करने लगा । अभी उसे अहमदनगर में पहुँचे एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि उसे मालूम हुआ कि उसके सिर में चक्कर आने लगे हैं और दिल की धड़कन आरम्भ हो गयी है ।

एक दिन उसे एक पत्र मिला कि शहंशाह ने उसे अहमदनगर में भेजा ही इस कारण है कि उसे विष देकर मरवा दिया जाये । उसे होशियार रहना चाहिये ।

दिलेर खाँ को शक हो गया कि उसकी बीमारी उसको ज़हर देने के कारण है । इसके साथ ही उसे शहंशाह की ओर से एक हुक्म मिला । वह यह कि उसे अपनी सेना लेकर बीजापुर पर आक्रमण कर देना चाहिये । वह पश्चिम से आक्रमण करेगा तो उत्तर की ओर से शाही सेना लपक पड़ेगी ।

इस समय दिलेर खाँ रुग्ण-शैय्या पर लेट चुका था । उठकर बैठते ही उसका दिल धड़कने लगता था । इस कारण उसने अपनी बीमारी की बात लिखी तो दरबार में समझा गया कि वह झूठ बोल रहा है । उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सन्देह किया गया कि वह बीजापुर से रिश्वत खा गया है। अतः शाही हुक्म आ गया कि उसको अपने पद से हटाया जाता है।

: ११ :

औरंगाबाद पहुँचने से पहले ही हिदायत और शाह आज़म में लम्बी बातचीत हो गयी। हिदायत की सम्मति थी कि शहंशाह पर इख्लाखी दबाव डालना चाहिये। उस इख्लाखी दबाव की रूप-रेखा भी बना दी गयी।

इस प्रकार शाह आज़म अपने मन में एक योजना बना उस पर अमल करने की विधि पर विचार करके ही औरंगाबाद पहुँचा था।

शहंशाह को दिलेर खाँ के दूत से यह समाचार मिल चुका था कि शाह आज़म अपने बीजापुरी सिपाहियों के साथ ही औरंगाबाद आ रहा है। इस कारण शहंशाह ने सदुल्ला खाँ को एक हज़ार मुगल सिपाही देकर उसके स्वागत के लिये भेज दिया। सदुल्ला खाँ नगर से पाँच मील बाहर ही उससे मिला। शाह आज़म अपने सामने एक बड़ी मुगलिया सेना को खड़े देख परेशानी अनुभव करने लगा। वह अपने पिता से युद्ध कर कुछ भी लेना नहीं चाहता था। वह समझ चुका था कि युद्ध करने से कुछ लाभ भी नहीं।

इस कारण जब बीजापुरी सालार हुक्म के लिये शहज़ादा के मुख पर देखने लगा तो शहज़ादा ने कहा, "सफेद परचम लेकर मुगल सालार से मिलो और पूछो कि वह क्या चाहता है? अगर कोई शाही हुक्म है तो उसको सुनकर आ जाना और बता देना। देखो जवान, हम बाप के साथ लड़ने के लिये नहीं आये। हम उनके हुक्म की पाबन्दी में आ रहे हैं।"

सालार गया और सदुल्ला खाँ का यह सन्देश लेकर आया कि, "मुगलिया फौज हमारे इस्तकबाल के लिये आयी है और हमें इज़्ज़त के साथ औरंगाबाद में ले जाने के लिये हुक्म है।"

इस सालार के साथ ही सदुल्ला खाँ भी शाह आज़म के पास आ पहुँचा। उसने हाज़िर हो कहा, "हुज़ूर! शहंशाह की मर्ज़ी है कि वह आपके साथ मिलकर बीजापुर पर हमला करेंगे। इसलिये आपको भारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शानो-शौकत से औरंगाबाद में ले जाने का हुक्म है।"

आज़म इस बात का रहस्य नहीं समझा। वह अपने पिता के स्वभाव को जानता था कि जब वह बहुत ही सभ्यतापूर्ण होता था तो मन में वह घृणा से भरा रहता था। इस अनुभव से वह भयभीत भी था और अनिश्चित-मन भी।

इस पर अपने सिपाहियों से कई गुना अधिक फौज सामने देख सदुल्ला खाँ की बात पर मुस्कराकर बोला, "मैं समझा था कि तुम हमें पकड़ने आये हो।"

"तो हुज़ूर! आपने कुछ ऐसा किया है जो पकड़े जाने के लायक है?"

"क्या हमारे बाबा ने कुछ ऐसा किया था जो उसे कैद करने के लायक माना गया था?"

सदुल्ला खाँ इसका उत्तर नहीं दे सका। वह अभी मन में सोच ही रहा था कि क्या कहे कि शहज़ादा ने अपनी बात को समाप्त करने के लिये कह दिया, "खैर, खुदा का शुक्र है कि शहंशाह के दिल में अभी भी हमारी इज़्ज़त और कदर है। चलिये, मैं तो खुद ही उनकी खिदमत में हाज़िर होने के लिये आ रहा था। मैं खुदा से हर रोज़ यह दुआ करता रहता हूँ कि वह हमें वैसी अक्ल न दे जैसी उसने हमारे वालिद शरीफ को दी थी।"

सदुल्ला खाँ मुस्कराया और बोला, "हुज़ूर! हम तो आपके खान-दान के ज़रखरीद गुलाम हैं। जंग करना हमारी फितरत में है और अपनी फितरत को हमने शाही मुगलिया खानदान के पास बेच रखा है। आपके खानदानी झगड़े हमारे नहीं। हम तो आप सबके एक बराबर खिदमतगार हैं।"

इस निरर्थक बात का उद्देश्य आज़म समझ नहीं सका। परन्तु वह अपने मन की बात बता नहीं सका। जितना वह अपने पिता के व्यवहार में सभ्यता और सहिष्णुता देख रहा था उतना ही वह किसी घिनौनी चाल

—११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आशंका कर दिल-ही-दिल में काँप रहा था। इस पर भी हिदायत की बात उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रही थी कि जब मुकाबले में अपने से बहुत ज़बरदस्त ताकत आ जाये तो झुक जाना अक्लमन्दी है। उन्नीस से इक्कीस तक का मुकाबला किया जा सकता है, मगर यह प्रकृति के नियम के विरुद्ध है कि बीस से पचास का मुकाबला किया जाये।

इस बात को वह समझ रहा था। हिदायत ने झुक कर भी अपनी बात पर डटे रहने का तरीका बताया था और वह उस पर ही आचरण करने वाला था।

वह अपनी आँखों और कानों का विश्वास नहीं कर रहा था जब औरंगाबाद में उसको ऐसे ले जाया गया जैसे कि वह कोई बहुत कठिन समर पर से विजयी होकर आया है।

वह सर्वथा भ्रमित कुछ भी न समझता हुआ अपने महल में पहुँचा। शहरयार भीतर आयी तो वह उसे भीतर के कमरे में ले गया और कमरे के दरवाज़े बन्द कर उसे अपने सामने बैठा पूछने लगा, "बेगम ! क्या समझी हो ?"

"जहाँपनाह ! तबाही।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि इस किस्म के सलूक पर तो जानी दुश्मन भी मोम की तरह नरम हो जाता है और यहाँ तो हम दुश्मन नहीं। हमारे और शहंशाह के नज़रिये में ही फरक है। वैसे वह आपके वालिद हैं। आप उनके नज़रिये को गलत समझते हुए भी मजबूर हो जायेंगे कि उसको मान लें। जब कोई बात इतनी आजज़ी से कही जाये तो कोई दरिन्दा ही उसको नामंजूर कर सकेगा।

"इसका नतीजा यह होगा कि आप बीजापुर पर हमले में शामिल होंगे और आपकी खसलत को जानते हुए मैं यह कह सकती हूँ कि आप सिकन्दर के गले में पट्टा डालकर अपने वालिद साहब के सामने हाज़िर कर देंगे।"

"तो फिर ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब मैं आपको कुछ नहीं कह सकती। मैं तो आपको उस वक्त भी अपने वालिद और शहंशाह के खिलाफ होने को नहीं कहती थी जब वे आपसे ऐसा सलूक करते थे जैसा कि जानवरों से किया जाता है और अब तो वह खुदाई फरिश्ते की मानिन्द आप पर मेहरबान हो रहे हैं। भला अब मैं किस तरह उनकी मुखालिफत करने के लिये कह सकती हूँ ?"

"मगर अपनी बात मनवाने के लिये इसरार तो किया जा सकता है।"

"इस सलूक के बाद आपमें दम है कि आप कुछ भी कह सकें ?"

"मैं समझता हूँ कि अब मैं बेखौफ होकर बात कर सकूँगा।"

"तो करिये।"

यह शहरयार का स्वभाव था कि वह अपनी बात प्रायः नम्रता और आग्रह से मनवा लेती थी।

मगर हुआ यह कि बाप-बेटे में जब वार्तालाप हुआ तो दूसरा ही ढंग निकला। शहंशाह ने बेटे को सामने बैठाकर कहा, "देखो आज़म ! तुम इस सारी सल्तनत के मालिक होने वाले हो। मैं अपना खून और पसीना एक कर सल्तनत तामीर कर रहा हूँ। मैं इस वक्त छियासठ साल की उमर का हो गया हूँ और नहीं जानता कि किस वक्त इस दुनिया को छोड़ जाऊँ। और इस वक्त तुमको यह शाही इज्ज़त देने का एक मतलब निकल सकता है कि तुम मेरे वली ऐहद हो।

"अब तुमको मेरी इस ख्वाहिश को पूरा करने के लिये मेरी हर तरह से मदद करनी चाहिये जिससे कि मेरे मरने से पहले मैं अपने सबसे अजीज़ फरज़न्द को वह हुकूमत दे सकूँ जिसकी सानी हुकूमत इस सर ज़मीन पर दूसरी न हो। कन्धार से कावेरी तक मुगलों की दुंदुभी बजती है।

"बताओ, इस ख्वाब को पूरा करने में मेरा हाथ बटाओगे या नहीं ?"

"अब्बाजान ! मैंने कब आपके शाने-ब-शाने हो चलने से इन्कार किया है। सिर्फ एक बात में कुछ इख्तलाफ राय है। वह यह कि बीजापुर वालों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बिल्कुल तबाह कर दिया जाये या इस जवाहरात को मुगलिया सल्तनत की पगड़ी में सजा दिया जाये ।"

"मगर यह बताओ कि अगर तुम अपने बुज़ुर्गवार अकबर अज़ीम के वक्त होते और उसे यह राय देते कि दिल्ली के पठानों और आगरा के राजपूतों से सुलह कर ली जाये और काबुल, कन्धार पर कनायत कर ली जाये । अगर वह तुम फकीर तबीयत के जाहिल की राय मान लेता तो आज यह सब-कुछ देखने को मिलता ?

"देखो बेटा ! सल्तनत या तो बढ़ती है या घटती है । यह एक सकून की हालत में नहीं रह सकती ।"

"पर जहाँपनाह ! आकबत में नेकनामी, शोहरत और फिर तसल्ली क्या अपने ही रिश्तेदारों पर जुल्म और बेइन्साफी से हासिल हो सकती है ?"

"कौन अपने हैं ?"

"जिनसे रिश्तेदारी हो जाये । कुदरती रिश्तेदारी या दिल से दोस्ती ।"

"यह अपनी बीवी बेगम शहरयार की बात कर रहे हो ? वह रिश्तेदार तो है नहीं । वह तो मैंने अपनी पहली फतह की याद में बीजापुर की एक खूबसूरत लौंडी तुम्हारे लिये बाँदी बनाकर रख दी थी । तुम अजीब शहज़ादे हो कि उसकी गोरी खाल और चमकदार आँखों के सामने सल्तनत को कुर्बान कर रहे हो ।

"देखो, तुम इस वक्त बच्चे तो हो नहीं । अब ढलती उमर के इन्सान हो । क्या दुनिया में शहरयार के मुकाबले की औरत ही नहीं रही ?

"मगर देखो !" औरंगज़ेब ने नरम हो और लड़के की पीठ पर प्यार देकर कहा, "मैं तुम्हें उसको छोड़ने के लिये नहीं कह रहा । जब तुम शहंशाह बनोगे तो वह भी तो मलिका बनेगी । यह उसके भी फायदे की बात है कि बीजापुर का राज्य खत्म कर दिया जाये और मुगलों की शान बरकरार रहे ।"

"पर अब्बाजान ! एक बात आप मान जायें कि फतह करने के बाद आप सिकन्दर को अपने मातहत एक सूबे का हाकिम बना देंगे ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ पागल हो रहे हो ? जिसके साथ मैंने दुश्मनी की हो, भला उसको क्या मैं ज़िन्दा रहने दूँ ? वह साँप की तरह उलट कर डंक मारेगा। दुश्मन को अधमरा छोड़ने की मेरी राय नहीं है।"

"बस यह एक बात मैं आपसे चाहता हूँ। बाकी सब जो आप कहते हैं, वह मैं मानता हूँ और मैं वायदा करता हूँ कि बीजापुर फतह कर आपके कदमों पर लाकर रख दूँगा।"

"नहीं बरखुरदार ! तुम नहीं समझते।"

"तो फिर आप यह काम आलम से करवा लीजिये। मुझे मुल्तान का सूबेदार बना वहाँ भेज दीजिये।"

"पर वहाँ तो बहुत गर्मी पड़ती है।"

"यह मैं अपने मुअज़िज वालिद शरीफ की बात न मानने की सज़ा समझूँगा।"

"देखो, यह नहीं होगा। इस पर भी मैं चाहता हूँ कि तुम दो-तीन दिन में सोच-समझ लो और फिर अपना आखिरी जवाब दो। मैं एक नतीजे पर जा पहुँचा हूँ कि काफिर मराठों को बगावत करने का मौका ही बीजापुर और गोलकुण्डा वालों ने दिया है और अगर इन दोनों को खत्म कर मैं इन पर कब्ज़ा नहीं जमाता तो ये रियासतें तो तबाह होंगी ही। साथ ही आगरा की सल्तनत से मिलने के बजाय मराठों के राज्य में शामिल हो जायेंगी और फिर इस्लामी राज्य हिन्दुस्तान से नेस्तो-नाबूद हो जायेगा।"

"मैं आपसे एकराय नहीं हूँ।"

"सोच लो। शहंशाह मैं हूँ। इसलिये गलत या ठीक राय मेरी ही चलेगी। मैं कोई नयी बात भी नहीं कर रहा। हमारे बुजुर्गों का यह इरादा रहा है कि इन दोनों रियासतों को खत्म कर देने से ही हमारा दक्खिन का रास्ता खुल सकता है।"

इतना कह शहंशाह ने उठते हुए कहा, "मैं तुमसे अपनी बात का जवाब तीसरे दिन लूँगा।"

अपने बाप को अपने साथ दलील करते हुए देख वह समझने लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि शहंशाह के दिमाग में फरक आ रहा है। इससे पहले वह कभी भी दलील नहीं किया करता था। सिर्फ हुक्म ही दिया करता था।

अपने आवास में पहुँच उसने शहरयार को सब बात बता दी। शहरयार ने सब बात सुन पूछा, "तो जहाँपनाह समझते हैं कि मैं आपकी लौंडी हूँ। बीवी नहीं?"

"वह सब औरतों को ऐसा ही समझते हैं।"

जो शहरयार अब तक अपने को मुगलिया सल्तनत के वली ऐहद की मलिका समझ रही थी, आज बाँदी कही जाती सुन जलते दीपक की ज्वाला को फूँक मार बुझा देने के समान ज्योति-विहीन हो गयी।

उसका मुख पीला पड़ गया। आँखें डबडबा आयीं और उसे ऐसा अनुभव हुआ कि मानो किसी ने पिचकारी से उसके शरीर का पूर्ण रक्त खींच लिया है।

वह उठी और अपने शयनागार की ओर चली, मगर चक्कर खाकर गिर पड़ी।

शहज़ादा ने उसे गिरते देखा तो लपक कर उठा और भाग कर उसे गोद में उठा शयनागार में ले गया। शहरयार बेहोश नहीं थी। मगर उसे ऐसा अनुभव हुआ था कि उसका शरीर सर्वथा निस्तेज और शक्ति-विहीन हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

हरिहर यह समझ रहा था कि उसकी नीति से बाप-बेटे में खाई बढ़ रही है। जबसे वह आज़म के साथ लगा था, वह शहरयार की प्रशंसा करता रहा था और बीजापुर को सर्वथा विलुप्त होने से बचाने का यत्न करता रहता था। उसके मस्तिष्क में यह बात समा गयी थी कि यदि दो मुसलमान राज्य आपस में लड़ते रहेंगे तो हिन्दु-मराठा राज्य उन्नति करता रहेगा और उसके लिये एक-एक कर दोनों को पराजित करना सुगम हो जायेगा।

परन्तु उसने शहंशाह की नीति में परिवर्तन देखा और उसके अपने ही लड़के के स्वागत में नगर को इस प्रकार सजवाया और शहज़ादे की इस प्रकार मान-प्रतिष्ठा नगर में तथा सेना से करवायी कि वह मुगलिया राज्य का वली ऐहद है, वह समझ गया कि शाह आज़म अब बाप के खिलाफ नहीं किया जा सकेगा।

अब शाह आज़म के औरंगाबाद में भव्य स्वागत के उपरान्त उसे बाप-बेटे में वैमनस्य उत्पन्न करने का कोई अवसर रहा दिखायी नहीं दिया। वह दक्खिनी सराय में रहते हुए शहज़ादा के लिये नगर को सजा-वट करते देख रहा था और मन-ही-मन विचार कर रहा था कि कहीं शाह आज़म शहंशाह के सामने बक गया कि उसने शहज़ादे को बाप की मुखालिफत करने का एक नया तरीका बताया है तो वह उसको ढूंढ निकालेगा और फिर चुपचाप मरवाकर नदी में बहा देगा।

वह मन में विचार कर रहा था कि उसे अपना कार्य-क्षेत्र बदल देना चाहिये। यहाँ वह सफल नहीं हो सकता।

उसने अपने रहने का स्थान बदल दिया। वह सराय में केवल दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन ही रहा था। शहज़ादा के शहर में पहुँचने के एक दिन पहले ही वह वहाँ आया था और जिस दिन शहज़ादा का जलूस निकाला गया था, तब तक वह सराय में ही था। उसी दिन सायं उसने एक साफ-सुथरा मकान भाड़े पर लिया और अगले दिन उसमें जाकर रहने लगा। उसने एक मराठा सेवा-कार्य के लिये नौकर रख लिया।

जिस दिन उसने इस मकान में रहना आरम्भ किया था उसी दिन शहज़ादा और शहंशाह में उक्त वार्त्तालाप हुआ था। उसी दिन एक और घटना घटी। वह बाज़ार घूमने के लिए निकला कि उसे सामने से एक सिपाही जाता दिखायी दिया जो बार-बार उसकी ओर देख रहा था।

हरिहर तो उसे पहचान नहीं सका, मगर वह मुगल सिपाही हरिहर को पहचान गया था। हरिहर ने जब देखा कि वह एकाएक चलता-चलता रुक गया है तो हरिहर ने समझा कि उसे अब ठहरना नहीं चाहिये, प्रत्युत उसे चलते जाना चाहिये। वह उस खड़े मुगल सिपाही को वहीं खड़ा छोड़ आगे निकल गया। किन्तु उस सिपाही ने उसके रहने का स्थान तो देख ही लिया था।

कुछ दूर जाकर हरिहर घूमकर देखने लगा कि वह सिपाही कहाँ है? वह वहाँ पर नहीं था जहाँ वह उसे खड़ा छोड़ गया था। हरिहर ने कुछ विचार किया और फिर यह समझ कि उसे भ्रम हो गया है कि वह उसे पहचान गया है, वह अपने काम पर चला गया।

उसी दिन सायंकाल वह सराय में पता करने गया कि उसको कोई पूछने आया था? इस पर सराय वाले ने एक पत्र उसे दे दिया और बताया कि एक बाँदी यह पत्र लायी थी जो उसका पता करने फिर आयेगी। हरिहर ने उसे मकान का पता बता दिया। रात को वह बाँदी पत्र का उत्तर लेने आयी। पत्र शहरयार बानो का था। उसने लिखा था—

'भाई जान! शहज़ादा अपने शहंशाह को उस तजवीज़ पर राज़ी नहीं कर सके जो आपने बतायी थी। वह अपने शहंशाह की बातों से इतने मुतास्सिर हुए हैं कि वे अब बीजापुर की लाम में सबसे आगे होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़ेंगे। दूसरी तरफ से कोई कौल-इकरार नहीं हुआ। सिर्फ यह कहा गया है कि शहज़ादा वली ऐहद है और शहंशाह के फौत होने के बाद वह शहंशाह बन जायेंगे।

'अब बताइये, मुझे क्या करना चाहिये ? मैंने जबसे शहज़ादा का यह इरादा सुना है, खाना-पीना छोड़ दिया है।

'भूख तो सताने लगी है, मगर मैं समझती हूँ कि मैं सह जाऊँगी। बकाया बात कल लिखूँगी।'

इसका कुछ भी उत्तर नहीं था। इस कारण हरिहर ने उस बाँदी को ही कह दिया, "बेगम बहन से कह दो कि वह खुदा पर भरोसा रखें और अपनी सूझ-बूझ के मुताबिक अम्ल करें।"

इससे अगले दिन शहरयार का एक और पत्र आया। उसमें लिखा था—

'मेरे फाका करने पर शहज़ादा भी फाका कर रहे हैं। पिछली रात उन्होंने कुछ नहीं खाया और इस वक्त कह रहे हैं कि उन्हें भूख तो लगी है, मगर वह तब ही खाना खायेंगे जब मैं खाऊँगी।'

इसका भी कोई उत्तर लिखकर देना उचित नहीं समझा गया। हरिहर ने वही बात बाँदी को कह दी जो पिछले दिन कही थी।

उसी दिन सायंकाल एक दर्जन शाही सिपाही आये और हरिहर को पकड़ कर शाही महल में ले गये।

हरिहर बन्दी नहीं था और वह समझ रहा था कि उसे शहंशाह के सामने उपस्थित किया जायेगा।

शाम हो चली थी। इस पर भी शहंशाह अपने सिपहसालारों और अपने छोटे लड़के शाह आलम से राय कर रहा था। इस कारण शाही बैठक के सामने उसे ले जाकर खड़ा कर दिया गया। बैठक के दरवाज़े पर नंगी तलवार का पहरा था और बिना हुक्म के किसी को भीतर नहीं जाने दिया जाता था।

हरिहर को पकड़ कर लाने वाले सिपाहियों के जमादार ने दरवाज़े पर खड़े जमादार के कुछ कान में कहा और वह भीतर चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग चौथाई घण्टे की प्रतीक्षा के उपरान्त दरवाज़े के भीतर से जमादार निकला और उसने हरिहर को पकड़ लाने वाले जमादार के कान में कुछ कहा और हरिहर को एक छोटे-से कमरे में ले जाकर बैठा दिया गया। दो सिपाही कमरे के द्वार पर पहरेदारी करते रहे।

रात के खाने का वक्त हो गया और उसकी सुध नहीं ली गयी। एक घण्टा और बीत गया। अब उसको पकड़ कर लाने वाला जमादार आया और उससे पूछने लगा, "क्यों साहब, भूख लगी है ?"

"लगी थी। मगर अब भूख मर रही है। खाने का वक्त निकल रहा है।"

"हाँ। कुछ देर हो गयी है। आइये, जहाँपनाह आपको दस्तरखान पर बैठे याद कर रहे हैं।"

"खुदा हाफिज़। चलो भाई।"

हिदायत को एक बड़े कमरे में ले जाया गया। वहाँ दस्तरखान लगा था और शहंशाह और उनका लड़का शाह आलम बैठे थे। दोनों के मुख पर रोष था और ऐसा मालूम होता था कि दोनों में भारी झड़प हुई है। दोनों के सामने खाना परसा जा चुका था। शाह आलम तो खाने भी लगा था।

जब हिदायत सामने खड़ा हो सलाम करने लगा तो शहंशाह ने पूछ लिया, "बुरहानपुर से भाग क्यों गये थे ?"

"जान बचाने के लिये। जहाँपनाह, अभी मरने को दिल नहीं करता।"

"और तुम समझे थे कि हम तुम्हें फाँसी चढ़ा रहे हैं ?"

"अब्बाजान ! मार डालने के लिये फाँसी चढ़ाना ही एक तरीका नहीं है। दूसरे भी कई तरीके हैं जिनसे मारा जा सकता है। आपका ताली बजाने की कोशिश से मैं यही समझा था कि आप मुझे पकड़वा कर कैदखाने में डलवाने वाले थे।"

"और तुमने एक पादशाहों के पादशाह के हाथ पकड़ने की गुस्ताखी कर दी थी ?"

"वह तो एक कुदरती अम्ल था। एक चींटी भी जब मरने लगती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उस हाथ को काटती है जो उसे मसल डालने वाला होता है ।"

"गज़ब तो यह है कि तीन वार तुम हमारे कब्ज़े में ग्राकर निकल चुके हो ग्रौर फिर भी उसी शहर में रह रहे हो जिसमें हम ग्रपनी एक लाख फौज के साथ ठहरे हुए हैं। सिर्फ ठहरे हुए ही नहीं, बल्कि खुले ग्राम घूम रहे हो ।"

"ग्रव्वाजान ! मैंने कोई गुनाह नहीं किया जिससे मैं डरूँ। ग्रापके खिलाफ भी मैंने कभी कुछ नहीं किया ।"

"मगर हम तुम्हें कैद करना नहीं चाहते । हम तुम्हें तुम्हारी माँ के पास भेजना चाहते हैं ।"

"मगर वह भी तो ज़िन्दा दरगोर है। मैं उसके साथ ज़िन्दा ही दफनाया जाना पसन्द नहीं करता । ग्रगर ग्राप इतने मेहरबान हो रहे हैं कि मुझे उसकी खिदमत करने का मौका देना चाहते हैं तो उसे मेरे पास मेरे मकान में भेज दीजिये । मैं ग्रौर वह ता-हयात ग्रापके शुक्रगुज़ार रहेंगे ।"

"ग्रगर एक वायदा करो तो हम यह भी कर सकते हैं।"

"हुज़ूर ! फरमाइये ?"

"तुमको हमारी नौकरी करनी पड़ेगी ।"

"मैं कर लूँगा । मगर माँ ग्रपनी मर्ज़ी के मुताबिक जहाँ चाहेंगी, रहेंगी ।"

"ठीक है । मगर तुम हमारे नौकर रहोगे ।"

"जब तक ग्राप कोई ईमानदारी का काम देते रहेंगे, नेक नीयत से खिदमत करता रहूँगा ।"

"तुम बीजापुर को फतह करना ईमानदारी का काम समझते हो या बेईमानी का ?"

"हुज़ूर ! सियासत में हमेशा हर मसलहा के दो पहलू रहते हैं । एक पहलू से जो काम ईमानदारी का हो सकता है वह दूसरे के खयाल से बेईमानी का भी हो सकता है । इसी तरह बीजापुर की बात है ।"

"हाँ, बीजापुर सल्तनत तबाह होगी ग्रौर मुगल सल्तनत तो तरक्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगी। और हम तुमको मुगल सल्तनत की तरक्की के लिए नौकर रखना चाहते हैं।"

"अब्बाजान! मैं भी इसी नज़रिया से नौकरी पाने की बात कर रहा हूँ। मुझे आप मुगलिया सल्तनत की तरक्की के लिये नौकर रख रहे हैं और मैं समझता हूँ कि बीजापुर को फतह करने से आप मुगलिया सल्तनत की जड़ें खोखली कर रहे हैं और अपनी दुश्मन रियासत महाराष्ट्र की नींव मजबूत कर रहे हैं। इसलिये ईमानदारी तो यह होगी कि मुगलिया सल्तनत का अन्न खाते हुए उसकी जड़ें खोखली करने में न लगं।"

"मगर तुम तो नौकरी कर रहे हो। मुगलिया सल्तनत की राजगद्दी के मालिक नहीं बन रहे। एक नौकर को भले-बुरे का ज़िम्मेदार नहीं माना जा सकता।"

"मगर आपके पास कई ऐसे काम हैं जिनको मैं आपकी सल्तनत के हक़ में समझता हूँ। आप उनमें से एक काम पर मुझे तैनात कर दें।"

"मगर सुना है कि तुम एक निहायत ही काबिल सिपाही हो।"

"कुछ और लोग भी ऐसा ही कहते हैं। मगर मैं समझता हूँ कि काबलियत का यह मतलब कभी नहीं हो सकता कि इसका इस्तेमाल अपने ही खिलाफ करने लगूँ।"

"हम तुम्हारी सब शर्तें मन्जूर कर सकते हैं। मगर तुम यह बताओ कि तुम शाह आज़म वली ऐहद मुगलिया सल्तनत की बेगम को क्या बातें बताते रहते हो?"

"अब्बाजान! बड़े भाई की बेगम बहन के बराबर है। इसलिये उसके लिये खुदा परवरदिगार से दुआ माँगता रहता हूँ कि खुदा उन पर रहम करे।"

"बहुत चालाक आदमी हो तुम।"

"अब्बाजान! वह चालाकी और होशियारी भी आपके इस्तेमाल में आ सकती है।"

"हाँ, बताओ कि हम किस तरह अपने वली ऐहद को अपनी बीवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मुहब्बत के जाल से बचायें ?"

"पर हुज़ूर ! वह क्या चाहती हैं ?"

"तो तुम नहीं जानते ? उसकी बाँदी तुम्हारे घर में बार-बार जाती देखी गयी है।"

हरिहर समझ गया कि उस पर जासूसी की जाती रही है। उसे विश्वास हो रहा था कि बाँदी से पूछताछ की गयी होगी और बाँदी ने यदि सत्य बताया होगा तो शहंशाह जान गये होंगे कि बेगम और शहज़ादे की फाकाकशी की बात उसे मालूम है। इस कारण उसने इस विषय में बता देना मुनासिब समझा। उसने कहा, "हुज़ूर ! उसकी कुछ बातें तो मैं जानता हूँ। अगर हुक्म हो तो बता सकता हूँ।"

"हाँ, बताओ ?"

"बेगम बहन अपने भाई सिकन्दर शाह से अज़हद मुहब्बत रखती है और वह यह भी जानती है कि आगरा के शहंशाह की ताकत के सामने वह सात-आठ साल का बच्चा ठहर नहीं सकेगा। इसलिये वह उसकी खैर-खैरियत के लिये दुआ करती रहती है। हुज़ूर ने उसकी दुआ को मन्जूर नहीं किया और सुना है कि वह फाकाकशी पर उतर आयी है।"

"हम बेगम की हैसीयत मुगलिया खानदान की एक खादिमा से ज़्यादा नहीं समझते। भूखी रहकर मरे या ज़हर खाकर मरे, हम उसकी फिक्र नहीं कर रहे। हम तो यह जानना चाहते हैं कि कोई ऐसी तजवीज़ बताओ जिससे कि आज़म उसके जाल से छूट जाये। इस वक्त फिक्र की बात यह है कि वह भी बीवी को बचाने के लिये फाका कर रहा है।"

"तो हुज़ूर ! एक बात करिये। आप फिलहाल बेगम की बात मान जाइये।"

"और अपने कौल को भूल जायें ?"

"जहाँ तक मुझे तवारीख का इल्म है, सब राजा लोग ऐसा करते रहे हैं। अगर आप भी यही बात करेंगे तो कोई नयी बात नहीं होगी।"

"और तुम इसे ईमानदारी मानते हो ?"

"हुज़ूर ! एक पादशाह के लिये अम्ल का मैयार एक होता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मेरे जैसे खादिम के लिये दूसरा। आप अपना मक़सद हासिल करने के लिये कुछ भी कह और कर सकते हैं।"

"तो ठीक है।" शहंशाह ने ताली बजायी। नौकर आया तो उसको हिदायत के लिये भी खाना लाने का हुक्म दे दिया। अब शहंशाह और हिदायत भी खाने लगे। शाह आलम खाँ का पेट भर चुका था। उसने शहंशाह की ओर देखकर कहा, "तो मैं चलूँ?"

"तुम बिल्कुल गधे हो।" शहंशाह ने कहा, "देखो आलम! बीजापुर तो दूर की बात है। तुम तो उस शम्भु को भी नहीं पकड़ सके जो बे-सरोसामान पहाड़ियों में छुपता फिरता है।

"आज़म में मैं यह जुर्रत देखता हूँ और उसकी जान बचाने के लिये तुम फिक्रमन्द मालूम नहीं होते। ठहरो, हम खाना खा लें और फिर चलते हैं। आज हम उनको खाना खिलायेंगे।"

आलम इस बात में किसी प्रकार का तथ्य नहीं समझता था, परन्तु वह पहले ही बाप को बहुत नाराज़ कर चुका था। इस कारण चुपचाप बैठा रहा।

: २ :

खाना खाने के बाद शहंशाह ने हरिहर और शाह आलम को साथ लिया और शाह आज़म के रहने के कमरों की ओर चल पड़ा। शहंशाह के वहाँ पहुँचने पर शाह आज़म को इत्तला की गयी और उसने कहला भेजा कि वह फाका करने से निहायत ही कमज़ोरी महसूस कर रहा है। इस कारण वह हिन्दुस्तान के शहंशाह की पेशकदमी के लिये हाज़िर नहीं हो सकता।

इस पर शहंशाह ने कह दिया, "बेगम को कहो कि पर्दा कर लें। हम एक बाहरी आदमी को साथ ला रहे हैं।"

सोने के कमरे में जाली डलवा दी गयी। शहज़ादा का पलंग जाली के बाहर था और बेगम का जाली के पीछे कर दिया गया। शहज़ादा के पलंग के पास तीनों आगन्तुक जाकर खड़े हो गये।

अब शहज़ादा पलंग से उठा और झुक कर शहंशाह की कदम-बोसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगा तो शहंशाह ने हिदायत की ओर संकेत कर पूछा, "देखते हो यह कौन है ?"

"हाँ, जहाँपनाह ! जानता हूँ। आगरा के महल में रहने वाली एक महताब बेगम का लड़का है। उस दिन यह मेरे फौज के मोदी की हैसीयत से हुज़ूर के पास मुहिम के खर्चे की बात करने आया था और हुज़ूर इसे पकड़ कैदखाने में डलवाने वाले थे। मगर यह भाग निकला था।"

"हाँ। मगर अब यह तुम्हारी बेगम का वकील बन हमारे पास आया है और हमने इसकी वकालत मान ली है।"

शहज़ादा पुनः पलंग पर बैठ गया और बोला, "हुज़ूर ! कमज़ोरी से टांगें काँपने लगी हैं। इसलिये बैठने की इजाज़त चाहता हूँ।"

शहंशाह ने शहज़ादा से बात करनी बन्द कर जाली की ओर देखते हुए कहा, "बेगम ! हिदायत हमारा अजीज़ है और मैंने इसकी राय मान ली है। वह यह कि अगर कहीं खुदा की मेहर से हमारा कब्ज़ा बीजापुर पर हो गया तो हम यह ऐहद करते हैं कि हम सुल्तान सिकन्दर को अपना फरज़न्द मान उससे अपने एक शहज़ादे की तरह ही सलूक करेंगे।"

"पर भाई जान !" जाली के पीछे से आवाज़ आयी, "आप क्या कहते हैं ? क्या शहंशाह अपनी बात पर कायम रहेंगे ?"

यह बात हिदायत से पूछी गयी थी। इस पर भी शहंशाह ने मुस्कराते हुए कहा, "हाँ, बेगम के भाईजान बता सकते हैं कि हमने कभी भी अपना कौल-इकरार तोड़ा है ?"

हिदायत ने जाली की ओर देखते हुए कहा, "देखो बहन ! सियासत में कोई भी शख्स कौल-इकरारों के पाबन्दी करवाने की ताकत रख ही इसकी उम्मीद कर सकता है। मगर इसका यह मतलब नहीं कि कौल-इकरार किये ही न जायें और अगर किये जायें तो उन पर अम्ल न किया जाये। इस पर भी बहन, जो शख्स इनसे वक्त पर फायदा नहीं उठाता उसे वक्त निकल जाने पर अपने को ही मुजरिम समझना चाहिये।"

शहंशाह इस गोल-मोल बात को सुन इस बात को मान गया कि हिदायत युक्ति-युक्त बात ही कर रहा है। उसके मन में यह बात थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वक्त आज़म को बीजापुर मुहिम में शामिल करने का मौका गँवाना नहीं चाहिये और इसके लिये सब प्रकार के वचन किये जा सकते हैं। इन वचनों को पालन करवाना तो वचनों से लाभ उठाने वालों की ताकत पर निर्भर करता है।

शहरयार ने क्या समझा और क्या नहीं समझा किन्तु उसने कह दिया, "अपने शहंशाह के कहने पर यकीन न करना तो गद्दारी होगी। मुझे मन्जूर है।"

आज़म यह समझ रहा था कि यह एक अवसर है कि वह शहंशाह को अपनी वफादारी का प्रमाण दे। उसने उसी समय उठकर हाथ ऊँचा उठाकर कह दिया, "मैं ख़ुदा को गवाह बना कसम खाता हूँ कि बीजापुर के किले पर मुगलिया परचम लहराये बिना दम नहीं लूँगा।"

शहंशाह ने कह दिया, "तो ठीक है। अब तुम लोग खाना खाओ। और देखो आज़म, आज की जंगी मजलिस तुम्हारी गैर-हाज़िरी की वजह से कुछ तय नहीं कर सकी। कल तुमको उसमें आना चाहिये।"

आज़म के कक्ष से बाहर निकलते हुए शहंशाह ने कहा, "देखो हिदायत ! मैं तुमको एक अंगुली के इशारे से खत्म कर सकता हूँ, मगर हम महताब बेगम के लड़के को अपना ही लड़का समझते हैं। इसलिये उससे तवक्को करते हैं कि वह हमको पहले की तरह अपना अब्बाजान समझे।

"अब तुम जाओ और कल दरबार में आना। हम तुमको शाही खिल्लत देंगे और तुम्हारे लिये काम मुकर्रिर करेंगे।"

"और हुज़ूर, माँ ?"

"वह यहाँ नहीं बुलायी जा सकती। मगर तुम जब आगरा जाओगे तो उससे शाही महल में जाकर मिल सकोगे। बीजापुर की मुहिम के बाद हम तुम्हारे लिये कोई इलाका मुर्कारिर कर देंगे और तुम वहाँ हमारी तरफ से हुकूमत करोगे।"

हिदायत ने सलाम की और वहाँ से चला आया। उसे इस बात पर विश्वास नहीं होता था कि शहंशाह अपनी एक भी बात को पूरी करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह घर जाता हुआ विचार कर रहा था कि बीजापुर पर आक्रमण में वह सक्रिय भाग ले अथवा न ले ?

शहंशाह के चले जाने के बाद शहरयार ने अपने पति से पूछा, "आप अपने वालिद साहब की बात पर यकीन करते हैं क्या ?"

"हिदायत की बात नहीं समझी क्या ? कौल से फायदा उठाना चाहिये । पीछे उसे पूरा कराने के लिये ताकत तामीर करनी चाहिये ।

"मैं समझता हूँ कि यह राय ऐन मौके पर मिली है । हमें मान जाना चाहिये । मेरा हक वली ऐहद के तौर पर मन्ज़ूर कर लिया गया है । इसको आज रियाया में ज़ाहिर कर दिया गया है । इसका मतलब है कि मेरे हाथ में ताकत आ रही है जिससे शहंशाह को अपने कौल पर कायम रहने के लिये मज़बूर कर सकता हूँ ।"

"इस पर भी मेरा दिल अन्दर-ही-अन्दर बैठता जाता है । मैं सोच रही हूँ कि बीजापुर जैसा खूबसूरत और शानदार शहर तबाह हो जायेगा । यह फिर दोबारा वैसी शानो-शौकत हासिल नहीं कर सकेगा ।"

"अगर खुदा ने मुझे ज़िन्दगी बख्शी तो मैं इस शहर को फिर उसी शानो-शौकत का बना दूंगा जैसा अब है ।"

इस प्रकार मन में भय और अनिश्चित भविष्य का भाव लिये हुए वे दोनों गुसल के लिये चले गये और फिर खाना खा सो गये ।

अगले दिन आम दरबार का ऐलान किया गया और सब उमरावों को जो औरंगाबाद में विद्यमान थे, हाज़िर होने का हुक्म दे दिया गया । इस दरबार में शाह आज़म को अपने दाहिनी ओर और शाह आलम को बायीं ओर बैठने का प्रबन्ध कर दिया गया ।

दरबार का उद्देश्य था बीजापुर के खिलाफ ऐलाने-जंग करना और उन सिपहसालारों और उमरावों को जो जंग में विशेष भाग लेने वाले थे, खिल्लत दी जाये और पदवियों में उन्नति की जाये ।

मिर्ज़ा हिदायतउल्ला को भी उपस्थित होने का हुक्म था । हिदायत पिछली रात अपने पलंग पर सोया-सोया विचार कर रहा था कि बहुत

—१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातः ही यहाँ से भाग जाये। इसी विचार से वह सोने का यत्न कर रहा था, परन्तु किसी अज्ञात कारण से उसे नींद नहीं आ रही थी।

शहर में रात के तीन बजे की गजर खड़की और अभी तक वह एक झपकी तक भी नहीं ले सका था। वह अपनी पूर्ण योजना को असफल हुआ समझ रहा था। एक बार उसके मन में पुनः यह विचार आया कि शम्भुजी की सेवा में चला जाना चाहिये और जितनी भी अपनी शक्ति है, उससे मराठा राज्य स्थापित करने में सीधी सहायता देनी चाहिये।

जब तीन का घण्टा बजा तो वह उठ खड़ा हुआ। उसने अपने नौकर को जगाया और कहा, "स्नानादि कर जल्दी घोड़ों को तैयार करो।"

वह अभी शौचादि ही में लीन था कि उसका नौकर आया और बोला, "हुज़ूर! मकान का द्वार बाहर से बन्द है।"

"बन्द है? किसने बन्द किया होगा?"

"हुज़ूर! मुझे शक है कि मकान को शाही सिपाहियों ने घेर रखा है।"

"किस कारण से यह शक कर रहे हो?"

"मैंने दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से खटखटाया था। मेरा खयाल था कि कोई राह चलता आवाज़ सुन समीप आयेगा तो उसे कहूँगा कि बाहर से दरवाज़ा खोल दे। भूल से कुण्डा चढ़ गया है। मगर हुज़ूर, बाहर से एक आदमी बोला, 'देखो जी! बाहर निकलने की कोशिश न की जाये। कुण्डा हमने ही चढ़ाया है।'

"जब मैंने पूछा कि तुम कौन हो तो वह बोला कि, 'थोड़ी देर में पता चल जायेगा।' ये रात वाले लोग ही प्रतीत होते हैं।"

हरिहर मुस्कराया और बोला, "तो जाओ, सो रहो। अभी दो घण्टे से अधिक सोया जा सकता है।"

नौकर गया तो उसने भी भागना असम्भव समझ निश्चिन्त हो प्रातःकाल की पूजा प्रारम्भ कर दी। पहले तो वह बिना पूजा के ही औरंगाबाद छोड़, दिन निकलने से पहले कहीं दूर पहुँच जाना चाहता था।

पूजा करते-करते उसे नींद आने लगी। वह कुछ ऐसा अनुभव करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा था कि मस्तिष्क पर भारी बोझा है । अब मार्ग निश्चित हो जाने से वह बोझा उतर गया है ।

उसने पूजा समाप्त की और पुनः सो गया ।

वह प्रातः का अल्पाहार ले रहा था कि शाही फरमान मिला कि उसे ग्यारह बजे महल के बड़े दीवानखाने में हाज़िर हो शाही ख़िल्लत और अपने नये ओहदे पर काम करने का हुक्म लेना चाहिये ।

हरिहर ने फरमान पढ़ा और शाही सन्देश लाने वाले की ओर देख पूछा, "यह हुक्म तुमको किस वक्त मिला था ?"

दूत ने समझा कि उसे आने में देर हो गयी है । इस कारण उसने कह दिया, "हुज़ूर ! अभी-अभी शाह आज़म साहब ने बुलाकर यह दिया है और कहा कि आपको ज़रूर हाज़िर होना चाहिये ।"

हिदायत कपड़े पहन वक्त पर दीवानखाने के बाहर जा खड़ा हुआ । उसने दरबान को फरमान दिखाया तो उसे ले जाकर उसके लिये निश्चित स्थान पर खड़ा कर दिया गया ।

वही आगरा वाले सब रीति-रिवाज़ पूरे किये गए और दरबार की कार्यवाही आरम्भ हुई ।

शहंशाह के आने पर तोपें दागी गयीं, तुरियाँ बजायी गयीं और फिर शहंशाह गाज़ी औरंगज़ेब के ज़िन्दाबाद के नारे लगाये गए । तब शहंशाह आये और सब दरबारियों के खड़े-खड़े ही मंच पर आकर तख्त पर बैठ गये ।

शहंशाह के तख्त पर बैठते ही एक दरबान ने एक कागज़ पर लिखा ऐलान पढ़कर सुनाया । उसमें कई लोगों को पदवियाँ दी गयीं और खिल्लत दी गयीं ।

हिदायत को खान-ए-अज़ीम का खिताब दिया गया और उसे पाँच-हज़ारी का पद दिया गया ।

दरबार समाप्त हुआ और खिल्लत लिये हुए हरिहर दीवानखाने से निकलने लगा तो एक दरबान सामने आ सलाम कर बोला, "हुज़ूर ! शहंशाह याद फरमाते हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिहर ने पूछ लिया, "कब हाज़िर होने का हुक्म है ?"

"अभी, आइये।"

हरिहर दरबान के साथ चल पड़ा। शहंशाह अपनी बैठक खास में बैठा था। हरिहर वहाँ पहुँच सलाम कर आज्ञा के लिये सामने खड़ा हो गया।

शहंशाह ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "सुबह तीन बजे ही कहाँ भाग जाना चाहते थे ?"

"जहाँपनाह ! रात-भर सो नहीं सका था। खयाल आया कि एक घण्टा बाहर खुली हवा में सरपट घोड़े की सवारी से शरीर को हरकत दूं तो न सो सकने की थकावट दूर कर लूंगा।

"मगर हुज़ूर ने अपने एक मनसबदार को कैद कर रखा है, यह जान सब्र कर पलंग पर जाकर सोने की कोशिश करने लगा था।"

"तो फिर नींद आयी ?"

"हाँ हुज़ूर ! जब यह समझ में आ गया कि जहाँपनाह अपनी आदत से मजबूर हो अपने वफादार रिश्तेदारों पर अभी भी ऐतबार नहीं करते तो मजबूरी में एक घन्टा-भर सोया था।"

"मगर एक बात हम नहीं समझ सके कि तुम हमारी आदत को जानते हुए भी भूल जाते हो कि हम कोई बात अधूरी नहीं छोड़ते।

"देखो, हम चाहते हैं कि तुम इस मुहिम में हमारे साथ रहो और वक़्तन-फवक़्तन हमारी रहनुमाई करते रहो।

"दक्खिन फतह करने की हवस शाह अकबर अज़ीम के वक़्त से हमारे खानदान में चली आ रही है और अभी तक कोई भी इसे पूरा नहीं कर सका। हमने सल्तनत की पूरी बाज़ी इस मुहिम पर लगा दी है। एक लाख सिपाही औरंगाबाद में हाज़िर हैं। दो लाख और बीजापुर को घेरने की कोशिश में नकलो-हरकत कर रहे हैं। हर रोज़ एक लाख तिलई मुहर इस मुहिम पर खर्च हो रहा है। मैं इसकी नाकामयाबी को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

"मेरे दिमाग में अभी भी तुम्हारे मामा विश्वनाथ की बात तरोताज़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और उस जैसा बेखौफ सलाहकार मुझे तुममें दिखायी दिया है। इसलिये तुम इस जरूरत के वक्त मुझे छोड़कर जा नहीं सकोगे।"

"पर जहाँपनाह ! मैंने कब इन्कार किया है। यह तो हुज़ूर की शक्की तबीयत ही है जो मेरे भाग जाने की बात खयाल कर रहे हैं।

"सिर्फ एक बात है। वह यह कि अपनी अक्ल और इल्म के मुताबिक नेकनीयत से ठीक राय देना तो एक सलाहकार का फर्ज़ है, मगर जब राय पसन्द न आये तो सलाहकार की ईमानदारी पर शक करना मालिक का काम नहीं।

"हुज़ूर ! मैं अब भी यही समझता हूँ कि मुगलिया खानदान की बहबूदी इसी में है कि बीजापुर जैसे एक ज़बरदस्त दोस्त रियासत को तबाह न किया जाये।"

"यह बात रात हमने सुन ली और उस पर गौर कर लिया है। हमारा दिमाग तुम्हारी पेशीनगोई को ठीक नहीं मानता। इसको छोड़ अब तुम अपना दिमाग इस बात पर लगाओ कि बीजापुर फतह करने के लिये किस तरीके से मुहिम चलायी जाये ?"

हरिहर ने झुककर सलाम की और कहा, "कोशिश करूँगा कि इस मुहिम में कामयाबी की राह दिखाऊँ।

"मैंने बीजापुर कई बार देखा है और इसकी किलाबंदियों की बाबत रहते कुछ ज़ानता हूँ और उनको अबूर करने की तजवीज हुज़ूर के सामने रखने की कोशिश करूँगा।"

: ३ :

इस समर में शहंशाह औरंगज़ेब ने मुगलिया सल्तनत की पूरी ताकत लगा दी थी और जब समर आरम्भ हुआ तो औरंगज़ेब औरंगाबाद से अहमदनगर जा पहुँचा और वहाँ से सम्वत् १७४२ में शोलापुर में अपना कार्यालय ले गया।

इस समय तक बीजापुर वालों का हाथ ऊँचा था। बीजापुर की सेना शाह आज़म और सदुल्ला खाँ को कई झड़पों में पराजित कर चुकी थी। छः महीने के निरन्तर प्रयास से भी बीजापुर की बाहरी किलाबंदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी जब नहीं तोड़ी जा सकी तो फिर किले को घेरा डाल दिया गया। एक दर्जन मोर्चे तैयार कर उन पर तोपखाने चढ़ा दिये गए और दिन-रात उनसे नगर पर गोलाबारी आरम्भ कर दी।

शहर में रसद जाना बन्द कर दिया गया। बाहर वालों का किले के भीतर वालों के साथ सम्पर्क बन्द कर दिया गया।

तीन महीने की लगातार फौजबंदी और गोलाबारी पर भी जब नगर के लोगों ने किलाबंदी के नज़दीक एक भी मुगल सिपाही को फटकने नहीं दिया तो फिर शहंशाह ने अपनी पुरानी चाल चली। उसने मराठा लिबास में अपने जासूस रात के समय किले में भेज दिये और नगर के कुछ उमरावों को अपना इरादा बताया कि वह आदिलशाही खानदान के खिलाफ नहीं। बीजापुर में उसी की हुकूमत बरकरार रखने का पक्का इरादा है। मुगल आक्रमण का उद्देश्य केवल यह है कि बीजापुर हुकूमत काफिर मराठों को कुचलने में मुगल शहंशाह की सहायता करे।

बीजापुर का सहायक गोलकुण्डा भी था और वह दक्षिण का दुर्बल अंग समझ उसमें भी फूट डलवाने के लिये जासूस भेजे गये।

औरंगज़ेब ने गोलकुण्डा और बीजापुर के रईसों को यह कहा कि काफिर की हुकूमत के लिये मोमिनों का खून बहाया जा रहा है। इसे वह सहन नहीं कर सकता। इसलिये वह चाहता है कि बीजापुर और गोलकुण्डा के ही दीनदार बहादुर लोग मिलकर उन काफिरों के दोस्तों को हुकूमत से बरतरफ कर दें जो अपनी कमीनी हरकतों से इस्लाम की तौहीन कर रहे हैं।

इस प्रकार की दलील का प्रभाव होने लगा। कुछ लोग मिलकर सम्मति करने लगे कि शम्भुजी से उन्होंने क्या लेना-देना है और यदि मुगल शहंशाह से सन्धि कर ली जाये तो अधिक अच्छा होगा।

बीजापुर में दलबंदी तो पहले ही थी। घेरे की कठोरता और टिड्डी-दल की भाँति मुगल सेना को चारों ओर से उमड़ते देख मज़हब की बात अधिक प्रभावी प्रतीत होने लगी और शाह सिकन्दर के सलाहकारों में से चुन-चुन कर लोगों की हत्यायें होने लगीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाही सलाहकारों में गोलकुण्डा के मदन नाम के एक पण्डित की हत्या सबसे पहले की गयी। इस षड्यन्त्र में शेख मिन्हाज़, सरद्दुना और जानी साहिबा सम्मिलित थीं।

इसके बाद रुस्तम राव का छुरे से पेट फाड़ उसे मार डाला गया। तदुपरान्त नगर के मुसलमानों को भड़का कर हिन्दू मन्दिरों और अन्य पवित्र स्थानों पर आक्रमण कर दिया गया।

बीजापुर में भी हिन्दू-मुसलमान बलवे कराने का यत्न किया गया। इन सब प्रकार के यत्न करने पर भी समर चलते हुए पन्द्रह महीने से ऊपर हो गये थे। बीजापुर विजय हुआ, परन्तु लड़ाई से नहीं। तोपखाने से भी नहीं, भीतरी षड्यन्त्रों से भी नहीं; बल्कि घेरे की कठोरता के कारण। जब लोग बहुत बड़ी संख्या में भूख और बीमारी से मरने लगे तो शाह सिकन्दर ने अतायत कबूल कर ली। उसने नगर का द्वार खोल दिया और खुद गले में दुपट्टा डाल अतायत कबूल करने के लिये रसालपुर शहंशाह के शिविर को चल पड़ा।

मुगल सेना की प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा। जहाँ बीजापुरी प्रजा शाह सिकन्दर के मुगलों की अधीनता स्वीकार करने पर रोती थी वहाँ मुगल सेना नाच-रंग, बाजे-गाजे और तोपों को दाग-दाग कर प्रसन्नता प्रकट कर रही थी।

रसूलपुर में औरंगजेब के बहुत से अधिकारी फिरोज़ जंग की सरमस्ती में शिविर के बाहर तक आये और सिकन्दर का स्वागत कर भीतर ले गये।

शिविर में एक बहुत बड़े शामियाने के नीचे आम दरबार किया गया और उस दरबार में राज्य के सब सालार, सालारे-जंग, फौजदार और उमराव, मनसबदार इत्यादि बुलाये गए। उसमें सिकन्दर को लाया गया।

जब सिकन्दर शामियाने के बाहर आया तो सदुल्ला खाँ और कुछ दूसरे अफसर अपनी-अपनी जगह से उठकर शामियाने के दरवाजे तक आये और सिकन्दर को मान-प्रतिष्ठा से ले जाकर शहंशाह के सामने खड़ा कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकन्दर ने झुककर सलाम की। सब उपस्थित गण पराजित शाह की अल्पायु, सौन्दर्य और सभ्यता के व्यवहार को देखकर अति प्रभावित हुए। सब लोग मौन, चकित और सम्मोहित खड़े रह गये। उपस्थित गण में बहुत से ऐसे थे जो इस राज्यच्युत शाह को देख आँखों में आँसू भर रहे थे।

शहंशाह ने भी देखा और वह भी इस पतन को देख हृदय में टीस अनुभव करता था। शहंशाह ने सिकन्दर को अपनी बगल में अपने एक पोते के पास बैठाया और बहुत ही सहानुभूति-भरे शब्दों में उसको सांत्वना दी और खिल्लत दी। उसका रुत्वा अपने पोते और नातियों के बराबर मुकर्रिर किया और फिर दरबार समाप्त हुआ।

रसूलपुर में सिकन्दर के रहने का प्रबन्ध कर दिया और फिर अगले दिन शहंशाह बीजापुर में दाखिल हुआ।

इस पूरे समर में हिदायत शहंशाह के बायें हाथ की ओर कुछ पीछे हटकर बैठा सम्मति दिया करता था। जब-जब भी किसी कठिनाई का सामना पड़ता तो शहंशाह झुक और घूमकर हिदायत की ओर देखता था और हिदायत उचित सम्मति दे देता था। प्राय: हिदायत की बात शहंशाह को पसन्द आती थी। कभी-कभी मतभेद भी हो जाता था। एक ऐसा ही अवसर तब आया जब सदुल्ला खाँ ने शहंशाह को यह सूचना दी, "हुज़ूर! शहज़ादा आलम बीजापुर वालों से एक अलहदा सुलहनामा करना चाहता है।" यह बात बीजापुर के पराजित होने से कई मास पूर्व की थी। शहंशाह इस समाचार से भौंचक्का हो गया। सदुल्ला खाँ ने बताया, "कल रात शाह कुल्ली शराब के नशे में बक गया है कि वह बीजापुर में कई बार जा चुका है और शाह आलम का पैगाम ले सुल्तान के सामने हाज़िर हो चुका है।"

शाह कुल्ली को पकड़ लिया गया और वह बक गया कि वह शाह आलम के हुक्म से जाता रहा है। कुल्ली ने यह भी बताया कि बातचीत की दिशा यह है कि बीजापुर की राजधानी खाली कर दी जाये और शाह सिकन्दर बीजापुर के किसी दूसरे क्षेत्र में जाकर अपनी शेष जंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़े।

इसे शाह ग्रालम की गद्दारी समझी गयी। मगर शाह ग्रालम ने शाह कुल्ली से ग्रपने किसी प्रकार के सम्बन्ध से इन्कार कर दिया।

शहंशाह ने हिदायत की सम्मति जानने का यत्न किया। शहंशाह जानता था कि हिदायत शाह ग्राज़म का मित्र है। ग्रत: वह शाह ग्रालम के विरुद्ध सम्मति देगा, परन्तु हिदायतउल्ला ने सतर्क उत्तर दिया, "जहाँपनाह! एक शराबी ग्रदना सिपाही के कहने से एक शाही खानदान के रुक्न का ज़्यादा यक़ीन होना चाहिये।"

शाह ग्रालम बच गया। शहंशाह की इच्छा तो यह मालूम होती थी कि शाह ग्रालम को खानखाना बनाकर महलों की देख-रेख के लिये वापस ग्रागरा भेज दिया जाये, परन्तु जबसे हिदायत शहंशाह का सलाहकार नियुक्त हुग्रा था तो वह ग्रपनी नेक ग्रौर ठीक सम्मति का प्रमाण ग्रनेकों वार दे चुका था। यद्यपि शहंशाह को यह सम्मति पसन्द नहीं थी, परन्तु युद्ध-काल की नीति के विचार से चुप रहा।

शाह ग्रालम को विदित था कि हिदायतउल्ला ने उसको विश्वसनीय ग्रौर ईमानदार ज़ाहिर किया है। वह इस समय शहंशाह की नाक का बाल बना हुग्रा था। शाह ग्रालम ने ग्रपने एक सालार खान रकीउल्ला के हाथ शुक्रिया तौर पर कहला भेजा ग्रौर कहा कि मौके पर मैं इस बात को स्मरण रखूंगा।

विजयोत्सव के दिनों में ही शाह सिकन्दर के साथ व्यवहार में ग्रन्तर पड़ गया। सिकन्दर चाहता था कि कृष्णा नदी के पार का क्षेत्र उसे सूबेदारी के रूप में दे दिया जाये। इस इच्छा में शाह ग्राज़म ग्रौर उसकी बेगम शहरयार सम्मिलित थे। जब वार-वार इस विषय में शहंशाह से कहा जाने लगा तो एक दिन शहंशाह ने ग्रपने खास दीवानखाने में शाह ग्राजम, शहरयार बेगम, शाह ग्रालम ग्रौर हिदायतउल्ला को बुलाकर सिकन्दर के विषय में बात करनी उचित समझी।

शहरयार का तो केवल यह ही कहना था, "जब मैं फाका-कशी से मरने जा रही थी ग्रौर ग्रापके साहबज़ादे मेरा साथ दे रहे थे तो ग्रापने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायदा किया था कि सिकन्दर को सूबेदार बना उससे उसकी हैसीयत के मुताबिक काम लेंगे।"

"हाँ। हमें याद है।" शहंशाह ने कहा, "मगर मैंने कब कहा था कि कृष्णा नदी के पार का ज़रखेज़ इलाका दूँगा। मैं सोच रहा हूँ कि सिकन्दर के लिये कौनसा इलाका ठीक रहेगा। मेरे मन में यह भी है कि यह नौजवान है और इसने अपनी तालीम और काबलीयत का इम्तिहान भी दिया है। इसलिये मैं इसे कन्धार भेज दूँ तो कैसा रहे?"

"मगर वहाँ तो बगावत हो चुकी है और वे लोग अपनी आज़ादी के लिये लड़ने-मरने को तैयार हैं।" शहरयार का कहना था।

"और उन वैशी लोगों को सबक सिखाकर सिकन्दर अपनी वफ़ादारी का सबूत देगा।"

शाह आलम यह नहीं चाहता था कि बीजापुर राज्य मुगलिया सल्तनत में मिला लिया जाये। इस पर भी वह इस क्षेत्र को सिकन्दर के अधीन रखना नहीं चाहता था। उसने अपनी योजना बता दी। उसने कहा—

"मेरी योजना यह है कि बीजापुर और गोलकुण्डा मिलाकर एक बड़ा राज्य बना दिया जाये और यहाँ का हाकिम भाई जान आज़म को बना दिया जाये। यह मराठा सरदार शम्भुजी पर ज़बरदस्त दबाव रख सकेंगे।"

"और आगरा की हुकूमत?" शाह आज़म ने पूछ लिया।

"शहंशाह अभी ज़िन्दा हैं और इनकी सेहत देखकर अभी बीस साल तक आगरा के मुतल्लिक सोचने की ज़रूरत नहीं। तब तक हालात के मुताबिक आगरा के तख्त पर बैठने वाले का चुनाव हो जायेगा।"

आज़म ने कह दिया, "मैं शहंशाह के हुक्म को मानने के लिये तैयार हूँ। मगर मैं सोचता हूँ कि मैं शहंशाह का बड़ा लड़का होने की वजह से आगरा में शहंशाह की ज़्यादा मदद कर सकूँगा। आलम अगर चाहे तो उसे दक्खिन की सूबेदारी दी जा सकती है। मगर इसके लिये पहले गोलकुण्डा को फतह करना होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार दोनों भाइयों में अपने विषय में विवाद आरम्भ हो गया और सिकन्दर की बात को एक ओर कर दिया गया। अब शाह आज़म और शाह आलम के आपस के झगड़े में हिदायत की सम्मति माँगी गयी।

हिदायत ने कहा, "हुज़ूर! मैं तो समझा था कि आज के इकट्ठे होने का यह मकसद नहीं। सुल्तान के साथ शहंशाह के सलूक से यह ज़ाहिर हुआ था और उसे देखकर आम खलकत यह उम्मीद लगाये हुए है कि शहंशाह अपने दस्ते-करम से सिकन्दर को किसी बारसूख और बा-इज़्ज़त ओहदे पर मुकर्रिर कर देंगे।

"मेरी इल्तजा है कि इसका फैसला अगर आज हो जाये तो ठीक है। रही बात दोनों भाइयों की। मेरी अदना राय यह है कि इस मसलहा पर गोलकुण्डा फतह होने के बाद गौर किया जाये। अगर हुज़ूर, शाह आलम चाहें तो गोलकुण्डा की मुहिम का कार-भार उन पर डाल दिया जाये और जब वह उसे फतह कर वहाँ के बागी वज़ीरों को लाकर शहंशाह के कदमों में नहीं रख देते तब तक इस मामले में गौर करना बे-सूद है, कि यहाँ का हाकिम कौन हो और यहाँ का सूबा कितना बड़ा है?"

इस पर शहंशाह ने अपना फैसला सुना दिया। शहंशाह का कहना था, "सिकन्दर से हमारा प्यार बढ़ रहा है और हम उसे अपने साथ रखेंगे। अगर खुदा को मन्ज़ूर हुआ कि हम दक्खिन फतह कर वापस आगरा में गये तो हम सिकन्दर को किसी शमाली इलाके का सूबेदार बना अपने नज़दीक ही रखना चाहेंगे। कन्धार नहीं तो कश्मीर तो है ही। और फिर सरहिन्द है, मुल्तान है। हम इसे अपने पास उस तरफ ही रखेंगे।

"इसमें सिकन्दर को भी फायदा होगा। इसकी मुहब्बत दक्खिन से कम होगी और यह ज़रा दक्खिन से बाहर की सैर भी कर सकेगा।

"रही बात आज़म और आलम की। मैं आज़म को हैदराबाद पर कब्ज़ा कर गोलकुण्डा पर चढ़ाई करने का हुक्म देता हूँ और आलम को मगरब से गोलकुण्डा पर हमला करने के लिये कहता हूँ। इन दोनों में से जो पहले गोलकुण्डा में काफिरों और उनके मददगारों को मगलूब कर हमारे सामने हाज़िर करेगा, उसका हक हम दक्खिन की रियासत पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़्यादा समझेंगे ।"

इस हुक्म के उपरान्त और कुछ कहने को नहीं रहा । इस फैसले से वहाँ पर बैठा कोई भी प्रसन्न नहीं था । शाह आलम खुद शहंशाह के साथ रहना चाहता था और चाहता था कि दक्खिन की मुहिम शाह आज़म पर छोड़ शहंशाह आगरा लौट चलें । उसने इसीलिये दक्खिन की सूबेदारी शाह आज़म के लिए माँगी थी । जब शाह आज़म दक्खिन का सूबेदार बने तो शाह आलम को शहंशाह अपने साथ आगरा ले जाये । वह चाहता था कि शाह आज़म को शम्भुजी से निपटने के लिये छोड़ दिया जाये और वह स्वयं उत्तर में जाकर रहे ।

हरिहर के असन्तोष का कारण यह था कि वह अपनी माँ को आगरा से बाहर करने के लिये शाही दरबार में पड़ा था और उसकी बात हो नहीं रही थी ।

विचार-गोष्ठी समाप्त हो गयी थी और सब उठ पड़े । शहंशाह अपने सोने के कमरे में जाने लगा तो एकाएक घूमकर हिदायत से पूछने लगा, "हमारी हुकूमत की नीति को पसन्द करते हो न ?"

"हुज़ूर !" हिदायत ने कहा, "मैं आपका यह हुक्म लेकर आगरा जाना चाहता हूँ कि मेरी माँ को किले से बाहर जाने की इजाज़त है ।"

"इसके मुतल्लिक हम तुमसे कुछ दिन बाद में बात करेंगे ।"

: ४ :

हरिहर देख रहा था कि उसके शहंशाह के पास टिके रहने के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो रही । न तो वह शाह आज़म को शहंशाह के विरुद्ध कर सका था और न ही बीजापुर-गोलकुण्डा के समर में किसी प्रकार की बाधा खड़ी कर सका था । बीजापुर विजय हो चुका था । शाह सिकन्दर व्यावहारिक रूप में शाही कैदी की भाँति रखा जा रहा था और उसको किसी प्रकार के काम पर लगाना तो दूर रहा, उसका विश्वास ही नहीं किया जाता था ।

हरिहर का एक स्वार्थ भी था । वह अपनी माँ को अपने पास रखना चाहता था । उसमें भी किसी प्रकार की सफलता होती दिखायी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देती थी।

वह इस बात की सदा टोह में रहता था कि किसी प्रकार बाप और दोनों बेटों में खटपट हो जाये। वह होती दिखायी नहीं दे रही थी। इस पर भी वह सतर्क था।

बीजापुर विजय हो चुका था। गोलकुण्डा पर दो ओर से चढ़ाई कर दी गयी थी। शाह आज़म हैदराबाद की ओर से बढ़ने लगा था और शाह आलम नर्मदा की ओर से। शहंशाह अब औरंगाबाद में आकर टिक गया था।

शाह आलम की तीन तो विवाहित पत्नियाँ थीं और कुछ अविवाहित भी थीं। वह सब-की-सब शहंशाह के डेरे के साथ रखी हुई थीं। उनमें से केवल एक बेगम नूरुन्निसा शहज़ादा आलम के साथ समर पर थी।

नूरुन्निसा बीजापुर के एक रईस की लड़की थी और अच्छी रोचक कविता करती थी। वह मराठी, संस्कृत और फारसी भाषाओं को जानती थी और इन सब गुणों के कारण शाह आलम को बहुत पसन्द थी। वह उसे सदा अपने साथ रखता था।

नूरुन्निसा की एक बाँदी से हिदायत का सम्पर्क हुआ तो उसे कुछ दाल में काला दिखायी देने लगा। उसने जब इस बाँदी के जज़बात को उभारना आरम्भ किया तो उसकी रुचिकर बातों का पता चलने लगा। वह सुन्नी थी और नूरुन्निसा शिया।

एक दिन हिदायत शहंशाह की बैठक में उपस्थित हो कहने लगा, "अब्बाजान ! एक खास अर्ज़ करने आया हूँ।"

"हाँ, बताओ। अब तुम क्या चाहते हो ?"

"हुज़ूर ! कुछ आपके खानदान की बात है।"

"कुछ बताओगे भी तो।"

"एक निहायत ही खौफनाक साजिश का पता चला है।"

शहंशाह जो किसी दरोगा इत्यादि की शिकायत की जाने की आशा कर रहा था, साजिश का नाम सुन भौंचक्का हो पूछने लगा, "किसके खिलाफ साजिश है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब्बाजान के खिलाफ। आपके छोटे शहज़ादे इसमें शामिल मालूम होते हैं।"

"हाँ। उसके मुतल्लिक पहले भी तो एक खबर मिली थी। हमें तो उसका यकीन था, मगर जब तुमने ही कहा था कि एक शराबी-कबाबी अदना सिपाही की बात को शाही खानदान के एक रुक्न के कहने से ज़्यादा वुकुत नहीं देनी चाहिये। हमने कुछ यह समझा था कि तुम उस साजिश को किसी मसलहत से छिपा रहने के लिये कह रहे थे।"

"अब्बाजान! मुझे याद है। मगर इस बार बात दूसरी है। इस बार तो लिखे हुए सबूत मिल रहे हैं। बात कुछ वैसी है, मगर है उससे ज़्यादा संगीन।"

इतना कह हिदायत ने एक कागजों का पुलिन्दा अपनी अचकन के अन्दर की जेब से निकाल कर शहंशाह के सामने रख दिया। शहंशाह ने कागज़ उठा पढ़ने आरम्भ कर दिये। ज्यों-ज्यों वह पढ़ता जाता था तो उसके मुख का रंग पीला पड़ता जाता था। उसका हाथ काँपने लगा था।

जब शहंशाह पढ़ चुका तो हिदायत ने एक कागज़ और जेब से निकाला और सामने रख दिया। यह मराठी में लिखा था। शहंशाह ने हिदायत को ही पढ़कर मतलब समझाने के लिये कहा। हिदायत ने कहा, "हुज़ूर! यह बीजापुर के एक पण्डित शम्भुदत्त की अब्बुलहसन के नाम चिट्ठी है। शम्भुदत्त वही है जिसका इन चिट्ठियों में जिक्र आया हैं। यह लिख रहा है—

'बरखुरदार अब्बुलहसन! अब सब तैयार है। शहज़ादा दूर तक जाने के लिये तैयार हो गया है। इसलिये यह तय हुआ है कि 'सफर' की बीस तारीख को अलख सुबह गोलकुण्डा के पाँस सौ मौतबिर सिपाही, मुगलों के लिबास में यहाँ आ जाने चाहियें और चुपचाप शहज़ादा आज़म को पकड़कर ले जायें और मुमकिन हो तो कहीं ले जाकर काम तमाम कर दें। उस वक्त शाह आलम अपनी फौज़ के साथ गोलकुण्डा में पहुँचेगा। वहाँ के सुल्तान को पकड़कर खतम कर देंगे। वह अपने को तो शहंशाहे हिन्द होने का ऐलान करेगा और तुमको दक्खिन का सूबेदार। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय तीनों फौजें अपनी, शहज़ादा आज़म की और गोलकुण्डा की; इनको लेकर औरंगाबाद पर चढ़ाई कर देंगे। शहंशाह को दौलताबाद के किले में बन्द कर शाह आलम आगरा को चल देंगे और फिर दक्खिन में तुम और मराठे आपस में निपट लेंगे।

'शहंशाह इस वक्त बहुत ही कम सिपाहियों के साथ हैं और वहाँ सब तरह से शान्ति रखने के लिये शाह आलम की दूसरी बेगमें हमारी मदद पर हैं।

'इस चिट्ठी का जवाब इस महीने में आ जाना चाहिये। आज 'मुहर्रम' की पच्चीस तारीख है। जवाब 'सफर' की पहली तारीख तक आ जाना चाहिये।

'बकाया इन्तज़ाम जवाब आने पर होगा।'

"हिदायत! यह सब जाली चिट्ठियाँ भी तो हो सकती हैं।"

"हुज़ूर! इसकी तसदीक हो सकती है।"

"कैसे ?"

"अगर आप अभी मेरे कमरे में चलें और मेरे पलंग के नीचे छुपकर लेट सकें तो मैं इस सब साज़िश का वह जरिया आपको दिखा सकता हूँ जहाँ से मुझे यह मालूम हुआ है।"

"और हमसे दगा तो नहीं करोगे ?"

"अब्बाजान! मेरी इसमें क्या दिलचस्पी हो सकती है कि आपको धोखा दूं? इस पर भी आप अपनी हिफाज़त का इन्तज़ाम कर सकते हैं। सिर्फ इतना खयाल रखें कि शोर न मचे। नहीं तो बताने वाला पक्षी उड़ भी सकता है।"

"मगर यह शम्भुदत्त कौन है ?"

"यह बेगम नूर का गुरु है और साथ ही अब्दुलहसन का भी पीर-मुर्शद है। यह एक पढ़ा-लिखा आलम और शायर है।"

"अच्छा, तुम अपने कमरे में चलो और मैं वहाँ पाँच मिनट में आता हूँ।"

हिदायत को अपने कमरे में गये अभी पाँच मिनट ही हुए थे कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहंशाह अकेला ही वहाँ आया और बोला, "सब तैयार है।"

हिदायत ने शहंशाह को अपने पलंग के नीचे लिटा दिया और आगे पर्दा कर दिया। वह स्वयं एक फर्शी जाजम पर बैठ गया। वह समझ रहा था कि उसके कमरे पर अवश्य पहरा बैठा दिया गया होगा और कहीं आने वाले जासूस को इस पहरे का पता चल गया तो वह आयेगा ही नहीं। इस पर भी वह मसनद पर बैठा प्रतीक्षा करता रहा।

दस मिनट से कुछ ही अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ी। एक बाँदी आयी और दरवाज़े के पर्दे को हटा झाँककर कमरे में देख और हिदायत को अकेले देख वहाँ आ धीरे-से बोली, "भाई जान ! आज क्या बात है ?"

"क्या बात है ?"

"शाही मुतास्सिवों की महल में भरमार हो रही है।"

"हाँ।" हिदायत ने मुस्कराते हुए कहा, "रहमत बहन ! शहंशाह को अपनी जान का डर लग गया मालूम होता है।"

"मगर वह डर यहाँ महल में है क्या ? वे यहाँ के बे-कसूर मुलाज़िमों को तंग करने लगे हैं।"

"सत्य ? किसको तंग किया है ?"

"आपकी बहन रहमत को। कुछ ऐसी बात कहकर छूट पाई हूँ जो एक बहन भाई के लिये कभी ख्वाब में भी खयाल नहीं कर सकती। और फिर वे मुझको बुरी नज़र से देखने लगे हैं।"

"तो देखने दो। किसी के बुरी या अच्छी नजर से देखने पर किसी का किसी किस्म से भी नुकसान नहीं हो सकता।"

"मगर नज़र के बाद अमल भी तो हो सकता है। अभी मुझे वापस लौटना भी है।"

"अब तुम्हें वापस लौटने की ज़रूरत नहीं रहेगी। वह चिट्ठियाँ अब वापस मिल नहीं सकतीं और उनके बिना भला वहाँ जाकर क्या करोगी ?"

"मैं समझी थी कि अभी साज़िश चलने दी जायेगी और अब मुलज़िमों को रँगे हाथ पकड़ा जायेगा। देखिये, भाई जान ! अगर साज़िश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वालों में एक भी बच गया तो हमेशा के लिये तलवार सिर पर लटकती रहेगी।"

"शहंशाह इस तरह से नहीं सोचते। उनके सोचने का तरीका यह है कि साँप के दाँत निकाल दिये जायें तो वह फिर खतरनाक नहीं रहता।"

"दाँत फिर भी उग सकते हैं।"

"यह राय भी शहंशाह को दे दी जायेगी। मगर इस वक्त तो गोलकुण्डा की फतह सबसे ज़रूरी है। उसमें किसी किस्म की दिक्कत पैदा नहीं होनी चाहिये।"

"मैं तो आपसे कागज़ ले बहुत सुबह यहाँ से रवाना हो जाने वाली थी। इस बार तो आने का मैं यह बहाना बनाकर आयी थी कि मैं अपनी अम्मी से मिलकर लौटूंगी।"

"देखो बहन! हम लोग शहंशाह की खिदमत इसलिये कर रहे हैं, क्योंकि हम दीनदार हैं और दीन की खातिर हम सब-कुछ करने के लिये तैयार हैं। मगर शाही तजवीज़ें तो शहंशाह की ही मर्ज़ी से चलती हैं। उन्होंने यही फैसला किया है कि इन साज़िश करने वालों को एक जगह पर जमा होने देना नहीं चाहिये।

"मैं समझता हूँ कि तुम्हारे शहज़ादा साहब के खेमे में पहुँचने से पहले वहाँ सिपहसालार कैद हो चुके होंगे। सालारे-जंग किसी किले में कैद हो सालारी कर रहे होंगे।"

"तो फिर मुझे क्या हुक्म है?"

"हुक्म नहीं बहन! भाई बहन को हुक्म नहीं दिया करते। मगर उनकी हिफाज़त किया करते हैं। चलो, मैं तुमको महल के बाहर तक छोड़ आता हूँ। तुम आज रात तो अपनी अम्मी के पास रहो। कल अलख सुबह ही मैं तुम्हारा इन्तज़ाम कर बहन बेगम शहरयार के पास भेज दूंगा।"

इस पर रहमत उठ खड़ी हुई और बोली, "भाई जान, चलिये! मुझे अब अकेले महल में से गुज़रते हुए डर लगता है।"

—१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिदायत ने खूँटी से अपनी तलवार उतारकर कमर से बाँध ली और फिर उसका खटका खोल दिया जिससे वह सुगमता तथा जल्दी से निकाल काम में लायी जा सके। वे दोनों कमरे से निकल गये। हिदायत ने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर बाहर से कुण्डा चढ़ा दिया।

पाँच मिनट में ही हिदायत लौट आया और अपने कमरे में प्रवेश करते ही उसने देखा कि शहंशाह कमरे के बीचों बीच नंगी तलवार हाथ में लिये खड़ा है।

"अब्बाजान ! क्या बात है ?"

"तुम बाहर से दरवाज़ा बन्द क्यों कर गये थे ?"

"अब्बाजान की जान की हिफाज़त के लिये।"

"तो इस महल में भी और दो सौ मुतास्सिबों के घेरे में भी तुम समझते हो कि कोई मुझ पर हाथ उठा सकता है ?"

"जब महल के रहने वालों में भी कुछ साज़िश में शामिल हों तो हर किस्म की एहतयात करनी लाज़मी हो जाती है।"

"और उस ख़तरनाक औरत को तुम कहाँ छोड़ आये हो ?"

"उसको उसकी माँ के पास छोड़ आया हूँ।"

"हम उसकी ज़िन्दगी तमाम कर देना चाहते हैं।"

"क्यों जहाँपनाह ! उसने क्या कसूर किया है ?"

"कसूर तो कुछ नहीं किया। सिर्फ, वह जरूरत से ज्यादा शाही खानदान की खसलहत को जान गयी है और इस किस्म की होशियार औरत का हम महल में आना-जाना पसन्द नहीं करते।"

"मगर वह तो हुज़ूर की हिफाज़त में लगी हुई है। आज पहले ही एक खुदा दोस्त दीन के मुहाफिज़ शहंशाह की हिफाजत में अपनी जान जोखम में डाले हुए है। यह तो एक वफादार मुलाज़िम की खिदमात से अपने को बरतरफ करना है।"

"नहीं, हिदायत ! तुम नहीं जानते। हुकूमत इस तरह नहीं चल सकती।"

"हिदायत समझ रहा था कि शहंशाह के मस्तिष्क में कुछ खराबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदा हो रही है। मगर क्या वह खराबी आरम्भ से ही नहीं चली आ रही? इस प्रकार सोचता हुआ शहंशाह को कमरे से बाहर दीवानखाने तक छोड़ने चला गया।

: ५ :

अगले दिन प्रातःकाल रहमत बाँदी को शहज़ादा आज़म की बेगम शहरयार की सेवा में भेजने के लिए अपने कमरे से हरिहर निकला तो उसको ज्ञात हुआ कि उसके कमरे के बाहर भी संदिग्ध रूप-रंग के लोग चक्कर काट रहे हैं। यह पहले कभी नहीं हुआ था। हरिहर का स्वभाव था कि वह महल में और महल के बाहर भी जाते समय तलवार बाँध कर ही निकला करता था। वह केवल शहंशाह की अर्दली में उपस्थित होते समय ही अपनी तलवार कमर से उतारता था।

आज भी उसकी तलवार उसकी कमर से लटक रही थी। महल से बाहर रहमत को भेजने का प्रबन्ध करने वह जा रहा था। उसने एक व्यक्ति को अपनी ओर ध्यान से देखते हुए कमरे के बाहर खड़े पाया तो अकस्मात् उसका हाथ तलवार के मुट्ठे पर चला गया।

इस पर वहाँ खड़े व्यक्ति ने सलाम कर आगे बढ़ कर कह दिया, "हुज़ूर! हम आपके लिये यहाँ तैनात नहीं हैं।"

"तो किसके लिये तैनात हैं?"

"वह औरत जो रात यहाँ आयी थी।"

"वह तो रात ही चली गयी थी।"

"वह अपनी माँ के पास नहीं है।"

"तो उसकी माँ ने उसको कहीं भेज दिया होगा।"

इस पर वह व्यक्ति चुप रहा और हिदायत महल से निकल गया। वह मन से प्रसन्न था। वह अपनी सूझ-बूझ पर विस्मय कर रहा था। उसे रात ही यह सूझी थी कि रहमत को माँ के घर छोड़ने जाने के स्थान किसी अन्य के घर में रखना चाहिये। उसने उसे महल के बाहर नगर के एक दुकानदार के घर में ठहरा दिया था। वह स्वयं उसी दुकानदार के द्वारा सूरत से अपने खर्च के लिये धन मँगवाया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह महल से निकल सीधा उस दुकानदार के घर पर पहुँचा और उसने रहमत के लिये महल में खतरे की बात बता कर तुरन्त औरंगाबाद से बाहर भेजने का प्रवन्ध कर दिया। रहमत तो आगरा लौट जाना चाहती थी, परन्तु वहाँ जाने का प्रबन्ध अभी था नहीं। दुकानदार ने उसे सूरत भेजने का प्रबन्ध कर दिया।

जब हिदायत अपने कमरे पर लौट उसका ताला खोलने लगा तो रहमत की माँ वहाँ खड़ी मिली। हिदायत ने पूछ लिया, "मौसी ! रहमत को ढूंढ रही हो।"

"हाँ बेटा ! वह रात भी घर पर नहीं आयी।"

"ऐसा मालूम होता है कि शहंशाह ने उसे कहीं काम पर भेज दिया है।"

"मेरा मन डर रहा है।"

"जहाँ तक मुझे इल्म है कि डरने की कोई बात नहीं।"

रहमत की माँ परेशानी से चंचल हो लौट गयी। हिदायत अपने कमरे में रहा। आज दिन-भर न तो शहंशाह ने उसे बुलाया और न ही शहंशाह दीवानखाने में आये। हिदायत मध्याह्न के समय नगर में गया और रहमत के सही-सलामत सूरत भेजे जाने की खबर से सन्तुष्ट अपने कमरे में लौट आया। अगले दिन और उससे भी अगले दिन महल में स्थिति सामान्य नहीं हुई। चौथे दिन रहमत की माँ उसे ढूँढती हुई आयी और हिदायत के कमरे में उससे मिली। उसने बताया, "बेगम साहिबा ने बुलाया है।"

"किस बेगम ने ?" हिदायत ने पूछा।

"शहंशाह की नयी बेगम औरंगाबादी ने।"

"क्या चाहती हैं ?"

"शहंशाह वहाँ दो दिन से पड़े हैं और पागलों की भाँति सलूक कर रहे हैं।"

"तो हकीम साहब को बुलाने के लिये कहा है ?"

"नहीं बेटा ! वह तो तुमको आने के लिये कह रही हैं।"

हिदायत उठा और शहंशाह के हरम वाली बैठक में जा पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिदायत को द्वार पर खड़ा कर रहमत की माँ भीतर इत्तला करने चली गयी।

इस समय औरंगज़ेब की अवस्था अति शोचनीय थी। औरंगज़ेब अपने कपड़े फाड़ रहा था। बाल नोच रहा था और बार-बार माथा पीट रहा था।

उसकी बेगम औरंगाबादी महल में उसके पास बैठी उसको ढाढस बँधा रही थी। हिदायतउल्ला के आने की भीतर इत्तला भेजी तो शहंशाह ने उसे आने की इजाजत दे दी और बेगम को कहा कि पर्दा कर लो।

बेगम ने कहा, "हज़रत! पर्दा करने की ज़रूरत तो आपको है। आप बिल्कुल नंगे हो रहे हैं।"

"क्या मतलब ?" औरंगज़ेब ने बेगम के व्यंग को न समझते हुए पूछा।

"हुज़ूर! आप अपनी इस बेबसी और बेकसी की हालत ज़ाहिर कर अपने शहंशाही रोब-दाब और इज्जत-आबरू को उतारकर अपनी असलीयत को ज़ाहिर कर रहे हैं।"

औरंगज़ेब अभी इस बात को समझ ही रहा था कि हिदायत कमरे के भीतर आ गया और शहंशाह की हालत को देख कमरे के द्वार के समीप ही खड़ा रह गया।

"आओ हिदायत! आ जाओ।" शहंशाह ने कहा।

हिदायत ने सलाम की और बेगम ने अपना बुर्का नीचे कर मुख ढाँप लिया। शहंशाह की अवस्था सर्वथा पागलों की-सी दिखायी दे रही थी। इस कारण हरिहर ने पूछ लिया, "जहाँपनाह! यह क्या हालत बनायी है ?"

"मैं नहीं समझता हूँ कि मुझे क्या हो गया है ? मैं अपनी समझ में तो ठीक ही अमल इख्तियार करता हूँ और उसका नतीजा भी हसब मन्शा ही होता है, मगर मैं उस नतीजे से जो तवक्को रखता हूँ, वह हासिल नहीं होती।"

"जहाँपनाह! यह तो सबके साथ अकसर होता है। हम सब सुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की खोज में भटक रहे हैं, मगर सुख की जगह अकसर दुःख ही मिलता है। इस पर एक अक्लमन्द आदमी को सब्र और इस्तकबाल से काम लेना चाहिये।"

इस पर बेगम ने कह दिया, "देखिये हिदायत मियाँ! शहंशाह आज सुबह से अपनी लड़की ज़ेबुन्निसा, अपने बड़े लड़के शाह महमूद और अपने लड़के शाह आलम को याद करते हुए पागलों की तरह अपने कपड़े फाड़ रहे हैं, अपने बाल नोच रहे हैं और दोनों हाथों से माथा पीट रहे हैं।"

हिदायत ने बेगम की बात का उत्तर न देते हुए कहा, "हुज़ूर! खुदा रहीम करीम और इन्साफ करने वाला है। अगर आप इस बात को मानते हैं तो फिर गिला करने की वजह नहीं है। हमें जब कोई ऐसी बात मिलती है जिसकी न हमने कभी ख्वाहिश की है और न उसके लिये कोशिश तो यह समझ कर सब्र करना चाहिये कि कुछ भूल हमसे ज़रूर हुई है जिसका नतीजा यह मिल रहा है।"

"मगर मैं समझता हूँ कि मैंने कोई बात भी खुदा के हुक्म के बिना नहीं की। इस पर भी अगर मुझे आज़ाब और नुकसान पहुँचता है तो मेरा ईमान ही खुदा से उठने लगा है। ऐसा मालूम होता है कि खुदा ने भी अपना मज़हब बदल लिया है।"

"पर हुज़ूर! क्या यह मुमकिन नहीं कि आपने खुदा के हुक्म को ही गलत समझा हो। वह कह रहा हो कि आप मशरिक को चलें और आप मशरिक को मगरिब समझ बैठे हों।"

"मगर यह कैसे हो सकता है? मैं अरबी ज़बान बहुत अच्छी तरह समझ सकता हूँ। उसमें लिखी बातों को मैंने गौर से पढ़ा है और उन पर अमल किया है।"

"कम-से-कम एक बात में तो मैं ज़ाती तौर पर जानता हूँ कि आपने खुदा के हुक्म को गलत समझा है।"

"किस बात में?"

"मेरी माँ के मामले में। उसने भला कौनसा जुर्म किया है कि आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अपने लड़के के पास जाने की इजाज़त नहीं देते ?"

"तो तुम भी मुझे मुजरिम साबित करने आये हो ?"

"हुज़ूर, नहीं। आपको राहे-रास्त पर लाने के लिये आया हूँ। यह बात सब लोग कहते हैं कि जब किसी काम से नुक़सान होने लगता है तो लोग उसको करना छोड़ देते हैं।"

"मगर मुझे मालूम है कि खुदा मुझसे इसलिये नाराज़ नहीं है कि मैंने महताब बेगम को महल में सब किस्म के सुख और आराम की ज़िन्दगी बख्शी हुई है। वरना उसे तो अब तक ज़हर देकर खत्म कर दिया होता।"

हिदायत समझ रहा था कि यह शख्स अपनी विचार-शक्ति खो चुका है। इसके सब काम ही अस्वाभाविक और अयुक्तिसंगत हो रहे हैं और इसको उनके उलटे परिणाम निकलने पर भी समझ नहीं आ रहा कि यह गलत राह पर जा रहा है।

इस पर भी हिदायत ने पूछ लिया, "जहाँपनाह ! भला अम्मी ने कौनसा ऐसा गुनाह किया है कि उसे उम्र-भर की कैद की सज़ा दे रखी है ?"

"सबसे बड़ा गुनाह उसने यह किया है कि खुदा की दी हुई खूबसूरती को तबाह कर दिया है और अब एक आलीशान इमारत के खण्डहर की तरह उन सबके मन में दुःख और दर्द पैदा कर रही है जिन्होंने उस खूब-सूरत इमारत को देखा था और उसमें रहने की हवस रखी थी।"

"इस हालत में तो हुज़ूर, उस खण्डहर को गिराकर दर-ज़मीन कर दिया जाता और उस पर कोई नयी इमारत खड़ी कर दी जाती।"

"इमारतें तो बहुत खड़ी की हैं। मगर वैसी आलीशान बन नहीं सकीं।"

"तो हुज़ूर ! अपनी न-काबलीयत को मंज़ूर फरमा कर अपने तर्ज़े-अमल को बदल दिया जाये।"

"हाँ, बताओ कि क्या करने को कहते हो ?"

"हुज़ूर ! करने को तो बहुत कुछ है। अगर एक बार हिम्मत का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम शुरू कर दें तो मैं समझता हूँ कि खुदा के घर में जाने तक आप सब गलतियों को ठीक कर चुके होंगे।"

"वह बात बताओ और फालतू तकरीर को छोड़ो।"

"अब्बाजान! शाह अकबर को एक चिट्ठी लिख वापस बुला लीजिये।"

"किसलिये ?"

"उससे सुलह करने के लिये।"

"अच्छा और बताओ ?"

"शाह आलम की रिहाई का हुक्म सादर किया जाये।

"और शाह आज़म को हिन्दुस्तान का शहंशाह बनाने का ऐलान कर उसकी ताजपोशी की रस्म अदा कर दें।"

"और मैं क्या करूँ ?"

"आप मक्का शरीफ को हज़ के लिये तशरीफ ले जायें। वहीं खुदा के नाम की तस्बीह करते हुए बकाया ज़िन्दगी गुज़ार दें।"

बरबस औरंगज़ेब हँस पड़ा और हँसते हुए बोला, "तो तुम मुझे अपने किये पर पानी फेरने की राय दे रहे हो ?

"देखो, मैं तुम्हें आज से अपनी नौकरी से बरखास्त करता हूँ।"

"अब्बाजान ! बहुत-बहुत शुक्रिया है। अब इजाज़त हो तो जाऊँ ?"

"निकल जाओ यहाँ से।"

हिदायत उठा और बिना एक भी शब्द और कहे वहाँ से बाहर निकल जाने के लिये कमरे के दरवाज़े की ओर चल पड़ा, मगर बेगम ने उसे जाने से रोकने के लिये कहा, "हिदायत ! ठहरो। देखो मैं इल्तज़ा करती हूँ कि लौट आओ। यह अपने आपे में नहीं हैं।"

: ६ :

हिदायत भी समझ गया कि इस पागल व्यक्ति को समझा-बुझाकर अपना काम निकालना चाहिये। यदि इसकी समझ में यह आ जाये कि हरिहर से इसका किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध होता है तो यह उसकी बात मान लेगा।

अतः वह लौट आया और शहंशाह के पास बैठ बोला, "अब्बाजान !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने कोई ऐसी बात नहीं कही जिसके लिये आपका मुझसे नाराज़ होना वाजिब है। सबसे बड़ी बात यह है कि मैं तो एक राय देने वाला मशीर हूँ। मैं आपके तरज़े-अमल के खिलाफ न कुछ करता हूँ और न आपके अमल को बदलने पर किसी तरह से नाराज़ होता हूँ।

"देखिये जहाँपनाह ! मैं अपने लिये न तो कोई सूबेदारी माँग रहा हूँ और न ही कोई जागीर-जायदाद। आपने अभी तक तो मेरे पिछले तीन साल की तनख्वाह भी नहीं दी। सिर्फ रोटी, कपड़ा पर ही बसर करता रहा हूँ।

"इस पर भी आप मुझसे नाराज़ होते हैं तो क्यों ? देखिये, मैंने आपको कहा है कि अकबर को एक चिट्ठी लिख दें। अगर वह लौट आये तो आप उसे माफ कर देंगे।"

"भला इसमें मुझे क्या फायदा होगा ? अकबर से तो मेरी कभी भी बनी नहीं। इस तरह मुझे शाह आज़म साहब से क्या लेना है ? मैं तो आपकी बहबूदी की बात ही सोचा करता हूँ।

"कुछ आपका प्यार बचपन में मिला था। उसका ही असर है कि आपके साथ उन्स हो गयी है और उसके बदले में आपकी भलाई सोचा करता हूँ।

"इस पर भी जब आप मेरी बात नहीं मानते तो मैं कभी नाराज़ नहीं हुआ। आप शहंशाह हैं। आपकी खिदमत करना मेरा फर्ज है। उस खिदमत को कबूल करना या नामन्जूर करना आपका काम है।"

"मैं भी यही सोच रहा हूँ कि तुमने मुझे हज को जाने के लिये क्यों कहा है ? तुमको इससे क्या हासिल होने वाला है ?"

"मैं कुछ भी दुनियावी फायदे की बात नहीं सोच रहा। मैं खुदाबन्द ताला से आपकी रूह के लिये ही हमेशा दुआ किया करता हूँ।"

"तो अब तुम अपनी माँ के लिये कभी नहीं कहोगे ?"

"यह तो आपसे जानने की कोशिश करूँगा ही कि आपको उसे उसकी मर्ज़ी के बिना आगरा के किले में बन्द कर रखने से क्या मिल रहा है ?"

"और तुमको उसे अपने पास रखकर क्या हासिल होने वाला है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हुज़ूर ! हज़रत बानी-उल-इस्लाम की यह हिदायत है कि अपने बुजुर्गों की खिदमत करने से बहिस्त हासिल होता है।"

"तो तुमको वहाँ उसके पास भेजा जा सकता है। दिन-रात उसकी खिदमत करते रहना।"

"मगर हुज़ूर ! वह वहाँ रहना नहीं चाहतीं। मैं तो उसकी बात कह रहा हूँ।"

"कोई भी औरत अपने ससुराल में रहना नहीं चाहती। अगर तो खाविन्द जिन्दा हो तो वह उसे भी लेकर अपने मायके जाने की कोशिश करती रहती है और खाविन्द फौत हो जाने के बाद तो ससुराल वालों को छोड़ चल देती है। मगर बरखुरदार, यह दुनियादारी है कि औरत के इस गैर-कुदरती रवैये को ज़बरदस्ती रोका जाये।

"इसीलिये आला हज़रत ने यह आयत नाज़िल की थी कि बड़े भाई के फौत होने पर उसकी बीवी छोटे भाई की बीवी बन जाये।"

"पर जहाँपनाह ! मैं तो आपकी ही अर्दली में हूँ। अगर माँ मेरे पास रहती है तो वह शहंशाह के परिवार में ही रह रही समझनी चाहिये।"

"बस तुममें यही नुक्स है कि तुम ऐसी दलील करते हो कि उसका जवाब नहीं बन पाता। यही नुक्स तुम्हारे मामा में था।"

"मगर इस हालत में जवाब तो बन पा रहा है।"

"क्या जवाब बन पा रहा है ?"

"यही कि निकल जाओ यहाँ से।"

औरंगज़ेब हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "हाँ, जब बड़े लोग लाजबाब हो जाते हैं तो फिर यही हुक्म दिया करते हैं।"

"और अब्बाजान ! मैं हुक्म का बँधा हुआ कमरे से निकल चला था।"

"अच्छा देखो। मैंने एक चिट्ठी अकबर को लिखी है।" शहंशाह ने बात बदल दी।

"सच ? तब तो अब्बाजान आपने मेरी दिली ख्वाहिश पहले ही जान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली मालूम होती है।"

"हाँ। जब मैंने देखा कि वह बेवकूफ छोकरा अब सब तरफ से कोशिश कर हार गया है और आगरा का शाही तख्त उसके नसीब में नहीं तो मैंने मरियम मुगलानी के लड़के सैयद मुहम्मद के हाथ उसे एक माफीनामा लिखकर भेज दिया था और लिखा था कि उसे अब एक अच्छे फरज़न्द की तरह लौट आना चाहिये। मगर सैयद मुहम्मद के चक्कन में पहुँचने के पहले ही वह वहाँ से जा चुका था और अब सुना है कि वह एक अंग्रेज़ी जहाज़ में सवार हो ईरान चला गया है।

"इससे पहले बेगम ज़ीनतउन्निसा ने भी उसे एक चिट्ठी लिखी थी। तब आज़म ने उसे जावार के मुकाम पर शिकस्त दी थी। खयाल था कि वह कुछ तो सबक सीख गया होगा। मगर ज़ीनतउन्निसा की चिट्ठी के जवाब में उसने मुझे जली-कटी सुनायी थी। बताओ, अब मैं क्या करूँ ?"

"हुज़ूर ! जब मैं आपको अजमेर में मिला था और आपने ऐन इनायत कर मुझे वापस सूरत जाने के लिये एक हज़ार रुपया दिया था, उसके बाद ही मैं दुर्गादास से मिला था। उसने बताया था कि अकबर के बागी होने से पहले ही आपने यह फतवा पास कर रखा था कि अगर अकबर राजपूतों द्वारा न मारा गया तो उसे आप ग्वालियर के किले में कैद कर उसी रास्ते भेज देंगे जिस पर आपने अपने भाई मुराद को भेजा था।"

"पर मैंने मुराद को मारा नहीं। उसे पहले ही यह ऐब लग चुका था कि वह पोस्त का पानी पिया करता था।" शहंशाह ने पीत मुख हो अपनी सफाई दे दी।

"जहाँपनाह ! मैं तो उस वक्त बहुत ही छोटी उम्र का था। इसलिये कुछ कह नहीं सकता कि क्या हुआ है ? मगर दुर्गादास ने मुझे यह बात बतायी थी। इसीलिये अकबर आप पर यकीन नहीं करता था।"

"मैं तो उसे माफ कर चुका था। लेकिन उसने एक बहुत बड़ा जुर्म किया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या ?"

"तुम्हारी अम्मी के ज़ेरे-असर वह बुत-परस्ती करने लगा था। वह हिन्दुओं के एक काले रंग के देवता कृष्ण का बुत अपने पास रखता था और उसकी परस्तिश किया करता था।

"इसी वजह से हमने एक दिन यह कहा था कि अकबर ने बहुत बड़ा जुर्म किया है और उसे कैद कर देना होगा।"

"मगर अब्बाजान ! यह तो सिर्फ धमकी ही थी न ?"

"उस वक्त तो धमकी नहीं थी। मगर अब जब हम उसे माफ कर चुके हैं तो उसकी बदकिस्मती यह रही कि हमारी चिट्ठी पहुँचने से पहले ही वह ईरान के लिये रवाना हो गया है।"

हरिहर समझ रहा था कि उस दिन का नाटक, कपड़े फाड़ने, बाल नोचने तथा माथा पीटने का भी किसी को धोखा देने के लिये किया होगा। उसे यह मालूम हो गया कि सैयद महमूद जो अकबर के लिये शाही पत्र लेकर गया था, वह हकीकत में अकबर से मिला था और अकबर का यह सन्देश लाया था कि अपने बाप, भाइयों और बड़े लड़के के साथ सलूक को देखकर कौन बेवकूफ उसका ऐतबार कर सकता है ?

मगर इस अति स्वार्थी और अपने पूर्व-ग्रहों से दबे हुए शख्स से मगजपच्ची करने की अपेक्षा चुप रहना ही ठीक समझ उसने यह कह शहंशाह से छुट्टी ली, "हुजूर ! मुझे अपने बाल-बच्चों को देखे हुए चार साल से ऊपर हो चुके हैं और मैं चाहता हूँ कि कुछ माह की छुट्टी दी जाये तो ज़रा उनसे मिल आऊँ।"

"हाँ। हम भी यही ठीक समझते हैं। हमें हैरानी तो इस बात की है कि तुम लोग किस तरह अपनी बीवियों से इतने लम्बे अर्से के लिये जुदा रह सकते हो और फिर हम जानते हैं कि तुम्हारा यहाँ किसी औरत से ताल्लुक भी नहीं।"

"हुज़ूर ! मेरा किसी से तो ताल्लुक है।"

"सच ? कौन है वह ?"

"बताते हुए डर लगता है कि कहीं आप उसे मुझसे छीन न लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह इतनी खूबसूरत है कि पैंसठ साल का बूढ़ा भी उस पर ईमान कुर्बान कर सकता है।"

"हाँ हुज़ूर ! इसी डर से बता नहीं सकता।"

"तो हम अपने जासूसों से पता करेंगे।"

"मैं उसे अपने साथ सूरत ले जाऊँगा।"

"और वहाँ पर अपनी बीवी को क्या कहोगे ?"

"कुछ नहीं। वह भी उससे मुहब्बत करेगी।"

"अच्छी बात है। हम देखेंगे कि किस तरह तुम हमारी हरम से किसी को उड़ा कर ले जा सकते हो।"

"तो गरीब-परवर मुझे छुट्टी है ?"

"हाँ।"

हरिहर ने झुककर कदम-बोसी की और चल दिया। जब वह कमरे से निकल गया तो औरंगज़ेब ने पूछा, "बेगम ! जानती हो कि वह कौन औरत है जो इस बेवकूफ से अपना ताल्लुक रखे हुए है ?"

"तो आपका यह मशीर बेवकूफ है ? फिर भी आप इसे रखे हुए थे ?"

"यह तो तफरीह के तौर पर रखे हुए था।"

"मैं इससे पता करूँगी कि वह कौन औरत है जो इस, आपके कौल के मुताबिक बेवकूफ, आदमी से ताल्लुक बनाये हुए है।"

"मैं हैरान हूँ कि यह उस औरत को धन कहाँ से देता होगा ? मैंने तो इसे कभी एक पैसा तक नहीं दिया।"

"यह भी पता करने की बात है।" बेगम औरंगाबादी मुस्करा रही थी। वह जानती थी कि औरंगज़ेब जैसे खाविन्द को खुश रखने के लिये उसकी हाँ-में-हाँ मिलाना ही सबसे सहज उपाय है। सारी आयु खुशामद सुनते-सुनते इसे खुशामद के अतिरिक्त और कुछ पसन्द रहा ही नहीं।

हरिहर महल के अपने कमरे में पहुँच पाँच मिनट में वहाँ से विदा होने के लिये तैयार हो गया। जब वह महल से जाने लगा तो दरबान इत्यादि उसको जाते देख सलाम कर विस्मय में उसका मुख देख रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिहर के मुख पर गम्भीर मुद्रा थी और सब समझ रहे थे कि शहंशाह ने उसे किसी अपने आवश्यक कार्य के लिये भेजा है। पहले भी कभी-कभी ऐसा हुआ करता था।

प्रायः वह नगर से बाहर नहीं जाया करता था। जब जाता था तो वह महल का कोई नौकर अपने साथ ले जाया करता था और आज वह अपने साथ किसी को नहीं ले जा रहा था। उसका अपना निजी नौकर भी महल के फाटक तक आया था और फिर भीतर लौट गया था।

महल के दरवान ने पूछा, "क्यों फिरोज़! मालिक किधर जा रहा है?"

"अपने घर सूरत को।"

"वहाँ क्या है?"

"मालिक की बीवी और बच्चे हैं।"

"उनको यहाँ क्यों नहीं बुला लिया?"

"मालिक कहते थे कि तीन साल से उन्हें तनख्वाह नहीं मिली। इसलिये वह बच्चों को यहाँ बुलायेंगे तो गुज़र कैसे होगा?"

दरवान अभी नौकर से पूछ विस्मय ही कर रहा था कि शाही हुक्म आया कि, "हिदायत को महल से बाहर जाने का हुक्म नहीं है।"

हुक्म लाने वाले को जमादार ने कहा, "हिदायतउल्ला साहब तो चले गये हैं।"

जमादार ने भीतर शहंशाह को यह सूचना भेजी तो सेना को हुक्म हो गया कि हिदायत ज़रूर सूरत को गया है। उसे रोका जाये। हिदायत के जाने के आधे घण्टे के भीतर एक दर्जन घुड़सवार हिदायत को पकड़ने के लिये सूरत की सड़क पर चल पड़े।

सिपाही एक महीने की खोज के उपरान्त लौटे। उनका कहना था कि हिदायतउल्ला साहब सूरत के रास्ते पर नहीं मिले और न ही अपने मकान पर थे। सूरत के हाकिम आला को जहाँपनाह का हुक्म दिखाया तो उसने उसके घर की तलाशी ले ली। मगर वह वहाँ नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

हरिहर सूरत नहीं गया था। उसने उत्तर का मार्ग पकड़ा। जब शाही सिपाही पश्चिम की ओर सूरत की सड़क पर हरिहर की खोज कर रहे थे तब हरिहर बुरहानपुर, ग्वालियर, आगरा और दिल्ली की ओर यात्रा कर रहा था। दिल्ली में कुछ दिन ठहर कर वह उत्तर को पानीपत, अम्बाला के मार्ग से बिलासपुर को चल पड़ा।

बिलासपुर में पहुँचते ही उसे यह जानने में देर नहीं लगी कि आनन्दपुर तो पीछे रह गया है। उसने बिलासपुर पहाड़ी क्षेत्र में कुछ दिन इस कारण ठहरने का विचार किया कि वह पता करेगा कि आनन्दपुर में क्या आकर्षण है जिसके कारण उसका मामा पिछले पाँच वर्ष से वहाँ टिका है।

हरिहर वहाँ एक धर्मशाला में ठहर गया। धर्मशाला के मुंशी और वहाँ रहने वाले यात्रियों में हरिहर एक विशेष आकर्षण का केन्द्र था। उसके आकर्षण में मुख्य कारण उसका अपना सुन्दर, सुदृढ़ और सुडौल शरीर तो था ही; साथ ही उसका अरबी घोड़ा भी था।

धर्मशाला के मुंशी ने उसका नाम-धाम अपनी बही पर लिखने के लिये पूछा, "हुज़ूर नाम।"

"हरिहर।"

"कौन जाति है ?"

"चितपावन ब्राह्मण।" हरिहर ने अपने नाना की जाति एवं बिरादरी लिखा दी।

"कहाँ से आये हैं ?"

"दिल्ली से।"

"आने का उद्देश्य क्या है ?"

"पहाड़ी क्षेत्र के सौन्दर्य को देखना।"

"दिल्ली में क्या काम करते हो ?"

"सूरत में जौहरी की दुकान है और माल आगरा, दिल्ली में बिकने आता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तलवार किसलिये लटका रखी है ?"

"अपनी जान और माल की रक्षा के लिये।"

"पर तुम तो अकेले ही यात्रा कर रहे हो ?"

"हाँ, मैं अकेला ही दस-बीस के बराबर हूँ।"

"ओह ! भाड़ा दोगे अथवा मुफ्त में रहोगे ?"

"क्या भाड़ा लगेगा ?"

"ऊपर की मंज़िल पर कमरा, रसोई, गुसलखाना आठ आना नित्य।"

"भाड़े पर रहूँगा।"

"धर्मशाला का मुंशी समझ गया कि सत्य ही कोई रईस है। इस पर भी केवल भ्रमण के लिये आने वाले यात्री बहुत कम होते थे। इस कारण उसके विस्मय का कारण तो बना हुआ था। घोड़ा अस्तबल में बाँध दिया गया। धर्मशाला का एक सेवक एक आना नित्य पर घोड़े को मालिश इत्यादि करने के लिये रख दिया गया। यह सेवक ही हरिहर को उसके कमरे में ले गया और उसके कमरे को झाड़-फूंक साफ कर चटाई, पलंग इत्यादि लगाने लगा।

हरिहर कमरे के बाहर खड़ा सफाई होने ही प्रतीक्षा कर रहा था। सफाई हो जाने के उपरान्त सेवक हरिहर के सम्मुख आ बोला, "सरकार ! कमरा तैयार है। बिस्तर तो आपके साथ है नहीं। क्या बिस्तर धर्मशाला से ला दूं ? यहाँ पड़ाव पर सर्दी होती है।"

"हाँ, परन्तु बिस्तर साफ और धुला हुआ होना चाहिये।"

"चार आना नित्य उसका भाड़ा देना पड़ेगा।"

"दे दिया जायेगा। और देखो, बाज़ार से पूरी, साग इत्यादि भी तुम ही यहाँ ले आओ तो ठीक रहेगा।"

"हुज़ूर ! ले आऊँगा और यदि हुक्म हो तो दिन-भर सेवा में हाज़िर रह सकता हूँ।"

"यह ठीक ही होगा। तुम्हें तुम्हारा वेतन मिल जायेगा।"

सेवक अति प्रसन्न धर्मशाला के कार्यालय में गया और वहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलंग पर बिछाने के लिये गद्दा, चादर, तकिया और दो कम्बल ले आया।

तदनन्तर हरिहर ने उसे एक रुपया दिया और कहा, "एक सेर पूरी और कुछ मिठाई ले आओ। जल के लिए धर्मशाला से लोटा और जल पीने के लिये कुल्हड़ भी लेते आना।"

कुछ ही देर में सेवक सब सामान ले आया और पत्तल बिछा हरिहर के लिये भोजन लगा दिया। हरिहर ने आधा आग पृथक् रख कर सेवक को कहा, "यह तुम्हारे लिये है।"

"मैं तो भोजन कर चुका हूँ।"

"मैंने तो तुम्हारे लिये मँगवाई हैं। इसे समेट कर रख लो। भूख लगने पर खा लेना और कोई बाल-बच्चा हो तो उसके लिये ले जाओ।"

"हुज़ूर! यहाँ तो कोई नहीं। यहाँ से दूर एक गाँव में माँ और पत्नी रहती हैं।"

"तो यहाँ इस नौकरी के लिये आये हुए हो?"

"नहीं हुज़ूर! मैं आया तो था सिक्खों के गुरु महाराज से युद्ध में सम्मिलित होने, परन्तु हमारी पराजय हुई है और राजा साहब ने सब सिपाहियों को सेना से निकाल दिया है।" सेवक सामने भूमि पर बैठा बता रहा था।

"क्यों?"

"उनके वज़ीर का विचार है कि हम लोग लड़ने की अपेक्षा युद्ध के मैदान से भाग खड़े हुए थे। इस कारण राजा साहब की पराजय हो गयी है।"

हरिहर ने पूरी खाते हुए सेवक से पूछ लिया, "यह युद्ध किस कारण हुआ था!"

"हुज़ूर! राजा साहब के एक वज़ीर हैं। उसने ही यह युद्ध कराया है। वह मुसलमान है और वह गुरुजी के खिलाफ था।

"वज़ीर ने न जाने कैसे राजा साहब को गुरुजी के खिलाफ कर दिया

—१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वज़ीर ने गुरुजी महाराज की सेना के पाँच सौ पठानों को रिश्वत दे अपनी तरफ मिला लिया। इससे उत्साहित हो राजा साहब और उनके साथ यहाँ के कुछ अन्य राजाओं ने गुरुजी को राज्य से निकल जाने की आज्ञा दे दी। वे गये नहीं। राजा साहब ने आक्रमण कर दिया।"

"गुरुजी कहाँ रहते हैं ?"

"यहाँ से बीस मील के अन्तर पर एक गाँव है पौण्टा, पहले तो वे वहाँ रहते थे। वहाँ उनका गुरुद्वारा है और वहीं उन्होंने किलाबन्दी कर ली थी।"

"और तुम इस युद्ध में किसलिये लड़ने आये थे ?"

"हमें गाँव के जमादार ने भरती कर यहाँ भेज दिया था। मेरे साथ तीन युवक और थे। हम चारों सबसे आगे होकर लड़े थे। मेरे तीनों साथी मारे गये और मैं भी लड़ता हुआ मारा जाता, परन्तु उससे पहले ही हमारी सेना में भगदड़ मच गयी और मैं भी भाग आया।"

"क्यों ? डर लग गया था ?"

"क्या हुआ, कुछ समझ में नहीं आया। बात कुछ इस प्रकार हुई कि गुरुजी के सिक्ख थे तो कहार, चमार और जुलाहे, मगर वे लड़े बहुत बहादुरी से।

"आक्रमण हमने किया था और वे यहाँ से दस मील के अन्तर पर मोर्चा बाँधे खड़े थे। दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हो गयी। पहले तो वे अपने स्थान पर खड़े हमें बढ़ने से रोकते रहे। फिर एकाएक किसी ने नारा लगा दिया, 'जो बोले सो निहाल।' तब उनकी पूर्ण सेना ने घोष किया, 'सत श्री अकाल।' और मोर्चा छोड़ हम पर आक्रमण कर दिया। एकाएक हमारी ओर के पठान भाग खड़े हुए। बस हम भी भाग खड़े हुए।

"बाद में इन पठानों से बात करने पर पता लगा कि वे तो अपने वेतन और लूट-मार के लिये भरती हुए थे। पहले गुरुजी महाराज की सेना में और फिर राजा साहब की सेना में। जब उनको मालूम हुआ कि गुरुजी की जीत नहीं हो सकती तो वे राजा साहब की सेना में भरती हो गये। और युद्ध-भूमि में जब उनको विश्वास हो गया कि गुरुजी महाराज की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीत होगी तो वे भाग खड़े हुए।

"जब पठान भागे तो हम भी भाग खड़े हुए।"

"और अब वे पठान कहाँ हैं ?"

"उनको तो निकाला नहीं गया और हमें निकाल दिया गया है।"

"राजा साहब के वज़ीर का क्या नाम है ?"

"गुलाम नबी। हुज़ूर, यह सरहिन्द का रहने वाला है और लोग कहते हैं कि वह मुगलों का जासूस बनकर राजा साहब पर जासूसी करने आया हुआ है।"

"ओह ! मगर गुरुजी अब कहाँ हैं ?"

"युद्ध को हुए कई महीने हो चुके हैं और गुरुजी महाराज की विजय का समाचार सारे देश में विख्यात हो चुका है। इस समाचार से उनके शिष्य दूर-दूर से गुरुजी को भेंट-पूजा देने आ रहे हैं। शिष्यों को पौण्टा पहुँचने में कठिनाई होती थी, इस कारण गुरुजी महाराज अपने नगर आनन्दपुर में चले गये हैं।"

"वह किधर है ?"

"यहाँ से दक्षिण को जाना होता है। पहाड़ों से निकल मैदान में सड़क के दस कोस पश्चिम में वह नगर बसा है। सुना है कि गुरुजी महाराज वहाँ एक नया दुर्ग बनवा रहे हैं।"

"तुमको घर जाने की जल्दी न हो तो हमारी नौकरी कर लो।"

"जल्दी नहीं है। मेरी पत्नी अभी अल्पायु है। उसकी आयु दस वर्ष से कम है। मेरी माँ उसे मेरे समीप आने नहीं देती।"

हरिहर हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "तब तो तुम पाँच-छः वर्ष तक मेरी नौकरी कर सकते हो।"

"आप क्या वेतन देंगे ?"

"राजा साहब के यहाँ से क्या मिलता था ?"

"वहाँ से तो कुछ भी नहीं मिला। मैं यहाँ पहुँचा और भरती हुआ तो उसके पाँच-छः दिन उपरान्त पौण्टा पर आक्रमण का हुक्म हो गया। हम चल पड़े। गुरुजी महाराज को हमारे आक्रमण की सूचना मिल गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वे पौण्टा से छः मील इधर ही हमारा मार्ग रोक खड़े हो गये। घमासान युद्ध हुआ। हमें पूर्ण आशा थी कि हम गुरुजी की सेना को गाजर-मूली की भाँति काट कर रख देंगे। उनकी सेना का सबसे सुदृढ़ अंग पठान तो राजा साहब की ओर आ मिले थे। मगर वे तो लड़े नहीं। सामने गुरुजी हाथ में तलवार लिये हुए अपने सैनिकों के सबसे अगली पंक्ति में खड़े लड़ने लगे। हम बार-बार आक्रमण करते थे और अपने पक्ष के आधे लोगों को बलि चढ़ा लौट आते थे।

"पठान तो पीछे खड़े तमाशा देख रहे थे। जब उन्होंने हमें भारी संख्या में मरते देखा और गुरुजी महाराज की तेजोमय मूर्ति को हमें गाजर-मूली की भाँति काटते देखा तो भाग खड़े हुए। उधर गुरुजी ने 'सत श्री अकाल' का नारा लगाया और इधर पठान भागे। हम भी लौट आये।

"गुरुजी ने हमारा पीछा नहीं किया और न ही उन्होंने, जैसी आशा थी, इस नगर को लूटा।

"युद्ध के उपरान्त तीन मास तक मैं सैनिक शिविर में रहा किन्तु उस अवधि में मुझे वेतन नहीं मिला। इस कारण मैं नहीं जानता कि क्या मिलने वाला था। अब तीन महीने से इस सराय में सेवा-कार्य करता हूँ और दो आना नित्य धर्मशाला में से वेतन मिलता है। उसमें कठिनाई से भोजन ही चलता है।"

"क्या नाम है?"

"सुमेरसिंह।"

"जाति क्या है?"

"राजपूत।"

"अच्छा सुमेरसिंह! आज से तुम मेरी सेवा में हो जाओ। मैं तुमको दस रुपये मासिक वेतन और रोटी-कपड़ा अपने पास से दूंगा। बोलो स्वीकार है?"

"कहाँ रहना होगा।"

"जहाँ-जहाँ मैं रहूँगा। मैं भ्रमण के लिये घर से निकला हूँ और दोनों भ्रमण करेंगे। छः वर्ष के उपरान्त मैं तुम्हें तुम्हारे गाँव में पहुँचा दूंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब तक तुम्हारी पत्नी तुम्हारी सेवा के लिये तैयार हो जायेगी।"

सुमेरसिंह का मुख लज्जा से लाल हो गया। इस पर हरिहर ने कहा, "यदि तुम चाहो तो दो मास का वेतन मुझसे अग्रिम लेकर अपने घर जा माँ को मिलकर आ सकते हो। बताओ कितने दिन में लौट आओगे?"

सुमेरसिंह विस्मय में मुख देखता रह गया। उसे विश्वास नहीं आया कि सामने बैठा व्यक्ति सत्य कह रहा है अथवा उसकी हँसी उड़ा रहा है। हरिहर भोजन कर चुका था। वह उठा तो सुमेरसिंह ने लोटे में जल लिया और कमरे से बाहर जाकर हरिहर के हाथ धुला दिये और कुल्ला करा दिया।

सुमेरसिंह हरिहर की नौकरी के लिये राज़ी हो गया। हरिहर ने उसे बीस रुपये दिये और कहा, "तुम आज ही अपने गाँव को चले जाओ। तीन दिन में लौट आना। मैं तुम्हारी इसी धर्मशाला में प्रतीक्षा करूँगा।"

हरिहर ने विचार किया कि तनिक राजा साहब और उनके वज़ीर के दर्शन करने चाहियें। अतः उसने धर्मशाला के कार्यालय से कलम, दवात, कागज़ लिया और एक पत्र राजा साहब की सेवा में लिख दिया। हरिहर ने संक्षिप्त में परिचय देते हुए लिखा—

'मैं दक्षिणी ब्राह्मण हूँ, परन्तु सेना में कार्य कर चुका हूँ,। युवक हूँ, पढ़ा-लिखा विद्वान हूँ और युद्ध-विद्या में पारंगत हूँ। महाराज के नगर में भ्रमण के लिये आया हूँ। यहाँ आ महाराज के दर्शनों की अभिलाषा रखता हुआ निवेदन कर रहा हूँ कि दर्शन देने की कृपा की जाये।'

इस प्रकार पत्र लिख वह राजा साहब के महल पर पहुँच द्वारपाल को पत्र और एक रुपया इनाम दे चला आया।

अगले दिन राजा साहब का दरबान हरिहर को ढूंढ़ता हुआ धर्मशाला में आया और हरिहर से मिल कह गया, "मध्याह्न के भोजनोपरान्त महाराज आपको दर्शन देने की कृपा करेंगे। इससे दो बजे की गजर बजते ही महल के द्वार पर उपस्थित हो जायें।"

हरिहर नियत समय पर महल के द्वार पर पहुँचा तो वही दरबान जो उसे राजा साहब की आज्ञा देने गया था, उसे साथ लेकर महल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज के निजी दीवानखाने में जा पहुँचा ।

: ८ :

खाली दीवानख़ाने में हरिहर को खड़ा कर दरवान बाहर निकल गया । उसके जाने के एक क्षण उपरान्त ही राजा भीमचन्द दीवानखाने में अपने राजसी ठाट-बाट के साथ पधारे। उनके दीवानखाने में आते ही दीवानखाने के बाहर से दरवान ने आवाज़ दी, "महाराज देव श्री भीमचन्दजी महाराज बिलासपुर राज्य पधार रहे हैं ।"

यह घोषणा हरिहर को सूचित करने के लिये थी कि आने वाला व्यक्ति महाराज भीमचन्दजी हैं । हरिहर इस बात से भली-भाँति परिचित था और वह दीवानखाने को खाली देख समझ गया था कि उसे महाराज की खड़े-खड़े प्रतीक्षा करनी चाहिये । वह अभी तक खड़ा ही था । अतः राजा साहब के आने की घोषणा होते ही उसने आने वाले व्यक्ति को हाथ उठा आशीर्वाद दे दिया, "महाराज देव की जय हो ।"

राजा साहब बैठे तो हरिहर भी बैठ गया और अपना परिचय देने लगा ।

"मैं हरिहरनाथ औरंगाबाद के समीप जाँव गाँव का रहने वाला हूँ। मैंने पूना के महाराज शिवाजी की सेवा में कार्य किया है । उनके अंग-रक्षक के रूप में और समरों में योद्धा के रूप में भी । मैंने महाराज के देहावसान के उपरान्त औरंगज़ेब के साहबज़ादे शाह आज़म के अधीन बीजापुर की समर में भी भाग लिया है ।

"अब उत्तर भारत का भ्रमण करते हुए शिवालक पहाड़ियों के मनोरम दृश्यों को देखने की लालसा में बिलासपुर में पहुँचा तो श्रीमान् के दर्शन करने की लालसा जाग पड़ी ।

"एतदर्थ मैंने श्रीमान्‌जी से भेंट की याचिका उपस्थित की है । यह मेरा सौभाग्य है कि मेरी अभिलाषा आपने पूर्ण की है ।"

"अकेले हो अथवा बाल-बच्चे साथ हैं ?"

"महाराज ! अकेला ही हूँ । बाल-बच्चे इस समय सूरत में हैं । वहाँ जौहरी का काम करते हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! तो जौहरी होते हुए भी युद्ध करते हो ?"

"महाराज ! इस प्रकार नहीं। योद्धाओं के परिवार में उत्पन्न हो और युद्धों में निरन्तर भाग लेता हुआ जौहरी की दुकान करता हूँ। यह इसलिये कि राज्य-लक्ष्मी के रुष्ट होने पर जीवन का आश्रय स्थान बनाने के लिये लड़के और भाइयों को यह व्यवसाय करा रखा है।"

"दोनों एक ही बात नहीं क्या ?"

"नहीं महाराज ! दोनों में अन्तर है। एक मराठा ब्राह्मण के घर में मेरा जन्म हुआ है। क्षत्रिय का काम तो स्वभाव-वश करता हूँ, परन्तु संकटावस्था में जीवन स्थिर रखने के लिये व्यवसाय कर लिया है।"

"हम महाराज शिवाजी की कथा सुनने के लिये उत्सुक हैं।"

"वह तो बहुत ही विशाल कथा है। उनका पूर्ण जीवन एक ही धुरी पर घूमता था। वह थी देश में स्वराज्य स्थापित करना। धर्म की पताका को ऊँचा रखना और स्वतन्त्रता के लिये प्रत्येक प्रकार का त्याग करने के लिये तैयार रहना।"

"परन्तु हम समझते हैं कि इसमें वह सफल नहीं हुए और न ही हो सकेंगे।"

"वह तो अपने जीवन काल में अत्यन्त सफल हुए हैं। हाँ, उनके लड़के की सफलता के विषय में सन्देह हो रहा है। इस पर भी एक बात हुई है। स्वतन्त्रता पर मर-मिटने वाले परवाने पैदा हो गये हैं और अब आशा हो रही है कि महाराष्ट्र में तुर्कों का राज्य नहीं रहेगा।"

"परन्तु हमने तो सुना है कि बीजापुर और गोलकुण्डा राज्यों के विनष्ट हो जाने से मुगलों के लिये मराठों को पराजित करना सुगम हो जायेगा।"

"महाराज ! मेरा विचार इसके सर्वथा विपरीत है। मैं समझता हूँ कि उन दो राज्यों के विनष्ट हो जाने से मराठा राज्य स्थापित होना निश्चय हो गया है। इस पर भी यह काम शिवाजी के लड़के शम्भुजी के वश का नहीं।"

"क्या दोष है उसमें ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह चरित्रहीन है। वह सुरा और सुन्दरी का अतिशय सेवन करता है और अपने पिता के व्यवहार के विपरीत वह अपना शासन स्थापित करना चाहता है। उसके मन में मराठा राज्य अथवा हिन्दू पद पादशाही स्थापित करने का विचार नहीं। वह महाराजाधिराज शम्भुजी भौंसले का राज्य स्थापित करना चाहता है। ऐसा हो नहीं सकेगा।"

"यही समस्या हमारे यहाँ भी है। सिक्खों के दशम् गुरु मेरे मित्र हैं। उनके कहने पर ही मैंने यहाँ सब पहाड़ी राजाओं की एक समिति बनायी और मुगल राज्य को उलटने का यत्न करने लगे थे, परन्तु सरहिन्द के सूबेदार ने धमकी दे दी कि यदि इस दशम् गुरु को यहाँ से निकाला न गया तो मुगल सेना द्वारा आक्रमण कर दिया जायेगा। इस धमकी से सब लोग डर गये और हमारी समिति में यह निश्चय हो गया कि गुरुजी को यहाँ से रुखसत कर दिया जाये। गुरुजी को यहाँ से चले जाने का संकेत किया तो वे गये नहीं। अतः युद्ध कर गुरुजी महाराज को यहाँ से निकालने का यत्न किया गया।

"युद्ध का निश्चय होते ही युद्ध-संचालन के लिये सरहिन्द से एक तुर्क यहाँ आ गया और उसने पहले तो एक चमत्कार किया। वह यह कि गुरुजी महाराज के पठान सैनिकों को लोभ-लालच देकर अपनी ओर कर लिया। गुरुजी के पास शिक्षित सैनिक तो रहे नहीं थे और हम अपनी विजय निश्चय समझते थे।

"परन्तु गुरुजी के दुकानदार, चमार और जुलाहों ने हमारे लड़ने में प्रवीण योद्धाओं को भगा दिया।"

"महाराज! यही बात महाराज शिवाजी के काल में महाराष्ट्र में हुई थी। अनपढ़, अशिक्षित मवालियों ने बीजापुर की अभ्यस्त एवं सुशिक्षित सेना को बार-बार पराजित किया था।

"महाराज! यह उन अशिक्षितों की विजय नहीं हुई थी। यह तो धर्म की जय हुई थी। वहाँ भी और यहाँ भी।"

राजा भीमचन्द मुख देखता रह गया। हरिहर मौन बैठा रहा। राजा साहब ने कुछ देर तक विचार कर कहा, "अब हमारा सरहिन्द से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया वज़ीर हमें राय दे रहा है कि सेना का पुनर्गठन किया जाये और फिर गुरुजी पर आक्रमण कर दिया जाये । मेरा मन नहीं मानता ।"

"आपका मन क्या कहता है ?"

"मैं विचार करता हूँ कि मुगलों की सिक्खों से लड़ाई है । मुगल सिक्खों के दो गुरुओं की हत्या कर चुके हैं । यह उनकी खानदानी लड़ाई है । मैं इसमें क्यों हस्तक्षेप करूँ । मैं तटस्थ रहना चाहता हूँ ।"

"परन्तु महाराज ! तटस्थ रहने से तो निरपेक्ष नहीं हो सकते ।"

"क्या मतलब ?"

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि संसार में दो ही पक्ष हैं । धर्म और अधर्म । धर्म और अधर्म से तटस्थ या तो धर्म के पक्ष में होगा अथवा अधर्म के । कारण यह कि धर्म और अधर्म के बीच का कोई पक्ष है ही नहीं ।

"भगवान कृष्ण ने भी भगवद्गीता में कहा है कि जो कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म देखता है, वही विद्वान है । कारण यह कि अकर्म कोई पक्ष ही नहीं ।"

"तो आपके देश में भी भगवद्गीता पढ़ी जाती है ?"

"हाँ, महाराज ! जहाँ-जहाँ देव वाणी समझी जाती है, यह ग्रन्थ पढ़ा जाता है । मेरे गुरुजी ने बताया था कि किसी चोर को सेंध लगाते देख चुप रहना भी सेंध लगाने में सहायता देना है ।"

राजा भीमचन्द इस युवक की तर्क-शक्ति देख चकित रह गया । इस पर भी उसने समझा कि उसके मन का संशय वह निवारण नहीं कर सकेगा । अतः उसने पूछ लिया, "परन्तु जब शत्रु इतना प्रबल हो कि उसके विरोध की सामर्थ्य न हो तो क्या किया जाये ?"

उससे छलना खेली जाये । ऊपर से मित्र बनकर भीतर-ही-भीतर उसका विरोध किया जाये ।"

"यह कैसे हो सकता है ? शत्रु के जासूस छलना को जान जायेंगे और तब शत्रु का कोप और भी उग्र हो जायेगा । ये सब बात हमारी राजाओं की समिति में विचार की जा चुकी है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज ! जासूसों का सफाया करना पहला काम है।"

"हमारे राज्य में कुछ मुसलमान हैं और वे सब जासूसी का काम करते हैं।"

"उन सबका सफाया कर दीजिये।"

"कैसे ?"

"उनका राज्य में रहना कठिन कर दीजिये।"

"हमें यह ढंग नहीं आता।"

"वह इस कारण कि आपने अपना वज़ीर ही एक महा-जासूस रखा हुआ है।"

"तुम उसके विषय में क्या जानते हो ?"

"देखिये महाराज ! मुझे तो आपके राज्य से कुछ लेना-देना नहीं। मैं तो कुछ दिन के लिये ही यहाँ आया हूँ।

"परन्तु मैं एक बात बताता हूँ। आपका वज़ीर उन पठानों को निकाल नहीं रहा, जिनके कारण आपकी पराजय हुई है।"

"यह हम जानते हैं। परन्तु इसमें कारण है।"

"क्या ?"

"वज़ीर ने उनको वचन दिया था कि उन पठानों को एक वर्ष तक अवश्य नौकर रखेगा।"

"और जो पठान मर गये हैं उनको भी नौकर रखेगा क्या ?"

राजा साहब हँस पड़े। हँसते हुए कहने लगे, "भला मरे हुओं को कैसे नौकर रखा जा सकता है ?"

"महाराज ! जो युद्ध में पीठ दिखा भाग आये हैं वे तो मरे हुओं से भी बुरी अवस्था में हैं ?"

"हमारा वज़ीर कहता है कि वे पठान बलवा कर देंगे।"

"मैं इसका यह अभिप्राय समझा हूँ कि वज़ीर साहब स्वयं बलवा करने अथवा कराने की बात विचार कर रहे हैं।"

"यह तो बहुत ही गम्भीर आरोप है।"

"महाराज ! वेतनधारी सैनिक जब युद्ध-भूमि से पीठ दिखा भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये तो उनका अधिकार नहीं कि वे नौकरी पर रहें। जो भी उनका पक्ष लेता है, वह भी नौकरी पर रखने के योग्य नहीं है।"

राजा भीमचन्द ने बात बदल दी। उसने कहा, "तुम हमारे वज़ीर बन जाओ।"

"महाराज! मैं मुगलों की नौकरी कर चुका हूँ और उनके सब दोषों को जानता हूँ। इस कारण एक तुर्क के वज़ीर रहते मैं कैसे यहाँ रह सकता हूँ?"

"हम तुमको इसी कारण नौकर रखना चाहते हैं कि पहले इस बड़े तुर्क को यहाँ से भगा दो।"

हरिहर गम्भीर हो गया। वह नौकरी करना नहीं चाहता था और यह भी चाहता था कि हिन्दू राज्य में अहिन्दू वज़ीर नहीं रहना चाहिये। इस पर भी उत्तर देने के स्थान उसने एक बात पूछ ली, "महाराज! मैं एक परदेशी हूँ। इस कारण इतना ऊँचा और उत्तरदायित्व का पद मुझे देना आपके यहाँ के अधिकारियों में ईर्ष्या उत्पन्न कर देगा। इससे काम नहीं चलेगा।

"मेरी सम्मति यह है कि आप किसी योग्य सम्बन्धी को अपना वज़ीर बना लीजिये और मैं उसके अधीन कुछ देर तक एक नाज़र के रूप में काम करने के लिए रह जाऊँगा।"

"नाज़र?"

"हाँ राजा देव! मैं सेना का कार्य अपने हाथ में लेना चाहूँगा।"

"इससे दो कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी। एक तो हज़रत गुलाम नबी साहब नाराज़ हो जायेंगे और उनकी नाराज़गी का परिणाम सरहिन्द के सूबेदार का नाराज़ होना है।

"दूसरी कठिनाई इस क्षेत्र के अन्य राजा-महाराजा हैं। वे मुगल राज्य से इतने भयभीत हैं कि बिना सूबेदार की सम्मति के एक छींक भी मारना अनुचित समझते हैं।"

"दोनों कठिनाइयों को दूर करने का मार्ग है। आप यदि इतनी कृपा करें कि मुझे यहाँ गुमनाम रहते हुए स्थिति का अध्ययन करने दें तो मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ही दिन में आपको एक योजना बना कर दूँगा।"

"गुमनाम का क्या अर्थ है ?"

"यह विख्यात न हो कि आपने मुझे किसी उद्देश्य से कुछ काम सौंपा है।"

"हाँ। हमारी ओर से इस विषय में किसी को कुछ नहीं कहा जायेगा।"

हरिहर को तो यह भी विश्वास नहीं आ रहा था कि राजा साहब सत्य हृदय से अपने वज़ीर से मुक्त होना चाहते हैं ? वह यह भी नहीं समझ सका था कि सेना-संगठन जैसा आवश्यक कार्य वह उसे सौंप सकेंगे ? परन्तु वह मन-ही-मन चाहता था कि सिक्खों के गुरुजी से किसी प्रकार का सम्पर्क उत्पन्न किया जाये।

एक बात का उसे विश्वास हो रहा था कि उसका मामा गुरुजी से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखे हुए है। वह क्या सम्बन्ध है ? यह भी वह जानना चाहता था।

उस दिन तो वह केवल इतनी बात कर सका। धर्मशाला को लौटते हुए वह मन-ही-मन विचार कर रहा था कि यदि सत्य ही राजा साहब अपने वज़ीर से उचाट हैं तो उसने कुछ अन्य भी भयंकर ख़राबी की होगी। वह क्या है ? वह यह भी जानना चाहता था।

धर्मशाला में पहुँच वह अपने कमरे में जाने लगा तो धर्मशाला के मुंशी ने पूछ लिया, "पण्डितजी ! कहाँ गये थे ?"

"नगर देखने गया था।"

"क्या देखा है ?"

"नगर तो सुन्दर नहीं। हाँ, यहाँ की जल-वायु बहुत स्वाथ्य-प्रद प्रतीत होती है। यहाँ के लोग सुन्दर और स्वस्थ हैं।"

"हाँ, यह तो है। परन्तु देखना यहाँ की स्त्रियों के जाल में न फंस जाना। वे सुन्दर तो हैं, परन्तु कुटिल भी होती हैं।"

"सत्य ? मुंशीजी, यह तो आपने ठीक समय पर सचेत कर दिया है। वास्तव में लोगों के सौन्दर्य की बात कहता हुआ मैं यहाँ की स्त्रियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सौन्दर्य की ही बात कह रहा था।"

"अच्छा देखो।" मुंशी ने मुख लम्बा कर कह दिया, "आपको ढूँढ़ता हुआ वज़ीर साहब का एक आदमी यहाँ आया था।"

"वज़ीर साहब कोई पुरुष हैं अथवा स्त्री ?"

मुंशी इस व्यंग को न समझते हुए बोला, "बहुत भयंकर जीव है। सुना है कि तीन स्त्रियाँ तो अपने हरम में दाखिल कर चुका है।"

"हाँ, तो वह आदमी क्या कहता था ?"

"एक मियाँ था और पूछ रहा था कि यहाँ कोई हरिहर नाम का परदेशी आया है ?"

"और आपने क्या बताया है ?"

"मैंने बताया कि आप किसी महबूबा की खोज में घूम रहे हैं।"

"आपने यह क्यों कहा ?"

"इसलिये कि वह आपको पकड़ न पाये और यदि आप उससे मिलने के पहले आ गये तो यहाँ से बचकर भाग सकें।"

हरिहर की हँसी निकल गयी। उसने कहा, "मुंशी! तुम तो बहुत काम के आदमी हो। मैं नहीं जानता था कि तुम इतनी सूझ-बूझ भी रखते हो।

"मगर मैं एक बात जानना चाहता हूँ कि इन वज़ीर साहब से आप इतना डरते क्यों हैं ?"

"मैं नहीं डरता। आप परदेशी और भले व्यक्ति प्रतीत होते हैं। इसलिये आपके लिये डर था। यह वज़ीर साहब भला आदमी नहीं है।"

"क्या खराबी है इसमें ?"

मुंशी गम्भीर हो हरिहर का मुख देखने लगा। फिर कुछ विचार कर बोला, "परन्तु यदि आपको भागना है तो जल्दी भाग जाइये।"

"नहीं। मैं भाग नहीं रहा। मैं एक शान्तिप्रिय व्यक्ति हूँ और किसी से भी नहीं डरता। साथ ही मैं मरने-जीने को एक खेल समझता हूँ।"

"बात यह है कि यह वज़ीर जब किसी युवा, सुन्दर और बुद्धिमान हिन्दू को देखता है तो उसे मुसलमान बनाने के लिये उसे धन-दौलत, स्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर पदवी का लालच देता है ग्रौर उसे पतित कर यहाँ से सरहिन्द ग्रौर वहाँ से लाहौर भेज देता है।"

"स्त्री की वात तो मेरे लिये नयी नहीं। हाँ, धन ग्रौर पद की वात ग्रवश्य विचारणीय है।"

"मुंशी ग्रभी उसे हिन्दू धर्म को न छोड़ने की बात कहने ही वाला था कि एक पठान वहाँ ग्रा गया। उसे ग्राया देख मुंशी ने कह दिया, "लो, यह खान साहव ग्रा गये हैं।"

हरिहर ने प्रश्न-भरी दृष्टि में उसकी ग्रोर देखा तो वह पठान वोला, "वज़ीर साहब का हुक्म है कि पण्डित हरिहर को उनके सामने हाज़िर किया जाये।"

"चलो भाई ! पहले वज़ीर साहब की बात सुन लें।"

: ९ :

वज़ारत के सामने जा हरिहर को साथ लाने वाले पठान ने कहा, "ग्राप ग्रपनी तलवार उतार कर चौकीदार को दे दें।"

"क्यों ?"

"वज़ीर साहब का हुक्म है कि कोई भी हथियार लेकर उनके सामने न ले जाया जाए।"

"मैं तलवार बाँधे हुए तो शहंशाह हिन्द के सामने भी जाता हूँ। मैं यह यहाँ नहीं उतारूँगा।"

"यह हुक्म है।"

"ठीक है। मैं उससे मिलने नहीं जाऊँगा।"

"पर मैं तो तुमको पकड़ कर लिये जा रहा हूँ।"

"क्यों पकड़े हुए हो ? मैंने क्या जुर्म किया है ?"

"यह तो वज़ीर साहव ही वता सकते हैं।"

"तो उनको कहो कि हुक्म लिखकर भेज दें।"

"पर पण्डित ! लिखने से ग्रधिक ज़बरदस्त का कहना होता है।"

"मैं बिना लिखे हुक्म के तुम पर यकीन नहीं करता कि तुम वज़ीर साहब की वात कह रहे हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर पठान ने हरिहर के हाथ को पकड़ कर वज़ारत के भीतर ले जाने के लिये खींचने का यत्न किया। हरिहर ने झटका दे पठान से अपना हाथ छुड़ा लिया और दो पग पीछे हो तलवार खींच ली और बोला, "मर्द हो तो निकालो तलवार।"

पठान के पास तलवार नहीं थी। उसने आवाज़ें लगानी आरम्भ कर दीं, "ओ करीम खाँ! ओ रहीम खाँ! आओ, आओ बचाओ!"

वज़ारत से दो अन्य पठान भागे-भागे आये। उनको भाग कर आते देख वज़ारत के अन्य कर्मचारी भी भागे-भागे वहाँ आ गये। नये आये पठानों के पास तलवार थी, परन्तु वज़ारत के अन्य लोग प्रायः हिन्दू थे और वे किसी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लिये हुए नहीं थे।

हरिहर दूसरों से पहल किये जाने पर विश्वास नहीं करता था। इससे उसने दोनों पठानों को भाग कर आते देखा तो जो आगे था, उस पर वार कर दिया। वह तलवार म्यान से बाहर खींच ही रहा था कि उसका हाथ कट गया था। हाथ की मुट्ठी तलवार पर थी, परन्तु बाँह का रुण्ड पठान दूसरे हाथ से पकड़ विस्मय में देख रहा था कि क्या हो गया है?

इतने में दूसरा पठान आ गया और वह तो तलवार निकाले हुए था। हरिहर ने पैंतरा बदल उसका मार्ग छोड़ दिया और वह भागते-भागते रुकने लगा तो भूमि पर गिरने लगा था।

हरिहर ने उसे सम्भलने का अवसर दे दिया, परन्तु पूर्व इसके कि वह रुक कर अपने पाँव पर सीधा खड़ा हो कि हरिहर की तलवार का दूसरा वार हुआ और पठान का सिर धड़ से प्रथक् हो गया।

इस करतब को देख वज़ारत के कर्मचारी और सड़क पर चल रहे लोग जो हरिहर के चारों ओर एकत्रित हो गये थे, तमाशा देखने खड़े हो गये थे।

हरिहर ने तलवार म्यान में डाल ली और वज़ारत के भीतर चल पड़ा। जब वह उधर को बढ़ा तो तमाशा देखने वाले उसका मार्ग छोड़ एक ओर हट गये। वह पठान जो उसको धर्मशाला से लाया था, अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागकर उसके आगे-आगे वज़ीर साहब के कमरे की ओर चल पड़ा।

हरिहर समझ रहा था कि वह वज़ीर साहब को उसके आने की इत्तला करने जा रहा है। दूसरे कर्मचारी तो उसका मार्ग छोड़ते हुए एक ओर हो रहे थे।

ऐसा प्रतीत होता था कि वज़ारत की सुरक्षा के लिये दो पठान ही काफी समझे गये थे।

पठान एक कमरे में गया तो हरिहर भी लपक कर उसके साथ भीतर घुस गया। द्वार पर खड़े दरवान ने उसका मार्ग रोका, परन्तु हरिहर उसे एक ओर हटाकर भीतर चला गया।

वज़ीर एक ऊँचे चबूतरे पर एक चौकी पर बैठा था। वह लम्बी दाढ़ी रखे हुए और मुगलिया पगड़ी बाँधे हुए चालीस वर्ष की वयस का व्यक्ति प्रतीत होता था। इस पर भी वह अभी चुस्त और सतर्क प्रतीत होता था। उसने पठान की घबरायी सूरत देख पूछा, "असलम! क्या है? यह कौन है?"

"हुज़ूर! हुज़ूर!!......यह करीम खाँ का कत्ल......।"

"चुप रहो।" हरिहर ने कहा, "झूठ मत बोलो। मैं खुद बताता हूँ।" बिना वज़ीर साहब के कुछ पूछे ही हरिहर ने कहा, "यह शख्स मुझसे कहने लगा कि राज्य के वज़ीर साहब मुझसे मिलना चाहते हैं।

"मैं इसके साथ वज़ारत के दरवाज़े पर पहुँचा तो यह मेरा हाथ पकड़ घसीटने लगा जैसे कि मैं इसका कैदी हूँ। मैंने झटका दे हाथ छुड़ाया तो यह रहीम, करीम को पुकारने लगा। वे तलवारें खींच मुझ पर लपके। मैंने उनका मुकाबला किया। उन दोनों में से एक का तो सिर कलम कर दिया है और एक का हाथ कट गया है।"

"ओह! मगर हम तुमसे मिलना चाहते थे।"

"मैं तो आ रहा था। यह मेरा हाथ पकड़ घसीटने लगा, मानो मैं कोई मुजरिम हूँ। और फिर वे रहीम और करीम तो तलवारें निकाल मुझ पर झपटे थे।"

"और तुम उन दोनों का कत्ल कर आये हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं वज़ीर साहव ! दोनों हमलावरों में एक को मार कर दूसरे को घायल कर ग्राया हूँ ।"

"तो तुमने सरकारी नौकरों से जंग लड़ी है ?"

"नहीं वज़ीर साहब ! उन्होंने मुझसे जंग लड़ी ग्रौर दोनों हार गये हैं। वे इसके बुलाने पर ग्राये थे ग्रौर तलवारें निकाल कर भागे ग्रा रहे थे। मैंने तो उनके निकालने के वाद ग्रपनी तलवार निकाली थी ।"

"पर तुमने दो मोमिनों को मार डाला है ।"

"ग्रौर वे दोनों मिलकर एक ब्राह्मण की हत्या करने ग्रा रहे थे ।"

"हम तुमको मौत की सज़ा देते हैं ।"

"ग्रौर मैं यहाँ के महाराज के सामने इन्साफ की ग्रर्ज़ी करता हूँ ।"

"कौन महाराज ?"

"महाराज भीमचन्दजी, मालिक विलासपुर ।"

"हम यहाँ किसी को महाराज नहीं मानते । इस मामले में वह दखल नहीं दे सकते ।"

"तो ग्राप ग्रपने ग्रन्नदाता से बगावत कर रहे हैं ? देखो वज़ीर साहव ! यह तो बहुत बड़ा जुर्म है ।"

"ऐ, मुंशी रामनारायण ! गोपालशरण ! ऐ रामावतार !"

इन ग्रावाज़ों पर तो वे वहुत से कर्मचारी जो वाहर हरिहर की फुर्ती ग्रौर साहस देख चुके थे, कमरे के भीतर ग्रा गये ।

वज़ीर साहव ने कहा, "मैं राजा साहव के नाम पर हुक्म देता हूँ कि इस बागी को पकड़ लो ।"

हरिहर का हाथ ग्रनायास तलवार के मुट्ठे पर चला गया। इस पर तो सब पीछे हटकर कमरे की दीवार के साथ खड़े हो गये ।

हरिहर ने कहा, "यह शख्स कहता है कि यह महाराज को ग्रपना मालिक नहीं समझता । इसलिये मैं इसे महाराज के पास पकड़कर ले जाना चाहता हूँ । यह वागी हो गया है । इसका फैसला महाराज खुद करेंगे ।"

—१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वज़ीर समझ गया कि उसने भूल कर दी है। वज़ारत के बाहर भारी हलचल मच रही थी। रहीम जिसकी बाँह कट गयी थी, भागा हुआ पठानों के शिविर में गया था और वहाँ से आठ-दस पठान तलवारें निकाले हुए वज़ीर साहब के कमरे की ओर भागते हुए आये, मगर राजा साहब के भी पक्ष के कुछ लोग थे और वह पठानों की धाँधली से आतुर हो चुके थे। उनमें से एक-दो भागकर राजा साहब के महल को गये थे और वहाँ से राजा साहब के कुछ सुभट्ट तलवारें लेकर वज़ारत की ओर लपके।

पठान कमरे में घुसे तो वज़ीर ने कहा, "ठहरो! इस कमरे में खून नहीं होने दूँगा। इस बागी को पकड़ लो।"

हरिहर ने तलवार निकाल ली और ज़ोर-से कहा, "खबरदार! आगे बढ़े तो बचोगे नहीं।"

हरिहर कमरे की दीवार के साथ पीठ कर खड़ा हो गया। पठानों ने तलवारें निकाली हुई थीं और वज़ीर साहब के हुक्म की प्रतीक्षा कर रहे थे कि राजा साहब के महल के कुछ सुभट्ट कमरे में घुस आये।

"तुम क्यों आये हो?" वज़ीर ने उनसे पूछा।

"हम इस आदमी को महाराज के पास ले चलने के लिये आए हैं।"

'किसके हुक्म से?"

"महाराज के हुक्म से।" एक सुभट्ट ने तुरन्त बुद्धि का परिचय देते हुए झूठ बोल दिया। वह इस स्थिति में यही उपाय उचित समझता था।

वज़ीर सबके सामने नहीं कह सका कि वह महाराज की आज्ञा को नहीं मानता।

उसने कुछ दबी आवाज़ में कहा, "मैं यहाँ का वज़ीर हूँ।"

इस पर हरिहर ने बात सुलझते देख कह दिया, "पर महाराज बहादुर वज़ीर से बड़े हैं। आप भी मुल्ज़िम हैं और महाराज के सामने मेरा मुकदमा पेश होगा?"

वज़ीर ने अब पठानों को कहा, "तुम सब लोग अपने शिविर में चलो। मैं महाराज से मिलकर तुमसे इन्साफ करूँगा।"

पठान कमरे से बाहर निकले तो सुभट्टों ने हरिहर से कहा, "अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको महाराज के सामने चलना चाहिये ।"

वज़ारत में एक हिन्दू की पठानों से झगड़े की बात महाराज तक पहुँच चुकी थी । जब सुभट्ट हरिहर को लेकर महाराज के सामने गये तो महाराज उसे देख हँस पड़ा ।

"तो तुम वज़ीर साहब को यहाँ से हटाने गये थे ?"

"नहीं राजा देव ! मैं धर्मशाला में पहुँचा तो एक पठान मुझे वज़ीर साहब से मिलने के लिये बुलाने आया । मैं स्वयं वहाँ नहीं गया । मुझे वज़ीर साहब ने बुलाया था । धर्मशाला से वज़ारत तक तो वह मीठी-मीठी बातें करता रहा । वज़ारत के सामने पहुँच मुझे बोला कि अपनी तलवार उतार दो ।

"मैंने बताया कि शहंशाह-ए-हिन्द के सामने और यहाँ के महाराज के सामने भी मैं तलवार लगाये जाता हूँ । इसलिये तलवार नहीं दूँगा । इस पर वह शख्स मुझे पकड़ कर घसीटने लगा तो मैंने झटका दे हाथ छुड़ा लिया । उसने अपने साथियों को बुला लिया । वे तलवारें निकाले हुए आये और मुझ पर आक्रमण करने लगे । मैंने एक को स्वर्गलोक पहुँचा दिया और दूसरे को घायल कर नाकारा कर दिया है ।"

"क्या नाम हैं उनके ?"

"यह नहीं जानता महाराज कि कौन मारा गया है और कौन घायल हुआ है । वहाँ उनका साथी उन्हें रहीम खाँ और करीम खाँ कहकर पुकार रहा था ।"

इस समय वज़ीर साहब के आने की इत्तला की गयी । राजा साहब ने उसे भी भीतर बुला लिया ।

वज़ीर साहब आये तो राजा साहब ने उसे अपने सामने बैठा लिया और पूछा, "यह क्या मामला है ?"

"हुज़ूर ! मैंने इस शख्स को जाँच के लिये बुलाया था । यह वज़ारत के पहरेदारों से लड़ पड़ा है । एक को इसने मार डाला है और दूसरे को बहुत बुरी तरह घायल कर दिया है ।"

"आपने इसे क्यों बुलाया था ? क्या जाँच करना चाहते थे इससे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि यह यहाँ क्यों ग्राया है ?"

"इसने कोई हरकत की थी जिससे किसी किस्म की जाँच की ज़रूरत महसूस हुई थी ?"

"की तो कुछ नहीं। मगर मैं किसी किस्म की शरारत से पहले ही खबरदार होना मुनासिब समझता हूँ।"

"मगर हमारे राज्य में किसी को मनाही नहीं ग्रौर सैकड़ों लोग हर रोज़ ग्राते हैं ग्रौर जाते हैं। ग्राखिर इस एक के खिलाफ ग्रापको क्या शिकायत थी !"

"ग्राप इसे जानते हैं ?"

"हाँ। यह हमें मिलने ग्राया है ग्रौर इसकी हमसे एक मुलाकात हो चुकी है।"

"महाराज ! यह कौन है ?"

"ग्रभी हम बताना नहीं चाहते।"

"पर मैं यहाँ पर मुगलिया सल्तनत के नुमाइन्दे के तौर पर हूँ।"

"तो तुमने हमको मुगल सल्तनत के मातहत समझ रखा है ?"

"नहीं महाराज ! मेरा यह मतलब नहीं है। एक दोस्त-रियासत में भी नुमाइन्दे ग्राते-जाते हैं।"

"जैसे शहंशाह-ए-हिन्द गाजी ग्रौरंगज़ेब के राज्य में ईरान का राजदूत ग्राया था ग्रौर उसका तो भारी ग्रपमान किया गया था।"

"उस वक्त ईरान दोस्त नहीं था। वह दुश्मन राज्य था। उसने कन्धार पर कब्ज़ा कर रखा था।"

"ठीक है हमारे भी इलाके पर मुगल सल्तनत ने ग्रधिकार कर रखा है।"

"कौनसे इलाके पर ?"

"रोपड़ के इलाके पर।"

"तो ग्राप मुगल सल्तनत के नुमाइन्दे से वैसा ही सलूक करना चाहते हैं जैसा कि शहंशाह-ए-हिन्द ने शाह ईरान के सफीर से किया था ?"

"नहीं, गुलाम नबी साहब ! हम वैसी बदतमीज़ी नहीं कर सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसी शाह ईरान के साथ की गयी थी। मगर हम आपकी एक गलतफहमी को दूर करना चाहते हैं। हम आपको रोपड़ के इलाके का एक वाशिन्दा समझ अपनी रियाया मानते थे। इसीलिये आपको अपने राज्य का वज़ीर मुकर्रिर किया था।

"मगर आप कह रहे हैं कि आप शहंशाह-ए-हिन्द के नुमाइन्दे हैं। इससे हमसे गुस्ताखी हो गयी कि आपको अपने मातहत वज़ीर मुकर्रिर कर दिया था।

"इसलिये गुलाम नबी साहब ! आपको वज़ीर गलती से मुकर्रिर कर दिया था। इसके लिये हम मुगल सल्तनत से माफी माँगेंगे और आपको हम इज्जत के साथ सफारतखाने में रिहायश देंगे।"

"वह कहाँ है ?"

"अभी तक मुगल सल्तनत का कोई नुमाइन्दा हमारे राज्य में आया नहीं था। इसलिये कोई सफारतखाना बनाया नहीं गया। अब आपके मकान को ही सफारतखाने का नाम दे देंगे और अब आपको वही मान-प्रतिष्ठा दी जायेगी जो सल्तनते-हिन्द के नुमाइन्दे को दी जानी चाहिये।"

"और महाराज ! उस पठान के कत्ल का क्या हुआ ?"

"उस पठान के सम्बन्धियों को यहाँ अर्ज़ी देनी चाहिये। तब उस पर गौर होगा।"

"कौन गौर करेगा ?"

"हम आज शाम से पहले यहाँ का कोई वज़ीर मुकर्रिर कर देंगे और अर्ज़ी उसके सामने आनी चाहिये।"

"मगर मैंने अपनी वज़ारत के वक्त में इस आदमी को फाँसी का हुक्म दे रखा है।"

महाराज के कुछ कहने से पहले ही हरिहर ने कह दिया, "महाराज ! मैं इनके हुक्म के खिलाफ अर्ज़ी करता हूँ और इन्साफ के लिये प्रार्थना करता हूँ।"

"ठीक है। तुम्हारी अर्जी हम कल सुनेंगे।"

"तो मैं जाऊँ ?" हरिहर ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहाँ से धर्मशाला जा सकते हो, मगर बिलासपुर से बाहर नहीं जा सकते। अभी तो तुम दण्ड के अधीन हो। जब तुम्हारी अर्ज़ी की सुनवायी हो जाये और तुम बरी हो जाओ तब तुम जा सकोगे।"

"इस समय तक मेरी रक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये। वे पठान तो इन नुमाइन्दा साहब के कमरे में ही मेरी हत्या करने जा पहुँचे थे।"

"हाँ। हमारे पचास सुभट्ट तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिये धर्मशाला के बाहर नियुक्त किये जा रहे हैं।"

: १० :

उसी रात धर्मशाला पर पठानों ने आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण की सूचना तो धर्मशाला पर नियुक्त सुभट्टों को सायंकाल से पूर्व ही मिल गयी थी। सुभट्टों के नायक ने अपना भ्रम हरिहर को बताया तो हरिहर ने कहा, "और तुमको उनसे डर प्रतीत होता है ?"

"वे सब पाँच सौ के लगभग हैं और हम यहाँ केवल पचास हैं।"

"पर मैं तो अकेला ही पाँच सौ के बराबर हूँ। उनको आने दो फिर तुम देखोगे।"

"हमें हुक्म है कि आपको बिलासपुर से जाने न दिया जाये और ये तो आपको मारकर यहाँ से बाहर करना चाहते हैं।"

"तो यहाँ और हिन्दू सैनिक नहीं हैं ?"

"हैं तो, मगर वह सेनाध्यक्ष के अधीन हैं।"

"तो यह समाचार सेनाध्यक्ष के पास ले जाओ और उसे महाराज की आज्ञा सुना देना।"

इसका परिणाम यह हुआ कि एक सौ सैनिक और धर्मशाला की रक्षा के लिये आ गये। इस पर भी धर्मशाला सुरक्षित नहीं समझी जाती थी। सेना के सिपाही धर्मशाला के मुख्य द्वार पर खड़े थे। राजा के सुभट्ट धर्मशाला के भीतर हरिहर के कमरे के बाहर बैठे थे।

हरिहर ने सुभट्टों के नायक को कहा, "यदि तुम मेरी सम्मति मानो तो इन पठानों का सफाया किया जा सकता है।"

"कैसे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुममें से एक जासूस बनकर पठानों के शिविर को चला जाये और उनके वहाँ से चलने से पहले हमें सूचना दे दे। तब हम चुपचाप धर्मशाला के पिछले द्वार से निकल कुछ दूर अन्धेरे में खड़े रहेंगे और जब पठान हिन्दू सैनिकों पर आक्रमण करेंगे और युद्ध आरम्भ हो जाये तो हम पीछे से आक्रमण कर देंगे।"

नायक की समझ में बात आ गयी। धर्मशाला का एक सेवक पठानों के शिविर के बाहर भेज दिया गया। वह बारह बजे से पूर्व ही धर्मशाला में समाचार लाया कि पठान तीन सौ से ऊपर हैं और शिविर में एकत्रित हो अल्ला-हू-अकबर के नारे लगा रहे हैं।

इस पर हरिहर सुभट्टों को ले धर्मशाला के पिछले द्वार से धर्मशाला से निकलकर कुछ दूर एक खड्ड में उतर कर छिप गये।

बारह बजे के एक घड़ी के उपरान्त पठान पहुँचे और धर्मशाला के मुख्य द्वार पर पहुँच दक्षिणी ब्राह्मण को माँगने लगे।

सैनिक उनसे अभी झगड़ा ही कर रहे थे कि एक पठान ने जोश में तलवार निकाल ली और नारा लगा दिया, "अल्ला हू···" सब बोल उठे, "अकबर।"

हरिहर ने इस समय सुभट्टों को ले पठानों पर आक्रमण कर दिया। पठान दो ओर से मारे जाने लगे तो उन्होंने समझा कि पीछे से कुछ अन्य सैनिक आये हैं। वे घबरा उठे और भागने आरम्भ हो गये।

अपनी बड़ी-बड़ी तलवारों से पठान आसानी से पहचाने जाते थे और भागते हुए सुगमता से मारे जाते थे।

पठानों को पता नहीं चला कि कितने सिपाहियों द्वारा उन पर दोनों ओर से आक्रमण हो रहा है। वे समझे कि महाराज की पूर्ण सेना उन पर पिल पड़ी है।

वे भागे और आधे घण्टे में मैदान साफ हो गया। पीछे मशालें जलायी गयीं और घायलों की मरहम-पट्टी का प्रबन्ध होने लगा।

इस समय पता चला कि दस सैनिक मरे हैं। सुभट्ट कोई नहीं मारा। पन्द्रह-बीस घायल हुए हैं। पठान के हताहत दो सौ के लगभग थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन निकलने तक पठान शिविर खाली हो चुका था। सब पठान बिलासपुर छोड़ मैदानों की ओर चल दिये थे। शिविर में केवल घायल ही रह गये थे जो भागने में अशक्त थे।

दिन निकलने पर महाराज को सुभट्टों के नायक ने हरिहर की कारगुज़ारी सुनायी तो महाराज के मुख से निकल गया, "तो वह सत्य कहता था।"

"महाराज देव! क्या कहता था?" नायक ने पूछ लिया

"यही कि वह महाराज शिवाजी की सेना में युद्ध करता रहा है।"

"महाराज! उसने सबसे अधिक पठान घायल किये और मारे हैं।"

सेनाध्यक्ष ने भी धर्मशाला पर आक्रमण का समाचार बताया और साथ यह भी बताया, "मैंने पठानों के सरदार को सायंकाल बुलाकर पूछा था कि क्या वह बगावत करने पर तुले हैं? इस पर सरदार ने बताया था कि ऐसी कोई बात नहीं है। उनको राजा साहब के इन्साफ का पूरा भरोसा है।

"मैंने समझा कि वे आक्रमण नहीं करेंगे। इससे इत्मीनान हो मैंने एक सौ सिपाही वहाँ भेज दिये थे। पठानों ने दगा किया और रात को आक्रमण कर दिया।

"मुझे समाचार मिला है कि आपके सुभट्ट धर्मशाला से निकल धर्मशाला के पिछवाड़े की खड्ड में छिप गये थे और जब पठानों ने धर्मशाला के मुख्य द्वार की ओर आक्रमण किया तो उन्होंने खड्ड से निकल पीछे से पठानों पर आक्रमण कर दिया। इस कारण पठान घबरा कर भाग खड़े हुए। सुना है कि अब उनका पूर्ण शिविर खाली हो गया है। कुछ घायल वहाँ पड़े हैं। शेष सब जो भाग सकते थे, बिलासपुर छोड़ गये हैं।"

राजा भीमचन्द सेनाध्यक्ष से पहले हरिहर के कार्य की बात सुन चुके थे। उन्होंने सेनाध्यक्ष को कहा, "यह युक्ति उस दक्षिणी ब्राह्मण की ही थी और सुना है कि वह स्वयं भी तलवार लेकर युद्ध में सम्मिलित था।"

"अब क्या हुक्म है?" सेनाध्यक्ष ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम उस ब्राह्मण के विरुद्ध मुकद्दमा सुनेंगे और उसे उचित दण्ड अथवा पुरस्कार देंगे।"

मध्याह्न के समय दरबार किया गया और उसमें हरिहर की बात सुन उस पर गवाहियाँ ले उसे केवल मुक्त ही नहीं किया गया, वरंच राजा साहब ने उसे अपना मशीर-ए-आला नियुक्त किया।

हरिहर समझ गया कि उसे राज्य में धर्माधिकारी नियुक्त किया गया है। सायंकाल को समाचार मिला कि गुलाम नबी अपने हरम के साथ बिलासपुर से सरहिन्द को चला गया है।

अगले दिन हरिहर को गुलाम नबी के मकान में रहने के लिये हुक्म हुआ तो हरिहर ने उस मकान की शुद्धि करवायी। सारा मकान धोया-पोंछा गया और उसमें दुर्गा का पाठ कराया गया। साथ ही हवन हुआ और फिर रीति-रिवाज के साथ गृह में प्रवेश किया गया।

इसका यह प्रभाव हुआ कि राज्य में जन-जन यह समझने लगे कि कोई हिन्दू धर्म-कर्म करने वाला व्यक्ति राजा का मन्त्री नियुक्त हुआ है।

घर की शुद्धि हो ही रही थी और हरिहर अभी तीसरे दिन भी धर्मशाला में ही टिका था कि सुमेरसिंह अपने गाँव से लौट आया।

वह धर्मशाला में पहुँचा तो वहाँ की अवस्था देख चकित रह गया। धर्मशाला के बाहर और फिर भीतर हरिहर के कमरे के बाहर चोबे पकड़े दरबान खड़े थे। धर्मशाला के द्वार पर खड़ा वह वहाँ नियुक्त दरबानों को देखने लगा। एक दरबान ने उससे पूछ लिया, "यहाँ क्यों खड़े हो?"

"मैं अपने मालिक के पास आया हूँ।"

"क्या नाम है उसका?"

सुमेरसिंह ने स्मरण कर बताया, "यहाँ एक दक्षिणी ब्राह्मण हरिहर नाम के ठहरे थे। मैं उनका नौकर हूँ।"

दरबान हँस पड़ा और बोला, "तुम भीतर जा सकते हो।"

"पर आप लोग यहाँ किसलिये खड़े हैं?"

दरबान ने इसका उत्तर नहीं दिया और हाथ से संकेत कर दिया कि वह भीतर जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमेरसिंह भीतर गया और सीढ़ियाँ चढ़ हरिहर के कमरे के बाहर पहुँचा तो वहाँ भी दो दरबानों को खड़ा देख डर गया और फिर बोला, "पण्डित हरिहरनाथ से मिलना है।"

दरबान ने भीतर जा इत्तला की तो आज्ञा होने पर सुमेरसिंह को भीतर भेज दिया गया।

हरिहरनाथ ने सबसे पहले अपने मुंशी से पौण्टा के गुरुजी की बात सुनी। मुंशी ने बताया, "गुरुजी महाराज की विजय के उपरान्त सेना में बहुत वृद्धि कर रहे हैं और इतने लोग यहाँ पहाड़ों में रखने कठिन देख वह आनन्दपुर चले गये हैं। वहाँ उनके पिता नवम् गुरु का स्थान है। उनके सब सैनिक भी उनके साथ चले गये हैं।"

अतः हरिहर ने आनन्दपुर के समाचार जानने के लिये किसी उपयुक्त व्यक्ति को वहाँ भेजने का विचार किया।

वह अभी विचार ही कर रहा था कि सुमेरसिंह आ पहुँचा। उसे देख हरिहर ने प्रसन्नता प्रकट कर पूछा, "तो तुम आ गये हो ?"

"हाँ, पण्डितजी ! आपने मुझे नौकरी जो दी थी।"

"हम तो समझे थे कि तुम रुपये लेकर भाग गये हो। हमने तो तुम्हारे गाँव का नाम भी नहीं पूछा था।"

"पर हुजूर ! हम न तो झूठ बोलते हैं और न ही चोरी करते हैं। आपके दिये हुए रुपये अपनी माँ और पत्नी को दिये तो वह बहुत प्रसन्न हुई हैं और आपका लाख-लाख धन्यवाद करती थीं।"

"तो तुमने बताया था कि वे रुपये तुमको किसने दिये हैं ?"

"हाँ, पण्डितजी ! यदि यह न बताता कि रुपये कहाँ से आये, तो क्या बताता ? उनको विदित था कि राजा साहब की पराजय के उपरान्त किसी भी सैनिक को कुछ नहीं दिया गया।"

"और अब घर से कितने दिन की छुट्टी लेकर आये हो ?"

"पाँच वर्ष की। माँ कहती है कि तब मेरा गौना होगा।"

"ठीक है परन्तु तुम अपने वेतन के रुपये देने तो बीच में भी जा सकते हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परमात्मा आपको चिरंजीव करे। पर पण्डितजी, ये राजा के कर्मचारी यहाँ किसलिये बैठे हैं ?"

"तुम्हारा इनसे कोई मतलब नहीं। तुम मेरा एक काम करो।"

"बताइये ?"

"आज का दिन और रात आराम करो। कल बहुत प्रातः ही तुम्हें फिर एक यात्रा पर जाना होगा।"

"कहाँ ?"

"यह तुमको जाने के समय बताऊँगा और वहाँ पर काम भी बताऊँगा।"

नूरसिंह अपनी कोठरी में जाकर सो गया। रात के समय वह आया तो हरिहर ने उसे समझाया।

"तुम्हें आनन्दपुर जाना होगा। वहाँ गुरुजी महाराज की सेवा में कोई विश्वनाथ हैं अथवा नहीं, इसका पता करना। अगर वह मिल जायें तो उनसे पूछ लेना कि वह कहाँ के रहने वाले हैं ? यदि वह बतायें कि सूरत के हैं तो उनको मेरा पत्र दे देना।"

"पर पण्डितजी ! वे तो शत्रु हैं।"

"हाँ, वे शत्रु थे गुलाम नबी के। गुलाम नबी अब यहाँ से भाग गया है। इस कारण वे भी शत्रु नहीं रहे।"

"सत्य ?"

"हाँ। तुमने बताया था न, कि उसने तुमको तो निकाल दिया है, परन्तु पठानों को नहीं निकाला ?

"महाराज ने पठानों को निकाला है तो वह भी चला गया है।"

"यह तो बहुत अच्छा हुआ है। पर पण्डिजी, धर्मशाला का मुंशी बता रहा था कि आप महाराज के मन्त्री नियुक्त हो गये हैं ?"

हरिहर मुस्कराया और बोला, "तो तुमको यह पसन्द नहीं क्या ?"

"हुजूर ! मैं नापसन्द करने वाला कौन हूँ ?"

"तुम मेरे मन्त्री हो। जानते हो, तुम्हारे कहने पर ही मैंने पठानों को निकलवाया है और गुलाम नबी तो अपने आप चला गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ११ :

अब घटनायें द्रुत गति से घटने लगीं। राजा साहब ने अपना भय बताते हुए हरिहर को कहा, 'गुलाम नवी सरहिन्द गया है। वहाँ वह सूबेदार के कान भरेगा और यह सम्भव प्रतीत होता है कि मुगल सेना पहाड़ी क्षेत्र पर आक्रमण कर दे।"

"हाँ, यह सम्भावना तो है।" हरिहर ने गम्भीर भाव में कहा। उसने साथ ही यह भी कहा, "महाराज ! हमें गुलाम नवी के चले जाने के विषय में यहाँ से एक पत्र लिखना चाहिये। उस पत्र में मुगलों से मित्रता का सम्बन्ध बनाये रखने की बात कहनी चाहिये।"

"कौन मानेगा ?"

"जो मूर्ख होगा।"

"मुगल मूर्ख नहीं हैं।"

"मूर्ख हैं आपके पड़ोसी हिन्दू राज्य। यह पत्र उनको विश्वास दिलाने के लिये है। इससे हमारे मित्रों की संख्या बढ़ेगी और यदि आपके पहाड़ी राजाओं का संगठन बना रहा तो हमें लाभ होगा।"

"क्या लाभ होगा ?"

"यह निश्चय जानिये कि एक-न-एक दिन मुगलों का आक्रमण इस क्षेत्र पर होगा। कश्मीर मुगल राज्य में सम्मिलित कर लिया गया है और यह भी सम्मिलित करने का यत्न किया जायेगा। उस आक्रमण से पहले ही सब क्षेत्र के नरेशों को संगठित हो जाना चाहिये और उसका विरोध करने का यत्न करना चाहिये।

"यदि अभी तक इस क्षेत्र की ओर मुगलों का ध्यान नहीं गया तो वह इसलिये कि वे इस क्षेत्र से अधिक धनवान क्षेत्रों को अपने अधिकार में करने में लगे हुए थे। अब बीजापुर और गोलकुण्डा के क्षेत्रों में विजय के उपरान्त मुगल शहंशाह इधर ध्यान देगा। राजस्थान यहाँ से कम प्रलोभन उत्पन्न करता है। इस कारण मेरे विचार में इस क्षेत्र को विजय करना अधिक हितकर लगेगा और यदि आप संगठित न हो सके तो विजय राजस्थान से सुगम भी हो जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमचन्द को यह बात ठीक प्रतीत हो रही थी। इस पर भी उसे सन्देह था कि अन्य पहाड़ी राज्य भी संगठन बनाने के लिये तैयार होंगे। साथ ही राजा साहब ने पूछ लिया, "और गुरुजी के विषय में क्या उचित समझते हो ?"

"सुना है कि गुरुजी पौण्टा से अपना प्रस्थान कर आनन्दपुर चले गये हैं।"

"हाँ।"

"आनन्दपुर किसी समय विलासपुर राज्य में था ?"

"हाँ।"

"तो गुरुजी को आनन्दपुर में पाँव जमाने में सहायता करनी चाहिये। वास्तव में गुरुजी हमारे ही क्षेत्र को मुगलों से मुक्त कराने का यत्न कर रहे हैं।"

"हम उनकी सहायता सैनिक दृष्टि से करें अथवा न करें ?"

"हमें अपने सैनिक वहाँ नहीं भेजने चाहियें। इस पर भी अन्नादि अन्य आवश्यकताओं की वस्तुएँ यहाँ से भेजकर सहायता करनी चाहिये।"

"तो उससे मित्रता कर लेनी चाहिये। मुझे भय है कि गुरु गोविन्द राय मैदानी क्षेत्र जीत कर हमारी पूरी रियासत पर ही अधिकार न कर ले।"

"महाराज ! हमें उससे मित्रता रखनी चाहिये और विश्वास करिये कि एक धर्मगुरु एक मुसलमान सम्राट् से अधिक विश्वास योग्य सिद्ध होगा।"

राजा भीमचन्द के विचारों में परिवर्तन तो गुलाम नबी के व्यवहार से होने लगा था। मुगलों की नेक-नीयती पर गुलाम नबी के ही वक्तव्य ने भारी सन्देह उत्पन्न किया था। राजा साहब समझते थे कि केवल एक व्यक्ति यहाँ भेजकर राज्य का दर्जा कम करने का यत्न किया जा रहा है और कहीं वहाँ के सैनिक यहाँ आ गये तो सारा राज्य ही अधिकार में किया जा सकता है।

अतः उसने हरिहर को कहा, "तो गुरुजी के पास भी कोई पत्र भेजना चाहिये ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं इस दिशा में भी विचार कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि उनसे बराबरी का व्यवहार बना लेना चाहिये। कम-से-कम गुरुजी से सहानुभूति तो रखनी ही चाहिये।"

धन बटोरा जाने लगा। सैनिक भरती किये जाने लगे और अन्य पहाड़ी राजाओं से पत्र-व्यवहार किया जाने लगा।

एक सप्ताह के उपरान्त सुमेरसिंह आनन्दपुर से लौटा और विश्वनाथ का मराठी भाषा में लिखा पत्र लाया। हरिहर के पूछने पर सुमेरसिंह ने अपनी यात्रा का वृत्तान्त बता दिया—

"पण्डितजी ! मैं आनन्दपुर में मध्याह्न पूर्व ही पहुँचा था। वहाँ तो बहुत भीड़ थी। बहुत लोग एकत्रित हो रहे थे। प्रत्येक अपनी कमर में तलवार बाँधे हुए था। नगर में बहुत लुहारों की दुकानें हैं और सब पर तलवारें और भाले बनाये जा रहे थे। एक राही से मैंने पूछा कि गुरुद्वारा कहाँ है ?

"वह हँस पड़ा और बोला कि जिधर सब जा रहे हैं। मैं सबके साथ चल पड़ा। गुरुद्वारे में बहुत बड़ा आँगन था। उसमें एक ऊँचे तख्त पर एक चौकी रखी थी और उस चौकी पर एक पुस्तक रखी थी और एक वृद्ध व्यक्ति उस पुस्तक में से पढ़कर सुना रहा था। आँगन में कई सहस्र लोग एकत्रित थे और सब शान्त भाव से बैठे सुन रहे थे। तख्तपोश पर पढ़ने वाले के समीप ही एक चौकी पर एक युवा पुरुष पीली पगड़ी बाँधे बैठा था। शेष सब लोग भूमि पर बैठे थे।

"जब पुस्तक से पाठ समाप्त हुआ तो वह युवा पुरुष उठा और सब को आशीर्वाद दे तख्त से नीचे उतर दीवार के पीछे बने दरवाज़े में चला गया। मैंने पूछा, 'यह कौन था ?'

"समीप बैठे व्यक्ति ने विस्मय में मुझे मुख देख पूछ लिया, 'कोई नये आए प्रतीत होते हो ?'

'हाँ महाराज, परदेशी हूँ।' मैंने उत्तर में कहा।

"इस पर उस व्यक्ति ने मुझे बहुत ही प्रेमपूर्वक समझाकर बताया, 'यह दशम् सच्चे पादशाह हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझ गया। जब सब उठ गये और बाहर जाने लगे तो मैं वहाँ पर पहुँचा जहाँ पुस्तक रखी थी। मैंने पुस्तक पढ़ने वाले से ही पूछा, 'यहाँ कोई पण्डित विश्वनाथ रहते हैं ?'

"वह ग्रन्थ पढ़ने वाला तो विस्मय में मुख देख ही रहा था कि एक अन्य व्यक्ति बोल उठा, 'क्या काम है उनसे ?'

'काम तो उनको ही बताने का है।'

"इस पर वह व्यक्ति बोला, 'मेरे साथ आओ। मैं तुमसे विश्वनाथजी को मिला देता हूँ।'

"मैं उस व्यक्ति के साथ हो लिया। वह मुझे लेकर गुरुद्वारे के बाहर एक मकान में ले गया। मुझे बैठाकर पूछने लगा, 'किस विश्वनाथ से मिलना चाहते हो ?'

'जो सूरत के रहने वाले हैं।'

'वह मैं ही हूँ। कहाँ से आये हो ?'

'बिलासपुर से आया हूँ। वहाँ से पण्डित हरिहरनाथजी ने भेजा है। उन्होंने एक पत्र दिया है।'

'हाँ, दिखाओ पत्र।'

"अब मैंने कहा, 'आपने ठीक विश्वनाथ होने का प्रमाण तो अभी तक दिया नहीं।'

"एक क्षण-भर विचार कर उन्होंने कहा, 'मेरे मुख पर देखो और पहचानो।'

'तो वे आपके पुत्र हैं ? मैंने कहा, 'उनकी रूप-रेखा आपसे बहुत कुछ मिलती है।'

'हाँ। अब पत्र दिखाओ। वह बिलासपुर में कैसे पहुँच गया है ?'

"पण्डितजी ! मैंने जब आपका पत्र दिया और उन्होंने आपका लिखा पहचाना तो उठकर मकान के भीतर यह कहते हुए भागे, 'ऐ कल्याणी ! हरि का पत्र आया है।'

"पाँच मिनट में ही वही पण्डितजी और उनके साथ तीन स्त्रियाँ भीतर से निकल आयीं और मेरे सामने बैठ आपके विषय में पूछने लगीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमें दो तो मध्यम अवस्था की थीं और एक बहुत वृद्ध थी। एक स्त्री ने कहा, 'इस पत्र में तो यह लिखा है कि तुम हरिजी के विषय में बताओगे।'

"मैंने बताया, 'माताजी ! बहुत कुछ तो नहीं जानता। इतना विदित है कि एक दक्षिणी ब्राह्मण छ:-सात दिन पूर्व बिलासपुर की धर्मशाला में ठहरने के लिये आए थे। मुझसे दो-चार बात करने के बाद उन्होंने मुझे अपने पास नौकर रख लिया। मैं पण्डितजी से कुछ रुपये लेकर अपनी माँ और पत्नी को देने अपने गाँव चला गया। दो दिन बाद लौटकर आया तो बिलासपुर की कायाकल्प देख चकित रह गया। राजा साहब के वजीर गुलाम नबी भाग गये थे। पठान कुछ मार डाले गये थे और शेष वहाँ से भाग गये थे। अब पण्डित हरिहरजी राज्य के मन्त्री हैं और मुझे आपका पता करने भेजा है।'

"तीनों मातायें आपका समाचार पा आँखों से आँसू बहा रही थीं और बड़े पण्डितजी प्रसन्नवदन आँखें मूँदे बैठे थे।

"मैं दो दिन पण्डितजी के घर में रहा हूँ। उन्होंने मुझे खूब खिलाया-पिलाया है और बहुत सुख-आराम से रखा है।

"तीसरे दिन उन्होंने मुझे दस रुपये मार्ग-व्यय के लिये और एक घोड़ा यात्रा के लिये दिया है। माताजी ने मुझे पहनने की एक पोशाक दी है और एक पत्र दिया है।"

इतना कह सुमेरसिंह ने पत्र निकालकर हरिहर के हाथ पर रख दिया। हरिहर ने पत्र अपनी जेब में रख सुमेरसिंह को आराम करने के लिये भेज दिया और पत्र पढ़ने लगा। पत्र में लिखा था, 'प्रिय हरिहर ! यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम बिलासपुर में पहुँच गये हो। हमें ज्ञात था कि तुम शहंशाह के पास औरंगाबाद में हो।

'सुमेरसिंह से पता चला है कि तुम राजा के मन्त्री बन गये हो। यदि यह सत्य है तब तो तुम जाति का बहुत उपकार कर सकते हो। तुम राजा साहब से कहकर सब राजाओं की एक सभा बुलाओ और राजा साहब से स्वीकृति ले मुझे उन राजाओं से बातचीत का अवसर दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं उसमें कुछ उनके ही हित की बात करूँगा। सभा की तिथि निश्चय कर मुझे सूचित करना।

'सूरत का हालचाल मिला है अथवा नहीं ? पिछले वर्ष मैंने एक पत्र-वाहक यहाँ से भेजा था। वह वहाँ का सुख-समाचार लेकर आया था। सब ठीक हैं। छोटे का विवाह हो रहा है। यह समाचार था। आशा है कि अब तक विवाह हो चुका होगा।

'यहाँ पंजाब में तो भारी अत्याचार किया जा रहा है। पहले तो भूमि-कर बहुत अधिक माँग लेते हैं। जब वह नहीं दिया जा सकता तो सिपाहियों से उनकी हत्या करा दी जाती है। उनके स्थान पर वे नियुक्त कर दिये जाते हैं जो मुसलमान बन चुके होते हैं। यदि लगान न देने वाला मुसलमान बन जाये तो उसे किसी दूसरे गाँव में ले जाकर वहाँ की भूमि दिलवा दी जाती है।

'इस प्रकार मुगल राज्य इस्लाम के कंधों पर चढ़कर चल रहा है और इस्लाम अर्थ-लाभ के कंधों पर चढ़कर विस्तार पा रहा है।

'इसका जाल तोड़ना बहुत कठिन हो रहा है। ये मज़हब छोड़ने वाले प्रायः निर्धन और छोटी जातियों वाले होते हैं और जब वे इस्लाम स्वीकार कर लेते हैं तब वे हाकिमों की श्रेणी में सम्मिलित हो अपने ही भाइयों पर शासन करते हैं और वही कुछ उनके साथ करते हैं जो कुछ उनके स्वयं के साथ हुआ था।

'देखो हरि ! महाराष्ट्र और यहाँ की स्थिति में एक अन्तर है। यहाँ हिन्दुओं में सुधार की दिशा केवल सांस्कृतिक थी। इसका परिणाम यह हुआ कि सुधार आरम्भ होने पर यह धारणा बन गयी थी कि हिन्दू और मुसलमान दोनों में सुधार होने पर दोनों समुदाय एक हो जायेंगे और फिर राजनीतिक समस्या सुलझ जायेगी, परन्तु ऐसा नहीं हुआ।

'न तो हिन्दू सुधरे और न ही मुसलमान। राजनीतिक लाभ बन गया मज़हब के आधार पर। मुसलमानों में तो आरम्भ से ही मज़हब के कंधों पर सवार राजनीति चलती थी और राजनीति अपने वाहन मज़हब

—१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पोषण करती रही थी। अतः राजनीतिक कारणों से उन्होंने मजहब को पकड़ रखा है और उसे सुदृढ़ करने के लिये यत्न कर रहे हैं।

'हिन्दू ने सुधार का अर्थ यह समझा है कि सब मानव परमात्मा का स्वरूप हैं और मजहबी विचारों में इस प्रकार ले-दे हो सकती है जैसे कि भाई-भाई में सम्पत्ति का बँटवारा हो जाता है। वे ले-दे करते हुए दुर्बल होते चले गये।

'मेरा विचार है कि मजहब की बात को एक ओर रखकर राजनीति की समस्या सुलझानी चाहिये और राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिये हिन्दू को भी मजहब के कंधे पर चढ़ना चाहिये।

'मैं यही बात यहाँ गुरुजी के सिक्खों में उत्पन्न करने का यत्न कर रहा हूँ, परन्तु कठिनाई यह हो रही है कि हिन्दू न तो राजनीति को अपने मज़हब के कंधों पर चढ़ने देते हैं और न ही राज़नीतिक साधनों से मज़हब को सुदृढ़ करने का यत्न कर रहे हैं।

'मैं मज़हब को संस्कृति का नाम देता हूँ जिसमें बाहरी आडम्बर के लिये स्थान नहीं। इसका सम्बन्ध विचार और चरित्र से है, परन्तु दूसरी ओर राज्य एक व्यक्ति को मज़हब के बाहरी रूप के नाम से मानता है। विचार चाहे कितने अयुक्तिसंगत हों और चरित्र चाहे कितना हीन क्यों न हो।

'इससे इधर भी मजहब का अर्थ नाम, रूप और रंग हो रहा है। इस प्रकार एक भारी विभ्रम फैल रहा है।

'इस पर भी मैं इस बाहरी नाम, रूप और रंग वाले मज़हब को गौण मान राजनीति को आचार और विचार के साथ जोड़ना चाहता हूँ।

'अभी तो आनन्दपुर में एक ऐसा केन्द्र बना रहा हूँ जहाँ अपने विचारों को व्यक्त कर कार्य-रूप में ला सकूँ। तुरन्त विचार की बात यह है कि इस केन्द्र को वे ही विनष्ट करने न आ जायें जिनके हित के लिये इसका निर्माण किया जा रहा है।

'मुगल इस देश में सदा दुर्बल रहे हैं, परन्तु जितने इस समय दुर्बल हैं उतने पहले कभी नहीं थे। इन्होंने मुख में इतना बड़ा ग्रास ले लिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि ये न तो उसे निगल सकते हैं और न उगल सकते हैं। इस दुर्बलता के समय भी राजनीतिक दृष्टि से पीड़ित हिन्दू मुगलों के सहायक हो गये तो उसकी राजनीतिक दुर्बलता का लाभ उठा नहीं सकेंगे। ये पहाड़ी राज्य यही कुछ कर रहे हैं।

'मैं इस स्थिति का विरोध करना चाहता हूँ और उसके लिये ही तुमको इस दिशा में कार्य करने के लिये कहता हूँ।

'तुमसे मिलकर तुम्हारा पूर्ण वृत्तान्त जानने की इच्छा कर रहा हूँ। यदि राजाओं की सभा बुलायी जा सकी और उसमें मैं आ सका तो मेरी यह इच्छा भी पूरी हो जावेगी।'

: १२ :

विश्वनाथ जब दिल्ली से गुरु गोविन्द राय के साथ हरिद्वार और वहाँ से बिलासपुर राज्य में पौण्टा आया तो मार्ग में ही समस्या को समझ युवक गुरु को एक मार्ग पर लाने का यत्न कर रहा था और पौण्टा पहुँचते-पहुँचते वह समझ गया था कि मतभेद कहाँ है। गुरुजी को अपने पूर्वजों के इतिहास का ज्ञान था और वह अपने परिवार में मुगल राज्य द्वारा दो महान हत्याओं को स्मरण कर बदले की भावना से छटपटा रहा था।

जब गुरुजी को ज्ञात हुआ कि विश्वनाथ एक अति चतुर व्यक्ति है। साथ ही वह भी मुगल सम्राट् के अपने परिवार पर अत्याचार को अनुभव कर रहा है तो उसने उसे अपना साथी बना लिया और फिर दोनों में खुलकर बातचीत होने लगी।

"मैं कोई ऐसा अवसर चाहता हूँ जब कि मैं औरंगज़ेब को द्वन्द्व-युद्ध में ललकार सकूँ।"

"महाराज! यह सम्भव भी नहीं और हितकर भी नहीं।"

"इसमें कठिनाई को तो मैं समझता हूँ, परन्तु कोई अहित तो नहीं देखता।"

"यह इस कारण कि आपने कभी यह विचार ही नहीं किया कि वास्तविक झगड़ा क्या है? यदि मैं यह कहूँ कि हिन्दू समाज ने इसके तत्त्व को समझा ही नहीं तो अधिक ठीक होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो यह समझा हूँ।" गुरुजी महाराज ने कहा, "कि यह अति स्वार्थी और राज्य का लोभी राजा है और जहाँ से भी इसे अपनी राज्य-गद्दी को भय प्रतीत होता है, यह उसको विनष्ट कर देता है।

"यही बात मुझे अपने पूर्वजों से पता चली है। इसी कारण इसने पहले मेरे बाबा की और अब मेरे पिताजी को पकड़कर हत्या कर दी है।

"मैं समझता हूँ कि इस राज्य के लाभी राजा के भार से पृथ्वी को हल्का कर दिया जाये तो सब लोग जान जायेंगे कि ऐसा नहीं करना चाहिये। भविष्य में राजा लोग धर्म-गुरुओं पर इस प्रकार का अत्याचार नहीं करेंगे।"

विश्वनाथ ने कहा, "महाराज! यही मैं कह रहा हूँ कि आप वास्तविक झगड़े को समझे नहीं।

"देखिये, मैं बताता हूँ। इस समय दो बड़ी-बड़ी दरगाहें हैं जहाँ मुसलमान, पीर अपना शिष्य-मण्डल खड़ा कर रहे हैं। एक लाहौर में दातागंद बख्श की दरगाह है। वहाँ लाखों लोग प्रति वर्ष नज़र-न्याज़ लेकर जाते हैं। वहाँ जाने वालों में हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी। इसी प्रकार की एक दरगाह अजमेर में भी है। वैसे तो एक दिल्ली निज़ामुद्दीन में भी है, परन्तु वह इतनी विख्यात नहीं है।

"परन्तु गुरुजी महाराज! न तो पीरों ने राजा पर और न उन पर राजा ने कभी सन्देह किया है कि वे लोग राज्य को पलटने का यत्न कर रहे हैं अथवा कर सकते हैं और वास्तव में वे पलट भी नहीं रहे।

"परन्तु आपकी धर्म-गद्दी पर क्यों सन्देह हुआ है और क्यों इस प्रकार दो महापुरुषों का बलिदान कर दिया है? आचार-विचार का राज्य से बहुत गहरा सम्बन्ध है। जब राज्य भले व्यक्तियों का होता है तब राज्य में भले लोगों की मान-प्रतिष्ठा होती है। उनको धन-दौलत मिलता है और वे सुखी जीवन व्यतीत करते हैं और जब राज्य लोभी, स्वार्थी और व्यसनियों के हाथ में चला जाता है तो भले लोग उस राज्य का विरोध करने लगते हैं और राज्य उनका विरोध करता है।

"जबसे तुर्क, पठानों और मुगलों के हाथ में यहाँ का राज्य आया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब से ही वे लोग अपने देश के चलन के अनुसार यहाँ अपना व्यवहार चला रहे हैं। वहाँ के देशों का चलन यहाँ के अनुकूल नहीं है।

"यह भेद दो बातों में विशेष रूप से दृष्टिगोचर हुआ है। एक स्त्रियों के विषय में और दूसरे पूजा-पाठ के विषय में। उस देश में सुन्दर स्त्रियाँ रखने का अधिकार उसको प्राप्त है जो शक्तिशाली है। और वह शक्ति है राज्य-बल, धन-बल और पशु-बल। यह चलन यहाँ का नहीं है। यहाँ के लोग विवाह को एक पवित्र संयोग मानते हैं।

"साथ ही हमारे देश में पूजा-पद्धति के विषय में राज्य-बल अथवा अन्य भी किसी प्रकार का बल प्रयोग किया जाना पसन्द नहीं किया जाता। अफगानिस्तान, तुर्किस्तान और अरब में पूजा-पद्धति राज्यान्तर्गत मानी जाती है। वहाँ भी राज्य का इससे विशेष सम्बन्ध तब से हुआ है जब से उन देशों में इस्लाम का प्रचार हुआ है। यही कारण है कि मुगल, तुर्क और पठान मुसलमानों ने हिन्दुओं के मन्दिरों को गिराना, अपवित्र करना अथवा उनका धन-दौलत लूट लेना राज्य का काम समझ रखा है।

"यहाँ के नेक लोग इसे भी पसन्द नहीं करते। इस कारण यहाँ के भले व्यक्तियों का संगठन इन राज्यों को पसन्द नहीं। यह भी ठीक है कि यहाँ के भले व्यक्ति वैसा राज्य पसन्द नहीं करते जिनसे उक्त दोनों चलन चल रहे हैं।

"यही कारण है कि दातागंद बख्श की दरगाह पर लाखों इकट्ठे होने वाले न तो राज्य को बुरे प्रतीत होते हैं और न ही उनको राज्य बुरा प्रतीत होता है।"

"हाँ, यह तो मैं ही समझ रहा हूँ कि देश में पीर, पैगम्बर और गुरु तो और भी बहुत हैं। परन्तु राज्य हमारे ही पीछे क्यों पड़ा है?"

"आपके पूर्वज हिन्दुओं को नेक बनाने का यत्न कर रहे थे। इस कारण राज्य उनको पसन्द नहीं करता था।"

"वाह पण्डितजी! यह दादू, कबीर और तुलसी तो हमारे पूर्वजों से भी अधिक सिद्ध और भले लोग हो चुके हैं। उनके अनुयायी भी संख्या में अधिक हैं। वे सब बेचारे जप, तप, ध्यान और दूसरों का भला करने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे रहते हैं ।"

विश्वनाथ मुस्कराया और बोला, "हाँ, वे बेचारे सुखी हैं। वे बेचारे तो हैं, परन्तु वे भले लोगों में नहीं गिने जा सकते । भले लोगों का सबसे बड़ा लक्षण तो यह है कि वे बुराई का विरोध करें। यह बात दादू, तुलसी, कबीर और अन्य आचार्य नहीं करते थे। वे बुराई में सुधार तो करने का यत्न करते थे, परन्तु उसका विरोध नहीं करते थे । सुधार में तो बुरे को प्रेम तथा प्यार से समझाने की बात आती है और विरोध में बुरों को डण्डा दिखा अथवा संसार से बाहर निकाल देने का भय दिखाकर विरोध किया जाता है ।

"सिक्ख समुदाय विरोध करने लगा है और अन्य आचार्य अभी भी सुधार करने का ही विचार रखते हैं । यही कारण है कि आपको उस विरोध का फल मिल रहा है और सुधार करने वालों की अवहेलना की जाती है । ऐसी बात नहीं है कि सुधारवादियों को ठीक समझा जाता हो अथवा उनकी बात मान ली जाती हो ।"

"तो आप यह समझते हैं कि हमारे पूर्वजों की हत्या होनी ही चाहिये थी ?"

"नहीं महाराज ! मैं तो यह कह रहा हूँ कि राज्य का विरोध करने वालों को इस फल की आशा करनी ही चाहिये । भले लोगों को ऐसे परिणामों के लिये तैयार होकर ही घर से निकलना चाहिये, परन्तु बात तो इस विषय पर हो रही थी कि यह विरोध कैसे किया जाये ? जो उपाय आप मन में विचार कर रहे हैं वह उपयुक्त नहीं है । उससे कुछ लाभ नहीं होगा ।"

"तो क्या किया जाये ?"

"हिन्दू समाज में शक्ति उत्पन्न की जाये । वह शक्ति समाज में चेतना उत्पन्न करने से होगी । चेतना का लक्षण है संवेदना । हिन्दू समाज में चेतना नहीं रही ।"

"क्यों नहीं रही ?"

"इन साधु, सन्त, महात्माओं के अयुक्ति-संगत प्रचार थे । ये बुरे-भले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों में परमात्मा की उपस्थिति मान स्वयं कष्ट भोग शत्रु में के परमात्मा को प्रेरणा देना चाहते हैं।"

"तो क्या यह बात ठीक नहीं ?"

"यह बात गलत है। यद्यपि परमात्मा सब प्राणियों और पदार्थों में व्यापक है तो भी यह प्राणियों की कार्य करने की स्वतन्त्रता में बाधा नहीं डालता। सब प्राणियों में परमात्मा के अतिरिक्त एक जीवात्मा रहता है जो कार्य करने में स्वतन्त्र है। भगवद्गीता में इसको इस प्रकार लिखा है कि प्राणी कार्य करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है। वह कार्य करने वाला जब बुरे कार्य करता है तो उसके बुरे कर्म का फल भी तो देना चाहिये। भले लोग यही करने के लिये इस संसार में उत्पन्न होते हैं।"

"और यही तो मैं कह रहा हूँ कि मुझे अपने पूर्वजों की हत्याओं का बदला लेना चाहिये।"

"यह बदला किसी को भले ही वह शहंशाह हो, मार डालने से तो लिया नहीं जा सकता। उस मानसिक अवस्था का विनाश करना चाहिये जिससे भले लोगों की हत्या होती है।

"देखिये, गुरुजी ! जिन विदेशों से ये लोग आये हैं, उन देशों का चलन ही हमारे सब कष्टों का कारण है। उस चलन को मिटाना चाहिये। मुगल राज्य उस चलन को चला रहा है। अतः मुगल राज्य को बदलना ही हमारा काम है।"

विश्वनाथ और गुरु गोविन्द राय में यह वार्त्तालाप चलता रहा था और अन्त में गुरुजी महाराज यह समझ गये थे कि एक-दो व्यक्तियों की हत्या से कुछ नहीं बनेगा। वास्तविक बात है कि वह चलन रोका जाये जिसके कारण वे हत्याएँ हुई हैं। मुगल सरकार उस चलन को प्रोत्साहन दे रही है जो इस देश के रहने वालों को पसन्द नहीं। इस कारण मुगल राज्य पलट देना चाहिये।

अब पौण्टा में रहते हुए मुगल राज्य को पलटने के लिये साधन जुटाये जाने लगे। कुछ वर्ष तक वहाँ के राजा भीमचन्द और नहान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि राज्यों के नरेशों से सम्बन्ध अच्छे रहे, परन्तु बीजापुर और गोलकुण्डा के पराजित और विनष्ट होते ही उत्तरी भारत में विरोधी शक्तियों को विनष्ट करने के आदेश जारी हो गये।

गुलाम नवी का बिलासपुर में जाकर रहना तथा वहाँ का वज़ीर बन काम करना उसी शाही आदेश का परिणाम था।

गुलाम नवी बहुत ही चतुर व्यक्ति माना जाता था और उसने अपनी चतुराई का प्रमाण दो प्रकार से दिया। एक तो पहाड़ी राजाओं का गुट्ट गुरु गोविन्द राय के विरुद्ध बना दिया और दूसरा यह कि गुरु की सेना में कार्य करने वाले पठानों को बरगला कर बिलासपुर में बुला लिया।

विश्वनाथ जब से पौण्टा में आया था, वह इन पठानों को सन्देह की दृष्टि से देखता था। इसी कारण वह वहाँ के हिन्दुओं को युद्ध करने की शिक्षा दे रहा था। कठिनाई यह थी कि गुरुजी के शिष्यों में प्रायः छोटी जातियों के लोग और छोटे-छोटे व्यवसाय करने वाले थे। उन जातियों के लोग गुरुजी के शिष्यों में नहीं थे जिनके परिवारों की परम्पराएँ युद्धों में सम्मिलत होना था।

इनमें से भी विश्वनाथ ने एक सेना तैयार कर उनमें लड़ने-मरने की भावना उत्पन्न कर दी एवं शारीरिक शिक्षा दी जाने लगी।

भंगनी गाँव के पास युद्ध हुआ। वहाँ पठानों के शौर्य का अनुमान लग गया। बिना विचार का आधार लिये केवल वेतन पर लड़ने वालों की व्यर्थता का ज्ञान हो गया।

भंगनी के युद्ध के उपरान्त सेना में विशेष विकास की आवश्यकता अनुभव हुई और पौण्टा में विकास के लिये स्थानाभाव के कारण यह उचित समझा गया कि आनन्दपुर में उतर आया जाये।

आनन्दपुर का क्षेत्र पहले बिलासपुर राज्य में था, परन्तु शाहजहाँ के काल में यह मुगल क्षेत्र में सम्मिलित कर लिया गया था। अतः आनन्दपुर में पहुँचते ही वहाँ पर दुर्ग बना लिया गया।

गुरु तेग बहादुर तो एक शान्तिप्रिय गुरु थे। वह राज्य के साथ किसी प्रकार का झगड़ा करना नहीं चाहते थे। वह यह तो चाहते थे कि हिन्दू-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज में स्वाभिमान जागे और वह अपने स्वत्व की रक्षा करने पर कटि-बद्ध हो जाये, परन्तु नवम् गुरुजी के मन में ऐसा विचार नहीं था कि राज्य का सशस्त्र विरोध किया जायेगा। यह दशम् गुरुजी के मन की ही बात थी कि सिक्ख समुदाय की ओर से अपने स्वत्व की रक्षा के लिये सशस्त्र प्रबन्ध भी करना होगा।

यही कारण था कि आनन्दपुर में दुर्ग का निर्माण आरम्भ हो गया। जिस समय हरिहर का नौकर सुमेरसिंह आनन्दपुर आया, उन दिनों विश्वनाथ की नीति का प्रभाव हो रहा था। यह बात विख्यात होने लगी थी कि मुगल और पठान जो अजेय समझे जाते थे, वे रेत के पहलवान हैं। साथ ही सामान्य हिन्दू गुरुजी के चारों ओर एकत्रित हो युद्ध-विद्या को सीखने लगे थे।

जब सुमेरसिंह आया और हरिहर का पत्र लाया तो हरिहर के मन्त्री बनने का वृत्तान्त पढ़ा गया। विश्वनाथ गुरुजी को यह समाचार देने चल पड़ा।

विश्वनाथ ने हरिहर का संक्षिप्त वृत्तान्त बताकर उसके बिलासपुर में मन्त्री नियुक्त हो जाने की बात बतायी तो यह विचार होने लगा कि किस प्रकार पहाड़ी क्षेत्र का संयुक्त मोर्चा तैयार किया जाये?

गुरुजी की अनुमति से ही हरिहर को यह लिखा गया था कि वह पहाड़ी क्षेत्र के राजाओं की एक सभा का आयोजन कराये और उसमें विश्वनाथ को गुरुजी के प्रतिनिधि के रूप में आमन्त्रित करे।

हरिहर ने राजा बिलासपुर को इस बात पर राज़ी कर लिया कि बिलासपुर में तुरन्त एक सभा का आयोजन हो जिसमें सब पहाड़ी क्षेत्र के राजाओं को बुलाया जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

बिलासपुर में पच्चीस से अधिक छोटे-मोटे राजाओं की सभा हुई। यह सभा गुप्त थी और केवल राजा साहब के किसी घर में किसी संस्कार के समारोह के सम्बन्ध में ही मित्रों का एकत्रित होना प्रसिद्ध किया गया।

इस सभा में हरिहर ने सरहिन्द के सूबेदार के मनोनीत व्यक्ति गुलाम नबी का बिलासपुर का स्वयं राजा बनने के प्रयास का वृत्तान्त बताया। उसने बताया कि किस प्रकार उसने पठानों की सहायता से स्वयं को राजा से भी प्रबल घोषित करने का प्रयत्न किया।

पठानों को भगाया गया तो गुलाम नबी स्वेच्छा से चला गया और अब वह सरहिन्द में सैनिक तैयारी करा रहा है। स्पष्ट रूप में वह तैयारी इस क्षेत्र पर आक्रमण करने के लिये है।

गुरु गोविन्द राय के प्रतिनिधि विश्वनाथ का भी वक्तव्य हुआ। उसने पूर्ण देश में मुगलों के राज्य का हिन्दुओं पर अत्याचार का विस्तृत वृत्तान्त बताया। उसने बताया कि किस प्रकार सैकड़ों मीलों की यात्रा कर हरिद्वार पहुँच यात्री गंगा माई के दर्शन करने से रोक दिये जाते हैं; क्योंकि वह सवा छः रुपये प्रति यात्री का कर दे नहीं सकते।

विश्वनाथ ने बताया कि एक दक्षिण का परिवार जिसमें लगभग बीस प्राणी थे। उनसे जब एक सौ पच्चीस रुपये कर माँगा गया और जब वे इतना अधिक कर नहीं दे सके तो उनको गंगा माई के दर्शन करने से रोका गया। वे बेचारे जो सैकड़ों मील की यात्रा करके वहाँ आये थे, हरिद्वार से पाँच मील के अन्तर पर रोक दिये गए और वे बेचारे अपने इष्टदेव के दर्शन से वंचित पाँच मील दूर से ही 'हर हर गंगे' कहकर लौटने वाले थे कि उनके इस नाद पर भी आपत्ति की गयी और जब वे 'हर हर गंगे'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहने से नहीं रुके तो घुड़सवार सिपाहियों को उन पर छोड़ दिया गया और घोड़ों के पाँव-तले कुचल डाले गये। यह बात वहाँ प्रायः नित्य होती है।

विश्वनाथ की ओजस्वी वाणी ने एक वार तो राजाओं के रक्त में गर्मी उत्पन्न कर दी और इस वक्तृता के उपरान्त यह निश्चय हो गया कि मुगलों को कर नहीं दिया जायेगा और सब मिलकर उनके आक्रमण का विरोध करेंगे।

भंगनी पर गुरुजी की विजय ने उनकी सहायता का मूल्य बढ़ा दिया था। इस पर विश्वनाथ ने बताया कि गुरुजी पाँच सहस्र योद्धा मैदान में ले आयेंगे, तो एक संयुक्त मोर्चा निर्माण हुआ। गुरुजी को इस मोर्चे का नेता बनाया गया और युद्ध की तैयारी होने लगी।

इस युद्ध में विश्वनाथ युद्ध की योजना का संचालक बन गया। सारी सेना का सेनापति गुरु गोविन्द राय था। साथ ही सबसे अधिक सेना गुरुजी महाराज की थी।

दूसरी ओर सरहिन्द के सूबेदार ने इन पहाड़ी राजाओं के विद्रोह का समाचार लिखकर औरंगाबाद भेज दिया।

सरहिन्द सूबे के गुलाम नबी का बयान भी लिखकर भेजा गया। उसमें लिखा था कि, 'बिलासपुर में एक दक्षिणी ब्राह्मण जो अपने-आपको महाराज शिवाजी का भूतपूर्व अंगरक्षक कहता है, आया है और वही यहाँ राजाओं का संगठन बना रहा है।'

इस पत्र को पढ़कर तो औरंगजेब के रोंगटे खड़े हो गये। अभी तक शम्भु जी से पार नहीं पाया जा रहा था। शहंशाह समझ रहा था कि उत्तर में भी एक नया शिवाजी निर्माण किया जा रहा है।

अत: उसने तुरन्त शाह आज़म को नासिक से वापस बुला उत्तर की ओर रवाना कर दिया। दिल्ली से भी दो हज़ार सैनिकों को पहले ही सरहिन्द को चलने का हुक्म हो गया।

शाह आज़म को जब हुक्म हुआ कि उसे तुरन्त पंजाब में सरहिन्द जाकर बिलासपुर के राजा तथा उसके साथियों को राहे-रास्त पर लाना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो आज़म ने बताया, "अब्बाजान ! इस वक्त मेरे यहाँ से जाने से दक्षिण का सब बना-बनाया काम बिगड़ जायेगा । मैं समझता हूँ कि अगर मुझे दो साल तक इधर और रहने दिया जाये तो मैं मराठा राज्य को खतम कर सकूँगा ।"

"यह हम खुद कर लेंगे । अब मैं इस उम्र में डेढ़ हज़ार मील का सफर नहीं कर सकता । इसलिये तुमको भेज रहा हूँ एक बात और है । ऐसा पता चला है कि तुम्हारा मोदी हिदायत उल्ला वहाँ पहुँच गया है, इसलिए तुमको हुक्म दिया जाता है कि उसको पकड़ कर हमारे पास भेज दिया जाय ।"

"अब्बा जान ! वह वहाँ कैसे चला गया है ? वह तो आपके पास था ?"

"हमसे उसने सूरत जाने की छुट्टी माँगी थी । हमने छुट्टी नहीं दी तो वह नाराज़ होकर चला गया ।"

'पर अब्बा जान ! उसे छुट्टी क्यों नहीं दे रहे थे ? उसकी तबीयत अपनी बीवी से मिलने की होगी । यह तो आपने सख्त बेइन्साफी की है । आप इस वक्त पैंसठ साल के होने पर भी बिना बीवी के नहीं रह सकते, वह तो चार वर्ष से घर ही नहीं गया था ।"

"यह बात नहीं थी आज़म । एक तो हम उसे चार साल की तनख्वाह देना चाहते थे । वह बीस हज़ार रुपया बनती थी, हमारे पास इतना रुपया नहीं था । दूसरे, वह कहता था कि उसकी एक महबूबा यहाँ है । हम उसका पता करना चाहते थे । इसलिए उसे रोक रखा था ।"

"और आपको यकीन आ गया था कि उसकी कोई महबूबा यहाँ पर थी ?"

"बात यह है कि बूढ़े आदमी को अपनी मलकीयत के लुट जाने का डर हमेशा लगा रहता है । इस औरंगाबादी की जवानी देख हमें उस पर शक हो गया था ।"

"तो जाँच की है ?"

"हाँ । हमारा शक बे-बुनियाद साबित हुआ है । महल के सब लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको पाक, साफ और ईमानदार आदमी बताते हैं।"

"यह तो ठीक नहीं हुआ। क्या पंजाब में भी मराठा हुकूमत की तरह की बगावत खड़ी होगी ?"

"इसीलिये तुम्हें वहाँ भेज रहा हूँ।"

हिदायत के विलासपुर में होने की सूचना पा आज़म चल पड़ा, परन्तु उसके सरहिन्द पहुँचने से पहले ही दिल्ली के सिपाही वहाँ पहुँच गये थे और उनको साथ लेकर गुलाम नबी बिलासपुर जीतने के लिये चल पड़ा था।

शाह आज़म के पहुँचने से पहले ही मुठभेड़ हो गयी। नादौन में दोनों सेनाएँ आमने-सामने आ गयीं और रात आराम कर प्रातः युद्ध आरम्भ हो गया।

इस युद्ध में चाल विश्वनाथ की थी। वह स्वयं गुरुजी की सेना से पाँच सौ सैनिक ले पिछली रात ही दस मील का चक्कर लगा मुगल सेना के पीछे जा पहुँचा था। दिन निकलने पर वह मुगल सेना के पीछे तीन मील के अन्तर पर पहुँच गया था। उसने अपनी सेना को समझा दिया था कि जब तक आक्रमण न हो जाये तब तक उन्हें 'अल्ला-हू-अकबर' के नारे लगाते रहना है।

इन नारों से आस-पास के गाँव वाले यही समझ रहे थे कि वह मुगल सेना की एक टुकड़ी है जो किसी कारण से पीछे रह गयी है अथवा किसी विशेष उद्देश्य से पीछे रखी गयी है।

विश्वनाथ ने अपने पाँच सौ योद्धाओं को दो घण्टे आराम करने के लिये कह दस बजे के लगभग मुगल सेना के पीछे पहुँच जाने के लिये गति दे दी। सैनिकों को आज्ञा थी कि वे तब तक 'अल्ला-हू-अकबर' के नारे लगायेंगे जब तक कि उनको नारा बदलने की आज्ञा नहीं होगी। जब यह टुकड़ी मुगल शिविर में से गुज़र रही थी तब भी 'अल्ला-हू-अकबर' के नारे लग रहे थे।

उस समय शिविर में सिपाहियों की बीवियाँ, बच्चे, पेशावर स्त्रियाँ तथा उनके दलाल ही थे। वे समझे कि मुगल सेनाध्यक्ष ने जान-बूझकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन लोगों को पीछे मैदाने-जंग में पहुँचने के लिये कहा है।

अतः किसी को सूझी नहीं कि यह गुरुजी के सैनिक युद्ध का वारा-न्यारा करने वाले हैं। जब यह टुकड़ी मुगल सेना से एक सौ गज़ के अन्तर पर पहुँची तो एकाएक 'अल्ला-हू-अकबर' के स्थान 'हर-हर महादेव' और 'चण्डी महारानी की जय' के घोष होने लगे।

परन्तु इस समय दूसरी ओर घमासान युद्ध हो रहा था और किसी को अवकाश नहीं था कि पीछे से आने वाले सैनिकों के विषय में विचार करे। परन्तु ये लोग तरोताज़ा थे और दूसरी ओर के सैनिक चार घण्टे के युद्ध से थकावट अनुभव करने लगे थे।

'हर हर महादेव' के नारे से उत्साहित जब गुरुजी के सैनिकों ने पीछे से आक्रमण किया तो मुगल सेना में भगदड़ मच गयी। बहुत से सिपाहियों को तो यही लगा कि पहाड़ी सेना ने उनके शिविर पर अधिकार कर लिया है और उनकी स्त्रियों पर उनका अधिकार हो गया है। ये लोग शिविर की ओर भाग खड़े हुए।

मुगल सेना में ऐसी भगदड़ मची कि दो बजे तक मैदान राजाओं के संघ के हाथ में आ गया। राजाओं की ओर से गुरुजी की सेना अधिक थी। वे तो जानते थे कि क्या हुआ है? किन्तु दूसरे राजा इतनी सुगमता से विजय प्राप्त होती देख चकित थे।

नादौन के युद्ध में राजाओं के शिविर में अभी विजय की ख़ुशी मनायी ही जा रही थी कि उन्हें सूचना आ गयी कि मुगल सेना अपने शिविर में एकत्रित हो रही है। विश्वनाथ ने कहा, "उनकी इतनी हानि हुई है कि उनको दो-तीन दिन पुनः संगठित होने में लगेंगे और हम एक रात-भर आराम कर प्रातः चार बजे सूर्योदय से पूर्व ही उनके शिविर पर आक्रमण कर देंगे।" अतः सेना को खाने-पीने और आराम करने की स्वीकृति मिल गयी। सबको कानों-कान यह सूचना थी कि प्रातः चार बजे मुगल शिविर पर आक्रमण होगा और सिपाही सुनते थे तथा मन-ही-मन हँसते थे कि बहुत मज़ा रहेगा जब मुगल सिपाहियों को अपनी पत्नियों के साथ सोये-सोये जाकर जगायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायं गुरुजी के शिविर में सूचना आयी कि राजा साहब नाहन के शिविर में सब राजे एकत्रित हो रहे हैं और किसी प्रकार की गोष्ठी कर रहे हैं। गुरुजी को उस गोष्ठी में बुलाया नहीं गया था।

विश्वनाथ को चिन्ता तो लगी, परन्तु यह विचार कर कि हरिहर वहाँ है, यदि कुछ विशेष बात होगी तो वह अवश्य सूचित करेगा, उन्होंने इस पर अधिक चिन्ता व्यक्त नहीं की।

मध्य रात्रि के समय सूचना आयी कि राजा लोग अपने-अपने शिविर भंग कर अपने-अपने राज्यों को जा रहे हैं। इस समाचार से तो जहाँ विस्मय हुआ वहाँ दुःख भी हुआ।

विश्वनाथ ने अपने एक विश्वस्त सेवक को राजा बिलासपुर के शिविर में पहुँच हरिहर से वहाँ का समाचार प्राप्त करने का यत्न किया। उत्तर में हरिहर स्वयं आया और उसने बताया कि नाहन के राजा को मुगल सेनाध्यक्ष की ओर से किसी प्रकार का आश्वासन दिया गया है और उसने बहुत से राजाओं को समझा-बुझाकर युद्ध बन्द करने की सम्मति दे दी है। बिलासपुर और उनके पड़ोसी कुछ राजे अभी तक भी भयभीत हैं और मेरी सम्मति है कि पूर्व निश्चयानुसार मुगल शिविर पर प्रातः धावा बोल दिया जाये। वहाँ के सैनिक साथ देंगे।

विश्वनाथ को हरिहर की योजना पसन्द आयी और प्रातः चार बजे गुरुजी की सेना ने मुगल शिविर पर धावा बोल दिया। गुरु सेना का साथ देने के लिये केवल बिलासपुर की सेना थी। जो राजे रात शिविर भंग नहीं कर सके थे, वे भी इस समर में भाग लेने नहीं आये।

इस आक्रमण में मुगल सेना की अपार हानि हुई, परन्तु दूसरी ओर गुरु सेना के अतिरिक्त अन्य कोई भी राजा साथ नहीं रहा था। बिलासपुर की सेना भी साहस छोड़ चुकी थी। उनके सब साथी राजाओं की सेनाएँ वापस पहाड़ों की ओर जा रही थीं।

गुरुजी के शिविर में राजा भीमचन्द ने स्वयं पहुँचकर अपनी सेना की मनःस्थिति का वर्णन किया तो विश्वनाथ ने पूछ लिया, "राजा साहब ! आप क्या चाहते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भला राजा बिना सेना के क्या कर सकता है ?"

विश्वनाथ समझ गया और उसने गुरुजी का विचार बता दिया। उसने कहा, "गुरुजी को अपने लिये कुछ लेना-देना नहीं। यदि मैदानों में कुछ क्षेत्र से मुगल भगाये जाते तो लाभ आप राजाओं को होने वाला था।"

राजा साहब बिलासपुर ने कहा, "हमारी जन-शक्ति इतनी कम है कि हम लोग आशा नहीं कर सकते कि हम अपार मुगल सेना का विरोध कर सकेंगे।"

"ठीक है। आप भी जा सकते हैं।"

: २ :

प्रातः की समर के उपरान्त मध्याह्न के समय गुरुजी के सैनिक अपने शिविर में लौट मुगलों पर हँसी-मज़ाक उड़ा रहे थे कि मुगल सेना से एक सैनिक श्वेत पताका लिये आ पहुँचा। पता करने पर उसने बताया कि वह गुरुजी महाराज के नाम एक पत्र लाया है।

उसे विश्वनाथ के सामने उपस्थित किया गया तो शान्तिदूत ने एक पत्र दे दिया। पत्र शाह आज़म का था। गुरुजी के नाम इस पत्र में उसने लिखा था—

'मुगल समर राजाओं के खिलाफ था। इसका ताल्लुक गुरुजी की धार्मिक कार्रवाही के खिलाफ नहीं। इसलिये अगर गुरुजी चाहें तो अपना कोई काबिले यकीन आदमी भेज दें तो हम उससे बात कर वायदा कर देंगे और वह वायदा लिखकर दे देंगे।

'हम बिलासपुर के वज़ीर से भी बातचीत कर राजा साहब के बारे में अपना इरादा बताना चाहते हैं।'

इस पर विचार होने लगा कि इस पत्र में कितनी सच्चाई है अथवा कितना फरेब है ? हरिहर राजा बिलासपुर का शिविर छोड़ गुरुजी के शिविर में आ गया था। उसे बुलाया गया और विचार होने लगा।

हरिहर ने कहा, "शाह आज़म के इधर आ जाने से स्थिति में परिवर्तन हुआ है। अवश्य राजा साहब नाहन को विश्वास दिलाया गया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मुगलों की सेना बहुत बड़ी संख्या में आ रही है और उनकी पराजय निश्चय है।"

गुरुजी का भी यह विचार था कि बातचीत तो करनी चाहिये। गुरुजी के पास किसी प्रकार की राज्यसत्ता नहीं थी। भूमि-कर इत्यादि प्राप्त नहीं होता था। पूर्ण आय भक्तों के चढ़ावे तथा भेंटों से प्राप्त होती थी।

जब यह विचार हुआ तो हरिहर ने स्वयं शाह आज़म से मिलने के लिये जाना स्वीकार कर लिया।

मुगल शान्तिदूत के साथ ही हरिहर एक श्वेत पताका हाथ में लिये हुए मुगल शिविर में जा पहुँचा।

शाह आज़म हरिहर को देख खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए बोला "तो अब्बा जान के दोनों बेटे अब एक-दूसरे के खिलाफ लड़ेंगे?"

"मगर भाई जान! जंग के लिये इधर से फौज नहीं आयी। आपकी ही फौज ने चढ़ाई की है। यह तो आप बताइये कि आप अपने पुरखों की रीति-रिवाज चलायेंगे या अब खतम करेंगे?"

"तो यह हमला जो आज अलख सुबह मुगल सिपाहियों के अपनी बीवियों की संगत के समय किया गया था, तुमने नहीं किया था?"

"जहाँपनाह! सरहिन्द से पचास मील चलकर इस मैदान में फौज लेकर हम नहीं आये थे। यह तो आपके सिपाही ही इतनी तकलीफ कर यहाँ पहुँचे थे।

"सुना था कि मुगल सिपाही सुबह के वक्त लड़ाई करते हैं और रात को अपनी बीवियों से झगड़ा करते हैं। यही देखने के लिये बहुत सुबह हमला किया गया था।"

"खैर छोड़ो। तुमने यह साबित कर दिया है कि तुम सचमुच शिवाजी की फौज में रहे हो। यह चाल तो उसी की है।"

"हाँ भाई जान! यह बहुत कारगर होती है।"

"देखो, लाहौर से बीस हज़ार सिपाही आ रहे हैं। जो लोग बागी

—१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं उनको तो मैंने करों में थोड़ी रियायत देकर वापस कर दिया है और यह गुरुजी बेचारे खुदा दोस्त हैं। इनके साथ हमारा झगड़ा नहीं।

"दूत इसी गर्ज़ से भेजा था कि अगर गुरुजी आनन्दपुर लौट जायें तो हम उनसे झगड़ा नहीं करेंगे। वह इन्सानी रूहों की रहनुमाई के काम करें। हम मुल्क में हुकूमत करेंगे। दोनों में लड़ाई की कोई वजह नहीं।"

"तो भाई जान! एक बात करिये, आनन्दपुर और लौहगढ़ में हमें अपनी हिफाज़त के लिये किले बनाने की इजाज़त लिख दें तो हमें आपसे लड़कर क्या लेना है?"

"किले बनाने में क्या हानि है? शर्त यह है कि आस-पास के क्षेत्र की भूमि का लगान मुगल लेंगे।"

"स्वीकार है। अगर यह लिखकर दे दिया जाये तो गुरुजी की फौज वापस आनन्दपुर लौट जायेगी।"

"दे देंगे। परन्तु तुम लिखकर दो कि लगान हम वसूल करेंगे।"

"मैं गुरुजी तो हूँ नहीं। फिर भी मैं यकीन दिलाता हूँ कि मैं गुरुजी को यही राय दूंगा।"

"अच्छा, अगर गुरुजी मुगल राज्य से झगड़ा न करने की बात मान जायें तो हम भी यह कार्यवाही यहीं रोक देंगे।"

"ठीक है। तो भाई जान, अब मैं जाऊँ?"

"इस सुलहनामे के बाद तुमको मेरे साथ चलना होगा।"

"कहाँ?"

"औरंगाबाद।"

"वहाँ क्या है?"

"अब्बा जान शहंशाहे-हिन्द हैं।"

"मैं अब वहाँ नहीं जाऊँगा।"

"क्यों?"

"एक तो मेरे चार वर्ष की तनख्वाह मुझे मिलनी चाहिये और दूसरा औरंगाबाद में मेरी अम्मी को मेरे साथ आकर रहने की इजाज़त होनी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो वहाँ चलकर ही हो सकता है, यहाँ रहते कैसे होगा ?"

"शहंशाह से मेरी सलाम कहियेगा और कह दीजिये कि अब मैंने राजा साहब बिलासपुर की नौकरी छोड़ दी है और अपने घर सूरत को जा रहा हूँ। मगर अव्वा जान चार साल की तनख्वाह वहाँ भेज दें तो मैं फिर नौकरी पर हाज़िर हो जाऊँगा। इस पर भी नौकरी में रहूँगा तब ही जब अम्मी को कैदखाने से छुट्टी मिल जायेगी।"

"तुम मेरे साथ चलो और अगर वहाँ शर्तें पूरी न कीं तो तुम जहाँ चाहो चले जाना।"

"और यदि मेरी अर्ज़ी मन्ज़ूर न की गयी तो भाई जान मेरे भागने में मदद करेंगे क्या ?"

"हाँ।"

"तो मैं चलूँगा। अम्मी को छोड़ दिया गया तो अपनी बीवियों को भी औरंगाबाद बुला लूँगा।"

हरिहर वापस गुरु सेना के शिविर में आया तो बात निश्चय हो गयी। उसी सायंकाल मुगल सेना सरहिन्द की ओर और गुरु सेना आनन्दपुर की ओर लौट गयी।

यद्यपि विश्वनाथ शहंशाह पर विश्वास नहीं करता था कि नीलमणि को छोड़ा जायेगा, परन्तु जब हरिहर ने बताया कि शाह आज़म ने वचन दिया है तो परीक्षा करने के लिये हरिहर को शाह आज़म के साथ भेज दिया गया।

शाह आज़म समझ रहा था कि शम्भुजी को वह घेरा डालने में सफल हो रहा है। अतः वह अपनी योजना को चलाने के लिये शीघ्रातिशीघ्र दक्षिण लौट जाना चाहता था।

उन्होंने सेना का साथ छोड़ा और लम्बी मंज़िलें तय करते हुए वे तीन दिन में औरंगाबाद जा पहुँचे, परन्तु शहंशाह वहाँ से नासिक जा चुका था। उसने दक्षिणी सेना का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया था। आज़म का छोटा भाई शहंशाह की सहायता कर रहा था।

शाह आज़म की अपनी बेगम और बच्चे नासिक में थे। अतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरंगाबाद में समय व्यतीत करने की बजाय आज़म और हरिहर नासिक को चल दिये।

आज़म की बेगम शहरयार बानो और उसका भाई शाह सिकन्दर अपनी बेगम और बच्चों के साथ नासिक में ही थे। शहरयार बानो निरन्तर यह यत्न कर रही थी कि किसी क्षेत्र को सूबा बनाकर उसे सिकन्दर के प्रबन्ध के लिये दे दिया जाये, परन्तु औरंगज़ेब बात को सदा टाल जाता था।

जब आज़म और हिदायत उल्ला नासिक में पहुँचे और शहंशाह को वहाँ का फैसला बताया गया तो औरंगज़ेब की आँखों में चमक दौड़ गयी। वह समझ रहा था कि पंजाब में शान्ति स्थापित करने की उसकी योजना सफल हो रही है।

शाह आज़म ने कहा, "अब्बा जान ! मैंने गुरुजी से यह समझौता इस कारण कर लिया है। मैं चाहता हूँ कि जब तक दक्खिन में मराठा साज़िश खतम नहीं होती, हमें पंजाब में गड़बड़ पैदा नहीं होने देनी चाहिये।"

"ठीक है। मैं समझता हूँ कि इस साल के खतम होने से पहले हम शम्भुजी को पकड़ लेंगे अथवा मार डालेंगे। हमारा जाल उसके चारों ओर फैला दिया गया है।"

"पर अब्बा जान ! शहरयार कह रही है कि अभी तक सिकन्दर के मुतल्लिक कुछ सादर नहीं किया गया।"

"कर देंगे। आखिर उसे हमारे साथ रहने में क्या तकलीफ हो रही है ? शाही खर्च पर उसे एक मुअज़िज मेहमान की तरह रखा जाता है।"

"और अब्बा जान ! मैंने हिदायत से यह वायदा किया है कि इसे चार साल की तनख्वाह दे दी जायेगी और······।"

वह आगे कहता-कहता रुक गया। शहंशाह ने माथे पर त्योरी चढ़ा कर पूछ लिया, "आगे कहो। और क्या वायदा किया है ?"

"यही कि महताब अम्मी को यहाँ इसके साथ रहने के लिये बुला देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जानते हो कि, मेरा इससे क्या रिश्ता है?"

"हाँ, अब्बा जान! जानता हूँ। यह आपके भाई हैं।"

"और जानते हो कि मेरी अम्मी, खास तौर पर जब वह बेवा की सूरत में रहना चाहती हो तो उसको हरम से बाहर जाने की इजाज़त नहीं हो सकती।"

"पर अब्बा जान! मैंने हरम से बाहर रहने की बात नहीं कही। मैं तो यह कह रहा हूँ कि महताब अम्मी का हरम उसके लड़के के हरम में शामिल कर दिया जाये।"

"मगर इसकी बीवी तो पर्दा नहीं करती।"

"अब्बा जान! आपने उनको देखा है?"

"हमारे जासूसों ने बताया है कि एक दीनदार मामिन की लड़की होते हुए भी वह सूरत की सड़कों पर वहाँ की गुजराती हिन्दू औरतों की तरह घूमती है।"

"अब्बा जान! अगर महताब अम्मी को इस शर्त पर यहाँ आने की इजाज़त दे दें कि वह पर्दा करेंगी तो उसके लड़के की वहू भी पर्दा करने लगेगी।"

"यह बात गौर तलब है। देखो आज़म, मेरी ज़िन्दगी के दो ज़बर-दस्त पहलू हैं। एक हिन्दुस्तान को दारा-उल-इस्लाम बनाना और दूसरा औरंगज़ेब की सल्तनत को दुनिया की सबसे बड़ी इस्लामी सल्तनत बनाना।"

"मैं समझता हूँ कि अब आपकी उम्र इतनी बड़ी हो गयी है कि आपको अपनी ख्वाहिश पूरी करने के लिये इबादत का तरीका इस्तेमाल करना चाहिये। तलवार का तरीका आपको मुझ पर छोड़ देना चाहिये।"

"देखो, शाह आलम कह रहा है कि तुम क़ाफिर होते जाते हो। तुम्हारी बीवी शिया है और तुम भी वैसे ही होते जाते हो।"

आज़म हँस पड़ा और कहने लगा, "अब्बा जान! वह अभी कम उम्र है और अक्ल में नाकस है।"

"और मुझको क्या समझते हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप तो अब्बा जान हैं। भला आपकी अक्ल को नाकस कैसे समझ सकता हूँ ?"

"तो फिर सुन लो। न तो मैं अपनी सल्तनत पर एक भी शिया हाकिम बनाऊँगा और न ही किसी हिन्दू को यहाँ पानी पीने दूंगा।"

हरिहर समीप बैठा यह सब वार्त्तालाप सुन रहा था। शाह आज़म ने शहंशाह के इस कथन का प्रभाव हिदायत के मुख पर देखने के लिये उसकी ओर देख पूछ लिया, "हिदायत ! तुम क्या समझते हो ?"

"ये शहंशाह हैं। इनके पाये का और कोई शख्स इस दुनिया में नहीं। इसलिये यह खुदा से भी झगड़ा करने की तौफीक रखते हैं। मैं इसमें क्या कह सकता हूँ ?"

"यह बद-दिमाग होता जा रहा है। मैंने इसका इलाज सोच रखा है।"

"क्या अब्बा जान।" हिदायत ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"वह तुमको बताने का नहीं। मरीज़ को दवाई नहीं बतायी जाती। उसे दवाई पिलाई जाती है।"

"ठीक है अब्बा जान ! मैं दवाई पीकर उसके स्वाद से जान जाऊँगा कि उसमें क्या है ?"

"हाँ। अगर तुममें अक्ल होगी तो जान सकोगे। मगर मैं समझता हूँ कि तुम बिल्कुल बेवकूफ हो।"

"आज़म ने बात बदल दी। उसने कहा, "अब्बा जान ! अब मेरे लिये क्या हुक्म है ?"

"अब दक्खिन में जंग तो हम चलायेंगे। उस जंग में तुमको क्या करना होगा, मैं एक-दो दिन में सोचकर बताऊँगा।"

"तो अब मैं जाऊँ ?"

"कहाँ जाओगे ?"

"अपने हरम में बेगम के पास।"

शहंशाह मुस्कराया और बोला, "हाँ, जा सकते हो।"

शहज़ादा उठा तो हिदायत भी उठ खड़ा हुआ। मगर शहंशाह ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे पुनः बैठ जाने का हुक्म देकर कहा, "तुम कहाँ जा रहे हो ? हम तुमसे तुम्हारे गुरुजी की बात सुनना चाहते हैं।"

हिदायत फिर बैठ गया और शाह आज़म दीवानखाने से निकल गया।

शहंशाह ने जब हिदायत को अकेले में देखा तो पूछ लिया, "तुम यहाँ से चले क्यों गये थे ?"

"मैं अपनी तनख्वाह चाहता था। आपने कुछ दिया नहीं तो यहाँ से भाग गया। खाली जेब अपनी बीवी के पास जाना नहीं चाहता था। इसलिये शमाल की तरफ चल दिया। मैं चलता ही गया और फिर बिलासपुर जा पहुँचा। वहाँ राजा साहब से दोस्ती हो गयी तो वहीं रह गया।"

"तो तुम सिक्खों के गुरु के साथ नहीं थे ?"

"राजा साहब बिलासपुर गुरुजी के साथ थे। इस वजह से मैं भी उनके साथ हो गया।"

"हमें तो खबर मिली थी कि तुम सिक्ख गुरु के सलाहकार हो ?"

"नहीं अव्वा जान ! ऐसा नहीं था। मैंने तो गुरु महाराज को एक दिन एक नज़र ही देखा था और फिर मुगलों के साथ सुलह के दिन उनसे मिला था। इसके अलावा मेरा उनसे कोई ताल्लुक नहीं रहा।"

"मगर हमने सुना है कि उनके पास एक मराठा ब्राह्मण है और वह गुरुजी का सलाहकार है।"

"अव्वा जान ने ठीक सुना है। मगर मैं भी ठीक कह रहा हूँ कि वह मैं नहीं हूँ।"

"तो वह कौन है ?"

"वह मेरे मामा विश्वनाथजी हैं।"

"ओह ! मैंने तो सुना था कि वह फौत हो गया है।"

"फौत उनके पिताजी हुए हैं। वही, जिन्होंने आपके मुतल्लिक एक नजूम लगाया था।"

"यह तुमको किसने बताया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मामाजी ने ही बताया है और उन्होंने कहा है कि आप और मुग़ल सल्तनत पर शनि की दिशा शुरू हो गयी है और आज के बाद आपकी सल्तनत बिखरनी शुरू होगी।"

"नहीं, यह नहीं हो सकता। हमारे नजूमी ने यह बताया है कि हमारी सल्तनत इतनी बड़ी होगी जितनी कि आज तक किसी मुसलमान शहंशाह की नहीं हुई।"

"पर अब्बा जान! मैं किसी नज़ूमी की बात को सच या झूठ नहीं बता रहा। मैंने तो जो सुना है, वह बताया है। बाकी ख़ुदा के हाथ में है।"

"हमें बताओ। तुम हिन्दू हो या मुसलमान ?"

"मैं इन्सान हूँ। आपने मेरी सुन्नत करा मुझे मुसलमान बनाने की कोशिश की थी। पूना में एक पण्डित ने मुझे शास्त्र पढ़ा हिन्दू बनाने की कोशिश की थी। उसने मेरे सिर पर चोटी रखवा दी। मगर इन दोनों का असर मुझ पर नहीं हुआ और मैं इन्सान-का-इन्सान रह गया हूँ।"

"हम यह नहीं पूछ रहे। हम यह जानना चाहते हैं कि तुम हिदायत हो या······क्या नाम था तुम्हारा पूना में ?"

"अब्बा जान! हरिहर।"

"और तुम अब क्या हो ?"

"आपके यहाँ हिदायत और किसी हिन्दू की नज़र में हरिहर। वैसे एक इन्सान हूँ।"

"अबे इन्सान के बच्चे! तुम मुसलमान हो। एक बार जो मुसलमान हो गया, वह हो गया। फिर उसका मज़हब बदल नहीं सकता। तुम तो मुसलमान के बेटे हो और तुम पर ख़ुदाई मुहर लगी है।"

"अब्बा जान ठीक कहते हैं।"

"खाक ठीक कहता हूँ। तुम इस नाम को छुपाते हो। यह कुफ्र है और हम तुमको इस जुर्म के लिये बकाया ज़िन्दगी की क़ैद सुनाते हैं।"

"अब्बा जान, शुक्रिया। क्या मैं अब जाऊँ ?"

"जा सकते हो तो जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिदायत उठा और झुककर सलाम कर दीवानखाने से बाहर निकला। ज्यों ही उसने कमरे से बाहर कदम रखा कि उसको दो सिपाहियों ने दोनों बाजुओं से पकड़ लिया और धकेलते हुए एक बगल के कमरे में ले गये और वहाँ कमरे में बन्द कर बाहर से दरवाज़ा बन्द कर ताला लगा दिया।

: ३ :

शाह आज़म दीवानखाने से निकल महल के उस कक्ष के द्वार पर पहुँच खड़ा हो गया। यह कक्ष शहंशाह ने अपने निवास के लिये रखा हुआ था। इसके सामने महल के कक्ष में शाह आज़म अपनी बेगम शहरयार बानो और अपने साले सिकन्दर आदिल शाह तथा उसके परिवार के साथ रहता था। अपने कक्ष में जाने से पूर्व वह हिदायत को कुछ समझाना चाहता था। उसका विचार था कि हिदायत शहंशाह से नाराज़ हो उनके शत्रुओं से जा मिलेगा और वह समझ रहा था कि मराठा और मुगलों के सांझी सन्तान में दोनों नसलों के श्रेष्ठ गुण विद्यमान हैं और कहीं यह शम्भु की सेना में जा पहुँचा तो अनन्त काल तक भी मुगल सेना विजय प्राप्त नहीं कर सकेगी।

इस कारण वह हिदायत को अपने साथ ले जाकर समझाना चाहता था कि उसे कुछ देर और सब्र करना चाहिये।

प्रतीक्षा करता-करता जब थक गया तो उसने एक दरबान को कहा, "भीतर चले जाओ और पता करो कि हिदायत उल्ला कब आ रहा है?"

"दरबान भीतर गया और पाँच मिनट में लौटा। लौटकर उसने बताया, "हुज़ूर! हिदायत शहंशाह के साथ नहीं है शहंशाह हरम में चले गये हैं।"

"और हिदायत?"

"हुज़ूर! अगर मेरा नाम न लें तो अर्ज़ करूँ?"

"हाँ, बताओ।"

"दीवानखाने का दरबान कहता है कि शहंशाह के हुक्म से वह दीवानखाने के बगल वाले कमरे में कैद कर दिया गया है। हुक्म है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे चौबीस घण्टे में एक बार बाहर निकाला जाये और टट्टी-पेशाब करा, खाना खिलाकर फिर कमरे में बन्द कर दिया जाया करे।"

शाह आज़म बहुत परेशानी अनुभव करता हुआ वापस लौट पड़ा और शहंशाह के हरम के द्वार पर पहुँच बाहर लटक रही रस्सी को खींचने लगा। रस्सी खींचने से भीतर दूर घण्टी बजी और तब एक खादिमा आयी और शहज़ादा को वहाँ खड़ा देख सलाम कर पूछने लगी, "हुज़ूर! क्या हुक्म है ?"

"शहंशाह से कुछ अर्ज़ करने आया हूँ।"

"तो इत्तला कर देती हूँ।" खादिमा भीतर गयी और पौन घड़ी-भर के उपरान्त लौटकर बोली, "शहंशाह अपने खास दीवानखाने में बैठे हैं। आप वहाँ जा सकते हैं।"

शाह आज़म दीवानखाने में पहुँचा। शहंशाह एक मसनद पर बैठा तसबीह फेर रहा था। आज़म ने सलाम की तो शहंशाह ने मुख पर चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, "आज़म ! लौट क्यों आये हो ?"

"मैं हिदायत को ढूंढ़ता हुआ आया हूँ। मालूम हुआ था कि अब्बा-जान अपने ख़ास दीवानख़ाने में बैठे उससे मशविरा कर रहे हैं।"

"किससे मालूम हुआ है ?"

"यह बात कि जहाँपनाह अपने खास दीवानखाने में हैं, खादिमा से पता चली थी। यह भी मालूम हुआ था कि हमारी छोटी अम्मी जहाँपनाह के पास नहीं है। इससे यह कयास तो अपने आप लगाया था कि हिदायत आपके ही पास हो सकता है। वह महल के बाहर निकलता देखा नहीं गया।"

"मगर वह हमसे छुट्टी ले चला गया है।"

"अब्बा जान ! यह तो बहुत ही खतरनाक आदत है। वह ज़रूर किसी महल की खादिमा के कमरे में चला गया होगा।"

"तो तुम भी उसके इखलाक पर शक करने लगे हो ?"

"शक की बात है ही। अब्बा जान, आखिर वह गया कहाँ ? मैं दरवाज़े पर उसकी इन्तज़ार में खड़ा हूँ। वह इस महल से बाहर निकला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही नहीं।"

"हम उसकी तलाश करवायेंगे। अभी नहीं। कुछ अर्सा बाद। अगर उसकी कोई महबूबा यहाँ है तो उसे उससे मिल लेने का काफी मौका देना चाहते हैं।"

"मगर अब्बा जान! मुझे उससे काम है।"

"पर क्या वह काम रात-भर की इन्तज़ार नहीं कर सकता?"

"मैं उसे किसी अपने ज़रूरी काम पर अभी भेजना चाहता हूँ।"

"तो फिर ढूंढ लो।"

"मगर आपके महल की तलाशी मैं कैसे ले सकता हूँ?"

"तो फिर क्या किया जाये?"

"छोटी अम्मी को कहा जाये कि अपनी सब खादिमाओं से पूछताछ करें।"

"मगर इसमें तो वक्त लगेगा।"

"मैं शाम तक इन्तज़ार कर सकता हूँ।"

"ऐसा क्या काम है जो तुम उससे कराना चाहते हो?"

"कुछ है। उसे एक ज़रूरी काम से सूरत भेजना चाहता हूँ।"

"अच्छा! शाम तक पता करना। अगर वह कहीं मिल गया तो उसको यहाँ हाज़िर रखा जायेगा।"

शाह आज़म चला गया। वह चाहता था कि हिदायत को कैद से छुड़ाए। इन्तज़ार करने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं था।

आज़म ने जाने से पहले उस दरबान को एक चाँदी का रुपया इनाम दे दिया जिसने यह बताया था कि हिदायत उल्ला कैद है।

शाम के समय आज़म फिर शहंशाह से मिलने आया। उसकी सूचना दी गयी तो शहंशाह बाहर आम दीवानखाने में आ गया। आज़म खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था। आज़म ने सलाम की और कहा, "मैं हिदायत का पता करने आया हूँ।"

"उसका पता नहीं चला। हमारा खयाल है कि वह तुम्हारी नज़र बचाकर महल से निकल गया होगा। तुमने उसे जाते देखा नहीं। बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हैरानी की बात है।"

"अब्बा जान ! उसका कत्ल भी किया जा सकता है।"

"कत्ल ? कहाँ किया जा सकता है ?"

"ज़रूर इसी महल में हो सकता है। वह यहाँ से बाहर निकला ही नहीं। किसी खादिमा के किसी दोस्त सिपाही ने यह जुर्म किया मालूम होता है।"

"मगर उसकी लाश तो मिलनी चाहिये।"

"लाश तो उसी जगह पर गाड़ी जा सकती है जहाँ कत्ल मुमकिन है।"

"मगर लाश का यहाँ बहुत देर तक छुपा सकना निहायत ही मुश्किल है।"

"अब्बा जान ! ज़रूर उसके साथ दगा खेला गया है।"

"मगर तुमको उससे क्या काम है ? वह काम किसी और ऐहलकार से नहीं कराया जा सकता क्या ?"

"वह मेरे दिली जज़बात को जानता है और उनसे हमदर्दी रखता है। किसी दूसरे को समझाने और अपना वाकिफ बनाने में वक्त लगेगा।"

"मैं समझता हूँ कि वह मुगलिया खानदान का वफादार नहीं हो सकता।"

"इसलिये ही न कि हमारे खानदान ने उससे और उसकी माँ से बहुत ही बुरा सलूक किया है। मगर मैंने यह बात उसके दिमाग पर बैठा रखी है कि इस मामले में मैं अपने खानदान वालों से अलहदा हूँ और मैं उसका सबसे बड़ा हमदर्द हूँ।"

"यह बात तो ठीक है। मगर ऐसा मालूम होता है कि उसे तुम पर भी यकीन नहीं आया। अगर वह तुम्हारा एतबार करता होता तो यकीनन तुमसे मिले बिना भागता नहीं।"

"मुझे यकीन हो रहा है कि वह अगर यहाँ से भागा है तो जरूर हुज़ूर जहाँपनाह के सलूक की वजह से भागा होगा। आपने उसकी माँ को यहाँ आने की इजाज़त नहीं दी थी। आपने उसे चार साल तक अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास नौकर रखा और एक छदाम तनख्वाह नहीं दी।"

"देखो, आजम ! इन शाही बातों में तुमको दखल देना नहीं चाहिये। यह सियासी बातें हैं।"

"मगर जहाँपनाह ! मैं भी तो शहंशाह का बेटा हूँ और शहंशाह के बाद शहंशाह भी बनने वाला हूँ।"

"कैसे जानते हो यह ? अभी तो शाह आलम मौजूद है। अकबर भी जिन्दा है।"

"मैं शहंशाह, अपने अब्बा जान का इरादा जानता हूँ। वे तख्तो-ताज मुझको देने का इरादा रखते हैं।"

"मगर यह तो हमारे खानदान की रवायत है कि शहंशाह जिसको भी अपना जाँ-नशीं बनाना चाहता है, वह मार डाला जाता है।"

"यह मेरे साथ नहीं होगा, अब्बा जान।"

"यही तो पूछ रहा हूँ कि कैसे जानते हो यह ?"

"यह बताऊँगा नहीं। कहीं आलम को पता चल गया तो वह मेरे इन्तज़ाम को बरबाद भी कर सकता है।"

"खैर छोड़ो इस बात को। मैं समझता हूँ कि अभी मैं मरने वाला नहीं और मैं अपने वालिद शरीफ की तरह बेवकूफ नहीं कि मैं अपना सहारा अपने गैर वफादार ऐहलकारों को समझूँ। मेरे यहाँ गैर-वफादार मुलाज़िम एक लमहा-भर भी जीते नहीं रह सकते। मैं पाँव के नीचे घास नहीं जमने देता।"

"अब्बा जान ! आपके लिये मेरे मन में ऐसी कोई बात नहीं जैसी कि आपके दिमाग में अपने वालिद शरीफ के लिये थी। आप इत्मीनान से हुकूमत करिये, मगर हुकूमत होनी चाहिये। ज़ोरो-जुल्म नहीं।"

"किनके खिलाफ ज़ोरो-जुल्म ? मैं मोमिन और काफिरों में तमीज़ करता हूँ।"

"मैं तो एक मोमिन की बात ही कर रहा हूँ। मेरा मतलब हिदायत से है। आप उसको अपने खानदान का बागी बना रहे हैं।"

"वह काफिर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर अब्बा जान ! उसकी सुन्नत तो हो चुकी है। अब इस खुदा की मुहर को वह कैसे मिटा सकता है ? उसके लिये जन्नत का दरवाज़ा खुला है।"

"मेरा वस चला तो मैं उसे जहन्नुम रसीद कर दूंगा।"

"जन्नत और जहन्नुम पर भी अब्बा जान की हुकूमत है क्या ?"

इस सब वार्त्तालाप का कुछ फल नहीं हुआ और शाह आज़म अपने महल की ओर लौट गया। लौटता हुआ वह विचार कर रहा था कि हिदायत को कैसे छुड़ाया जाये ? उसे कोई उपाय सूझ नहीं रहा था।

रात उसने अपनी बेगम को बात बतायी तो वह भी दुःख प्रकट करती रही, परन्तु कोई उपाय नहीं बता सकी कि किस तरह हिदायत को छुड़ाया जाय।

अगले दिन बहुत सुबह शहंशाह के हरम की एक खादिमा आयी और शहज़ादा आज़म को शहंशाह के पास तशरीफ लाने का पैगाम दे गयी। पैगाम यह था कि शहज़ादा साहब को फौरन हाज़िर होना चाहिये।

शहज़ादा अभी अपने सोने के कमरे में था। सूचना शहरयार की खादिमा ने दी। शहज़ादा का खयाल था कि उसे किसी मुहिम पर भेजने के लिये हुक्म होने वाला है। वह हिदायत को छुड़ाये बिना वहाँ से जाना नहीं चाहता था।

वह जल्दी-जल्दी गुसल इत्यादि से निवृत्त हो शहंशाह के खास दीवान-खाने में पहुँचा। शहंशाह ने छूटते ही कहा, "बहुत देर कर दी। रात जागते रहे हो क्या ?"

"हाँ, अब्बा जान ! दो महीने से ज़्यादा अर्सा के बाद बेगम से मिला था। कुदरती तौर पर सोने में देर होनी थी। इसलिये सो कर उठने में देर लगी है। अभी भी पूरी नींद नहीं सो सका हूँ।

"हाँ, तो अब्बा जान ! क्या हुक्म है ?"

"मुझे शक हो रहा है कि हिदायत को तुमने कहीं छुपा रखा है और तुम हमारी आँखों में धूल झोंकने के लिये उसके मुतल्लिक तहकीकात कर रहे थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब्बा जान ! यह इल्ज़ाम बे-बुनियाद है । मैं उसके मुतल्लिक कुछ नहीं जानता ।"

"अच्छा, सुनो । हमें शक था फि वह फिर काफिरों की मदद के लिये कहीं जाने वाला है । उसका मामा विश्वनाथ सिक्खों के गुरु के पास काम करता है और यह शम्भुजी के पास जाना चाहता था । इस तरह शमाल और जनूब की साजिशों का ताल-मेल बैठाने की कोशिश हो रही थी । इसलिये मैंने उसे इस महल में कैद करा दिया था । मगर आज सुबह पता चला है कि उसके कमरे का ताला टूटा हुआ है और वह ला-पता है ।"

"मगर अब्बा जान ! आप तो कल बता रहे थे कि सारा महल देख डाला गया है और उसका कहीं पता नहीं चला ?"

"वह सब झूठ था ।"

"और अब अब्बा जान सच कह रहे हैं क्या ?"

इस पर शहंशाह ने माथे पर त्योरी चढ़ा कहा, "तो क्या मैं झूठ कह रहा मालूम होता हूँ ?"

शाह आज़म ने भी गम्भीर भाव में कहा, "मैं क्या जानूं ? अब्बा जान, यह तो आप ही कह रहे हैं कि आप अपने वफादार शहज़ादे के सामने झूठ भी बोल सकते हैं ।"

"ओह हाँ । मगर वह तो एक खास मतलब से था ।"

"तो अब्बा जान बे-मतलब भी झूठ बोला करते हैं ?"

"नहीं, बे-मतलब नहीं बोलते । मगर अब तो तुम खुद उस कमरे का मुआइना कर सकते हो और वहाँ का टूटा ताला देख सकते हो ।"

"मगर मैं तो बिना देखे भी यकीन कर सकता हूँ । किसने आपको इत्तला दी है कि कमरे का ताला टूटा है और हिदायत गायब है ?"

"दरबान अली अहमद ने बताया है । वह सुबह उसे टट्टी, पेशाब की सहूलियत देने के लिये मुकर्रिर था । वह अपने साथ दो सिपाहियों को लेकर उसको कमरे से बाहर निकालने के लिये गया था और कमरे का ताला देख और कमरा खाली देख भागा-भागा आया और अपना सिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुन-धुनकर बता रहा था कि वह कसूरवार नहीं है।"

"हाँ। वह तो ईमानदार मोमिन है और सुन्नी भी है। उस पर एतबार न करने में कोई वजह नहीं।"

"कल उसके मुतल्लिक तुम्हें फिकर करते देख हम तो यह समझ रहे थे कि यह शरारत तुमने ही की है।

"देखो आज़म ! मैं बताता हूँ कि हिदायत की सुन्नत ज़रूर हो चुकी है, मगर उसका दिमाग अपने मामा और नाना की तरह का मराठा दिमाग है। इससे न तो मैं उसकी माँ का एतबार करता हूँ और न ही उसका।"

"खैर, अब तो ऐसी हालत में उसका एतबार किया ही नहीं जा सकता। आपके किसी को बिना वजह कैद कर रखने से तो कोई गधा भी दुश्मन बने बिना नहीं रह सकता।"

"इसीलिये तो तुमसे कह रहा हूँ कि अगर उसका तुम्हें पता हो तो तुम्हें भी चाहिये कि उसे तहे-तेग करा दो। पीछे पछताने से कुछ भी फायदा नहीं होगा।"

"मैं उस कमरे को देखना चाहता हूं जहाँ अब्वा जान ने अपने छोटे भाई को कैद किया था।"

"हाँ, तुम देख सकते हो।" शहंशाह उठा और आज़म को आम दीवानखाने की बगल में एक कमरे के सामने ले गया। टूटा हुआ ताला बाहर कुण्डे के साथ लटक रहा था। शाह आज़म ने कमरे में घुस देखा कि कमरे में सोने के लिये भी कोई पलंग, खाट इत्यादि नहीं थी।

शहज़ादा ने कमरे के कोने-कोने को देखा। वह विचार कर रहा था कि हिदायत किसी प्रकार का चिह्न छोड़ गया हो तो वह उसे ले ले।

कोई किसी प्रकार का चिह्न नहीं मिला। वह कमरे से निकल शहंशाह के साथ दीवानखाने को चल पड़ा।

: ४ :

यद्यपि शहंशाह का सन्देह पक्का था कि हिदायत उल्ला को शाह आज़म ने भगाया है, परन्तु इस समय वह समझ रहा था कि शम्भुजी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करारी मुठभेड़ होने वाली है। अतः वह बीजापुर और गोलकुण्डा के विजेता से झगड़ा करना नहीं चाहता था। इस कारण उसने दीवानखाने में बैठ कह दिया, "आज़म ! इस समय हिदायत का भाग जाना ठीक नहीं हुआ।"

"पर अब्वा जान ! आप उसको मुहब्बत से रखते तो वह रह जाता। आपने अपनी ख्वाहिश से डेढ़ हज़ार मील की यात्रा कर आपकी खिदमत के लिये आये हुए को आने के लिये उसका हौसला बढ़ाने की बजाय उसे एक कमरे में बन्द कर दिया।"

"आज़म ! तुम नहीं जानते। इस वक्त मैं किसी किस्म का खतरा मोल नहीं ले सकता। तुम नहीं जानते और मैं जानता हूँ कि मैं मराठा राज्य की जड़ों में तेल देने के लिये क्या कुछ कर रहा हूँ।

"जानना चाहते हो तो सुनो। शिवाजी के बीमार होने से पहले ही मैंने मराठों को दो हिस्सों में बाँटने के लिये एक तजवीज़ चलायी थी। मैंने राजस्थान से ही एक विधवा ब्राह्मणी को रायगढ़ भेज दिया था। वह राजाराम की माँ सूर्य बाई के यहाँ नौकरी करने लगी और दूसरी ओर एक कन्नौजिया ब्राह्मण को शम्भुजी के पास भेजा था कि वह उसका वज़ीर बन काम करे। ये दोनों मेरी हिदायत के मुताबिक वहाँ दुश्मनी पैदा कर रहे थे। इन दोनों को यह मालूम नहीं होने दिया कि उनको इस काम के लिये उकसाने वाला मैं हूँ। मेरे जासूस यह सब-कुछ करते रहे हैं।

"इसका नतीजा यह हुआ कि मराठा राज्य में दो गुट बन गये हैं। एक गुट राजाराम का नाम लेकर राज्य में इज़्ज़त पाने की कोशिश कर रहा है और दूसरा गुट शम्भुजी के नाम पर तनज़ीम बन गया है।

"इस सिलसिले में राजाराम और उसके तकरीबन हिमायती या तो मार डाले गये हैं या कैद कर दिये गए हैं। सूर्य बाई और उसकी ब्राह्मणी तो ज़हर दे मार डाली गयी हैं। इन जुल्मों को कराने वाला कन्नौजी ब्राह्मण है।

"इसका नतीजा यह हो गया है कि दो जगहों पर शम्भुजी को

—१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़बरदस्त शिकस्त दी जा चुकी है और मेरा जाल उसके चारों ओर फैल चुका है। अकबर ईरान में बैठा हुआ ज़िन्दगी के लमहें गिन रहा है।

"इस मौके पर अगर कोई चतुर सियासतदान शम्भुजी के पास होता तो उसको वह राहे-रास्त पर ले आता और हमारे लिये मुश्किल खड़ी कर देता। यह गनीमत है कि हिदायत का मामा पंजाब में फँसा है और हिदायत को मैंने यहाँ रोक लिया था। मगर तुमने मेरे किये-कराए पर पानी फेरने की कोशिश की है।"

"नहीं, अब्बा जान! मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि हिदायत की बाबत मैं कुछ नहीं जानता।"

"तो जिसने भी उसके भागने में मदद की है, उसने मुगल सल्तनत को बहुत नुकसान पहुँचाने की कोशिश की है।"

वास्तव में यह हरिहर की अपनी ही करनी थी कि वह नासिक के महल से भागने में सफल हो गया था। दरबान जिसको, उसे टट्टी, पेशाब कराने तथा खाने-पिलाने पर नियुक्त किया गया था, हिदायत ने उसे ही फुसलाया था। अली अहमद पिछली सायंकाल उसका खाना लेकर आया तो वह हिदायत से पूछने लगा, "हुज़ूर! क्या बात हुई है शहंशाह की नाराजगी की?"

हिदायत ने उत्तर देने के स्थान उससे पूछ लिया, "तुम्हें कब से तनख्वाह नहीं मिली?"

"दो साल हो गये हैं।"

"और गुज़र कैसे होता है?"

अली अहमद बताने से झिझकता था। हरिहर को वह पिछले चार वर्ष से देख रहा था और उसे वह एक भला आदमी मालूम हुआ था। उसने झिझकते हुए कह दिया, "हुज़ूर! चोरी-चकारी से गुज़र होता चला जाता है। अभी दोपहर के वक्त शहज़ादा साहब आपकी बात पूछ रहे थे। मैंने बताया तो उन्होंने एक रुपया इनाम दे दिया। इसी तरह शहंशाह से मिलने के लिये आने वाले कभी-कभी कुछ दे जाते हैं। कई-कई दिन तक नज़र-न्याज़ में कुछ भी नहीं मिलता तो फिर महल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई चीज़ उठाकर बाज़ार में बेच आता हूँ।"

"यह मैं नहीं कर सका।" हरिहर ने कह दिया, "मुझे पिछले चार साल से एक पैसा नहीं मिला और मैंने जब माँगा तो मुझे कैद कर दिया गया है।"

"हुज़ूर! हम तो आपको भी अपना मालिक ही समझते हैं।"

"अच्छा, गिनकर बताओ कि तुम्हारी कितनी तनख्वाह लेनी बनती है।"

अली अहमद ने अँगुलियों पर गिनी और बता दिया, "तीन सौ रुपये से कुछ ऊपर है।"

"और मुझे यहाँ से भाग कर चले जाने का क्या माँगते हो?"

अली अहमद भौंचक्का हो हरिहर का मुख देखने लगा। हरिहर ने उसे परेशान देख कहा, "तुम पकड़े जाने से डरते हो? मैं तुम्हें एक ऐसा तरीका बताता हूँ कि तुमको कोई नहीं पकड़ेगा।"

"कैसे?"

"अभी तुम बाहर से ताला लगा चले जाना। मगर असल चाबी की जगह कोई नकली चाबी दरोगा को दे देना। रात के दस बजे आना। असली चाबी से ताला खोल मुझे चुपचाप यहाँ से निकल जाने देना। मेरे जाने के बाद पत्थर पर ताले को तोड़कर कमरे के दरवाज़े के बाहर लटका जाना। सुबह तुम मुझे टट्टी, पेशाब कराने के बहाने दरोगा से नकली चाबी ले आना और टूटा ताला देख उसे असली चाबी वापस करते हुए कह देना कि इस कमरे का ताला टूटा पड़ा है और कमरे का दरवाज़ा खुला है।

"इतना कुछ करने के लिये तुम्हें तीन सौ रुपया तनख्वाह का और एक सौ रुपया इनाम का मिलेगा। अगर तुम्हें इसमें डर लगता है तो तुम मेरे साथ चलो और मेरी नौकरी कर लो। सूरत में आराम से रहना और अपने बाल-बच्चों को वहाँ बुला लेना। पिछली तनख्वाह तो मिलेगी ही और उसमें तरक्की भी मिल जायेगी।"

"पर आपके पास इतना रुपया होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, मैं सराय में ठहरा हूँ। वहाँ मेरे पास एक कमरा है। तुम्हें मेरे साथ वहाँ तक चलना होगा। वहाँ सब-कुछ मिल जायेगा।"

"हुज़ूर ! धोखा तो नहीं होगा ?"

"अली अहमद ! खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि जो कुछ कह रहा हूँ, सोलह आने पूरा कर दूँगा।"

"अच्छी बात है। आप तैयार रहियेगा। मैं रात के दस बजे आऊँगा।"

हरिहर की योजना सफल हुई और अली अहमद हरिहर के साथ सराय में पहुँच चार सौ रुपया गिन जेब में डाल चुका तो बोला, "मैं सुबह दरोगा को चाबी बदल कर दे लूँ। तब देखता हूँ क्या होता है ? अगर किसी किस्म का डर हुआ तो मैं भाग कर आपके पास सूरत पहुँच जाऊँगा। आप पता बता दीजिये।"

"इस तरह नहीं। मैं यहाँ से पूना जाऊँगा। वहाँ सराय इस्लामी में ठहरूँगा और तुम्हारी तीन दिन तक इन्तज़ार करूँगा।"

सराय में उसका घोड़ा बँधा था। वह लिया और हरिहर उसी समय नासिक से पूना को चल दिया। पूना में वह सराय इस्लामी पर नहीं ठहरा। वह एक धर्मशाला में जाकर ठहर गया और सराय इस्लामी में वहाँ के मालिक से कह आया कि अगर कोई हिदायत का नाम पूछता हुआ यहाँ आये तो उसे यहाँ रखना और कहना कि मैं खुद-ब-खुद उसे मिलूँगा।

उसने सराय वाले के पास पाँच रुपये पेशगी जमा करा दिये और आने वाले का नाम अली अहमद बता दिया।

तीन दिन तक भी अली अहमद नहीं आया तो उसका खयाल छोड़ वह रायगढ़ की ओर चल पड़ा। एकबार फिर उसके मन में महाराष्ट्र की राजनीति में अपनी बुद्धि प्रयोग करने की इच्छा उत्पन्न हो उठी।

रायगढ़ जाकर वह एक परिचित ब्राह्मण के घर में ठहर गया। ब्राह्मण का नाम था काशीनाथ बरवे। काशीनाथ ने खटखटाने पर द्वार खोला तो चकित रह गया और बोला, "पण्डितजी ! कहाँ रहे इतने दिन ?"

"मैं पंजाब चला गया था। वहाँ के और उत्तराखण्ड के तीर्थ-स्थानों से होता हुआ यहाँ का हालचाल देखने आया हूँ। विचार आया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशीनाथजी के घर कुछ दिन रहते हुए यहाँ की अवस्था का ज्ञान ठीक-ठीक हो जायेगा। बताओ, मेरा विचार ठीक है या नहीं ?"

"भैया ! तुम तो घर के आदमी हो। जब तक चाहो, रहो।"

"हरिहर ने घोड़ा मकान के पिछवाड़े आँगन में बाँध और स्वयं काशीनाथ के यहाँ डेरा डाल दिया।

हरिहर चाहता था कि वह वहाँ की पूर्ण परिस्थिति को जाने और फिर देखे कि गाड़ी को वह किस प्रकार आगे चला सकता है ?

पहले दिन रात का खाना खा काशीनाथ और उसकी पत्नी रुक्मिणी तथा उसका बड़ा लड़का रघुनाथ, उसकी पत्नी राजीव और बच्चों का हालचाल पूछने उसके पास आ बैठे तो हरिहर ने वहाँ की राजनीति पर बात चला दी। काशीनाथ ने बताया—

"दादा ! तुम तो महाराज के जाने से पहले ही नौकरी छोड़ गये थे। वे पण्डितजी तो महाराज के देहान्त के उपरान्त भी यहाँ रहे थे।

"हम सब यह समझ रहे थे कि शम्भुजी राजा बनेगा और राजा बनते ही वह अपनी ज़िम्मेदारी समझ राज्य-कार्य में व्यस्त हो जायेगा। शम्भुजी से सब बहुत आशा करते थे, परन्तु अभी महाराज का तेरहवाँ भी नहीं हुआ था कि यह बात फैलने लगी कि शम्भुजी क्रिया-कर्म के अवसर पर भी नहीं आयेंगे और उन्होंने अपना राज्याभिषेक करवा लिया है।

"इधर भी महाराज का संस्कार कर राज्याभिषेक करने की योजना बनने लगी। शम्भुजी ने एकाएक यहाँ आ राज्य पर अधिकार कर लिया और राजाराम के साथियों को मौत के घाट उतार दिया।

"शम्भुजी के मन्त्री कवि कैलाश हैं और वे महाराष्ट्र के लिये अपशकुन सिद्ध हो रहे हैं।"

"इस समय हरिहर ने पूछा, राजाराम कहाँ है ?"

"सुना है कि पनहाला में बन्दी बनाकर रखा हुआ है।"

"और शम्भुजी का क्या हालचाल है ?"

"ज्यों-ज्यों मुगल सेना आगे बढ़ती जा रही है, त्यों-त्यों वह अपने साथियों पर सन्देह और अत्याचार कर रहा है। सुना है कि कवि कैलाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने शिरकों की किसी लड़की से बलात्कार किया था और उन्होंने उस पर आक्रमण कर दिया। कवि महाराज भाग खड़े हुए, परन्तु महाराज शम्भुजी ने उनके गाँव पर भारी सेना से आक्रमण कर दिया और पूर्ण गाँव को जलाकर भस्म कर दिया है।

"इस पर शम्भुजी के कुछ दरबारियों ने ही उसकी भर्त्सना की तो महाराज ने प्रह्लाद निराजी इत्यादि कई अपने मन्त्रियों को बन्दी बना खिलना दुर्ग में कैद कर दिया है।"

"इस समय वह स्वयं कहाँ है ?"

"कविजी महाराज ने अलखनन्दा और वरुणा के संगम पर एक विलास-गृह बनवाया हुआ है। वहाँ मद्य, माँस और नर्तकियों का जमघट रहता है। सम्भवतः शम्भुजी वहीं होगा।"

"दो दिन तक हरिहर विचार करता रहा फिर उसने एक योजना बना ली। वह रायगढ़ में कवि कैलाश से मिल चुका था और वह उसकी सूरत से ही घृणा करता था। अतः उससे और उसके महाराज से उसको आशा नहीं रही थी। उसे राजाराम ही एक आशा की किरण दिखायी देता था। अतः दो दिन के गम्भीर चिन्तन के उपरान्त वह काशीनाथ से विदा माँग अपनी विचारित योजना को पूर्ण करने चल पड़ा।

काशीनाथ ने सामान्य रूप में पूछा, "दादा ! अब किधर जा रहे हो ?"

"मैं संगमेश्वर जा रहा हूँ।"

"वहाँ क्या है ?"

"महाराष्ट्र का अभिशाप वहीं है। मैं उसको निस्तेज करना चाहता हूँ।"

"किसे ? महाराज को अथवा कवि कैलाश को।"

"जो दोनों में अधिक कलंक प्रतीत होगा।"

काशीनाथ ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "देख लो, इस विपत्ति की घड़ी में जब मुगल सेना सिर पर बैठी है तब क्या करना चाहिये ?"

"भैया काशीनाथ ! होता वही है जो भगवान् को स्वीकार होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। हम लोग तो उसके हाथ के खिलौने हैं।"

: ५ :

हरिहर संगमेश्वर को जाने की बजाय पनहाला की ओर चल पड़ा। शम्भुजी का पूर्ण इतिहास जानते हुए वह उस स्थान से तो किसी प्रकार की आशा नहीं करता था। उसका पूर्ण ध्यान इस समय राजाराम पर लगा था।

उसे राजाराम को देखे आठ वर्ष होने जा रहे थे। महाराज शिवाजी की मृत्यु से पूर्व ही उसने उसे देखा था। तब वह दस वर्ष का बालक मात्र था। अब वह अट्ठारह वर्ष का युवक हो गया था और वह विचार करता था कि क्या उसमें भी सांसारिक सुख-भोगों की लालसा घुस चुकी होगी ?

इस प्रकार के अनिश्चित और अब सर्वथा अपरिचित वातावरण में कार्य करने का विचार करता हुआ वह पनहाला में जा पहुँचा।

पनहाला में पहुँचने पर पता चला कि कुछ ही दिन पूर्व राजाराम और उसके कुछ अन्य साथियों को वहाँ से हटा दिया गया है। पनहाला को मुगल सेना ने घेर रखा था और राजाराम के पकड़े जाने पर यह भय था कि मुगल शहंशाह उसे राजा घोषित कर शम्भुजी के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर देंगे।

रात के समय राजाराम को मुगल घेरे में से निकाल किसी अज्ञात स्थान पर पहुँचा दिया गया था। न तो मुगल सिपाही कुछ भी राजाराम का पता बता सके और न ही वहाँ के मराठे राज्य-कर्मचारी। इस समाचार से हरिहर को बहुत निराशा हुई और वह वहाँ से संगमेश्वर को चल पड़ा। वह अपने को किसी अथाह सागर में काल रूपी तरंगों से उछाला जाता हुआ किसी अनिश्चित भविष्य की ओर ले जाया जा रहा अनुभव करता था। वह मन में विचार कर रहा था कि कहाँ पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र में बिलासपुर, फिर नादौन का युद्ध और वहाँ से औरंगाबाद तथा नासिक और फिर रायगढ़, पनहाला और अब संगमेश्वर।

संगमेश्वर में एक चरित्र-हीन राजा और उसको मूर्ख बनाने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका मन्त्री कवि कैलाश। इनसे वह किसी प्रकार की भी कल्याण की आशा नहीं करता था। इस पर भी वह किसी अज्ञात शक्ति से उधर को ले जाया जाता अनुभव कर रहा था।

वह संगमेश्वर पहुँचा। यह महाराष्ट्र में एक पवित्र तीर्थ-स्थान समझा जाता था और नदियों के संगम पर दूर-दूर से यात्री स्नान करने आते थे।

हरिहर ने एक धर्मशाला में पहुँच अपने घोड़े को बाँधा और धोती, अँगोछा ले, संगम पर स्नान करने चल पड़ा। अभी तक वह यह विचार नहीं कर सका था कि उसका वहाँ आने का उद्देश्य क्या है?

नदी-घाट पर बैठे पण्डे के पास उसने अपने कपड़े उतार रख दिये और धोती पहन जल में खड़ा सूर्य भगवान् की ओर देख चिन्तन करने लगा, "क्या इस प्रकाशमान सूर्य के उदय होने पर भी भारत में अन्धकार छाया रहेगा।" एकाएक उसके मुख से निकल गया, "परमात्मा! क्या हम परमात्मा के प्रिय पुत्र होते हुए भी इस प्रकार की दासता और अज्ञान में पड़े हुए निन्दित एवं अपमानित होते रहेंगे?"

हरिहर को अपनी माँ की दुर्दशा की कहानी अति दुःखद रूप में सामने आ गयी। वह अपनी विवशता पर निराश हो आँखों में आँसू भर सूर्य भगवान् की ओर मुख किये खड़ा रह गया। उसकी आँखें बन्द थीं, परन्तु माँ के दुःख का चिन्तन करता हुआ वह आँसू बहा रहा था।

वह कितनी देर तक सूर्य भगवान् की ओर मुख किये खड़ा रहा। वह अपने को भूल गया। माँ के चित्र के स्थान दुःखी हिन्दू-समाज का चित्र आ गया। उसने सुन रखा था कि उसकी माँ अपनी विवशता से आतुर जल-मरने के यत्न में सर्वथा कुरूप हो गयी है। उसे प्रतीत हुआ कि हिन्दू-समाज भी विवशता में जकड़ा हुआ अपने को जलाकर भस्म करता हुआ कुरूप हो खड़ा है। कुरूपता के लक्षण वह पंजाब में, राजस्थान में और अब महाराष्ट्र में देख रहा था।

कितनी ही देर तक वह अपने मन की अन्तर्वेदना से पीड़ित आँसू बहाता हुआ हाथ जोड़े भगवान् सूर्य की ओर मुख किये खड़ा रहा। उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतना तब हुई जब किसी ने कहा, "भक्त ! बहुत देर हो गयी है । अब स्नान कर चित्त शान्त करो ।"

सामने वह पण्डा खड़ा था जिसके पास वह अपने कपड़े उतारकर रख आया था । हरिहर ने आँखें खोलीं और देखा कि स्नान करने वाले प्रायः सब जा चुके हैं और सूर्य बहुत ऊपर उठ आया है ।

स्नान करने वालों के चले जाने पर पण्डा कुछ देर तक इस भक्त के स्नान कर नदी से बाहर आने की प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु बहुत प्रतीक्षा करने पर भी जब वह नहीं आया तो वह स्वयं स्नान करने के लिये वस्त्र उतार धोती पहन जल में उतर गया । वह जब स्वयं स्नान कर चुका और तब भी उस यात्री को भगवान् सूर्य की ओर मुख किये खड़े देखा तो पण्डा उसके समीप जा धीरे-से बोला ।

हरिहर ने आँखें खोलीं और नदी-तट को लगभग जन-शून्य देख समझ गया कि उसे वहाँ आये तीन घण्टे के लगभग हो चुके हैं । उसने नदी के शीतल जल से मुख धोया और पण्डे की ओर मुस्कराते हुए देख पूछ लिया, "तो बहुत देर हो गयी है ?"

"हाँ, भक्त ! अब मुझे भी घर जाना है ।"

"ओह ! तो मैं अभी आया ।"

इतना कह हरिहर स्नान करने लगा । पण्डा तो स्नान कर चुका था । वह जल से बाहर निकल अँगोछे से बदन पोंछने लगा ।

हरिहर ने दो-तीन डुबकियाँ लगायीं और शरीर तथा मस्तिष्क को ठण्डा किया और नदी से बाहर निकल आया । पण्डा कपड़े पहन रहा था । हरिहर बदन पोंछने लगा था । पण्डे ने पूछा, "भक्त ! किसी प्रिय की स्मृति में विलीन हो गये प्रतीत होते थे ।"

"हाँ, महाराज ! माँ की याद आ गयी थी ।"

"कहाँ के रहने वाले हैं ? आप न तो मराठा प्रतीत होते हैं और न ही उत्तर भारत के ?"

हरिहर इस कथन पर तो शरीर पोंछता-पोंछता रुक विस्मय में पण्डे का मुख देखने लगा । पण्डे ने बताया, "महाराज ! आपका जूता उत्तरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के ढंग का है। आपकी पगड़ी मराठा ब्राह्मणों की-सी है और आपके यज्ञोपवीत नहीं है।"

हरिहर ने मुस्कराते हुए पण्डे की ओर देखकर कहा, "पण्डितजी! बहुत गम्भीर दृष्टि रखते हैं आप। आपका कहना ठीक है। मैं उत्तर भारत से आ रहा हूँ। इधर का जूता घिसकर टूट गया तो यह जूता वहाँ मोल ले लिया था। उधर रहते हुए पहरावा भी दिल्ली और आगरे का हो गया है और इसी से यज्ञोपवीत छूट गया है। पगड़ी तो रायगढ़ में एक मित्र ने दी है।"

"तो श्रीमान्! अब रायगढ़ से आ रहे हैं?"

"हाँ। इसमें विस्मय की बात क्या है?"

"यहाँ चर्चा है कि स्वर्गीय महाराज के कनिष्ठ पुत्र राजाराम की हत्या कर दी गयी है।"

"सत्य! मुझे वहाँ से चले एक सप्ताह हो चुका है। तब तक तो वहाँ यह समाचार था कि राजाराम पनहाला में बन्दी है।"

"परन्तु पनहाला पर तो मुगल सेना ने घेरा डाला हुआ है।"

"हाँ। मैं वहाँ देख आया हूँ।"

"ओह! तो यहाँ किसी राजकीय कार्य से आये हैं?"

"क्या राजा शम्भुजी यहाँ हैं?" हरिहर ने अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हुए पूछा।

"तो रायगढ़ से पनहाला और पनहाला से संगमेश्वर की यात्रा किसलिए की है?"

"पूना में मेरे सम्बन्धी रहते हैं। पनहाला से उधर जाते हुए इस पुण्य तीर्थ-स्थान पर स्नान करने के लोभ में यहाँ चला आया हूँ।"

पण्डा कपड़े पहन चुका था। हरिहर कपड़े पहन रहा था। पण्डे ने हँसते हुए पूछ लिया, "और भक्त! पनहाला में क्या पुण्य लाभ करने गये थे?"

"सब-कुछ बता दूँ?"

"अभी तक आपने बताया ही क्या है? यह तो मैं ही आपको बता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूँ। यदि चाहो तो कुछ और बता सकता हूँ।"

"हाँ, महाराज ! वह भी बता दो।"

"कान समीप करो, बताता हूँ।"

हरिहर ने अपना कान उसके मुख के समीप कर दिया तो पण्डे ने कुछ फुसफुसा दिया। वह सुन हरिहर गम्भीर हो गया, परन्तु तुरन्त ही सावधान होकर बोला, "मगर मैं तुर्क नहीं हूँ। मैं महाराज का एक जासूस हूँ और यह मुझे मुसलमानों में घूमने-फिरने के लिये करवानी पड़ी है।"

पण्डे ने उसकी सुन्नत के विषय में कहा था। स्नान करते हुए वह हरिहर की यह विशेषता जान गया था। इससे हरिहर को इसमें कुछ बहाना बनाना पड़ा।

पण्डे ने मुस्कराते हुए कहा, "यह तो आप जानें कि आप क्या हैं ? परन्तु यह कहना चाहता हूँ कि आपकी इस असावधानी का बहुत बुरा परिणाम भी हो सकता है।"

हरिहर कपड़े पहन चुका था। उसने जेब से एक रुपया निकाला और पण्डे को दक्षिणा-स्वरूप देते हुए कहा, "पण्डितजी ! कुछ शास्त्र इत्यादि पढ़े हो ?"

"हाँ, भक्त ! गीता, भागवत विष्णु सहस्र नाम इत्यादि कई ग्रन्थ पढे हैं।"

इस पर हरिहर ने विष्णु सहस्र नाम सुनाना आरम्भ कर दिया। पण्डित रुपया मिलने पर प्रसन्न था और यह देख कि उसके साथ चलने वाले व्यक्ति का संस्कृत का उच्चारण अति शुद्ध है तो उसने कह दिया, "हाँ। अब तो आपके कथन पर विश्वास हो गया है। फिर भी यदि आप यज्ञोपवीत पहन लें तो ठीक रहेगा।"

"यह तो मैं अब पूना जाकर अपने पुरोहितजी से पुनः लूंगा।"

हरिहर को समझ आया कि इस प्रकार के सचेत और सतर्क व्यक्ति से शम्भुजी की बात सुननी चाहिये। अतः उसने बात बदल कर पूछा, "महाराज ! यहाँ कब से रह रहे हैं ?"

"आज एक सप्ताह हो चुका है और उस सामने वाले भवन में दिन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात वीणा और सारंगी बजती रहती है। सुना है कि पाँव के पायल की झनकार से भवन गूँजता रहता है और फिर दूर-दूर से नित्य सुरा के मटके आते हैं और इस भवन में खाली हो बाहर आते देखे जाते हैं।"

"लोग इस सबको क्या समझते हैं ?"

"मुगल सेना को उमड़ते हुए आते देख जनता कुछ नहीं जानती कि क्या करें ? इस दुराचारी दुर्व्यसनी राजा के अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय भी तो दिखायी नहीं देता।"

"यह तो बहुत ही भयंकर स्थिति प्रतीत होती है।"

"हाँ, भक्त ! यदि तुम सत्य कहते हो कि तुम राजा के जासूस हो तो उसे जाकर कह दो कि समय आ गया है कि अब महाराज शिवाजी की नीति का अवलम्बन किया जाये।"

"जासूस तो मैं हूँ, परन्तु दो वर्ष के उपरान्त उनसे मिलने जा रहा हूँ। इतने काल तक मैं पंजाब और राजस्थान में रहा हूँ। तुमने यह सब बात एक ठीक व्यक्ति को ही बतायी है।

"यदि सब-कुछ ठीक रहा तो मैं कल पुनः स्नान करने आऊँगा तो बताऊँगा कि मैंने क्या किया है ?"

"करना क्या है भक्त ? उसे कहो कि यह मृदंग, वीणा को छोड़ अब छापे मारने आरम्भ कर दे। कहते हैं कि दो लाख मुगल सेना ने महाराष्ट्र को घेर लिया है और धीरे-धीरे वह अपना घेरा छोटा करती जाती है और एक समय ऐसा आयेगा जब महाराज यहाँ बैठा चूहेदानी में चूहे की भाँति फँस जायेगा।"

"बहुत दूर-दूर की खबर रखते हो, पण्डितजी।"

"आप-जैसे यात्री आते रहते हैं और दूर-दूर के समाचार बताते रहते हैं। कल कोई कह रहा था कि कुतुब शाही का एक सेनापति शेख निजाम शाह गोलकुण्डा को छोड़कर शहंशाह औरंगज़ेब की सेना में आ गया है और वह इस समय मुबारक खाँ के नाम से विख्यात है। आजकल वह पनहाला पर घेरा डाले पड़ा है। कहीं उसे पता चल गया कि महाराष्ट्र का मूर्ख महाराज यहाँ सुरा-सुन्दरी के चक्कर में बदमस्त पड़ा है तो वह इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ेगा नहीं। इसे मौत के घाट उतारे बिना नहीं रहेगा।"

"देखिये पण्डितजी महाराज ! जो भगवान् की इच्छा है, वह कोई रोक नहीं सकता। इस पर भी पुरुषार्थ तो मनुष्य का कर्त्तव्य है। वह करने के लिये मैं कटिवद्ध हूँ।"

धर्मशाला आ गयी थी। पण्डितजी ने हरिहर को आशीर्वाद दिया और अपने घर को चल पड़ा। हरिहर अपने कमरे में जा वस्त्र पहन सीधा विलास-गृह की ओर चल पड़ा।

: ६ :

द्वार पर स्त्रियों का पहरा था। वह उनसे बात करने में भी संकोच अनुभव करता था, परन्तु पण्डे की आशंका सुन उसने कहा, "मैं महाराज से मिलने आया हूँ।"

"यहाँ कोई महाराज नहीं रहते।" एक तरुणी ने हरिहर के सुन्दर ओजस्वी मुख को देख कह दिया।

"तो यहाँ कौन रहता है ?"

"घर का मालिक।"

"उसे ही मेरा नाम बताकर कहो कि मैं उनसे भेंट की प्रार्थना करता हूँ।"

"उससे ही कह दो ?" उस युवती ने व्यंगात्मक भाव में कह दिया, "जो भी है, उससे ही कह दो। यदि कुछ भिक्षा की आशा हो तो व्यर्थ है। वीर बाँके युवक ! कहाँ ठहरे हो ?"

"ठहरा तो धर्मशाला में हूँ। मैं दो सौ मील की यात्रा कर इस विलास-गृह के मालिक से मिलने आया हूँ।"

"बताया तो है कि व्यर्थ है। कहो तो मैं ही सेवा के लिये आ जाऊँ ? मगर धर्मशाला में तो हल्ला हो जायेगा।"

हरिहर को क्रोध आ रहा था। उसने डाँटते हुए कहा, "ऐ छोकरी ! बकवास बन्द करो। भीतर इत्तला कर दो कि रायगढ़ से एक विशेष सूचना लेकर आया हूँ और तुरन्त मिलना चाहता हूँ।"

छोकरी कही जाने पर वह युवती नाराज़ नहीं हुई। इस पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने अभी भी व्यंग के भाव में कह दिया, "अरे राम! ऐ मोहिनी! ज़रा आना। देखना, यह छैला मुझे छोकरी कहता है।"

हरिहर उसे कुछ और कहने वाला था कि एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री भीतर से निकल आयी। उसने हरिहर को सिर से पाँव तक देख कह दिया, "क्या कहते हो युवक? अगर जान प्यारी है तो यहाँ से चल दो।"

"माताजी!" हरिहर ने कहा, "मैं यहाँ रहने वाले मालिक के लिये रायगढ़ से एक अत्यावश्यक सन्देश लाया हूँ।"

"क्या नाम है यहाँ के मालिक का? किसके नाम सन्देश लाये हो?"

"प्रयागराज के कानूजी के लिये।"

वहाँ कानूजी के नाम को कोई नहीं जानता था। इससे वह स्त्री बोली, "यहाँ कानू-वानू कोई नहीं रहता।"

"माताजी! यह बात तो कवि कैलाशजी को कह दो कि कानूजी से मिलने पण्डित हरिहर आया है।"

कवि के नाम से मन्त्री विख्यात था। यह सुन स्त्री गम्भीर हो गयी और बोली, "ठहरो! मैं पूछकर बताती हूँ।"

बड़ी आयु की स्त्री भीतर गयी तो वह युवती जो द्वार पर पहरा दे रही थी, बोली, "इस छोकरी का निमन्त्रण स्वीकार हो तो मध्याह्न का भोजन उसके घर कर लें। यहाँ बाज़ार में अच्छा खाना नहीं मिलेगा।"

"पहले राजकीय कार्य कर लूँ तो फिर तुम्हारे निमन्त्रण पर विचार कर लूँगा।"

"राजकीय कार्य तो आज हो नहीं सकेगा। अभी भीतर सूचना गयी है। कवि महोदय गुसल कर रहे हैं। उन्हें गुसल करने में दो घण्टे लगते हैं। तदनन्तर भोजन होगा और तीसरे प्रहर से पहले आपकी सुनवायी नहीं हो सकती। तब तक तो आप भोजन कर निश्चिन्त हो यहाँ आइयेगा और आपसे कविजी महाराज की भेंट हो जावेगी।"

"मैं तो बिना उनके दर्शन किये कहीं भी जाना नहीं चाहता।"

उस युवती के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा; जब वही प्रौढ़ावस्था की स्त्री बाहर आयी और हरिहर से बोली, "आइये, कविजी आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर बुला रहे हैं।"

"हरिहर ने मुस्कराते हुए उस प्रहरी युवती की ओर देखा और कहा, "अब तुम्हारे भोजन की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

इतना कह हरिहर दूसरी स्त्री के साथ भीतर चला गया।

मद्य से अर्ध-चेतना की अवस्था में कवि एक पलंग पर बैठा था और पलंग पर फूलों के गजरे कुचले-मसले पड़े थे। हरिहर समझ गया कि अभी-अभी पलंग पर कोई साथी लेटा-लेटा कहीं भीतर चला गया है।

हरिहर ने हाथ जोड़ प्रणाम कर कहा, "मन्त्री महोदय! मैं पनहाला से आया हूँ।"

"वहाँ क्या कर रहे थे?"

"यह बताने की आवश्यकता नहीं समझता। मैं जिस प्रयोजन से आया हूँ, वह सुन लो।"

कवि कैलाश सिर हिला सचेत होने का यत्न करता हुआ सुनने को तैयार हो गया। उसने कहा, "अच्छा, जल्दी करो। बताओ क्या कहते हो? मेरी कोई अन्य भी प्रतीक्षा कर रहा है।"

हरिहर मुस्कराया और बोला, "वहाँ से मुगल सेना इसी ओर आ रही है और महाराज तथा आप सब की जान भय में है। शीघ्रातिशीघ्र यहाँ से चल दो।"

कवि खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "तुम महाराज से मिले हो।"

"कौन महाराज?"

"क्या तुम जानते नहीं कि महाराष्ट्र में एक महाराज है, दो नहीं हैं।"

"नहीं, महाराष्ट्र के महाराज से नहीं मिला। उनके मन्त्री को कह रहा हूँ कि यहाँ से तुरन्त कूच कर दें और कहीं पहाड़ों में जा कर छुप जायें।"

"यहाँ हम सर्वथा सुरक्षित हैं। तुम अपनी बताओ? इतने दिन तक कहाँ रहे हो?"

"मैं पंजाब चला गया था। वहाँ सिक्खों के गुरुजी महाराज की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से एक छोटे-से युद्ध में भाग लिया था। तदनन्तर गुरुजी और मुगलों में संधि हो जाने पर वहाँ से चला आया हूँ।"

"यहाँ भी संधि हो जायेगी। मुगलों को एक करारी पराजय देने की आवश्यकता है। ज्यों ही हमने पराजय दी कि संधि हो जायेगी।"

"हाँ। परन्तु मन्त्री महोदय, मैं यह नहीं चाहता कि पराजय अपने महाराज की हो। इसलिये पूरी तैयारी से युद्ध होना चाहिये।"

"अच्छी बात है। महाराज की नींद खुलते ही सूचना दे दूंगा और यह भी बता दूंगा कि तुम आये थे। अब तुम जा सकते हो। हम एक अत्यावश्यक कार्य में लगे थे।"

हरिहर को कमरे में और कवि साहब के मुख से मद्य की गंध आ रही थी। इस कारण उसने और अधिक कहने की अपेक्षा वहाँ से चला आना उचित समझा।

वह प्रौढ़ावस्था की स्त्री इस सब समय में कमरे में खड़ी हरिहर की बात सुन रही थी। हरिहर कमरे से निकला तो वह स्त्री भी उसके साथ ड्योढ़ी की ओर चल पड़ी। मार्ग में हरिहर ने कहा, "यदि तुम लोगों को अपनी जान प्यारी है तो आज रात से पहले सब यहाँ से भाग जाओ। यहाँ प्रलय आने वाली है।"

वह स्त्री भी हँसी। हँसते हुए बोली, "जवान! प्रलय पुरुषों को ही डरा सकती है। हम स्त्रियाँ तो प्रलय की बहनें हैं। हमें वह छू नहीं सकती।"

"हरिहर मुस्कराया और विलास-गृह के द्वार पर खड़ी छोकरी को बोला, "इस स्थान पर मुगल आक्रमण होने वाला है और तुम हरएक को कई-कई जवान मिल जायेंगे। बहुत प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।"

इतना कह हरिहर वहाँ से धर्मशाला की ओर वैसे ही पैदल चल पड़ा जैसे वह आया था।

हरिहर के इस प्रकार चले जाने के उपरान्त वह युवती प्रौढ़ावस्था की मोहिनी के मुख पर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगी। मोहिनी ने बताया, "यह युवक मन्त्रीजी को कह रहा था कि मुगल सेना पनहाला से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर आ रही है और यहाँ से हम सबको भाग जाना चाहिये।"

"तो फिर ?"

"मैं तो जा रही हूँ, परन्तु चाहती हूँ कि सबको बता दूँ जिससे कि जिसको जान प्यारी हो, वह चल दे।"

"और महाराज तथा मन्त्री ?"

"कवि मन्त्री को सूचना मिल गयी है। महाराज अभी सोकर उठे नहीं। कविजी को चाहिये कि वह महाराज को जगाकर यह सूचना सुना दें।"

इन दोनों की बातें सुनने वाला एक युवक भी वहाँ था। वह सारंगी बजाने वाला था। उसने कह दिया, "परन्तु कविजी महाराज के कमरे में तो गीता फिर घुस गयी है और पुनः द्वार भीतर से बन्द हो गया है।"

"तो किसी प्रकार महाराज को सचेत किया जाये।" मोहिनी का कहना था।

"कैसे किया जाये ? उनके क्रोध से तो भय लगता है।"

मोहिनी ने एक क्षण तक गम्भीर हो विचार किया और कहा, "रानाजी ! बड़े कमरे में मजलिस आरम्भ कर दी जाये। सब वाद्य-यन्त्र बजाने आरम्भ कर दिये जायें। हीरा से कहो कि पायल बाँध नृत्य आरम्भ कर दिया जाये और भवन-भर को संगीत और पायलों की ध्वनि से गुँजाना आरम्भ कर दो।

"तब महाराज उठेंगे और फिर उनको सूचना दे दी जाये।"

मोहिनी की योजना सब को ठीक मालूम हुई और विलास-भवन में उपस्थित सब कलाकार भवन के दीवानखाने में एकत्रित हो गये। इनमें वीणा, सारंगी, मृदंग, बाँसुरी और अन्य भाँति-भाँति के वाद्य-यन्त्र बजाने वाले थे। उनके साथ ही गायिकाएँ तथा नर्तकियाँ थीं। मोहिनी का सुझाव था कि भैरव के स्वर गाये जायें। इससे महाराज को विदित होगा कि प्रभात हो गयी है।

यद्यपि सब भयभीत थे; तदपि सबके मन में यह भावना थी कि यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज जाग पड़ें तो विदा होने से पहले उनको सचेत कर दें।

अतः बारह से ऊपर वाद्य-यंत्र भैरव राग के स्वर कूकने लगे। बीस के लगभग पुरुष-स्त्रियाँ प्रभाती पद अलापने लगे। एक दर्जन से अधिक नर्तकियाँ पाँव में पायल बाँध छमक-छमक झंकार करने लगीं।

इस प्रकार पूर्ण विलास-भवन इस मध्याह्न में प्रभाती राग से गूंज उठा। कवि कैलाश पहले कमरे से निकला। उसने निकलते ही आवाज़ दी, "यह क्या बदतमीज़ी है ? भले लोगों को नींद भी नहीं लेने देते।"

मोहिनी ने आगे बढ़कर कहा, "पण्डितजी ! हम महाराज को जगाने का यत्न कर रहे हैं।"

"क्यों ?"

"वह युवक कुछ कह गया है न ?"

"वह तो मुगल जासूस था।"

"तो क्या वह झूठ कह गया है ?"

"नहीं। वह हमारी हँसी उड़ा गया है। वह राजाराम के पक्ष का आदमी था और फिर मुगलों की खिदमत में चला गया था।"

मोहिनी इस सूचना पर भौंचक्की हो मुख देखती रह गयी। वह यह समझ नहीं पा रही थी कि मुगलों का जासूस भला उनको क्यों सचेत करेगा ? उसे तो मुगल सेना आती हो तो कहना चाहिये था कि नहीं आ रही है।

इस पर भी वह कविजी को यह कह नहीं सकी कि वे ग़लत कहते हैं। उसने कह दिया, "महाराज ! यहाँ तो सब डर गये हैं और इसी कारण महाराज को जगाने का यत्न कर रहे हैं। साथ हम यहाँ अकेले नहीं हैं। हमारे पाँच सौ शूरवीर सिपाही नदी-तट पर डेरा डाले हैं।"

कवि दीवानखाने में जा पहुँचा और कहने लगा, "बन्द करो यह शोर।"

"परन्तु उनके बन्द करने से पूर्व महाराज शम्भुजी जाग पड़े और आँखें मलते-मलते कमरे से निकल आये।

कोंकण नर्तकी मीरा दस अन्य नर्तकियों के बीच नाच रही थी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान-भक्ति की मुद्रायें बना रही थी। उसको मुद्रा बनाते देख शम्भुजी लपक कर उसके समीप जा खड़ा हुआ और काल्पनिक मुरली बजाने का अभिनय करने लगा।

इस पर तो दीवानखाने में रास लीला का दृश्य बन गया और चौथाई घण्टा-भर यह संगीत-नृत्य समारोह होता रहा।

जब नृत्य और संगीत बन्द हुआ तो नाचने वाली स्त्रियाँ भी खड़ी हो गयीं और कैलाश कवि आगे बढ़ क्षमा-भाव में कहने लगा, "एक भूल के कारण महाराज को जागना पड़ गया है।"

"परन्तु जागने से कुछ हानि नहीं हुई। मीरा से रास लीला करनें का सौभाग्य मिल गया है।"

इस समय मोहिनी ने आगे बढ़ कहा, "यहाँ यह समाचार पहुँचा हैं कि मुगल सेना आ रही है।"

"कौन मूर्ख यह कहता है?"

उत्तर कवि महाराज ने दिया और कहा, "वही विश्वनाथ का भांजा हरिहर आया था, वही कह गया है।"

"क्या कह गया है?"

"वह कह गया है कि पहनाला से मुगल सेना यहाँ आ रही है।"

"परन्तु कल रात ही तो यह समाचार आया था कि वहाँ सब शान्त हैं।"

"हाँ, महाराज! मुझे तो कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि वह हमारी हँसी उड़ा गया है।"

"हाँ। मैं भी विचार करता हूं कि हमारा जासूस सरपट घोड़ा दौड़ाते हुए तीन दिन में आया था। उस समय भी सेना वहाँ से चली होगी तो वह दस दिन से पहले नहीं पहुँच सकती।"

"हाँ महाराज!" कवि कैलाश ने कहा, "दो दिन में तो हम स्वयं ही यहाँ से जाने वाले हैं।"

"देखो!" शम्भुजी ने कहा, "तुम सब लोग खूब खाओ, पियो और आनन्द से रहो। किसी को पता न चले कि हम यहाँ से कहीं जाने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। हम एक दिन यहाँ से चुपचाप चले जायेंगे और पनहाला का घेरा डालने वालों पर कयामत नाज़ल करने वाले हैं।"

इसी सायंकाल भोजन के पूर्व महाराज और मन्त्री में बात हुई। शम्भुजी ने पूछा, "यह हरिहर का बच्चा यह समाचार देने किसलिये आया था ?"

"यह समाचार सत्य नहीं हो सकता। पिछले रविवार हमारा जासूस पनहाला से चला था और कल मंगल के दिन शाम को यहाँ पहुँचा था। इतना अन्तर मुगल सेना, जो अपने साथ नौकर-चाकर, गाने-बजाने वालियाँ लेकर चलते हैं, दस दिन से पहले नहीं तय कर सकती। यदि वे लोग सत्य ही चल पड़े हैं तो अभी मंगलवार तक यहाँ पहुँचेंगे। हम तो शुक्र की प्रातः को यहाँ से चल देंगे।"

इस गणना से निश्चिन्त हो वे भोजन कर दीवानखाने में जा पहुँचे। वहाँ एक गज़ल गायी जा रही थी।

शम्भुजी ने हीरा नर्तकी की बगल में बैठते हुए कहा, "हीरा बाई ! आज तो तुम कुछ गाओ।"

"पर महाराज ! मैं तो नाचना जानती हूँ, गाना नहीं।"

"तभी तो कहते हैं कि आज तुम गाओ। जो नित्य गाते हैं, वे आज नाचेंगे।"

"और महाराज ! जो नित्य सुनते हैं, वे आज क्यों न गायें ?"

"हाँ। यह भी ठीक है। पहले सुनने वाले गायें और गाने वाले सुनें।"

समीप बैठा सारंगी बजाने वाला बोल उठा, "हाँ महाराज ! जो पिलाने वाले हैं पियें और नित्य पीने वाले पिलायें।"

इस पर तो सब हँसने लगे। कवि कैलाश ने कहा, "यह उलट-पुलट कुछ देर बाद हो। पहले कुछ मस्ती आ जाये तब।"

"वाह ! फिर क्या मज़ा होगा ? तब तो कोई भी समझ नहीं सकेगा कि क्या विशेषता हो रही है।"

"क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होश में ही नहीं रहेंगे तो समझेंगे क्या और रस किस बात का लेंगे ?"

सारंगी वाले ने कह दिया, "मज़ा तो तब ही रहेगा जब खुद को भूलकर नकल करेंगे।"

"तो ले आओ जाम।" शम्भुजी ने कह दिया।

हीरा ने सामने रखी सुराही में से जाम भरकर महाराज के मुख से लगा दिया।

शम्भुजी ने अभी एक घूंट ही पिया था कि विलास-भवन के बाहर बन्दूक चलने की आवाज़ आयी।

हीरा बाई के हाथ से गिलास छूट गया। दिन के समय की सचेत किये जाने की बात स्मरण आ गयी थी।

इस समय द्वार पर खड़ी लौंडी भागी हुई आयी और चीख की आवाज़ में कहने लगी, "मुगल ! मुगल !!"

शम्भुजी और कवि दोनों उठे और कैलाश के शयनागार में घुस भीतर से कुण्डा चढ़ा लिया।

ये अभी उस कमरे में गये ही थे कि मुगल सिपाही नंगी तलवारें लिये भीतर घुस आये।

गाने वालियाँ और बजाने वाले सब भयभीत उठ दीवारों के साथ खड़े हो गये। सालार ने पूछ लिया, "कहाँ है तुम्हारा राजा ?"

सब चुप थे। सालार ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि ढूंढो उसे। यहाँ कहीं किसी पलंग या तकिये के पीछे छुपा पड़ा होगा। सब कमरे खुले थे। केवल एक कमरा भीतर से बन्द था। यह कवि कैलाश का शयनागार था। द्वार तोड़ डाला गया और जब भीतर से तलाशी ली गयी तो गुसलखाने में से एक भूम्यान्तर्गत मार्ग खुलता दिखायी दिया। मशालें जलायीं गयीं और सिपाही उसमें ढूंढने चल पड़े।

विलास-गृह को मुगलों ने चारों ओर से घेरा हुआ था। इस गृह से कुछ अन्तर पर कवि कैलाश का अपना निवास-स्थान था। सैनिकों ने उसे भी घेर रखा था। वहाँ एक सौ के लगभग मराठा सिपाही थे। उनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुगलों की मुठभेड़ हो गयी।

मुगल संख्या में अधिक थे। इस पर भी मराठे बहुत बहादुरी से लड़े और मुगल सिपाही वहाँ से भगाये जाने वाले थे कि कवि कैलाश के शयनागार में उस सुरंग से जो विलास-गृह से वहाँ आती थी, मुगल सिपाही पहुँच गये। कवि की पत्नी और बच्चे पकड़ लिये गए। शम्भुजी भी पकड़े गये। इनके भीतर से पकड़ कर विलास-गृह को ले जाने पर कवि महोदय भी साहस छोड़ शस्त्र डाल बैठा और पकड़ लिया गया।

: ७ :

मुगल सैनिकों द्वारा विलास-गृह पर धावे और शम्भुजी तथा कवि कैलाश के पकड़े जाने का समाचार संगमेश्वर में विद्युत् की भाँति फैल गया। हरिहर अभी धर्मशाला में ही था और अपने भावी कार्यक्रम के विषय में विचार कर रहा था कि धर्मशाला में महाराजा शम्भुजी के मुगलों द्वारा पकड़ लिये जाने का समाचार पहुँच गया। नगर के तथा यात्री लोग छोटी-छोटी मण्डलियों में खड़े बातें कर रहे थे।

हरिहर अपने कमरे में ही था और बाहर प्रांगण में हलचल का आभास पा वह बाहर निकल आया और प्रांगण में खड़ी एक मण्डली में जा खड़ा हुआ। उसने खड़े लोगों को चुप होते देख पूछ लिया, "क्या बात है जो रात के समय लोग बाहर आ खड़े हुए हैं ?"

एक ने साहस पकड़ कह दिया, "महाराज को मुगलों ने पकड़ लिया है।"

"सत्य ? कब आये हैं वे ?"

"रात प्रथम प्रहर के समय तीन-सौ के लगभग सिपाही आये थे।"

"और अपने कितने थे ?"

एक ने कह दिया, "आप भी तो मध्याह्न के समय वहाँ गये थे। आपने देखा नहीं था कि कितने थे ?"

हरिहर समझ गया कि इस स्थान पर भी धर्मशाला में लोग उतने ही दूसरों पर देख-रेख रखते हैं जितनी कि मुगल नगरों की सरायों में रखी जाती है। इससे कुछ झेंपते हुए उसने कहा, "उस समय तो वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक भी मराठा सिपाही नहीं था। वहाँ सुन्दरियों की भरमार थी।"

अब एक अन्य ने कह दिया, "मन्त्री महोदय के निवास-स्थान पर झड़प हुई है। वहाँ थोड़े-से अपने सैनिक थे। सुना है कि महाराज और उनके मन्त्री वहीं पकड़े गये हैं।"

"पर ये मुगल नगर को लूटने न आ जायें।"

"वे लौट गये हैं।"

"किधर लौट गये हैं?"

"जिधर से आये थे।"

हरिहर ने और अधिक जानकारी की आवश्यकता नहीं समझी। उसके मस्तिष्क में राजाराम की याद आ रही थी। उसे शम्भुजी के पकड़े जाने और उसके भविष्य के विषय में किसी प्रकार की चिन्ता नहीं थी। वह विचार कर रहा था कि इस घटना का मराठा राज्य पर और भारत की शेष हिन्दू जनता पर क्या प्रभाव होगा।

इस दिशा में ध्यान करते ही उसने सोचा कि राजाराम को महाराज घोषित कर उसके आधार पर पुनः सेना और राज्य का संगठन करना चाहिये।

इतना विचार आते ही वह अपने कमरे में चला गया और अपनी खाट पर लेटा हुआ विचार करने लगा कि वर्तमान स्थिति में वह क्या और किस प्रकार कार्य करे?

यह तो लगभग निश्चय ही था कि मुगल शिविरों में खुशी के शादियाने बजने लगेंगे। औरंगजेब के जीवन का कार्य पूर्ण हुआ और उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई होगी। वह खुशी में पागल हो जाये तो विस्मय करने की बात नहीं। इस पागलपन में वह किस-किस की हत्या और अनिष्ट करेगा, कहना कठिन है। इसमें तो किंचित्-मात्र भी सन्देह नहीं था कि वह शम्भुजी की एक-एक बोटी नोच-नोचकर उसे अत्यन्त कष्ट देकर मरवायेगा। यह मुगलों के स्वभाव में था कि वे मस्कीन बिल्ली की भाँति हाथ में आये चूहे की दुर्दशा देख-देख सन्तोष लाभ करते हैं।

वह समझ रहा था कि अब शहंशाह अपना ध्यान उत्तर भारत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिक्खों की हलचल की ओर लगायेगा और पूर्ण सल्तनत की शक्ति उनको कुचलने के लिये लगा देगा।

इस प्रकार उसके मन में बार-बार विचार आ रहा था कि इस शहंशाह को दक्षिण से अवकाश नहीं पाने देना चाहिये। इसके लिये इधर ही इतना कार्य-निर्माण कर देना चाहिये कि इसे दिल्ली, आगरा और पंजाब की ओर देखने का अवसर ही न मिले।

इस परिणाम पर पहुँचते हुए वह विचार करने लगा कि राजाराम को ढूंढ निकालना चाहिये और उसे बन्दी-गृह से निकाल राज्य-गद्दी पर तुरन्त बैठा देना चाहिये।

पनहाला में उसे यह पता चला था कि राजाराम को वहाँ से चोरी-चोरी निकाल किसी अज्ञात स्थान पर ले गये हैं। उस अज्ञात स्थान के विषय में रायगढ़ पर सन्देह किया जाता था।

अतः उसने रायगढ़ जाने का निश्चय कर लिया और अगले दिन पौ फटने से पूर्व ही वह अपने घोड़े पर सवार हो पूर्व को चल दिया। तीन दिन की यात्रा के बाद वह रायगढ़ जा पहुँचा। वहाँ वह अपने मित्र काशीनाथ के घर पर जा ठहरा।

काशीनाथ हरिहर को देख अति प्रसन्न हुआ। उसने बताया, 'दादा! यहाँ तो क्रान्ति हो गयी है।"

"क्या हुआ है, भैया?"

"तुम्हारे जाने के उपरान्त, उसी दिन अथवा उससे अगले दिन राजाराम यहाँ ले आया गया। वह शम्भुजी के बन्दी के रूप में था, परन्तु यहाँ के दुर्गपति चांगोजी कातकर ने साहस-युक्त कार्य किया। उसने स्वर्गीय महाराज के साथी यशोजी कनक मवाली की सहायता से राजाराम को बन्दी-गृह से निकाल ब्राह्मणों को बुला राज्याभिषेक करा दिया है।

"यहाँ रायगढ़ के सैनिक, जिनकी संख्या चार-पाँच सौ ही है, सबने राजाराम की सहायता की शपथ ले ली है।"

"पर दादा! उधर तो एक अन्य घटना हो गयी है।"

"क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शम्भुजी को मुगल सेना ने पकड़ लिया है।"

"यह तो बहुत ठीक हुआ है। यह दुष्ट मराठा राज्य का अभिशाप समाप्त हो गया। अब मराठे एक छत्र के नीचे पुनः संगठित हो सकेंगे।"

"परन्तु राजाराम भी यहाँ सुरक्षित नहीं। ये चार-पाँच सौ सिपाही क्या करेंगे? बीजापुर की भाँति रायगढ़ को भी घेरा डाल दिया जायेगा और महाराज भी पकड़ लिया जायेगा।"

"तो?"

"चांगोजी से तो मेरा कुछ अधिक परिचय है नहीं। मैं मवाली सरदार यशोजी को जानता हूँ और उससे मिलना चाहूँगा।"

"तो दादा! शीघ्र करो। उस दुष्ट के पकड़े जाने का समाचार यहाँ नहीं पहुँचा और उसके मन्त्री कवि कालूप का क्या हुआ?"

"वह तो अपने पूर्ण परिवार सहित पकड़ा गया है।"

काशीनाथ प्रसन्न प्रतीत होता था, परन्तु हरिहर अभी द्वार पर घोड़े की लगाम पकड़े भूमि पर खड़ा वहाँ अथवा कहीं अन्यत्र ठहरने का विचार ही कर रहा था। एकाएक उसे काशीनाथ का सुझाव ठीक प्रतीत हुआ कि तुरन्त यह समाचार अधिकारियों के पास पहुँचाना चाहिये।

इस कारण उसने काशीनाथ को अपने घोड़े की लगाम पकड़ायी और कहा, "भैया! इसे रखो। मैं दुर्ग में जा रहा हूँ।"

वह पैदल ही दुर्ग की ओर चल पड़ा।

दुर्ग के द्वार पर उसे रोका गया तो उसने यशोजी से मिलने के लिये इच्छा प्रकट की। एक सिपाही उसे यशोजी के आवास पर ले गया। यशोजी का आवास भी सैनिकों से सुरक्षित हो रहा था, परन्तु हरिहर के नाम की सूचना भीतर जाते ही उसे बुला लिया गया।

बूढ़ा सरदार यशोजी बहुत प्रसन्न और साहस से भरा हुआ था। वह हरिहर को देख प्रसन्नता से उबलता हुआ पूछने लगा, "पण्डित! कहाँ रहे हो इतने दिन तक?"

"काका! पंजाब गया हुआ था।"

"यहाँ हमने तो जीवन की बाज़ी राजराम पर लगा दी है। हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं कि कवि को तथा उसके आका शम्भुजी को पकड़ लें। सुना है कि वह संगमेश्वर में ऐश उड़ा रहा है।"

हरिहर ने मुस्कराते हुए कहा, "काका ! वे दोनों इस समय मुगलों के बन्दी हो चुके हैं।"

"सत्य ?" यशोजी उछल पड़ा। वह खड़ा हो बोला, "हरिहर ! सत्य कहते हो ? यह तो बहुत ही शुभ समाचार है।"

"परन्तु काका ! मुगल सेना राजाराम को भी पकड़ने के लिये आ रही है।"

"तो हम उससे लड़ेंगे।"

"यह ठीक है, परन्तु यहाँ कितनी सेना है ?"

"दुर्ग में तो चार सौ ही हैं।"

"यदि मुगल शहंशाह को पता चल गया कि राजाराम यहाँ है तो बीजापुर की एक लाख सेना यहाँ घेरा डाल देगी।"

"तो फिर ?"

"यहाँ कौन-कौन लोग हैं जो राजाराम के साथी हैं ?"

"अभी तो हम दो ही हैं। मैं हूँ और किलेदार चांगोजी हैं।"

"तो काका ! चलो उसके पास। कल कदाचित् देर हो जायेगी।"

खड़े-खड़े ही दोनों राजाराम के ठहरने के स्थान की ओर चल पड़े।

राजाराम शम्भुजी की पत्नी यशो बाई और पुत्र शाहुजी के साथ रहता था। यशो बाई भी अपने पति के दुराचार से ऊब चुकी थी और उससे सहानुभूति खो चुकी थी। उसको भी महाराष्ट्र का भाग्य राजाराम से सम्बन्धित प्रतीत होता था। इस कारण राजाराम के अभिषेक को उसने भी पसन्द किया था।

जब हरिहर और यशोजी मवाली राजाराम के गृह पर पहुँचे तो दुर्गपति चांगोजी भी वहाँ उपस्थित था। अतः तुरन्त ही बातचीत होने लगी।

हरिहर ने अपने संगमेश्वर से आने की बात बता शम्भुजी तथा कवि कैलाश के पकड़े जाने का समाचार दे दिया। साथ ही कह दिया, "मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझता हूँ कि राजाराम के पनहाला में न होने का समाचार पाते ही वह सब सेना यहाँ रायगढ़ का घेरा डाल देगी। तब बहुत कठिनाई हो जायेगी।"

"परन्तु हम तो पुराने एवं विश्वस्त नेताओं के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमने पण्डित नीलकण्ठ मोरेश्वर पिंगले, रामचन्द्र, नीलकण्ठ भावेदकर और शंकरजी मलहार को बुलवाया है।"

"कब संदेश भेजा है?"

"आज दो सप्ताह होने जा रहे हैं।"

"उनके आने की सूचना मिली है क्या?"

"केवल पिंगले साहब के यहाँ से समाचार आया है कि वे बीमार हैं। उनके कुछ दिन में आने का समाचार है।"

"देखो काका! वे आते रहेंगे। तुमको तो कोई निश्चय अभी करना होगा।"

अब यह सूचना यशो बाई को भेजी गयी तो वह और राजाराम अन्तःपुर से निकल आये।

यशो बाई अपने पति के पकड़े जाने का समाचार पाकर स्तब्ध खड़ी रह गयी। हरिहर ने उसे भय से सचेत करने के लिये कहा, "महारानीजी! महाराज के विषय में चिन्ता तो है। इन मुगलों के हाथ में पड़ जाने से महाराज को कितनी यन्त्रणा भोगनी पड़ेगी, कहा नहीं जा सकता। उसमें कोई कुछ नहीं कर सकता, परन्तु उनसे भी अधिक चिन्ता है महाराष्ट्र राज्य की। यह महाराज के स्वतन्त्र रहते भी क्षीण हो रहा था और अब तो इसके शून्य हो जाने के लक्षण दिखायी देने लगे हैं।

"महारानीजी! हम लोग महाराष्ट्र में स्वराय की रक्षा के लिये यह सब प्रयास कर रहे हैं और आपसे इसी नाते निवेदन करने मैं संगमेश्वर से भागा-भागा आया हूं।"

"आप क्या कहते हैं?" यशो बाई ने पूछ लिया।

"मैं समझता हूँ कि यहाँ आपका एवं राजाराम का रहना ठीक नहीं। साथ ही यहाँ से जाना तथा जाने का स्थान गुप्त रखना आवश्यक है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझती हूँ कि दुर्ग की रक्षा का प्रबन्ध करना चाहिये। भाग-दौड़ की अपेक्षा यह अधिक आवश्यक है। आप राजाराम के राज्याभिषेक की घोषणा कर दीजिये और मराठा सेना को यहाँ एकत्रित कर लीजिये। मैं भी राजाराम का पक्ष लेकर लड़ूँगी।"

इस सम्मति पर यशोजी और चांगोजी मुख देखते रह गये। वे अपने को इस योग्य नहीं समझते थे कि अपने उत्तरदायित्व पर मुगल शहंशाह से युद्ध में राज्य-परिवार को भय की स्थिति में डाल दें।

हरिहर और दोनों मराठा सरदारों को एक-दूसरे का मुख देखते पा यशो बाई ने अब आज्ञा के रूप में कह दिया, "राजाराम के नाम पर अथवा मेरे नाम पर महाराष्ट्र में सेना का आह्वान किया जाय।"

इस प्रकार बात समाप्त कर यशो बाई भीतर चली गयी। चांगोजी समझ नहीं सका कि दुर्ग की रक्षा किस प्रकार की जाय? शम्भुजी की पत्नी के अन्तःपुर में चले जाने पर दोनों मराठा नेता हरिहर का मुख देखने लगे। हरिहर ने विचारकर कहा, "दुर्ग में बैठे रहने से कार्य नहीं चलेगा। यद्यपि मैं यह विचार करता हूँ कि दुर्ग की अधिक-से-अधिक काल तक रक्षा करनी चाहियें, परन्तु मुगल सेना के विपरीत अभियान तो दुर्ग के भीतर रहकर नहीं हो सकेगा।"

तब निश्चय किया गया कि तुरन्त अन्य नेताओं को बुलाकर वर्तमान स्थिति में योजना बनानी चाहिये।

: ८ :

उसी समय प्रमुख नेताओं को पत्र लिखे गये और उनको तुरन्त राजाराम की सहायता के लिने आने का निमन्त्रण दिया गया।

वे सब व्यक्ति जो पहले राजाराम का पक्ष लेने पर बन्दी बना लिये गए थे किन्तु अभी मारे नहीं गये थे, छोड़ दिये गए। इनमें प्रमुख थे नीलकण्ठ मोरेश्वर पिंगले, रामचन्द्र, नीलकण्ठ भावेदकर तथा शंकरजी मलहार। इनके अतिरिक्त राज्य-सेवकों में भी ऐसे व्यक्ति थे, जो शम्भुजी की चापलूसी न करने के कारण उन्नति नहीं कर सके थे। इनमें धन्नासिंह जादव और सन्ताजी गोरपाड़े और अन्य भी कई थे, जिनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र लिखे गये ।

परन्तु ये सब तुरन्त नहीं आये । इनके आने में देर लगी और तब तक शम्भुजी को पकड़कर शहंशाह के सम्मुख बहादुरगढ़ में उपस्थित किया गया ।

शहंशाह के सम्मुख उपस्थित करने से पूर्व शम्भुजी के सिर पर मूर्खों का टोप और विदूषकों के-से कपड़े पहना गधे पर चढ़ा पूर्ण नगर में घुमाया गया और फिर शहंशाह के सम्मुख उपस्थित कर उसको मृत्यु-दण्ड सुनाया गया ।

मृत्यु-दण्ड देने के पूर्व शम्भुजी को कई प्रकार के कष्ट और यन्त्रणा दी गयीं । उसकी आँखें फोड़ डाली गयीं और फिर एक-एक अंग काट उसकी हत्या की गयी ।

कवि कैलाश के साथ भी वैसा ही व्यवहार किया गया । इस व्यवहार की सूचना महाराष्ट्र-भर में फैल गयी और इसका प्रतिकार करने के लिए असंख्य-जन रायगढ़ में एकत्रित होने लगे ।

परन्तु इसके पूर्व ही शहंशाह की यह आज्ञा हो गयी कि राजाराम और उसके साथियों को भी समाप्त किया जाये और इसके लिये रायगढ़ को घेरे में लेने का प्रयास आरम्भ हो गया ।

हरिहर अभी तक रायगढ़ में काशीनाथ के मकान में ही टिका था । वह नित्य चांगोजी से मिलने जाता था । वह चाहता था कि रायगढ़ के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर से अभियान आरम्भ किया जाये । उसका यह भी सुझाव था कि छापामार आक्रमण आरम्भ कर देने चाहियें, परन्तु इस योजना में केवल धन्नासिंह जादव ही सहमत था । वह अभी कुछ अधिक प्रतिष्ठा नहीं रखता था । इस कारण उसकी सुनी नहीं जाती थी ।

जिस दिन मुगल सैनिकों की प्रथम टुकड़ी रायगढ़ का घेरा डालने का यत्न करती देखी गयी उस दिन हरिहर पुनः दुर्ग में गया और राजाराम से धन्नासिंह जादव के सम्मुख कहने लगा, "महाराज ! आपको दुर्ग छोड़ देना चाहिये, अन्यथा सब पकड़े जायेंगे और फिर आपके साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जावेगा, जैसा कि शम्भुजी के साथ किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया था ।

धन्नासिंह जादव ने हरिहर का समर्थन कर दिया । उसी समय शम्भुजी की विधवा यशो बाई को बुलाया गया । वह अभी भी किले में रहकर अभियान चलाने के पक्ष में थी ।

युक्तियाँ-प्रति-युक्तियाँ करते हुए रात हो गयी । इस समय मोरेश्वर पिंगले राजाराम की सहायता के लिये रायगढ़ पहुँच गया । उसे तुरन्त बुला लिया गया, परन्तु उसने समाचार दिया, "इस समय राजाराम के लिये भागने का कोई मार्ग नहीं रहा । इतनी मुगल सेना दुर्ग के चारों ओर फैल चुकी है कि राज्य-परिवार का भाग निकलना असम्भव है।"

"परन्तु मोरेश्वरजी ! यहाँ चूहेदानी में फँसकर भूखों मारा जाना भी तो अति भयंकर है। यदि पूर्ण परिवार नहीं जा सकता तो कम-से-कम महाराज को तो यहाँ से निकाल देना चाहिये ।

इस पर यशो बाई ने आवेश में कह दिया, "राजाराम जाना चाहे तो जा सकता है । मैं तो यहीं रहूँगी और यहीं से युद्ध जारी रखूँगी।"

हरिहर इस वक्तव्य का अर्थ नहीं समझ सका । वह अभी इसका अर्थ समझने में ही लगा था कि राजाराम ने कह दिया, "पण्डित हरिहर ! इस समय निकल सकना सम्भव भी है क्या ?"

"यत्न करना चाहिये । महाराज यदि इस घेरे से निकल सके तो महाराष्ट्र बच जायेगा, अन्यथा यह तीन महीने में मुगल सल्तनत का एक नगण्य भाग बन जायेगा ।"

सब मुख देखते रह गये । मोरेश्वर गोष्ठी से यह कहकर उठ गया कि वह लम्बी यात्रा से थका हुआ है । यशो बाई यह कहकर अन्तःपुर में चली गयी कि राजाराम जाना चाहे तो जा सकता है । रह गये धन्नासिंह, हरिहर और राजाराम ।

राजाराम ने धीरे-से कहा, "पण्डितजी ! प्रबन्ध करिये । मैं चलूंगा।"

जादव ने भी कहा, "पण्डितजी ! कोई योजना विचार करिये।"

हरिहर के उर्वरक मस्तिष्क ने योजना बनाई और आधे घण्टे में तीन व्यक्ति साधु के वेश में रायगढ़ दुर्ग से निकल पश्चिम की ओर चल दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे राजाराम, हरिहरनाथ और धन्नासिंह जादव थे।

ये रात-भर चलते रहे और दिन निकलने पर रायगढ़ से पन्द्रह मील के अन्तर पर एक टूटे हुए शिव मन्दिर में टिक गये। हरिहर बाहर आधा घण्टा विश्राम कर किसी गाँव को ढूंढने चल पड़ा।

राजाराम ने धन्नासिंह जादव से कहा, "रात हरिहर के आने से पूर्व भाभी यशो ने कहा था कि उसे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि हरिहर मुगल जासूस है। वह बीजापुर के घेरे के समय शहंशाह औरंगज़ेब का परामर्शदाता था और यह मुझे किले से निकाल मुगलों के हाथ में सौंप देगा।"

जादव इस सन्देह को सुन चकित रह गया। फिर कुछ विचार कर बोला, "पर महाराज! हमें पकड़वाने का इससे अच्छा अवसर और क्या हो सकता था जब हम रात मुगल शिविर में नारायण हरि का घोष करते हुए आ रहे थे?"

राजाराम इसका कुछ उत्तर न पा कहने लगा, "मैं भी तो इसी बात पर विस्मय कर रहा हूँ।"

जादव ने कुछ विचार कर कहा, "मेरे विचार में तो ऐसा लगता है कि यशो बाईजी, अपने पुत्र शाहुजी को राजा बनाने की बात विचार कर रही हैं। इसी कारण वह आपके बच निकल जाने का विरोध करती रही हैं।

"अब भी जब उन्होंने आपको अकेले चले आने की सम्मति दी थी तो यही बात प्रतीत हुई थी कि आपको हरिहर पकड़वा देगा और तब वह शाहुजी को गद्दी पर बैठाकर राज्य-कार्य चलायेंगी।"

राजाराम ने पुनः पूछ लिया, "अब क्या होगा?"

"देखिये महाराज! हरिहर की योजना यह है कि अगले दस-बीस वर्ष तक तो नियमित राज्य चलाना अति कठिन है। मराठे एकमत नहीं हो सकेंगे। कुछ तो भय के कारण मुगल सेना में सम्मिलित हो जायेंगे और जो मुगलों से संधि नहीं करेंगे वे भी आपके साथ मारे-मारे भागते नहीं फिरेंगे। होगा यह कि महाराष्ट्र में शम्भुजी से व्यवहार के कारण व्यापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोष के परिणाम-स्वरूप लोग स्वतन्त्र रूप से लूट-मार का मार्ग अपनायेंगे।

"हरिहर का विचार यह है कि कई जत्थे बन जाने चाहियें जो मुगल सेना, मुगल दरबार, मुगल शिविर और मुगल राज्य के लोगों को लूटना आरम्भ कर दें। ये सब लूट-मार करने वाले अपने लूट-मार का चौथाई भाग मराठा राज्य को दें।"

हरिहर समीप के गाँव में गया और वहाँ से खाने के लिये भुनी मक्की और गुड़ ले आया और उन्होंने मक्की चबायी और ठण्डा पानी पिया, फिर कुछ घण्टे विश्राम कर पनहाला की ओर चल पड़े।

हरिहर ने बताया, "मुझे पता चला है कि पनहाला से घेरा उठ गया है और वह दुर्ग अभी तक अपने सिपाहियों के हाथ में है।"

"परन्तु पण्डितजी ! यदि पनहाला में ही रहना है तो रायगढ़ में क्यों नहीं रहें ?"

"महाराज ! वहाँ तो अस्थायी रूप में रहना चाहिये। हमें वहाँ से घोड़े इत्यादि ले, किसी अज्ञात स्थान पर चल देना चाहिये और वहाँ छापामारों को तैयार करना चाहिये।"

"मुझे यह जल मथने के समान प्रतीत हो रहा है।"

"हाँ। अभी तो यह जल-मंथन ही प्रतीत होता है, परन्तु ज्यों ही छापामार जत्थे तैयार हुए तो इसी जल में से मक्खन निकलता दिखायी देगा।"

यद्यपि बातचीत आगे नहीं चल सकी, परन्तु हरिहर की प्रत्येक नयी योजना पर सन्देह होने लगा था और बहुत फूंक-फूंक कर पग धरने की बात होने लगी थी।

हरिहर देखने लगा कि उसकी प्रत्येक बात का जादव और राजाराम विरोध करने लगे हैं। पनहाला पहुँचने तक तो तीनों संन्यासी गृहस्थियों से भी अधिक एक-दूसरे से उपराम हो गये थे।

पनहाला में एक बात और हुई कि हरिहर की खोज में कुछ लोग सूरत से आये हुए थे। संगमेश्वर पर हरिहरनाथ के विलास-गृह में सूचना देने जाने की बात विख्यात थी और वहाँ से हरिहर के रायगढ़ जाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता चला था। वहाँ से पता चला कि राजाराम के साथ हरिहर भी चला गया है।

राजाराम को पनहाला में टिके अभी एक पखवाड़ा भी नहीं हुआ था कि मुगल सेना को पता चल गया कि राजाराम वहाँ है। इससे मुगल सेना ने पनहाला पर पुनः घेरा डालना आरम्भ कर दिया।

हरिहर का विचार था कि वहाँ से भी चल देना चाहिये, और पनहाला से राजाराम दो सहस्र सैनिकों को साथ ले, वेदनूर की रानी का आतिथ्य स्वीकार कर वहाँ जाने को तैयार हो गया।

पनहाला से चलने तक हरिहर की अवहेलना उग्र हो चुकी थी। इससे हरिहर निराश राजाराम को छोड़, कहीं पृथक् अभियान चलाने का विचार करने लगा था।

ऐसे समय में विश्वनाथ का लड़का सीताराम उसे ढूँढता हुआ वहाँ आ पहुँचा।

पनहाला दुर्ग में हरिहर को एक पृथक् मकान मिला हुआ था और स्थिति यहाँ तक पहुँच चुकी थी कि अब भावी योजनाओं के विचार करते समय उसे सम्मिलित नहीं किया जाता था।

एकाएक सीताराम आ खड़ा हुआ। हरिहर उठा और सीताराम से गले मिल विस्मय में पूछने लगा, "सुनाओ सीताराम ! किधर घूम रहे हो ?"

"दादा !" सीताराम ने बैठते हुए कहा, "सूरत में मुगल शहंशाह की आज्ञा से हमारा घर और दुकान लूट ली गयी है और हम सब को धक्के दे-देकर सड़कों पर खड़ा कर दिया गया था।"

हरिहर का मुख क्रोध से लाल हो गया। उसने आगे पूछा, 'और फिर अब कहाँ हो ?"

"हमने सूरत छोड़ दिया है और बम्बई चले गये हैं। वहाँ एक भाड़े का मकान लेकर रहते हैं। जगन्नाथ दादा ने अंग्रेज़ी कम्पनी की नौकरी कर ली है और उसके वेतन से परिवार का निर्वाह चलता है।

—२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आनन्दपुर पंजाब से दोनों मातायें सूरत में ही आ गयी थीं और हमारे साथ ही रहती हैं। माताजी यह समाचार लायी थीं कि आप शाह आज़म के साथ औरंगाबाद चले गये हैं। अतः बम्बई में स्थिति स्थिर होते ही मैं औरंगाबाद गया। वहाँ शाही महल से तो कुछ पता चला नहीं। इतना पता चला था कि आपको क़ैद कर दिया गया था, परन्तु आप क़ैद से लापता हो गये थे। कैसे लापता हुए इसका किसी को पता नहीं।

"शाह आज़म नासिक में थे। मैं वहाँ पहुँचा तो पता चला कि आपका समाचार है कि आप शम्भुजी से संगमेश्वर में मिले थे। मैं संगमेश्वर पहुँचा तो एक पण्डे से पता चला कि आप जिस दिन शम्भुजी पकड़े गये थे, उस दिन प्रातः ही रायगढ़ को चल दिये थे।

"मैं रायगढ़ गया तो वहाँ एक काशीनाथजी हैं। उन्होंने बताया कि आप महाराज राजाराम के साथ पनहाला को गये हैं। अब यहाँ आ गया हूँ।"

"और तुम्हारी माताजी तथा राजीव भाभी क्या कहती हैं?"

"कहती हैं कि बम्बई में चले आइये और यहाँ उनका कुछ प्रबन्ध कर ही आपको कहीं जाना चाहिये।"

"ठीक है। परन्तु सीताराम, इतने दिन शहंशाह की नौकरी की है तो अपना वेतन तो उनसे लेकर ही चलना चाहिये।"

"दादा! वेतन लेने शाही दरबार में जाओगे?" सीताराम ने मुख लम्बा कर पूछ लिया।

"वे कंगले क्या देंगे? मैं यहाँ बैठे ही वसूल करने का यत्न करूँगा।"

"कैसे?"

"तलवार चलाना जानते हो अथवा नहीं?"

"देर हो गयी है चलाये हुए।"

"तो तुम नहीं समझ सकते। देखो, कल सुबह चलेंगे।"

हरिहर मकान से बाहर निकल सैनिक शिविर में पहुँच गया। वहाँ पचास के लगभग सिपाहियों को लेकर वह पृथक् में उनको समझाने लगा। वह पहले भी सिपाहियों को महाराज शम्भुजी से अत्याचार का बदला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेने की बात कहा करता था। आज उसने उनको अपनी बात याद कराते हुए कहा, "मुझे पता चला है कि मुगल शहंशाह की आज्ञा से मेरा मकान और पूर्ण सम्पत्ति लूट ली गयी है और मेरे परिवार के लोगों को घर से सड़क पर फेंक दिया है। मैं अपना घाटा पूरा करने जा रहा हूँ। आओ, मेरे साथ सम्मिलित हो जाओ। तुमको भी लाभ होगा।"

सिपाही तैयार हो गये। जब वे तैयार हो गये तो हरिहर ने बताया, "इस घेरे पर खर्चे के लिये बहुत-सा धन मुगल सेना में आज पहुँचा है। हम अपना भाग्य उस पर आज़मायेंगे।"

सिपाही तैयार हो गये। मराठा सेना में भी दो वर्ष से वेतन नहीं मिला था। इससे जब रात के दो बजे चलने का समय हुआ तो पचास के स्थान पर सौ के लगभग सैनिक हरिहर के साथ चल पड़े।

हरिहर ने इस छापे पर जाने से पूर्व सीताराम को तीन घोड़े देकर पहले ही दुर्ग के पिछवाड़े नदी के तट पर भेज दिया और स्वयं सैनिकों को ले, विद्युत् की भाँति मुगल खजाने पर जा धमका। खज़ाने पर अधिकार जमाने में तो दो-तीन मिनट से अधिक नहीं लगे। खज़ाने को उठाकर ले जाने में देर लगी। बहुत भारी बोझा था। सोने की मोहरें और चाँदी के रुपये थे।

सबको लेकर दुर्ग में जाने के स्थान हरिहर नदी के तट पर वहाँ ले गया जहाँ सीताराम को भेजा गया।

काम इतनी तेज़ी से हुआ कि अभी दिन नहीं चढ़ा था कि सौ सैनिकों को अंजुली भर-भर कर रुपये और मोहरें बाँटी गयीं और शेष जो बचा, एक घोड़े पर लाद हरिहर और सीताराम उत्तर की ओर चल पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चम परिच्छेद

जिस दिन शम्भुजी तथा कानूजी कवि कैलाश के पकड़े जाने का समाचार आया, औरंगज़ेब प्रसन्नता से नाच उठा। वह समझा था कि उसका दक्षिण में कार्य सम्पन्न हो गया है और अब उसे किसी योग्य आदमी को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त कर आगरे चला जाना चाहिये।

समाचार मिलने के समय औरंगज़ेब बहादुरगढ़ में था। शम्भुजी को पकड़ कर बहादुरगढ़ लाया गया और वहाँ काज़ियों से शम्भु को मृत्यु-दण्ड दिलवा कर शहंशाह वापस उत्तर में जाने की बात विचार करने लगा। रात को वह उत्तर को जाने की बातें विचार करता हुआ सो नहीं सका। इसमें कारण था। उसकी अन्तरात्मा आगरे जाने से डरती थी।

शहंशाह ने दिल्ली छोड़ी थी सरमद की हत्या कराने के कारण। सरमद की हत्या के कुछ वर्ष बाद तक भी वह दिल्ली में रहा अवश्य, परन्तु उसको वहाँ सुख और चैन प्राप्त नहीं हुआ। उन दिनों वह आगरा जाता नहीं था। कारण यह कि यहाँ उसका पिता बन्दी बनाकर रखा हुआ था और वह इसे गालियाँ देता रहता था। शाहजहाँ की मृत्यु के उपरान्त वह आगरे में गया, परन्तु वहाँ बेगम महताब का कुरूप मुख देख-देख उसे आत्म-ग्लानि होती थी। उसे वहाँ सोये-सोये वह रात स्मरण आती रहती थी जिस रात वह अपने कपड़ों को आग लगा मशाल की भाँति जलने लगी थी। उस दृश्य को स्मरण कर वह काँप उठता था और फिर उसे रात-भर नींद नहीं आती थी।

आज वह अपना दक्षिण का काम समाप्त कर आगरा लौट चलने का विचार करने लगा तो उसे महताब बेगम की बात स्मरण आ गयी और वह सो नहीं सका।

एक ओर से अपनी पत्नी न बना सकने का शोक था और वह एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुबली-पतली स्त्री से अपना तिरस्कार हुआ स्मरण कर रात-भर परेशान रहता था। दूसरी बात थी कि इतनी सुन्दर स्त्री का अपने को अत्यन्त असुन्दर बना धैर्य से उसके साथ सहानुभूति रखते हुए शान्त रहने से वह अपनी पूर्ण जीवन-मीमांसा पर ही सन्देह कर बौखला उठता था। उसे रात बहुत देर तक नींद नहीं आयी और महताब बेगम का उस दिन का स्वरूप स्मरण आया जिस दिन वह उसके पिता शाहजहाँ से विवाही गयी थी तो वह अपने पर निराशा अनुभव करता हुआ अपने कपड़े फाड़ने लगा।

बिना सोये ही दिन चढ़ आया। शाह आज़म चाहता था कि अब अब्बाजान को आगरा लौट जाना चाहिये और दक्षिण के दो टुकड़े कर उस पर अपने दोनों लड़कों को उन सूबों का सूबेदार बना छोड़ जायें। इसलिये वह बहुत सुबह ही शहंशाह के महल में आ पहुँचा। सूचना देने पर उसे भीतर बुला लिया गया।

शाह आज़म अब्बाजान को पागलों की भाँति फटे कपड़ों में देख चकित खड़ा रह गया।

"आओ, आ जाओ आज़म! किसलिये आये हो?" शहंशाह ने पूछा।

"अब्बा जान! क्या हो रहा है?"

"मुझे नींद नहीं आ रही।"

"ख़ुशी के कारण न? तो इसमें हैरान होने की बात क्या है?"

"हाँ, ख़ुशी की बात तो है। मगर वह तो मेरी कोशिशों का नतीजा है। मुझे अपनी ज़िन्दगी में अपने साथियों का तआवन नहीं मिला। यदि वह मिला तो मैं इस वक्त सब तरफ से ख़ुश होता। मेरी ख़ुशी मुकम्मल नहीं।"

"अब्बाजान! अब और क्या कमी रह गयी है?"

"कुछ बात है जिसे मैं बता तो नहीं सकता, मगर महसूस करता हूँ।"

"मैं समझ गया हूँ। अब अब्बाजान को जन्नत में जगह मिलने की कमी रह गयी है। वह······!"

शहंशाह ने बात बीच में ही टोककर कहा, "बस चुप रहो। वरना मैं आलम की तरह तुम्हें भी कैदख़ाने में डलवा दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर अब्बा जान ! उसे तो आपने छोड़ दिया है।"

"हाँ, तुम्हें भी छोड़ दूँगा, मगर सज़ा देने के बाद।"

"पर किस कसूर की सज़ा देंगे ?"

"तुम मेरे मर जाने की ख्वाहिश करने लगे हो।"

"पर अब्बा जान ! आज तो नहीं। मैं तो यह कह रहा था कि जन्नत में आपके लिये जगह बन जाये। वहाँ जाने की बात मैंने नहीं कही।"

"जगह बनेगी तो जाऊँगा भी। मैं अभी वहाँ जाना नहीं चाहता।"

शाह आज़म को ऐसा लगा कि शहंशाह अब ठीक मस्तिष्क वालों की-सी बात नहीं कर रहे। इस कारण उसने बात बदल दी। उसने कहा, "अब्बा जान ! हमारे जासूस ने बताया है कि महाराज शम्भुजी के पकड़े जाने से पहले हिदायत उनसे मिला था।"

"क्या करने गया था वहाँ ?"

"यह तो पता नहीं चला। शम्भुजी उससे मिले नहीं और कवि कैलाश ने उसे टरका दिया मालूम होता है। वह वहाँ की धर्मशाला में टिका था, मगर अगले दिन वह वहाँ नहीं पाया गया।"

"मेरा कयास है कि किसी तरह से वह वहाँ पहुँचने वाली मुगल फौज की खबर पा गया होगा और शम्भुजी को भाग जाने का मौका देने गया होगा।"

"अब्बा जान ! आपने उसे बिना वजह तंग कर यहाँ से भगा दिया था। ऐसे मुफीद आदमी को आपने अपने खिलाफ कर लिया है।"

"मगर अब वह क्या कर सकता है ? अब मैं उसका बीज नाश कर दूँगा। वह अपनी सूरत की दुकान के आश्रय शरारतें करता-फिरता है। मैं उसी को तबाह कर दूँगा।"

शाह आज़म तो अपने मतलब से आया था और यहाँ बात दूसरी ही चल पड़ी थी। इससे उसने पुनः बात बदल दी। उसने कहा, "अब तो अब्बा जान को आगरे चला जाना चाहिये और सल्तनत के दूसरे हिस्सों की खबर लेनी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और यह मेहनत से फतह किया इलाका फिर दुश्मनों के हाथ में जाने के लिये छोड़ जाऊँ।"

"इसकी देखभाल के लिये हम जो हैं। मेरा मतलब है कि हम तीनों भाई इन्तज़ाम कर लेंगे।"

"तुम्हारी बीवी कहाँ है ?"

"वह नासिक में है। अपने भाई के पास रहती है।"

"यह तो बहुत बुरी बात है।"

"हाँ। मगर यह भी तो खयाल करिये कि आपने उससे कुछ वायदा किया था। वह पूरा नहीं किया जा रहा। इससे वह मुझसे भी नाराज़ रहती है।"

"क्या वायदा किया था हमने ?"

"यही कि आप उसके भाई को किसी इलाके का हाकिम मुकर्रिर कर देंगे। वह बेचारा औरतों और शराब के नशे में दिन काट रहा है।"

"देखो आज़म ! तुम सियासत को नहीं जानते। औरतों की बातें सुनने वाले ज़क उठाते हैं। तुम उसे छोड़ दो और नयी शादी कर लो।"

"अब इस उम्र में अब्बा जान ?"

"कितनी उम्र है तुम्हारी ?"

"आपको ज़्यादा मालूम होना चाहिये। महल के लोग कहते हैं कि इस वक्त मेरी उम्र छत्तीस साल की है। मेरी तीन बीवियाँ पहले हीं हैं और सात बच्चे भी हो चुके हैं।"

"अच्छा, यह बताओ।" औरंगज़ेब ने बात बदल कर उससे पूछ लिया, "विराद कौन फतह करेगा ?"

"अब्बा जान ! बीजापुर, गोलकुण्डा और मराठा राज्यों को जब हमने फतह कर लिया है तो यह विराद किस खेत की मूली है ? हम इससे निपट लेंगे। आप इसे हम पर छोड़िये।"

"हम का क्या मतलब ?"

"मैं हूँ, आलम है और फिर हमारे सब सालारे-जंग हैं। आपको अब अपनी आखरी उम्र में आराम और खुदा की इबादत करनी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि तुम मेरी वेइज्ज़ती कर रहे हो। बार-बार मुझे मौत की याद दिला रहे हो। निकल जाओ यहाँ से। हट जाओ मेरी नज़र से।"

आज़म ने समझ लिया कि वह ठीक समय पर नहीं आया। इस कारण उसने सलाम की और बाहर निकल गया।

शहंशाह ने उसी दिन सूरत के हाकिम के पास यह हुक्म भेज दिया कि हिदायत उल्ला के मकान और दुकान को लूट लिया जाये और उसके बीवी-बच्चों को सड़क पर भीख माँगने के लिये छोड़ दिया जाये।

इसका सीधा परिणाम यह हुआ कि राजाराम को पनहाला दुर्ग में पकड़ने के लिये भेजी सेना के कोष के लूटे जाने का समाचार मिला। यह तो पता नहीं चला कि इस लूट में हिदायत का कोई हाथ था। मगर इसका सदमा शहंशाह के दिल को बहुत गहरा लगा। तीस लाख रुपया चाँदी और सोने के सिक्कों में था। वह सब मराठे ले गये थे और वहाँ पर भेजे गये सालार की अर्ज़ी आयी कि अगर रुपया न भेजा गया तो फौज में बगावत फैल जायेगी।

: २ :

राजाराम पनहाला से चल वेदनूर जा पहुँचा। रानी साहिबा वेदनूर ने राजाराम का आदर सहित स्वागत किया। दिन-भर आराम करने पर रानी साहिबा के समक्ष ही भावी कार्यक्रम की योजना बनने लगी।

रानी साहिबा का कहना था, "महाराज! मैंने पता किया है कि इस समय महाराष्ट्र में दो लाख से अधिक मुगल सेना गतिशील है। यह सब आपको पकड़ने के लिये है।

"मैं समझती हूँ कि आपका यहाँ आना बहुत देर तक छिपा नहीं रह सकता और मेरे पास इतनी सेना नहीं कि मैं मुगल सेना से युद्ध कर सकूँ। इस कारण आप अपना कार्यक्रम बनाइये और किसी योजना के अनुसार कार्य करिये।"

इस वक्तव्य का अर्थ यह था कि राजाराम वेदनूर में सुरक्षित नहीं। राजाराम तो किसी प्रकार की योजना स्वीकार नहीं कर सका। धन्नासिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादव ने कहा, "महाराज ! रायगढ़ में रहते हुए हरिहर ने एक योजना बतायी थी। उसका कहना था कि किलों में बन्द रहकर मुगलों की विशाल सेना का विरोध असम्भव है। अतः हमें बड़े महाराज की प्रारम्भिक नीति का अवलम्बन करना चाहिये। हमें छापामार सैनिक टुकड़ियाँ बनाने में प्रोत्साहन देना चाहिये। उनको यह स्वीकृति देनी चाहिये कि लूट का तीन-चौथाई उनका अपना और एक-चौथाई मराठा राज्य को दें। साथ ही हरिहर आपके वेदनूर में आने के पक्ष में नहीं था। वह तो चाहता था कि आप किसी अज्ञात स्थान पर पहाड़ों में चलकर रहें।"

राजाराम ने कुछ चिढ़कर कहा, "परन्तु रायगढ़ में आप सब लोग उसे मुगल जासूस कहते थे। पनहाला में सब मराठा सरदार उसे मूर्ख कहते थे और अब उसके चले जाने पर आप उसकी योजना चलाने की बात कह रहे हैं ?"

धन्नासिंह जादव ने कहा, "मैं तो सदा उसकी योजना को पसन्द करता था और उसके तथा आपके साथ भागने के लिये तैयार हुआ था। परन्तु मैं अभी कम आयु का व्यक्ति हूँ जो बड़ी आयु के और अनुभवी हैं, वह उसकी सदा निन्दा करते रहते थे। इस कारण मैं कभी कुछ कह नहीं सका।

"एक दिन हरिहर ने यह कहा था, 'मैं जानता हूँ कि ये मराठे सरदार क्यों मेरा विरोध करते हैं ?'

"मैंने पूछा था, 'पण्डितजी ! यह किस कारण ऐसा है ?'

"उनका कथन था, 'अयोग्य सदा योग्यों की निन्दा करते हैं। उनको भय लगा रहता है कि योग्य व्यक्ति उनसे ऊपर उठ जायेंगे और उनसे अधिक मान-प्रतिष्ठा पा जायेंगे।'"

राजाराम ने न तो इस योजना को स्वीकार किया और न ही अस्वीकार किया। वह चुप रहा। यथार्थ में वह जानता ही नहीं था कि क्या करे ? इस समय उसे हरिहर का अभाव खटकने लगा था, परन्तु वह समझ नहीं सका कि इस अभाव की पूर्ति कैसे हो ?

उसी रात एक मराठा घुड़सवार वेननूर में पहुँचा और उसने राजाराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिलने की इच्छा प्रकट की ।

यह सीताराम था । उसे महाराज राजाराम के सामने उपस्थित किया गया । राजाराम समझ रहा था कि यह कोई मुगल दूत है और उससे किसी प्रकार की सुलह की बात करने आया है । इस कारण उसने रानी साहिबा बेदनूर को बुला लिया और धन्नासिंह को भी समीप बैठा लिया।

आने वाले दूत को बुलाया गया तो सीताराम एक बहुत बड़ी गठरी, जो पर्याप्त भारी थी, उठाये हुए वहाँ पहुँचा ।

सीताराम ने नमस्कार की और ब्राह्मण होने के नाते आशीर्वाद दिया तथा खड़े-खड़े ही एक पत्र महाराज के हाथ में दे दिया ।

राजाराम ने पत्र धन्नासिंह को देकर पढ़ने को कहा । धन्नासिंह जादव ने पत्र पढ़ा । उसमें लिखा था—

'महाराष्ट्र शिरोमणि छत्रपति महाराज को हरिहर की नमस्कार पहुँचे। निवेदन यह है कि जब श्रीमान् पनहाला से मुझे साथ लिये बिना बेदनूर चले आये तो मैं समझ गया था कि श्रीमान् ने मेरी योजना को पसन्द नहीं किया । अतः मैंने भी यही उचित समझा कि अब अपनी योजना स्वयं ही चलानी चाहिये । मेरा अपनी योजना पर अगाध विश्वास है ।

'अतः जब मैंने दुर्ग की भीत पर खड़े-खड़े देखा कि बैलगाड़ियों में मुगल सेना के खर्चे के लिये कोष आया है तो मैंने अपनी योजना वहीं से आरम्भ कर दी है । उसी रात मैंने एक सौ शूरवीरों के साथ कोष पर धावा बोल दिया और उसमें से जितना हम उठा सके थे, उठाकर ले आये हैं । वहाँ नदी के तट पर एक निर्जन स्थान पर मैंने वह लूट का माल सैनिकों में बाँट दिया । उसका एक-चौथाई राज्य का निकाल दिया था । शेष का आधा अपने लिये ले लिया और आधे को सब सैनिकों में बाँट दिया है ।

'मेरी सफलता से प्रसन्न हो वे सैनिक मेरी योजना पर कार्य करने के लिये अपने-अपने टोले बनाने लगे हैं । मैंने उन सबसे वचन लिया है कि हमारा अपनी मातृ-भूमि के प्रति कर्त्तव्य है कि वे अपनी उपलब्धि का एक-चौथाई भाग आपको भेजा करें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'महाराज ! मैं तो प्रेरणा ही दे सकता था। आप आज्ञा दे सकते हैं। आज्ञा दें अथवा न दें, मैंने यह निश्चय कर लिया है कि मैं कई सौ ऐसे छापामार संगठन तैयार करूँगा और मुगल सेना के नाकों दम कर दूंगा।

'इस समय मैं आपको लूट का चौथाई भाग भेज रहा हूँ और भविष्य में भी इसी प्रकार भेजता रहूँगा।

'आप किसी-न-किसी भाँति अपना पता मुझे भेजते रहेंगे तो आपका भी कल्याण होगा और महाराष्ट्र का भी। अब ऐसा संघर्ष दस-बीस वर्ष तक चलेगा।

'भगवान आपकी आयु लम्बी करे जिससे आप देश और जाति के लिये अधिक-से-अधिक उपकारी कार्य कर सकें।'

पत्र सुन राजाराम भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। राजाराम ने पत्रवाहक से पूछा, "क्या नाम है आपका ?"

"मैं सीताराम हूँ। बड़े महाराज के काल के धर्माधिकारी पण्डित विश्वनाथ का मैं लड़का हूँ।"

"और ये हरिहर कहाँ हैं ?'

'हम सूरत में रहते थे। शहंशाह की आज्ञा से हमारा घर-बार लूट लिया गया। वहाँ से हम बम्बई चले आये हैं और अब मेरा बड़ा भाई अंग्रेज़ी कम्पनी की नौकरी करता है। हरिहर को बुलाने मैं दादा को ढूँढता हुआ पनहाला गया था। हरिहर ने चलते समय दुर्ग के बाहर के मुगल कोष को लूटा है। उसमें से यह हम सबने राज्य निमित्त निकाला था। वह सेवा में उपस्थित है।"

गठरी खोलकर उसमें से स्वर्ण-मुद्रायें गिनी गयीं। वे चार सहस्र तीन सौ पचपन थीं। इस धन की प्राप्ति पर राजाराम ने निर्णय करने में देर नहीं की और वह अपने साथियों के साथ वहाँ से दक्षिण की ओर चल दिया।

सीताराम ने अपने बम्बई में निवास-स्थान का पता बता दिया और वहाँ से बम्बई लौट गया। बम्बई में हरिहर ने अपने धन से एक नया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान बनवा लिया और वहाँ परिवार को पुनः जौहरी के काम में लगवा दिया। स्वयं वह बहादुरगढ़ को, जहाँ औरंगज़ेब का उन दिनों डेरा था, चल दिया।

शहंशाह के डेरे में बार-बार हरिहर के पक्ष में कहने के कारण आज़म का मान कम होने लगा था और शाह आलम की प्रतिष्ठा बढ़ने लगी थी।

पनहाला रुपया भेजा ही जा रहा था कि मराठों के एक सैनिक दस्ते ने बहादुरगढ़ के पाँच मील के अन्तर पर एक कस्बे को लूट लिया। एक मराठा सैनिक जीवित पकड़ा गया तो उसने बयान दे दिया कि महाराज राजाराम के खाने-पीने के लिये यह डाका डाला गया था।

इस समय रायगढ़ विजय की खबर आ गयी और उस किले में से शम्भुजी की पत्नी यशो बाई तथा उसका लड़का और लड़कियाँ पकड़ी गयीं।

इस पर तो शहंशाह को मराठों में फूट डलवाने का साधन दृष्टि-गोचर हुआ। उसने शम्भुजी के परिवार को बहुत मान-प्रतिष्ठा से अपने ही शिविर में रखा। उसने मराठों को सन्देश भेजने आरम्भ कर दिये कि अगर वे शाहुजी को अपना राजा स्वीकार करें तो मराठा राज्य के विषय में बातचीत हो सकती है।

कुछ मराठे सरदार सुलह की बातचीत करते रहे और कुछ राजाराम का पक्ष लेकर लूट-मार करते रहे।

इस समय एक और घटना घटी। जब मुगल सेना विराद पर आक्रमण कर रही थी तो मराठा लुटेरों के कई छापामार दस्ते मुगल सेना के भिन्न-भिन्न भागों पर छापे डालकर लूट-मार मचाने लगे। इससे जो कार्य सुगम प्रतीत होता था वह अति दुस्तर हो गया। विराद कबीले के लोग पराजित तो हुए, परन्तु उनको पराजित करने में तेरह वर्ष लग गये।

पहले सदुल्ला खाँ इस अभियान पर भेजा गया। तदनन्तर शाह आज़म को इस काम पर लगाया गया। मराठा छापामारों ने इतनी बड़ी बाधा खड़ी कर दी थी कि शहंशाह को स्वयं इस ओर ध्यान देना पड़ा।

शहंशाह के मस्तिष्क में यह समा गया कि मराठे अपने कुछ बचे हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गों से निकल कर छापे मारते हैं। इस कारण उसने दस वर्ष लगा दिये इन दुर्गों को विजय करने में। सतारा, पारली, पनहाला, विशालगढ़, कोनदाना को विजय करने के उपरान्त शहंशाह ने विराद की राजधानी वागनगढ़ की ओर ध्यान दिया। इस पर भी यह गढ़ सम्वत् १७५५ विक्रमी में ही विजय किया जा सका। यह शम्भुजी के पकड़े जाने के पन्द्रह वर्ष उपरान्त और विराद के अभियान के तेरह वर्ष उपरान्त की बात है।

छापामार मराठों में धन्ना जादव, सन्त गोरपाड़े का भाई हिन्दू राव और हरिहर मुख्य थे। यह छापामार योजना हरिहरनाथ की थी। यद्यपि राजाराम दुर्गों के मुगल अधिकार में चले जाने पर अपनी राजधानी बदलता रहा, परन्तु छापामारों का सम्बन्ध न तो राजाराम से था और न ही दुर्गों से। छापामार दस्ते सैकड़ों थे। उनमें पचास-साठ सहस्र मराठे सम्मिलित थे। वे ग्रीष्म और वर्षा ऋतु में अपने घरों में चले जाते थे और वर्षा ऋतु के उपरान्त घरों से निकल इकट्ठे हो लूट-मार करने चल पड़ते थे। इनका कार्य-क्षेत्र प्रायः वह होता था जो क्षेत्र मुगलों ने अपने अधीन कर लिया था।

इन दिनों हरिहर अपने घर वालों को बम्बई में ठहरा इन छापा-मारों को प्रेरणा और छापा मारने के लिये स्थान और ढंग बताता रहता था। वह निरन्तर उनको बताता रहता था कि कहाँ से और क्या-क्या लूटना है?

इस योजना से पूर्ण क्षेत्र जो रायगढ़ और बीजापुर तथा हैदराबाद के बीच था, ऐसे जन और अन्न शून्य हो गया था कि वहाँ न तो कोई पेड़-पौधा रहा था और न ही घास का एक सूखा तिनका भी। गाँव-के-गाँव उजड़ गये थे।

एक बार एक गाँव वालों ने हरिहरनाथ से कहा भी, "पण्डितजी! हमने क्या अपराध किया है जो हमें बरबाद कर रहे हो?"

हरिहर का सतर्क उत्तर था, "मुसलमानी राज्य में रहना मात्र ही आज पाप हो गया है।"

"तो हम कहाँ जायें?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जाओ पहाड़ी क्षेत्रों में। वहाँ अपने बाल-बच्चों को रखो और जीविका के लिये तुम भी छापामारों में सम्मिलित हो जाओ और मुगलों को लूटो।"

इस प्रकार की प्रेरणा का परिणाम यह हो गया कि दिन-प्रतिदिन छापामारों की संख्या बढ़ने लगी और सम्वत् १७५५ तक जब बागनगढ़ विजय हुआ तो सैकड़ों मीलों के क्षेत्र में न तो एक दाना अन्न रहा और न ही धूप, वर्षा से सिर छुपाने को एक भी पेड़।

अन्न की कमी के कारण और जल के अभाव से सहस्रों मुगल सैनिक नित्य बीमारी और भूख से मरने लगे।

: ३ :

एक दिन अहमद नगर में बागनगढ़ की विजय के उपरान्त थकावट और वृद्धावस्था के कारण हताश बैठा शहंशाह अपने गणकों, मोदियों और लड़कों से बातचीत कर रहा था।

शाह आज़म बता रहा था, "अब्बा जान! अब बस करिये। बहुत हो गया है। हमारी सेना के चालीस लाख के लगभग आदमी मारे जा चुके हैं। इनमें आधे से ज़्यादा तो बीमारी और भूख से मरे हैं। लाखों ही रात सोये-सोये छापामारों ने मारे हैं। सहस्रों गाँव जहाँ हरे-भरे खेत थे, अब सफा हस्ती से मिट गये हैं। मीलों तक जाने पर भी न तो कहीं हरी घास का एक पत्ता दिखायी देता है और न ही धूप से सिर छुपाने को कोई पेड़ ही।

"और जहाँपनाह! खज़ाने की हालत यह हो गयी है कि आगरा में एक पैसा भी नहीं रहा। यहाँ लगान की एक पाई वसूल नहीं होती। सरहिन्द, लाहौर, मुलतान, बदायूँ, लखनऊ, पटना और बंगाल के सूबेदारों ने रुपया भेजना बन्द कर दिया है। हममें इतनी ताकत नहीं रही कि हम फौज भेज कर उनसे एक पैसा भी वसूल कर सकें।"

औरंगज़ेब ने पूछा, "तो अब क्या होगा?"

"होगा यह कि आप आगरा लौट चलिये। आते समय आपके हाथी और पालकियों पर सोने के छत्र झूमते थे और अब आप उस पालकी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेंगे जिसकी छत्त टूटी होगी और उसमें से धूप आपको तकलीफ पहुँचायेगी।"

औरंगजेब आगरा लौट जाने के लिये तैयार हुआ तो आज़म ने पुनः इस विषय पर बात नहीं की।

शाह आज़म एक बात से प्रसन्न था कि इससे व्यर्थ में अपनी सेना की हत्या तो रुकेगी। यह समस्या थी कि किस प्रकार इस क्षेत्र को पुनः बसाया जाये? यहाँ लोगों के मन में कैसे विश्वास बैठा कर उन्हें यहाँ बसने के लिये तैयार किया जाये? इस समस्या के सुझाव का पहला अंग यह था कि किस प्रकार मराठा छापामारों को शान्त किया जाये?

इसके कई उपाय थे। एक तो यह था कि राजाराम से सुलह कर ली जाये और उसे नाम मात्र की मुगल सल्तनत की अधीनता स्वीकार करा एक छोटा-सा क्षेत्र दे दिया जाये। इसके अतिरिक्त भी मराठा सरदारों को भी किसी प्रकार की सांत्वना दी जाये। एक अन्य भी उपाय था कि हरिहर को पुनः मुगल सल्तनत का वफादार बना लिया जाये और उसने जो अपने प्रति विश्वास उत्पन्न कर लिया है, उसे अपने पक्ष में प्रयोग किया जाये। इन सब योजनाओं को चलाने के लिये दक्षिण में कोई सही दिमाग शासक की आवश्यकता थी। वह चाहता था कि हिदायत को प्रसन्न कर दक्षिण का सूबेदार नियुक्त कर दिया जाये और उसके अधीन मराठा राज्य को तनज़ीम दी जाये।

शाह आज़म से बात हो जाने पर औरंगज़ेब आगरा जाने के लिये बहादुरगढ़ से चल पड़ा। वह क्षेत्र छापामारों ने सर्वथा विनष्ट कर रखा था। उसे छोड़ वह देवापुर चला गया। देवापुर में चिन विलच खाँ किलेदार था। उसने अपने मुनासिब इन्तज़ाम से प्रजा के मन में विश्वास उत्पन्न कर दिया था कि वहाँ लुटेरे नहीं आ सकेंगे। इस पर लोग वापस अपने खेतों पर आ गये थे और खेती-बाड़ी करने लगे थे।

इस स्थान को शहंशाह ने आरामदेह समझ कृष्णा नदी के किनारे अपने डेरे डाल दिये। शहंशाह की अब भी योजना यह थी कि हिदायत और राजाराम को शम्भुजी के लड़के शाहुजी से भिड़ा दे और शाहु को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मराठा वाड़ का हाकिम मुकर्रिर कर दिया जाये। इस दिशा में पहले तो उसने धन्ना जादव और हनुमन्त निम्बालकर से पृथक्-पृथक् बातचीत आरम्भ कर दी।

धन्ना जादव और और हनुमन्त निम्बालकर प्रतिद्वन्द्वी थे। दोनों राजाराम के महामात्य बनने की इच्छा करते थे। यद्यपि दोनों हरिहर की योजनाओं के बराबर की योजनाएँ नहीं बना सकते थे, परन्तु उसे तो वे सेनाध्यक्ष से अधिक की पदवी देने का विचार नहीं रखते थे। हरिहर इनकी कूटनीतिक गतिविधियों की सूचनाओं से मुस्करा दिया करता था। कभी इससे कोई सूचना लाने वाला इन दोनों सरदारों की मनोवृत्ति की सूचना देता और इनको सन्मार्ग दिखाने की सम्मति देता तो हरिहर कह देता कि मुझे अपने लिये कुछ नहीं चाहिये। जिस दिन मराठा स्वराज्य स्थापित हो जायेगा, उस दिन मैं अपने परिवार में जाकर आराम करूँगा।

हरिहर के ऐसे मनोद्‌गारों को सुन लोग उससे बहुत प्रसन्न थे और मराठा छापामारों में दिन-प्रतिदिन उसकी प्रतिष्टा बढ़ती जाती थी।

जब कोई जासूस औरंगज़ेब को हरिहर की बढ़ती प्रतिष्टा की सूचना देता तो उसको सन्देह हो जाता कि वह शाह आज़म का सिखाया हुआ व्यक्ति है और उसके मस्तिष्क को हरिहर के अनुकूल करने के लिये ऐसा किया जा रहा है।

इस कारण उसने दूसरे मराठा सरदारों से ही बातचीत कर उनको अपने हितों को उपलब्ध करने की प्रेरणा देनी आरम्भ कर दी।

शहंशाह अभी देवापुर में ही था कि हनुमन्त निम्बालकर से सम्पर्क बन गया। समाचार आया कि वह आ रहा है। एक दिन एकाएक सूचना आयी कि निम्बालकर आया है। उससे तुरन्त ही दीवानखाने में भेंट की गयी और जब उसने पूछा, "जहाँपनाह! इस बन्दे को किसलिये याद फरमाया गया है?"

"हमारे दूत ने बताया नहीं?"

"उसने कुछ बताया तो है, मगर हुज़ूर! अगर उतना ही है तो फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे यहाँ आने के लिये हुक्म किसलिये है ? वह तो मैंने सुन लिया था और उसका जवाब भी हुज़ूर की खिदमत में भेज दिया गया था।"

"तो तुम हमारे मुँह से वही बात सुनना चाहते हो ?"

"हुज़ूर ! उतना कुछ तो मुझे मंजूर नहीं है। जहाँपनाह ने यह हुक्म सादर किया है कि मुझे महाराष्ट्र की फौज का फौजदार बनाया जायेगा और मैं मुगल सल्तनत की ओर से यहाँ मराठा फौज को तनज़ीम दूँगा। हुज़ूर, इतना काफी नहीं है।"

"तुम और क्या चाहते हो ?"

"मैं अपने लिये उतना ठीक मानता हूँ जितना कि हुज़ूर ने फरमाया है। मगर मैं चाहता हूँ कि राजाराम को पूर्ण दक्खिन का सूबेदार नियुक्त किया जाये। वह आगरा के शहंशाह के मातहत सूबेदार हो और मैं उसके अधीन फौजदार मुर्करिर हूँगा।"

"हम राजाराम को बंगाल अथवा कन्धार की सूबेदारी देने का इरादा रखते हैं। यहाँ पर हम किसी दूसरे को मुर्करिर करेंगे।"

"तो हुज़ूर ! पहले यह बता दें कि कौन सूबेदार होगा ? तभी मैं अपने मुतल्लिक अर्ज़ करूँगा।"

'अच्छा, यह बताओ कि अगर हम हरिहर को यहाँ का सूबेदार मुर्करिर करें तो कैसा रहेगा ?"

"उस बेवकूफ को सूबेदार और मुझे उसके अधीन फौजदार ? तब तो हुज़ूर, यह यकीन जानें कि वह एक दिन आगरे का शहंशाह बनेगा।"

"तो निम्बाल्कर ! तुम यह खयाल करते हो कि आगरा की गद्दी बेवकूफों के लिये है ?"

"हुज़ूर ! पहले क्या होता रहा है उसके मुतल्लिक तो मैं कुछ राय नहीं दे सकता। इतना तो मैं भी समझता हूँ कि यदि आगरा-दिल्ली के बादशाह बेवकूफ होते तो वे इतनी देर तक हुकूमत न कर सकते। मगर जो कुछ अब हो रहा है और अब होने वाला है, वह तो मुझे यही दीख रहा है कि जो कोई वहाँ की हुकूमत लेगा, वह बेवकूफ बनेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम क्या चाहते हो ?"

"हुजूर ! मैं यह चाहता हूँ कि राजाराम को यहाँ का सूबेदार बनाया जाये तो मैं हुज़ूर की खिदमतों के लिये हाज़िर हूँ ।"

"तुम्हारी बात गौर तलब है। हम कुछ दिन में तुम्हें फिर बुलायेंगे।"

इतना कह शहंशाह उठ खड़े हुए। इस कारण भेंट समाप्त हुई और निम्बाल्कर देवापुर से लौट गया।

मगर देवापुर से वापस जाने से पूर्व वहाँ के हाकिम चिन क्लिच का खज़ाना लूट लिया गया। शहंशाह मुख देखता रह गया।

इसके कुछ दिन बाद की बात है कि राजाराम के दरबार में निम्बाल्कर उपस्थित हुआ तो वहाँ धन्नासिंह जादव भी आ गया। धन्ना ज़ादव ने महाराज राजाराम को बताया, "महाराज ! मैं अभी-अभी शहंशाह से भेंट करके आ रहा हूँ।"

"हाँ, तो तुमको क्या लोभ दिया गया है ?"

"मुझे यह कहा गया है कि 'बेगुनाह हिन्दू-मुसलमानों का खून बहाने की क्या आवश्यकता है ? अब मराठों और मुगलों में सुलह हो जानी चाहिये।'

"जब मैंने इस प्रस्ताव का स्वागत किया तो शहंशाह बोले, 'हमने यह फैसला किया है कि दक्खिन की सारी सल्तनत का हाकिम शाह आलम होगा। उसके मातहत चार सूबे होंगे। एक बुरहानपुर, दूसरे गोलकुण्डा, तीसरे बीजापुर और चौथे मराठावाड़। हमारी यह तजवीज़ है कि मराठावाड़ को हम जादवजी की सूबेदारी में दे दें। बताओ, पसन्द है ?'

"मैंने कहा, 'जहाँपनाह ! तजवीज़ तो बहुत सुन्दर है, मगर राजाराम का क्या होगा और बिना उसके इस सुलह में शामिल किये यहाँ शान्ति नहीं होगी। ये छापामार और खास तौर पर हरिहर तब तक शान्त नहीं होगा जब तक राजाराम को कुछ न बनाया जाये।'

"इस पर शहंशाह ने मस्कीन मुख बना पूछ लिया, 'राजाराम के लिये तुम क्या चाहते हो ?'

'मैंने यह तजवीज़ रखी है कि राजाराम को पूर्ण दक्षिण का हाकिम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए-आला मुकर्रिर किया जाये। उसके अधीन मुझे बीजापुर, निम्बाल्कर को गोलकुण्डा, हरिहर को मराठावाड़ और शाहु को बुरहानपुर का सूबेदार बनाया जाय।'

'और आलम को?'

'बंगाल की सूबेदारी दी जाये।'

'और आजम को?'

'वह जो गुजरात पर कनायत कर रहे हैं।'

"इस पर शहंशाह उठकर बोले, 'हमें जादवजी की तजवीज़ बहुत पसन्द आयी है और हम इस पर गौर कर इसके मुतल्लिक अपने शहजादों से राय कर अमल करेंगे।'"

धन्नासिंह की तजवीज सुन निम्बलाकर खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "महाराज! यह शहंशाह अब बूढ़ा हो गया है और इसका दिमाग ठीक काम नहीं कर रहा।"

"मैं समझता हूँ।" जादव ने कहा, "वह ठीक सोचता है और वह हमारी योजना को रद्द कर चुका है।"

"तो फिर?" राजाराम ने पूछ लिया।

"महाराज! हरिहर का कहना है कि हमें अपना संघर्ष चलाते हुए पन्द्रह वर्ष हो गये हैं। अभी पाँच वर्ष और चलाना पड़ेगा। तब महाराष्ट्र एक स्वतन्त्र राज्य बन जायेगा।"

जब औरंगजेब धन्नासिंह जादव और निम्बाल्कर से बातचीत कर रहा था तो वह शम्भु के लड़के शाहु से भी बातचीत कर रहा था।

शहंशाह का शाहु से कहना था, "देखो शाहु! मराठावाड़ राज्य के तुम हकदार हो, मगर हमने इस इलाके को बहुत मेहनत-मुशक्कत से फतह किया है। तो भी हम यह चाहते हैं कि तुमको यहाँ का हाकिम मुकर्रिर कर दें। इससे तुम्हारे बाप से जो कुछ सलूक हुआ है, उसका बदला चुकाया जा सके।"

शाहु उस समय युवक ही था और विवाहित था। उसकी बहन की एक मुसलमान सरदार से शादी कर दी गयी थी और उससे मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे भी हो गये थे। इस पृष्ठ-भूमि पर ही शहंशाह और शाहु में बातचीत हो रही थी।

शाहु ने कहा, "हुज़ूर ! यह ठीक ही है। आप ऐसा कर दीजिये। मैं हमेशा मुगल सल्तनत का वफादार बनकर रहूँगा।"

इस पर औरंगज़ेब ने कह दिया, "हाँ ! हम वफादारी का एक पक्का सबूत चाहते हैं।"

"फरमाइये ! क्या सबूत चाहते हैं ?"

"तुम इस्लाम कबूल कर लो।"

"यह वफादारी का सबूत है हुज़ूर ?"

"हाँ।"

"पर क्या कभी किसी मुसलमान से मुगल सल्तनत ने बगावत नहीं की ?"

"की तो है, मगर उसके फिरके के लोगों से उसको मदद मिली है। तुम्हारे हिमायती हिन्दू हैं और अगर तुम हिन्दू-धर्म छोड़ दोगे तो वे तुम्हारी मदद नहीं करेंगे और तुम्हारे लिये हमारे सिवाय दूसरा कोई मददगार नहीं रह जायेगा।"

"जहाँपनाह ! ऐसे नहीं। न तो वफादारी का मजहब पर दारोमदार है और न ही किसी फिरके पर। यह मन की बात है। अगर आपका सलूक मेरे साथ ठीक रहेगा तो मैं वफादार रहूँगा और अगर आपका सलूक ठीक न हुआ तो वफादारी नहीं रहेगी।"

औरंगज़ेब इस बात को समझता था। मगर वह यह भी जानता था कि उससे अच्छा सलूक हासिल करने के लिये मुसलमान हो जाना ज़रूरी है। इसलिये बिना शाहु के इस्लाम स्वीकार किये वह उसे सूबेदार बनाने के लिये राज़ी नहीं हो सका।

इस कारण शहंशाह ने कह दिया, "देखो शाहु ! तुम मराठा सरदारों से मिलकर उनकी मदद हासिल कर सकते हो। हम तुम्हें आज से शाही लाल कनात के बाहर जगह देते हैं। तुम वहाँ अपने लिये मददगार तैयार करो। यदि तुम ऐसा कर सको तो तुमको हम फौज देंगे और तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजाराम को मगलूव कर अपना राज्य कायम कर लो। हमें कोई ऐतराज नहीं होगा।"

उसी दिन शाहु ने भी मराठा सरदारों में अपने पक्ष के लोगों से भाव-ताव करना आरम्भ कर दिया।

शहंशाह ने एक दिन फिर शाहु से यह जानने का यत्न किया कि उसे कितनी कामयाबी मिली है?

शाहु का कहना था, "हुज़ूर! मराठों में हरिहरनाथ नाम का जाँ-वाज सरदार है। उसको काबू में किये बिना लोग मुझे मुँह नहीं लगाते।"

"तो तुम उसे अपनी तरफ करने की कोशिश करो।"

"की है, मगर उसकी एक शर्त है।"

"क्या?"

"यह कि हुज़ूर ने जितने कानून हिन्दुओं के खिलाफ बना रखे हैं, उनको रद्द कर दें और खुद फौरन दक्खिन छोड़कर आगरा चले जायें तो यहाँ लूट-मार बन्द हो जायेगी और मेरी राजाराम से सुलह हो जायेगी।"

"इससे क्या होगा?"

"दक्खिन पर मुगलिया राज्य कबूल कर लिया जायेगा।"

"वह तो हो चुका है।"

"हुज़ूर! मैं भी जानता हूँ। आपकी हुकूमत तो है, परन्तु आप हाकिम नहीं हैं। हाकिम हरिहर है और वह अपनी आमदनी का चौथ राजाराम को खराज के तौर पर देता है।"

"मगर उसकी आमदनी कहाँ से होती है? वह कौन-सी तिजारत करता है?"

"वह मुगलिया खज़ाने को लूटना ही अपना काम समझता है और उसी का चौथ मराठा राज्य को देता है।"

शहंशाह मुख देखता रह गया। इस पर एक बात उसे सूझी। उसने कहा, "मगर वह तो खुद मुसलमान है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, हुज़ूर ! हम जानते हैं। उसकी सुन्नत हो चुकी है, मगर वह कहता है कि दिलो-दिमाग की सुन्नत नहीं हुई। वह हिन्दू है।"

शहंशाह ने देखा कि अब उसकी दुश्मन के खेमे में फूट डलवाने की नीति नहीं चल रही। वह समझ नहीं सका था कि ऐसा क्यों नहीं हो रहा ? पहले तो उसकी नीति सदा सफल होती थी।

"अच्छी बात है।" शहंशाह ने कहा, "हम इस पर गौर करेंगे।"

: ४ :

हिन्दुओं में अपनी एक विशेषता थी। ये आदि काल से पांथिक विचारों को राजनीति से पृथक् रखते रहे थे। जब मुसलमान आये और वे पंथ के आधार पर राजनीति चलाने लगे तो हिन्दू इसका अर्थ नहीं समझ सके। वे अपने पुराने विचारों के अनुसार राजनीति को पंथ से पृथक् समझते रहे। अतएव ऐसे हिन्दू सदा मिल जाते थे जो मुसलमानों की नौकरी करते और उनके लिये लड़ते-मरते भी थे। इस कारण हिन्दू पूर्ण इस्लामी राज्य-काल् में बँटे रहे और हिन्दू के नाम पर मोर्चा नहीं बना सके।

यही कारण था कि गुरु गोविन्द राय ने अपनी सेना में पठानों को भी स्थान दे रखा था।

जब विश्वनाथ गुरुजी की सेवा में पहुँचा तो उसने पठानों की वफादारी पर सन्देह प्रकट किया था, परन्तु गुरुजी की उदारता अथवा उनके मस्तिष्क में यह बात कि हिन्दू लड़ाई में पठानों से दुर्बल हैं, कार्य करती रही और अपने जीवन के अन्त तक वे पठानों का विश्वास करते रहे।

मुसलमानों के मन में बात दूसरी थी। वहाँ पठान, तुर्क, मुगल में भेद-भाव नहीं था। मुसलमान होने से सब भाई-भाई थे।

गुरुजी की जीवन-मीमांसा ने विश्वनाथ को भी प्रभावित किया था। इस पर भी वह इनकी ओर से सदा सतर्क और सजग रहता था।

इसी का परिणाम यह हुआ था कि पठानों के गुरुजी की सेवा छोड़ जाने पर भी सामान्य वृत्ति के हिन्दुओं ने बिलासपुर इत्यादि राजाओं को पराजित कर दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके उपरान्त नादौन पर मुगल सेना की पराजय ने तो गुरुजी महाराज की महिमा की बहुत वृद्धि की।

इसके उपरान्त शाह आज़म से संधि हो जाने पर गुरुजी ने सिक्ख समुदाय में सुधारों का यत्न आरम्भ कर दिया।

इन सुधारों के विषय में विश्वनाथ से वार्तालाप होने लगा। इस वार्तालाप में गुरुजी और विश्वनाथ में मतभेद होने लगा और यह मतभेद सम्वत् १७५३ में इतना उग्र हो गया कि विश्वनाथ को वहाँ रहना व्यर्थ प्रतीत हुआ।

सम्वत् १७५३ की वैसाखी अर्थात् वैसाख मास की पहली तिथि को गुरुजी ने हुक्मनामा भेजकर अधिक-से-अधिक सिक्खों को आनन्दपुर में बुला लिया और वहाँ एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। यज्ञ के अन्तिम दिन प्रथम वैसाख को उपस्थित जनता के सामने तलवार नंगी कर यह घोषणा की, "मुझे देवी दुर्गा ने दर्शन दिये हैं और अपने लिये मनुष्य बलि माँगी है। अतः मैं बुलाता हूँ कि जो देवी का प्यारा है आये।"

संगति में से एक सज्जन उठकर आगे आ गया। गुरुजी उसे एक खेमे में ले गये और भीतर से तलवार से किसी के गला काटने का शब्द हुआ। इसके उपरान्त गुरुजी पुनः मंच पर आये। उनके हाथ में रक्त-रंजित तलवार थी। उन्होंने देवी के नाम पर एक अन्य बलि की माँग की तो एक अन्य व्यक्ति निकल आया। उसके साथ भी वही हुआ जो पहली बलि के साथ हुआ था। इस प्रकार यही बात तीन बार और की गयी। सब पाँचों आदमी देवी को बलि दिये गए प्रकट किये गए।

इस बलि के लिये स्वेच्छा से आने वाले भक्तों के नाम थे—दयाराम, धर्मदास, मोखमचन्द, साहबचन्द तथा हिम्मत राय।

इन साहसी वीरों को एक-एक कर अपने को देवी पर बलि चढ़ाने के लिये उपस्थित करना चमत्कारिक प्रतीत हुआ था और सब धन्य हो, धन्य हो, करते रहे थे।

पीछे गुरुजी पाँचों वीरों को लेकर खेमे के बाहर आ गये। खेमे में उनके स्थान पर बकरे काटे गये थे। ये लोग मंच पर खड़े कर दिये गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इनको गुरुजी ने बताशों का शर्बत पिला कर कहा, 'यह अमृत है। यह इनको पिला दिया गया है और ये अमर हो गये हैं।"

इस रस्म का नाम 'पौल देना' कहा गया। तदनन्तर यह कहा गया कि "ये नर सिंह हैं। इनके नाम के आगे अब सिंह शब्द लगेगा। अतः इनके नाम होंगे—दयासिंह, धर्मसिंह, मोखमसिंह, साहबसिंह और हिम्मतसिंह।

"ये लोग अब से खालसा कहलायेंगे। ये केश, दाढ़ी, मूँछ नहीं कटवायेंगे। ये सदा अपने पास किरपान (तलवार) रखेंगे। हाथ में लोहे का कड़ा पहनेंगे। बालों को साफ करने के लिये कंघी रखेंगे और कच्छा पहनेंगे।"

इसके साथ उनके लिये कर्म भी नियत किये गए। ये कर्म थे कृति-नाश, कुलनाश, धर्मनाश और कर्मनाश। इसका अभिप्राय यह था कि जो लोग पौल लेंगे, वे अपने व्यवसाय को छोड़ देंगे, अपने परिवार को छोड़ देंगे, वे अपने धर्म को छोड़ देंगे और कर्म को छोड़ देंगे।

इस प्रकार एक नवीन लड़ने वालों का पंथ निर्माण किया गया। गुरुजी महाराज ने उन पाँच प्यारों को मान-प्रतिष्ठा दी और फिर स्वयं उनसे पौल ली। अन्त में गुरुजी ने आह्वान किया कि दूसरे लोग भी इनसे पौल लेकर इस पंथ में सम्मिलित हो जायें।

कुछ उपस्थित ब्राह्मणों ने इन चार बातों में धर्मनाश और कर्मनाश पर आपत्ति की। वे धर्म और कर्म को छोड़ना नहीं चाहते थे, परन्तु एकत्रित जनता में से बीस हज़ार से अधिक लोग गुरुजी के पीछे चलने पर खड़े हो गये।

बस घोषणा हो गयी—'राज करेगा खालसा आकी रहे न कोय।'[1] इस प्रकार यह उत्सव समाप्त हो गया और खालसा सेना की नींव रख दी गयी।

---

१. इसका अर्थ है कि जो पौल लिये हुए हैं, वे अब राज्य करेंगे। इनके शत्रु अब नाश को प्राप्त होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी रात एकत्रित लोग घरों को लौटने लगे तो विश्वनाथ ने भी अपना विस्तर गोल किया और गुरुजी से जाने की छुट्टी माँगने चला आया।

विश्वनाथ ने हाथ जोड़ प्रणाम किया और कहा, "महाराज ! मैं प्रातःकाल दक्षिण के लिये जा रहा हूँ।"

"किसलिये ? पण्डितजी, मैंने तो अब आपके कार्य को आगे चलाने के लिये एक बहुत बड़ा प्रयास किया है।"

'महाराज ! मुझे आपकी सेवा में रहते हुए बारह वर्ष हो गये हैं और मैं समझता हूँ कि यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं आपको अपना कार्य समझा नहीं सका।"

"कार्य तो समझ में आ गया है। देश से मुसलमानों को निकालना है और जाति को मुसलमानों के अत्याचार से बचाना है।"

"हाँ, यह तो ठीक है। परन्तु देश और जाति की हत्या कर उसको बचाने के लिये मैंने कभी आपसे नहीं कहा था और यही मैंने आज आपके समारोह में देखा है।"

"हमने आज ऐसा क्या किया है ?"

"आपने एक मिथ्या देवी के नाम का सहारा लेकर जनता के मन पर से अपने प्राचीन धर्म की प्रतिष्ठा को विलीन किया है। आपने धर्म-नाश और कर्म-नाश का आदेश देकर हिन्दू-धर्म और उसके रीति-रिवाज पर कुठाराघात किया है।

"यह मैं जानता हूँ कि अभी लोग इन दो आदेशों के दूरगामी प्रभाव को नहीं समझेंगे, परन्तु यदि यह बात चलती रही तो समय आयेगा कि जब आपके ये अनुयायी प्राचीन वेद-धर्म के विरोधी बन जायेंगे।"

"परन्तु पण्डितजी ! हमारे गुरु ग्रन्थ में तो स्थान-स्थान पर वेद की महिमा गायी है।"

"वह मौखिक रह जायेगी। आपके अनुयायी वेद शब्द के अर्थ बदल देंगे और ऋक्, यजु, साम, अथर्व का विरोध करेंगे।"

"पण्डिजी ! ऐसा कुछ नहीं होगा। यह आपका भ्रम है।"

"भगवान् करे आपका कहा ठीक हो जाये, परन्तु मैं आपकी आशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सन्देह करता हूँ ।

"मैं धर्म में सुधार अर्थात् उसके मिथ्या अर्थों को ठीक करने में विश्वास रखता हूँ; परन्तु महाराज, मैं वेद-मत से विलक्षण मत के प्रचार के लिये तो कभी चित्त में विचार भी नहीं कर सकता ।"

"यह ब्राह्मणों ने मेरे मार्ग में भारी बाधा खड़ी की है ।"

"परन्तु महाराज ! आपने तो बाधा दूर करने के स्थान पर अपना मार्ग ही छोड़ दिया है । हमारा मार्ग था हिन्दू-धर्म और समाज की रक्षा करना । मुसलमान राज्य बल से इन दोनों बातों का हनन कर रहे थे । इस कारण मुसलमानी राज्य हटाने की बात विचार की जा रही थी, परन्तु आपने तो धर्म-नाश और कर्म-नाश से उसका ही नाश करने की घोषणा कर दी है जिसके लिये यह सब आयोजन हो रहा है ।

"देखिये महाराज ! जब आपने खालसा बनने का आह्वान किया था तो कुछ बुद्धिमान जनों ने कहा था कि धर्म-नाश और कर्म-नाश की बात छोड़ दो, परन्तु आपने नहीं माना ।"

"परन्तु बीस सहस्र से ऊपर जनों ने मेरी बात को स्वीकार किया है ।"

"मैंने यह देखा है । यह इस कारण नहीं कि उन्होंने इसके दूरगामी प्रभावों पर विचार किया है, वरंच इस कारण कि वे आपके नेतृत्व पर विश्वास करते हैं । वे आपको भगवान् का अवतार मानते हैं । इस कारण आपकी आज्ञा का पालन कर रहे हैं । इससे तो आपका उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है । जैसे पूर्ण सेना के कार्य की शोभा अथवा विजय का उत्तरदायित्व सेनापति पर होता है, उसी प्रकार जातियों के उत्थान और पतन का उत्तरदायित्व जाति के नेता पर है ।"[1]

---

१. The news writer of the Moghal Court, who was present on the occasion wrote in the report that : "When the Guru had thus addressed the crowd several Brahmans and Khatris stood up and said that they accepted the religion of Nanak and of the other Gurus.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमने अपने विचार से ठीक ही किया है।"

"परमात्मा करे कि ऐसा ही हो, परन्तु मुझे तो कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि निकट भविष्य में ही ये लोग आपका नाम ले-लेकर अपने ही हितैषियों का गला काटने लगेंगे। जैसे ध्रुव तारे के दृष्टि से ओझल हो जाने पर सागर में चल रहा जहाज़ भटक जाता है, इसी प्रकार आपके खालसा पंथ के साथ होगा। प्राचीन को ये छोड़ देंगे और नवीन अपने विचार से अथवा अपने बहुमत से स्वीकार करेंगे। बहुमत प्रायः भ्रम-जनित होता है और यह नेताओं का कर्तव्य है कि वे बहुमत का पथ-प्रदर्शन करें।"

गुरुजी परेशानी तो अनुभव कर रहे थे, परन्तु पाँसा फेंका जा चुका था और उसे लौटाना कठिन समझते थे।

विश्वनाथ पिछले कुछ वर्ष से यह देख रहा था कि गुरुजी की ख्याति द्रुत गति से बढ़ रही थी और उनके मस्तिष्क में इस ख्याति से यह बैठता जाता था कि वे ठीक मार्ग का अवलम्बन कर रहे हैं।

एक बार पहले भी मतभेद हो चुका था। वह था मसनदों को रद्द करने का विचार। गुरु अर्जुनदेवजी के समय से पंजाब को कई क्षेत्रों में बाँटा गया था और प्रत्येक क्षेत्र में एक-एक गुरुजी का प्रतिनिधि बना कर बैठाया गया था। उनके पास भक्त लोग श्रद्धा-भक्ति से गुरुजी के पंथ के लिये चढ़ावा चढ़ाया करते थे। उस चढ़ावे में से खर्चे के लिये धन निकालकर शेष गुरुजी महाराज के पास भेज दिया जाता था।

धीरे-धीरे मसनदों में प्रतिनिधि स्वयं गुरु बन बैठे और वे गुरुजी के

Others, on the contrary, said that they would never accept any religion which was opposed to the Vedas and Sutras and they would not renounce at the bidding of a boy the ancient faith which had descended to them from their ancestors.

(Qtd. from History of the Sikhs by Khushwant Singh, Vol. I, Page 85.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान पर अपने आदेश करने लगे। प्राप्त चढ़ावे का अधिकांश वे अपने पास रखने लगे।

गुरुजी ने जब धार्मिक विचार से और राजनीतिक विचार से भी अपने प्रतिद्वन्द्वी बनते देखे तो वे समझे कि इससे संगठन ढीला होगा। अतः गुरुजी ने सब मसनदों को रद्द कर दिया और वहाँ प्रतिनिधियों को कह दिया कि यदि वे अब गुरुजी के नाम पर चढ़ावा लेंगे अथवा सिक्ख मत के प्रवक्ता बनेंगे तो उनका बहिष्कार कराया जायेगा।

इस समय भी विश्वनाथ का कहना था, "बिना नया ढाँचा तैयार किये पुराना तोड़ देना हितकर नहीं होगा। इनमें सुधार करना चाहिये। दोषों को निकाल इनको स्वच्छ और हितकर बनाना चाहिये।"

"तो आप इस विषय में क्या चाहते हैं?"

"मेरा कहना तो यह है कि आप राजनीतिक संगठन और धार्मिक संगठन में भेद नहीं कर सके। धार्मिक प्रचार और राजनीतिक संगठन को पृथक्-पृथक् रखना चाहिये। उस अवस्था में धार्मिक प्रतिनिधियों का क्या कार्य है और राजनीतिक संगठन में प्रतिनिधि कौन और कैसे हों, दोनों में समन्वय रखने की बात है। धार्मिक प्रतिनिधि राजनीतिक प्रतिनिधियों से पृथक् रहें और दोनों अपने-अपने क्षेत्र में काम करें और दोनों पर आप समन्वय करने वाले हों। सब कुछ जो पुराना हो गया है उसे गिराने की आवश्यकता नहीं, उसके सुधार की आवश्यकता है। गिराने से हानि होगी।"

परन्तु गुरुजी में विचार के उबाल आते थे और वह एक क्षत्रिय स्वभाव रखने के कारण तुरन्त उन पर कार्य कर देते थे।

विश्वनाथ ने पंजाब छोड़कर अपने परिवार में लौट जाने का विचार कर लिया। जब गुरुजी अपने विचार पर दृढ़ रहे तो विश्वनाथ ने प्रणाम किया और उठकर अपने कक्ष में चला गया।

प्रातःकाल जब विश्वनाथ अपना घोड़ा तैयार करवा रहा था तो गुरुजी उसके पास आये और कहा, "पण्डितजी! आप जल्दी न करें। इससे तो आपका किया-कराया कार्य विफल भी हो सकता है। अपने जीवन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य आप चलाते रहिये।"

विश्वनाथ ने हाथ जोड़ कहा, "हिन्दू समाज के उद्धार का अभी दिन नहीं आया। यह मुगल राज्य तो जा रहा है। इसमें अपने ही दोष उत्पन्न हो गये हैं और वहाँ एक राजसी स्वभाव का व्यक्ति उन दोषों को दूर करता-करता राज्य को ही विनष्ट कर रहा है। उसी प्रकार यहाँ आप जाति की रक्षा करते-करते जाति को ही विभक्त करने के मार्ग पर चल पड़े हैं।

"मैंने जो कुछ किया है, अपने विचार से किया है। इस कार्य में मैंने उद्देश्य को नहीं भूला था और अब तो उद्देश्य ही दृष्टि से ओझल हो रहा है। अतः जीवन-कार्य विफल होता हुआ देख इससे तटस्थ हो रहा हूँ।"

: ५ :

खालसा पंथ चला और पंजाब में मुसलमानी राज्य द्वारा लगायी आग को मुसलमानों पर ही प्रयोग किया जाने लगा। राज्य बल, पद प्रलोभन और धन तथा स्त्री के मोह से मज़हब का विस्तार हो रहा था। इसका प्रतिकार यह हुआ कि इन साधनों को नष्ट करने का यत्न होने लगा। सबसे प्रबल साधन राज्य था और सबसे प्रबल आघात राज्य पर ही हुआ।

सिक्ख समुदाय का व्यवहार सुरक्षात्मक रहा था। उस रक्षा में ही कहीं-कहीं आततायी से सशस्त्र विरोध हुआ था, परन्तु अब तो विपक्षी पर आक्रमण होने लगा था। रक्षा के व्यवहार से बदल कर आक्रान्ता का व्यवहार बन गया था। पंजाब-भर में मुसलमानों को खालसा पंथ का द्वार दिखाया जाने लगा था।

हिन्दू-समाज में प्रवेश का एक ही द्वार था। वह था हिन्दू माता के गर्भ से उत्पन्न होना। अब खालसा पंथ ने मुसलमानों के लिये एक द्वार गुरुद्वारे में से बना दिया था। भूले-भटके हिन्दू जो किसी विवशता के कारण इस्लाम स्वीकार कर बैठे थे, वे गुरुद्वारे के द्वार से पुनः इस्लाम से बाहर होने लगे थे। इसमें ब्राह्मण विरोध करते थे।

यही हिन्दू-समाज की बात थी जिससे ऊबकर गुरु गोविन्द राय ने जो अब गुरु गोविन्दसिंह हो गये थे, नये पंथ की नींव रखी थी और इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार ने मुसलमान मुल्ला-मौलानाओं को आग-बबूला कर दिया। आज तक वे गैर-मुसलमानों को मुसलमान बनाना ही सीखे थे। अब मुसलमान गैर-मुसलमान भी होने लगे। खालसा पंथ उनके लिये एक आश्रय स्थान बन गया। मुसलमान मुल्ला इस प्रवाह को रोकने के लिये राज्य की सहायता पाने हाकिमों के पास भागे तो संघर्ष आरम्भ हो गया।

मुगल सल्तनत पंजाब के नौ-मुसलमानों को इस्लाम छोड़ते देख नहीं सकी और खालसा पंथ ने अपने को मुगल सल्तनत मिटाने में लगा दिया।

यह संघर्ष पहले एकपक्षीय था। किन्तु जब द्विपक्षीय हुआ तो युद्ध हो गया।

गुरुजी ने जो दुर्ग सम्वत् १७४४ से १७५३ के शान्ति-काल में निर्माण किया था, उसको विजय करने मुगल सेना चल पड़ी। सरहिन्द का सूबेदार इसमें अग्रसर हो कार्य करने लगा।

औरंगजेब तो अभी भी दक्षिण में व्यस्त था; इस कारण इस संघर्ष में सरहिन्द और लाहौर के सूबेदारों ने भाग लिया।

ग्यारह वर्ष पूर्व हुए पहाड़ी राजाओं से समझौते के अनुसार उनको भड़काया गया और दोनों सेनाओं ने मिलकर आनन्दपुर का घेरा डाल दिया।

इस घेरे में गुरुजी के बड़े लड़के अजीतसिंह ने नाक में दम कर दिया। कई बार घेरा तोड़कर किले में रहने वालों के लिये रसद प्राप्त की, परन्तु दुर्ग के घेरे का जो परिणाम होता है, वह यहाँ भी हुआ। जब दुर्ग में रसद-पानी पहुँचना बन्द हो गया तब मुगलों के पक्ष की ओर से यह चाल चली गयी कि यदि गुरुजी दुर्ग छोड़ दें तो उनको कष्ट नहीं दिया जायेगा।

गुरुजी मान गये और अपने साथियों तथा परिवार के लोगों के साथ दुर्ग छोड़कर निकल गये। कुछ दूर तक तो उनको शान्ति से जाने दिया गया, परन्तु कुछ दूर तक जाते-जाते मुगल पक्ष के लोगों ने उन पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण को उदयसिंह और उसके चालीस साथियों ने रोक लिया और सब-के-सब लड़ते हुए वहाँ मारे गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुजी ने अपनी माता, पत्नियों और दो छोटे लड़कों को एक ब्राह्मण सेवक के साथ भेज दिया और स्वयं पीछा करने वालों से लड़ते-झगड़ते चमकौर पहुँच गये।

मुगल सेना ने वहाँ भी पीछा किया और चमकौर को घेर लिया। चमकौर में कुछ थोड़े-से ही साथी थे, परन्तु उन्होंने घेरा डालने वालों को कई दिन तक रोके रखा। धीरे-धीरे सब मारे गये। इनमें गुरुजी के दोनों बड़े लड़के अजीतसिंह और जुझारसिंह भी काम आये। जब स्थिति सर्वथा निराशाजनक हुई तो घेरा डालने वालों को चकमा देकर गुरुजी वहाँ से वेश बदल कर निकल गये।

माछीवाड़ा में पुनः मुगल सिपाहियों से सामना हो गया। दो पठान, जो कभी पहले गुरुजी की सेवा में रहे थे, गुरुजी की सहायता में आ गये। उन्होंने एक पालकी ली और उसमें गुरुजी को पीरों के-से पहरावे में मुगल सेना में से निकाल दिया।

इस प्रकार गुरुजी का अभियान दो वर्ष में ही समाप्त हो गया।

गुरुजी मुक्तसर में एक लम्बे काल तक रहे। वहाँ इन्होंने पुनः संगठन बनाने का यत्न किया।

गुरुजी मुक्तसर से तलवण्डी में चले गये। यहाँ रहते हुए गुरुजी ने भाई मनीसिंह की सहायता से दशम् ग्रन्थ का संकलन किया। इसमें प्रायः उनके अपने ही लेख और कविताएँ हैं।

इस साहित्यिक कार्य के कारण ही तलवण्डी जो दमदमा के नाम से भी विख्यात है, गुरुजी की काशी कही जाती है।

कहा जाता है कि गुरुजी ने दमदमा से शहंशाह औरंगज़ेब को एक पत्र लिखा था जिसमें अपने छोटे बच्चों को दीवार में जीवित चुन देने का आरोप लगाया था और दमदमा से गुरुजी दक्षिण की ओर शहंशाह से मिलने ही गये थे, परन्तु तब तक औरंगज़ेब की मृत्यु हो चुकी थी और शाह मुअज्ज़म की सहायता के लिये गुरुजी आगरा जा पहुँचे।

यह कहा जाता है कि गुरुजी ने अपने पाँच सौ खालसाओं के साथ शाह मुअज्ज़म की शाह आज़म के विरुद्ध जजाहु के युद्ध में सहायता की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी और शाह मुअज्ज़म ने गुरुजी को साठ हज़ार रुपया इस काम के लिये दिया था।

इसके प्रतिकार में यह कहा जाता है कि शाह मुअज्ज़म जो उस समय बहादुर शाह के नाम से विख्यात हुआ, ने गुरुजी को साठ हज़ार रुपये कीमत की वस्तुएँ भेंट में दी थीं। एक हीरे-मोती जड़ित कलगी भी दी थी।

तदनन्तर बहादुर शाह अपने दूसरे भाई कामबख्श को परास्त करने के लिये दक्षिण को गया तो गुरु गोविन्दसिंह भी अपने साथियों के साथ दक्षिण को चल पड़ा।

नांदेड़ में कुछ पठानों ने गुरुजी को छुरे से घायल कर दिया और उस घाव से उनका देहान्त हो गया।

शहंशाह देवापुर में बीमार पड़ गया। इस पर सब लोग यह आशा करने लगे कि शहंशाह का मृत्यु-काल समीप आ गया है। इस पर भी शहंशाह की जब कुछ हालत सुधरी तो उसे पालकी में डाल अहमद नगर ले जाया गया। पाँच-छः दिन की यात्रा को दो महीने लगे। यात्रा बहुत ही छोटे-छोटे पड़ावों से पूरी गयी।

शाह आज़म को शहंशाह की बीमारी का पता चला तो वह गुजरात से लौट आया और अहमद नगर में शहंशाह की सेवा में उपस्थित हो गया।

यहाँ फिर दक्खिन के प्रबन्ध की बातचीत होने लगी। इस पर शहंशाह ने पूछ लिया, "आज़म ! तुम क्या चाहते हो ?"

"अब्बा जान ! यहाँ छापामारों को तनज़ीम देने वाला हरिहरनाथ है।"

"तो यह हमको अब्बा जान कहने वाले बागी लड़के की करतूत है ?"

"पर अब्बा जान ! आपने भी तो उसके साथ वालिदों का-सा सलूक नहीं किया है, उसकी माँ को पिछले बावन वर्ष से कैद कर रखा है। बीसियों बार उसको छोड़ देने का कौल देकर भी नहीं छोड़ा।"

"देखो आज़म ! अब तुम उसे बुलाओ। हम उससे सुलह कर लेंगे।"

"अब्बा जान ! एक बार तो मैं उसे पंजाब से वायदा कर आपके पास डेढ़ हज़ार मील का सफर करा ले आया था और आपने उससे मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सुलह-सफाई की बात करने की वजाय उसे उसने दीवानखाने में कैद ही कर दिया था। वताइये, अब मैं उसको किस मुँह से कहूँ कि आप अपना वायदा पूरा करेंगे ?"

"अच्छा, ऐसा करो। उसकी माँ को यहाँ बुला लो। हम उसके सामने हिदायत से सुलह कर लेंगे।"

"हाँ, यह हो सकता है। मगर अब्बाजान, अगर इस वार भी आपने अपना कौल पूरा न किया तो वहुत बुरा होगा।"

"नहीं। मैं अब मान जाऊँगा।"

"अच्छा, आज मैं रात को हुक्मनामा लिखकर आपके दस्तखत और मोहर के लिये भेज दूंगा।"

"और हम उस हुक्म को आगरा भेज देंगे। और देखो, हम यहाँ से जल्दी ही वापस चल देंगे।"

"ठीक है। मेरे लिये भी हुक्म हो जाये कि मैं आगरा चलूंगा।"

"और यहाँ कौन रहेगा ?"

"यहाँ हुकूमत के लिये रह ही क्या गया है ?" सूखी वीरान ज़मीन है। यहाँ जो भी रहेगा, भूखों मरेगा।"

"अच्छी बात। तुम्हारे लिये भी हुक्म सादर कर दूँगा।"

इस प्रकार बिना आतिथेय के अतिथि-सत्कार की बातें विचारता हुआ शाह आज़म अपने डेरे पर पहुँचा और वहाँ वैठ उसने वेगम महताब को अहमद नगर लाने का हुक्मनामा लिखकर अपने एक विश्वस्त सिपाही को तैयार किया कि वह उस हुक्म-नामे पर शहंशाह की मोहर लगवा कर आगरा चला जाये और वहाँ से एक शाही खातून को मुनासिव पर्दे का इन्तज़ाम कर यहाँ ले आये।

सिपाही हुक्मनामा लेकर शहंशाह के सामने जा उपस्थित हुआ। शहंशाह ने आगरा के किलेदार और शाही महल के खानखाना के नाम हुक्म पढ़ा, उसे लपेट अपनी सन्दूकची में रख लिया। सिपाही ने शहज़ादा साहब के हुक्म की बात बतायी। उसने कहा, "जहाँपनाह ! शहज़ादा साहब ने

—२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे हुक्म दिया है कि मैं यह हुक्म लेकर आगरा जाऊँ और इसकी तामील करा जल्द-अज़-जल्द लौट आऊँ।"

"ठीक है। हम इसके साथ एक तो अपनी ज़ाती चिट्ठी लिखना चाहते हैं और दूसरे हम एक ऐसे शख्स को इस काम पर भेजना चाहते हैं जो उस खातून का जाना-बूझा हो।"

अगले दिन आज़म ने जब आगरा भेजे जाने वाले हुक्मनामे की बात चलायी तो शहंशाह ने मुस्कराते हुए कह दिया, "हमने वह हुक्मनामा और उसके साथ अपनी तरफ से महताब के नाम एक चिट्ठी लिखकर अपने एक सिपाही के हाथ भेज दी है।"

शहंशाह ने बात बदल दी और कहा, "देखो आज़म ! अब हमने आगरा लौट जाने का पक्का इरादा कर लिया है। हमने गोलकुण्डा और बीजापुर को एक सूबा बना शाह आलम को उसका सूबेदार मुकर्रिर कर दिया है। इस मराठों के वापस किये इलाके को हम अपने किसी काबिल सिपहसालार के मातहत करना चाहते हैं। जब तक किसी को यहाँ पर मुकर्रिर नहीं किया जाता, तब तक हम यहाँ का इन्तज़ाम अपने हाथ में रखना चाहते हैं। इस पर भी यहाँ से जाने के पहले किसी की तकर्ररी इस जगह पर कर देंगे।

"तुम तो इस बरबाद और सूखे इलाके में रहना नहीं चाहते। इसलिये तुमको हम गुजरात का सूबेदार मुकर्रिर करते हैं। हम समझते हैं कि तुम आज ही गुजरात को कूच की तैयारी कर दो।"

आज़म अपनी गुजरात में तकर्ररी से खुश नहीं था। मगर शाही फरमान मानने से इन्कार अथवा किसी प्रकार की हील-हुज्जत करना तो सम्भव न समझ उसने एक बात बना दी। उसने कहा, "जहाँपनाह ! अगर अम्मी महताब बेगम के आने तक मुझे यहाँ रहने की इजाज़त दी जाये तो मैं हिदायत को अपने माफिक करने की कामयाब कोशिश कर सकता था।"

"वह हम तुमसे ज़्यादा खूबी के साथ कर सकेंगे। तुम उन माँ-बेटे की नब्ज़ को नहीं पहचानते। हम जानते हैं और एक ही मुलाकात में सब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ठीक हो जायेगा।"

"मेरी एक तजवीज़ है कि हिदायत को मराठावाड़ का हाकिम मुकर्रिर कर दिया जाये। वह यदि चाहे तो अपने राजाराम को भी एक-दो किलों का सरदार मुकर्रिर कर दे।"

"यह तजवीज़ काबिले गौर है। महताब के आने पर और हिदायत से उसके सामने बातचीत करने से ही किसी नतीजे पर पहुँचा जा सकता है।"

आज़म निरुत्तर चुप रह गया और उसी दिन उसको गुजरात चले जाने का लिखित आज्ञा-पत्र मिल गया।

शाह आज़म समझ रहा था कि शहंशाह की मृत्यु अति समीप है। इस कारण वह अहमद नगर से दूर नहीं जाना चाहता था। साथ ही वह शहंशाह के हुक्म की अदूली करना नहीं चाहता था। इस कारण उसने दो-दो, तीन-तीन मील से अधिक यात्रा नहीं की।

अहमद नगर से चलते समय ही उसे यह स्फूर्ति हुई कि महताब बेगम को नहीं बुलाया गया। वह अहमद नगर से अभी दो मील के अन्तर पर पहला पड़ाव डालकर पड़ा था कि उसे विचार आया कि जैसे शहंशाह ने उससे दगा किया है, वैसे वह भी शहंशाह से दगा क्यों न करे? वह समझ रहा था कि इस नाज़ुक समय में हरिहर उसके पास होता तो अवश्य लाभप्रद सिद्ध होता। अतः उसने एक और पत्र लिखा और उस पर शहंशाह की ओर से एक पत्र आगरा के किलेदार को और महल के खानखाना को लिखा कि हमारा आखरी वक्त आ गया मालूम होता है। हमने महताब बेगम का एक आखरी कर्ज अदा करना है। इसलिये उसे तुरन्त एक बापर्दा सवारी का इन्तज़ाम करके भेज दो।

एक नकली शाही मोहर बना पत्र पर लगा हुक्मनामा एक तेज़ घुड़सवार के द्वारा आगरा भेज दिया गया और उसे यह कह दिया कि वह बीस दिन जाने में और बीस दिन आने के लिये लगाये।

शाह आज़म का एक अन्य मोहतबिर राजपूत सिपाही हरिहर को ढूंढ़ने चल पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदाचित् हरिहर न मिलता यदि वह और कुछ अन्य मराठा सरदार अहमद नगर पर डाका डाल शहंशाह को ही उड़ा ले जाने में लीन न होते। जब यह सिपाही हरिहर को ढूँढ़ने पश्चिम की ओर जा रहा था कि उसे अहमद नगर से पाँच मील के अन्तर पर एक बहुत बड़ी घुड़सवार सेना अहमद नगर की ओर जाती मिली। लगभग चार हज़ार सिपाही होंगे। ये अहमद नगर की बाहरी चौकी पर रोक दिये गए और एक बहुत तेज़ झड़प हो गयी।

मुगल सेना ने बहुत डटकर मुकाबला किया और दोनों ओर से हताहतों की संख्या बहुत बढ़ गयी तो मराठे लौट पड़े।

इस समय उस सिपाही ने एक मराठा सरदार से कह दिया, "सरदार, हरिहरनाथ के दर्शन करा दो।"

हरिहर का नाम सुन मराठा सिपाही ने पूछा, "क्या करेंगे दर्शन करके ?"

"इस बहादुर आदमी की कदम-बोसी करूँगा।"

"तो करो। देखो सरपट घोड़ा दौड़ाते हुए वह जा रहा है।"

उस सिपाही ने भी साथ ही घोड़ा दौड़ा दिया। इस राजपूत सिपाही को अपने साथ आते देख हरिहर ने तलवार निकाल ली और घोड़े की गति हल्की कर दी। नंगी तलवार उसका काम तमाम करने के लिये निकली देख राजपूत ने भी अपनी तलवार निकाल ली और साथ ही कहा, "मैं दुश्मन नहीं हूँ।"

हरिहर ने घोड़े को और हल्का किया और पूछ लिया, "दुश्मन नहीं तो क्या चाहते हो ?"

"बेगम महताब का पैगाम लेकर आया हूँ।"

हरिहर ने घोड़े को रोक लिया और जब राजपूत भी ठहर गया तो पूछने लगा, "तुम कौन हो ?"

"हुज़ूर ! मुझे शाह आज़म ने भेजा है। महताब बेगम की बाबत एक पैगाम देने के लिये।"

"क्या पैगाम है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेगम शाही हुक्म से आज से ३० दिन बाद अहमद नगर पहुँचने वाली है।"

"तो फिर ?"

"हुज़ूर, यह कि शाह आज़म आपकी हर तरह से मदद करेंगे।"

"अच्छी बात है। उसी तारीख को मैं शहंशाह के सामने हाज़िर हो माँ को आज़ाद किये जाने की माँग करूँगा।"

राजपूत ने सलाम की और चल दिया। हरिहरनाथ विचार करने लगा कि यह उसको पकड़कर कैद करने के लिये जाल भी हो सकता है। इस समाचार पर वह विचार कर रहा था कि शहंशाह को उसकी इस धोखा-धड़ी का मज़ा चखाना चाहिये। परन्तु साथ ही वह यह विचार करता था कि यह सम्भव है कि शहंशाह अपने आखिरी वक्त में इस गुनाह से मुक्त होना चाहता हो। इस प्रकार द्विविधा में वह पुनः दक्षिण को चल पड़ा।

वह राजपूत सिपाही शाह आज़म के खेमे में पहुँचा और उसने हरिहर से हुई बात बता दी। इसको सुन शाह आज़म समझा कि कहीं हरिहर अपनी माँ को मिलने शहंशाह के शिविर में पहुँच गया तो निस्सन्देह पकड़ कर मार डाला जायेगा। इससे उसे बहुत चिन्ता लग गयी।

वह अहमद नगर से पन्द्रह मील के अन्तर पर पहुँच पक्का डेरा डाल वहाँ ठहर गया। वह नित्य दिन में चार जासूस भेजता था जो शहंशाह का स्वास्थ्य-समाचार लाते थे।

ठीक उस दिन जिस दिन शहंशाह के जाली हुक्म के मुताबिक महताब को अहमदनगर पहुँचना था, वह उठा और घोड़ा ले अकेला ही अहमदनगर को चल पड़ा।

मध्याह्न के समय एकाएक बिना इत्तला के शहंशाह के निजी दीवानखाने में जा पहुँचा। आजकल शहंशाह का पलंग वहाँ ही लगा दिया गया था और मिलने वाले लोग वहीं आते थे।

वह दीवानखाने में पहुँचा तो उसे वहाँ बहुत हलचल दिखायी थी। शाह आज़म को आया देख सब लोग जो शहंशाह के पलंग के पास खड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे, एक ओर हट गये तो शहंशाह ने आज़म को खड़ा देख पूछ लिया, "तुम कहाँ घूम रहे हो ?"

"अब्वा जान ! मैं साठ मील से घोड़ा दौड़ाता हुआ रात बारह बजे का चला हुआ यहाँ पहुँचा हूँ ।

"वहाँ तो यह अफवाह फैल रही थी कि हुज़ूर के दुश्मनों की हालत अलील है । इसलिये कदम-बोसी करने चला आया हूँ ।"

"हाँ, हाल तो ठीक नहीं । मगर यहाँ एक बुझारत दरपेश है ।"

"क्या अब्बा जान ?"

"फिरोज ! बताओ क्या बात है ।"

फिरोज आगरे के किलेदार का आदमी था । उसने कहा, "मैं जहाँपनाह के पास महल की एक बेगम को आगरा के किलेदार के हुक्म से ले आ रहा था । हम तीन-तीन, चार-चार मंज़िलें एक-एक दिन में तय करते हुए चले आ रहे थे कि अहमदनगर से पाँच मील के फासले पर पचास मराठों ने छापा मारा । हमारे दस आदमियों में से छः काम आये और बेगम साहिबा को लेकर भाग गये हैं ।"

"कौन बेगम थी फिरोज ?" शाह आजम ने पूछ लिया ।

फिरोज ने सीधा उत्तर देने की अपेक्षा स्पष्टीकरण देते हुए कहा, "हुज़ूर ! खानखाना ने एक चिट्ठी में सब हकीकत लिखकर साथ दी थी । वह चिट्ठी मैंने जहाँपनाह की खिदमत में हाज़िर की है ।"

शहंशाह के काँपते हाथों ने अपने पास से खानखाना की चिट्ठी निकाल शाह आज़म को दे दी ।

शाह आज़म ने पढ़ा । उसमें लिखा था, 'जहाँपनाह शहंशाह-ए-मुगलिया सल्तनत के शाही फरमान नम्बर······तारीख के मुताबिक महल की महताब बेगम को घोड़ा-पालकी में भेज रहा हूँ । उम्मीद करता हूँ कि यह वक्त पर जहाँपनाह की खिदमत में पहुँच जायेगी ।'

"अब्बा जान ! आपने उसे बुलाया था तो मेरे आदमियों के हाथ बुलाते । मैं उसकी हिफाज़त का पूरा इन्तज़ाम कर देता ।"

शहंशाह गम्भीर भाव में विचार करता हुआ आज़म का मुख देखता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गया। एकाएक उसने सब नौकर-चाकरों को कमरे से निकल जाने के लिये कह दिया।

जब सब कमरे के बाहर निकल गये तब शहंशाह ने कहा, "बताओ बरखुरदार! कहाँ छिपा रखा है इस बेगम को?"

"अब्बा जान! मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि वह मेरे पास नहीं है। भला मुझे कैसे पता चल सकता था कि आपके आदमी उसे कब ला रहे हैं?"

"मैं यह जानता हूँ।" शहंशाह ने कुछ उत्तेजित होकर कहा, "कि मैंने बेगम को नहीं बुलाया था। वह आयी कैसे? किसने ज़ाली हुक्म बनाकर यहाँ से भेजा था।"

"तो अब्बा जान! मुझे झूठ ही कह रहे थे कि आपने उसे बुलाने के लिये अपने मोहतबिर आदमी भेजे हैं?"

शहंशाह मुस्कराया और बोला, "वह झूठ था। मगर बेगम आगरे से बुलायी गयी और यहाँ आयी और फिर गायब हो गयी।"

"पर अब्बा जान! क्या यह सब अब भी झूठ तो नहीं?"

"मैंने तुमसे कभी झूठ बोला है?"

आज़म ने हँसते हुए कहा, "अब्बाजान! अभी तो आप कह रहे थे कि आपने मेरे सामने झूठ बोला था कि अम्मी महताब को बुलाने आदमी गये हैं।"

शहंशाह खामोश हो एक सकून की हालत में पलंग पर लेटा रह गया। आज़म बहुत देर तक शहंशाह के कुछ कहने की प्रतीक्षा करता रहा। जब वे कुछ नहीं बोले तो कहने लगा, "हुक्म हो तो महताब बेगम को ढूंढूं?"

"हाँ।" शहंशाह भड़क उठा, "उसे वहाँ से ले आओ जहाँ उसे छिपा कर रखा है। उसे देखे बिना मेरी रूह इस कालिब से निकलेगी नहीं।"

"अब्बा जान! मैंने उसे छिपाकर नहीं रखा हुआ। मैं उसकी बाबत कुछ नहीं जानता। इस पर भी मैं कोशिश कर सकता हूँ कि उसे ढूंढ़ निकालूं। मगर मुझे एक वायदा करना होगा कि उसे आज़ाद कर दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगा ।"

"हाँ । मगर उसको धोखे से वहाँ ले जाने वाले को मौत की सज़ा होगी ।"

"ठीक है । पहले उसको ढूंढने तो दीजिये ।"

शाह आज़म स्वयं परेशान था कि महताब के आश्रय वह हरिहरनाथ को अपने पक्ष में करना चाहता था, परन्तु यहाँ तो चोर को मोर पड़ गये थे ।

वह गम्भीर विचार में महल से निकला और धीरे-धीरे अपने शिविर की ओर चल पड़ा था । शिविर अहमदनगर से पन्द्रह मील के अन्तर पर था ।

वह अभी नगर की दीवार से बाहर निकला ही था कि उसे पाँच मराठा सरदार घोड़े पर सवार सड़क के किनारे खड़े दिखायी दिये । आज़म जब समीप पहुँचा तो उनमें से एक को पहचान गया । वह हरिहर ही था ।

आजम ने घोड़े की लगाम खींच ली थी और प्रश्न-भरी दृष्टि से हरिहरनाथ की ओर देखने लगा था । वह भय करने लगा था कि कहीं उसे ही पकड़ कर ले जाने के लिये वे लोग खड़े न हों ।

हरिहर शाह आजम के मुख पर घबराहट देख मुस्कराकर बोला, "भाई जान ! सुनाओ, खैर-खैरियत तो है ? किधर जा रहे हैं ?"

"खैर-खैरियत ? नहीं । ज़रा अपने साथियों से अलग होकर सुनो तो बताता हूँ ।"

"हाँ ।" वह अपने साथियों को छोड़ पृथक् हो गया । शहज़ादा तो अकेला था । वह एक सामान्य सिपाही के पहरावे में था और समझ रहा था कि उसे कोई पहचान नहीं सकेगा । हरिहर तलवार के मुट्ठे पर हाथ रखे हुए अपने साथियों से पृथक् हो चल पड़ा । शाह आज़म समझ नहीं सका कि यदि हरिहर ने ही अपनी माँ को छुड़ाया है तो फिर वह यहाँ किसलिये घूम रहा है ? और यदि इसने नहीं छुड़ाया तो यह क्या कहना चाहता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब दोनों साथियों से इतनी दूर चले गये कि कोई सुन न सके तो शाह आज़म ने कहा, "हिदायत ! मेरा पैग़ाम पहुँचा था ?"

"अपनी अम्मीजी के बारे में ?"

"हाँ।"

"मिल गया था। मगर······।"

"मैंने जाली चिट्ठी लिखकर उसे बुलाया था। वह आज यहाँ पहुँचने वाली थीं और मैं उसे आज़ाद कराने की कोशिश करने आया था, मगर उसे मराठों ने रास्ते में ही लापता कर दिया है। उसको लाने वाले सिपाही यहाँ खाली हाथ पहुँचे हैं।

"मुझे डर है कि मराठों ने उसे हीरे, मोतियों से लदी कोई शाही खातून समझ लूटने के विचार से पकड़ लिया है।"

"पकड़ लिया है ? भाई जान, उसकी हिफाज़त का इन्तज़ाम नहीं था क्या ?"

"साथ में कुल पन्द्रह सिपाही थे।"

"और वह मराठों की सूरत देखते ही भाग खड़े हुए ?"

शाह आज़म इसका मतलब समझने के लिये हरिहरनाथ का मुख देखने लगा। हरिहर कुछ देर तक मौन खड़ा रहा और फिर बोला, "भाईजान ! मैं आपको अपने शिविर की तरफ लौट जाने से मना करने खड़ा हूँ।"

"किसलिये ?"

"शहंशाह फौत हो गये हैं और वह हिन्दुस्तान का तख्त शाह आलम के हाथ में दिये जा रहे मालूम होते हैं।"

"मगर मैं तो अभी-अभी वहीं से ही आ रहा हूँ। मुझे हुक्म हुआ है कि अम्मी महताब को ढूँढकर ही लौटूँ।"

"भाई जान ! अम्मी की फिक्र छोड़ अपने तख्तो-ताज की फिक्र करो। मैं लौट रहा था कि मुझे मेरे मन ने बताया कि शहंशाह का दम निकल रहा है। इसलिये मैं जाता-जाता रुक गया और शाही शिविर में लाल दीवार के भीतर कोहराम मचा सुन आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह आज़म यह तो जानता था कि उसके दोनों भाई वहाँ नहीं हैं और अगर यह बात ठीक है तो उसे कुछ करना चाहिये। इस पर भी वह कुछ समझ नहीं सका कि क्या करे? वह वहाँ अकेला था और समझ नहीं पा रहा था कि शाही शिविर में कौन उसकी सहायता करेगा और कौन विरोध?

उसे परेशान और अनिश्चित-मन खड़ा देख हरिहरनाथ ने कहा, "अगर मेरी राय मानो तो कुछ कहूँ?"

"हाँ, बताओ हिदायत! तुम्हारी इस ख़बर से तो मैं समझ नहीं पा रहा कि अब क्या करूँ?"

"देखो, भाई जान! मेरी राय मानो तो अब आपको शहंशाह के ताबूत को कंधा देने के लिये अहमदनगर चला जाना चाहिये। और अगर हिन्दुस्तान पर हुकूमत करना चाहते हैं तो मुझे अपनी फौज का सालारे-अज़ीम बना दो और मैं कह सकता हूँ कि क्या करो।"

"क्या करूँ? तुम तो आगरा में मराठा सल्तनत बना लोगे और मुझे किसी किले में कैद कर दोगे। यही चाहते हो न?"

"नहीं, भाई जान! अभी वह वक्त नहीं आया। साथ ही मराठों को आपस में लड़ते-झगड़ते देख मुझे यकीन हो गया है कि ये इतनी बड़ी सल्तनत पर हुकूमत के लायक अभी नहीं हुए।

"देखो, मैं आपके अहसान में दबा हुआ हूँ। आपने माँ को छुड़ाने में मेरी मदद की है। अगरचे यह बात आज से बहुत पहले होनी चाहिये थी; इस पर भी मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे उसे जिन्दा मिलने का मौका दिया है।

"इसी का बदला चुका रहा हूँ।" मैं चाहता हूँ कि आप दिल्ली के तख्त पर रौनक अफरोज़ हों।

"आप तो अहमदनगर में अपने साथियों को लेकर पहुँच जायें और मैं आपकी बकाया पूरी फौज को लेकर आगरा को चल पड़ता हूँ। आप शाही ताबूत को औरंगाबाद भेजकर मुझे आ मिलिये और मैं देखूँगा कि आप एक बार तो हिन्दुस्तान के शहंशाह मान लिये जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह आज़म विचार कर रहा था कि हरिहर के मस्तिष्क में सदा ठीक योजना ठीक समय पर आती है। इससे वह मान गया।

: ६ :

हरिहर को जब आज़म का यह सन्देश मिला कि उसकी माँ आगरे से बुलायी जा रही है तो वह इस समाचार पर विश्वास नहीं कर सका। वह अपने सिपाहियों के साथ दक्षिण को चल पड़ा। अगले पड़ाव पर पहुँच वह रात-भर विचार करता रहा कि क्या यह सत्य है कि उसकी माँ को शहंशाह ने आगरा से वहाँ बुलाया है? यदि यह सत्य है तो यह किसलिये है? क्या वह उसे मरवा डालना चाहता है? अथवा क्या वह उसे अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के लिये उसे मुक्त कर देना चाहता है? आज़म ने उसे मौखिक पैगाम किसलिये भेजा है? क्या वह उसे पकड़ना चाहता है? यह भी सम्भव है कि यह राजपूत सिपाही शहंशाह का भेजा हुआ हो और यह षड्यन्त्र उसे पकड़ने के लिये किया हो?

इन सबसे प्रबल विचार यह था कि कुछ भी हो, इस समाचार की परीक्षा करनी चाहिये और हो सके तो माँ को शहंशाह के सामने हाज़िर होने से पहले ही छुड़ाने का यत्न करना चाहिये।

इस बात का विचार आते ही हरिहर ने अपने साथी सिपाहियों के दस्ते को अपने शिविर की ओर भेज दिया और स्वयं केवल पचास सिपाहियों के साथ अहमदनगर की ओर लौट पड़ा। उसने अपने साथियों को भिन्न-भिन्न स्थानों पर ठहरने को कहा और स्वयं एक सराय में ठहर उस दिन की प्रतीक्षा करने लगा जिस दिन उसकी माँ के आने की बात थी।

वह और उसके साथी मुगलों के वेश में थे और नित्य परस्पर सम्पर्क रखे हुए थे। उन दिनों अहमदनगर में बहुत मराठे कई वेशों में आते-जाते थे और जब भी उनके नेता का आदेश होता तो एकत्रित हो जिस किसी को भी लूट लेते थे। मुगल सल्तनत में शान्ति-व्यवस्था अत्यन्त बिगड़ चुकी थी।

नियत दिन बहुत प्रातःकाल हरिहर ने अपने चालीस-पचास साथियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को एकत्रित किया और उत्तर से अहमदनगर को आने वाली सड़क पर पाँच मील के अन्तर पर जा झाड़ियों में छुप कर बैठ गया। लगभग आठ बजे दिन के एक पर्दादार इक्के को घेरे हुए दस-बारह तुर्क आते दिखायी दिये। हरिहर समझ गया कि यही वह काफिला है जिसके विषय में आज़म ने अथवा शहंशाह ने पैगाम भेजा था।

इक्के के समीप आते ही मराठे छिपे स्थान से निकल आये और सीधे ही तुर्कों पर झपट पड़े। दोनों ओर से तलवारें निकल आयीं, परन्तु ज्यों ही मराठों ने 'हरिहर हरि' का नारा लगाया कि तुर्क भयभीत हो भागने लगे।

उन दिनों अहमदनगर के क्षेत्र में हरिहर का नाम एक भय का रूप धारण कर चुका था। कई प्रकार की किंवदन्तियाँ चल रही थीं और यह तुर्कों के घर-घर में चर्चा का विषय बना हुआ था।

'हरिहर हरि' का घोष सुनते ही तुर्क इक्के को छोड़ भाग गए। तो भी दो उस मुठभेड़ में मारे गये।

हरिहर ने इक्के के पास पहुँच पूछ लिया, "आप कौन हैं ? कहाँ से आ रही हैं और किधर जा रही हैं ?"

"मैं आगरा के शाही महल से एक निस्सहाय औरत शाही हुक्म से यहाँ लायी जा रही हूँ।"

"आप महताब बेगम हैं क्या ?"

"हाँ, तुम कौन हो ?"

"आपका ही अपना हूँ।" फिर उसने अपने एक विश्वस्त व्यक्ति से कहा, "गोविन्द राय ! इक्के पर बैठ जाओ और चलो। यहाँ अधिक देर तक ठहरना उचित नहीं।"

गोविन्द राय लपक कर इक्के पर सवार हो गया। इक्के का तुर्क कोचवान तो तुर्क सिपाहियों के साथ ही भाग गया था। इक्का मराठा सिपाहियों से घिरा हुआ चल पड़ा। जल्दी-जल्दी सब दो मील पश्चिम की ओर जा एक निर्जन ग्राम की बगिया में डेरा डाल विचार करने लगे कि अब क्या किया जाये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ इक्का खड़ा होने पर महताव अपनी बाँदी राधा के साथ पर्दे से बाहर निकल आयी और उसे बाहर निकलते ही हरिहर आगे आया और चरण-स्पर्श कर हाथ जोड़ बोला, "माताजी ! मैं हरिहर हूँ। परन्तु आप माँ हैं क्या ? मेरे मानस-पटल पर तो कुछ दूसरा ही रूप अंकित है।"

"बेटा वही हूँ। अपने पाप-कर्मों के फलस्वरूप ही इस रूप में रह गयी हूँ।"

"परन्तु आपका वहाँ से निकलना हुआ कैसे ?"

"आज से बीस दिन पूर्व यह राधा मेरे पास आकर बोली, 'अम्मी ! आपको खानखाना बाहर बुलाता है। उसे भीतर जाने की इजाज़त नहीं और वह कुछ खुद कहना चाहता है।'

"मैंने पर्दा किया और कायदे के मुताबिक महल के दीवानखाने की जाली के पीछे आ खड़ी हुई। खानखाना जिसे मैंने पहली बार देखा था, कहने लगा, 'अहमदनगर से हुक्म आया है कि महताब बेगम को फौरन अहमदनगर को रवाना कर दिया जाये। आप अपने पहनने के कपड़ों को एक गठरी में बाँध पर्दा कर बाहर आ जाइये।'

'मैं अपनी बाँदी रहमत को साथ ले चलूँगी।'

'वैसे तो हमने एक औरत को आपके साथ भेजने के लिये तैयार किया है, मगर आपकी ख्वाहिश पूरी की जायेगी। आप उसे ही साथ ले जा सकती हैं।'

"बस पाँच मिनट में मैं चलने को तैयार हो गयी। मेरे कुछ पहनने के कपड़े हैं। यह राधा है और एक बण्डल कुछ मेरे लिखे कागज़ों का कपड़ों में ही लपेटा रखा है।"

"ठीक है। मैंने यह तय किया है कि आपको इन सिपाहियों के साथ बम्बई को रवाना कर दूँ। वहाँ मेरी पत्नी और बच्चे हैं। मामा और मामियाँ भी वहीं हैं।"

"और माताजी ?"

"नानाजी का देहान्त तो हरिद्वार में ही हो गया था। नानीजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्दपुर में स्वर्गवासी हो गयी थीं।"

"और तुम ?"

"मैं अब अहमदनगर जा रहा हूँ। देखना चाहता हूँ कि आपको क़ैद से छुड़ा लिये जाने की दरबार में क्या प्रतिक्रिया होती है और कहीं आपका पीछा करने के लिये कोई भेजा जाता है तो उसको उलटे मार्ग पर डाल दूँ।"

नीलमणि कुछ न समझती हुई चुप रही। इस पर हरिहर ने अपने साथियों से कहा, "देखो, ये मेरी माँ है। इनको बहुत प्रतीक्षा करने पर आज शाही क़ैद से छुड़ाने में सफल हुआ हूँ। तुम लोग इनको लेकर चलो और मैं आपको जल्दी ही मिलूँगा। यदि किसी प्रकार का भय हुआ तो सहायता लेकर आऊँगा।"

मराठे इक्के को लेकर बम्बई की ओर चल पड़े।

हरिहर लौट पड़ा। उसका विचार था कि ज्यों ही यह समाचार शहंशाह को मिलेगा कि महताब को कोई भगाकर ले गया है तो उसे पकड़ने के लिये भारी सेना चारों ओर भेज दी जायेगी। यदि कोई सैनिक दस्ता बम्बई की ओर जाता मिले तो उसको किसी-न-किसी प्रकार मिथ्या मार्ग पर डालकर मराठा शिविर में ले जाकर उनकी सफ़ाई करा दे।

वह मध्याह्न के समय शाही शिविर में पहुँचा। लाल कनात के भीतर तो शाही परवाने के बिना जाने नहीं दिया जाता था, मगर उस कनात के बाहर तो सिपाही आते-जाते थे। हरिहर मुगल पहरावे में था। इस कारण वह लाल कनात के द्वार पर जा पहुँचा। वह देख रहा था कि कनात के भीतर शाही ऐहलकार कुछ परेशान से आ-जा रहे हैं।

हरिहर का विचार था कि शहंशाह की हालत नाज़ुक है। वह अभी वहाँ खड़ा इस पर विचार ही कर रहा था कि शाह आज़म आता दिखायी दिया। वह उसकी ओर पीठ करके खड़ा हो गया। शाह आज़म आया और भीतर चला गया।

दस-पन्द्रह मिनट में ही शाह आज़म मुख लटकाये हुए बाहर निकला और घोड़े पर सवार हो धीरे-धीरे शहर की ओर चला गया। शाह आज़म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाहर निकलने के कुछ ही बाद लाल कनात के भीतर से औरतों के रोने का शब्द सुनायी दिया। हरिहर समझ गया कि शहंशाह की मृत्यु हो गयी है।

हरिहर जानता था कि शाह आजम शहंशाह बनने का बहुत इच्छुक है। अतः यदि वह इस नाज़ुक स्थिति में चूक गया तो सल्तनत हाथ से छूट जायेगी। वह शाह आज़म के पीछे-पीछे चल पड़ा।

मार्ग में चलते हुए उसे कुछ मराठा घुड़सवार मिल गये जो उसे पहचानते थे उसने उनको भी साथ ले लिया। उस सराय में जहाँ वह ठहरा हुआ था, उसका घोड़ा बँधा था। वहाँ से उसने घोड़ा लिया और नगर-द्वार के बाहर जा शाह आज़म के विषय में जानकारी प्राप्त करने का यत्न करने लगा।

आज़म महल से निकला और अनिश्चित-मन कुछ देर तक नगर में भटकता रहा। फिर उसने अपने शिविर का मार्ग पकड़ा। नगर-द्वार से वह कुछ ही दूर गया था कि उसे ये लोग सन्देहात्मक ढंग से खड़े मिले। वह घोड़ा भगा वहाँ से निकल जाना चाहता था, परन्तु हरिहर को पहचान खड़ा हो गया।

हरिहर से बातचीत हुई तो शाह आज़म ने कहा, "यहाँ पन्द्रह मील के अन्तर पर टीकड़ी गाँव के बाहर मेरी फौज़ खड़ी है। मैं मालवा को जा रहा था। उस फौज का सालारे-जंग मेरा लड़का बिदर बख्त है। उसे मिल कर 'सोने के हिरण का खूफिया' लफ्ज़ कहोगे तो वह तुम्हारा कहा ऐसे ही मानेगा जैसे मैं हूँ। तुम उसे यहाँ का समाचार देना और कहना कि पूरी फौज को लेकर लम्बी मंज़िल तय करता हुआ आगरे की ओर कूच कर दे। मैं उसे रास्ते में मिल जाऊँगा। और देखो हिदायत, हो सके तो तुम मेरे साथ आगरा चलना।"

"भाई जान! मैं एक बात करने का खयाल कर रहा हूँ। वह यह कि आपका भाई आलम भी आगरा की ओर भागेगा। मैं उसे रोकूँगा और उसे आपसे पहले आगरा पहुँचने नहीं दूँगा।"

वास्तविकता यह थी कि शाह आज़म इस समय साठ वर्ष की आयु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का हो गया था। उसका लड़का विदर बख्त भी इस समय पैंतीस वर्ष की आयु का था और वह उससे कम महत्वाकांक्षी नहीं था। आज़म को अपने लड़के पर सन्देह था कि कहीं वही अपने को शहंशाह-ए-हिन्द घोषित न कर दे। इससे यह हुक्म देने के साथ ही वह समझा कि विदर बख्त को अकेले आगरा नहीं जाने देना चाहिये।

अत: जब हरिहर टीकड़ी गाँव की ओर चल पड़ा और वह अहमद नगर की ओर तो उसने मृत शहंशाह के शिविर में पहुँचते ही अपने लड़के को एक पत्र लिखा, 'मैंने अपना खुफिया निशान देकर हिदायत उल्ला को तुम्हारे पास भेजा है। वह जो कुछ कहे वह नहीं करना। तुम यहाँ ही टिके रहो। मैं इसी जगह पर तुमको मिलूँगा। मेरी ताजपोशी का इन्तज़ाम कर रखना। मैं आ रहा हूँ।'

शाह आज़म ने स्वर्गीय शहंशाह के जनाजे में सम्मिलित होने के लिये तीन दिन व्यर्थ में व्यतीत कर दिये और उसके बाद वह अपनी फौज में पहुँचा और वहाँ भी उसने ताजपोशी की तैयारी और रस्म के लिये एक सप्ताह व्यर्थ गँवा दिया।

हरिहर ने तो शाह आज़म को अहमदनगर के वाहर मिलने के दिन ही विदर वख्त को उसका पैगाम दे दिया था। उसे यह सन्देह हुआ था कि अपनी फौज की सालारी शाह विदर वख्त उसे नहीं दे सका। उसे सन्देह था कि कहीं वही आगरा पर अधिकार न जमा ले। उसके मन में इस प्रलोभन के सन्देह-मात्र से भी गुदगुदी तो हुई, परन्तु एक व्यावहारिक बुद्धि रखने वाले व्यक्ति की भाँति वह वर्तमान स्थिति में यह सम्भव नहीं समझता था।

हरिहर जानता था कि इस समय हिन्दू समुदाय में तीन शक्तियाँ देश में उग्र हैं। राजपूत, मराठे और सिक्ख। वह यह भली-भाँति समझता था कि इनमें से कोई भी आगरा पर अधिकार जमा ले तो दूसरी हिन्दू ताकतें उसका विरोध करेंगी और मुगलों की सहायता।

वह विदर बख्त के पास पहुँचा और जव उसने संकेत का शब्द वताकर शहंशाह की मृत्यु का समाचार और उसके वाप का सन्देश दिया तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हुक्म मानने में हिचकिचाहट अनुभव करता प्रतीत हुआ। इससे तो हरिहर के मन में एक बात बैठ गयी। वह यह कि हिन्दू अगर हिन्दुस्तान की हुकूमत सम्भालने के योग्य नहीं तो मुगल भी नाकारा हो चुके हैं। शाहजहाँ से लेकर अब औरंगज़ेब के पोते तक सब-के-सब मित्र और शत्रु की पहचान भूल गये हैं। न तो इनमें अपने और पराये को पहचानने की बुद्धि रही है और न ही इनको प्रजा और राजा के सम्बन्धों का ज्ञान रहा है।

उसनें विदर बख्त को उसके पिता का पैगाम दिया और घोड़े को ऐड़ लगा अपनी माता की सवारी के पीछे-पीछे बम्बई की ओर चल पड़ा।

: ७ :

औरंगज़ेब का बड़ा लड़का शाह महमूद तो कैद में मर चुका था। शहंशाह ने अपने दूसरे लड़के शाह मुअज्ज़म को भी छः वर्ष तक कैद रखा था और अपनी लड़की जहाँनुन्निसा को भी कई वर्ष तक बन्दी बना रखा था। उसने अपने सबसे छोटे लड़के शाह आलम को भी कैद किया था, मगर वह जल्दी ही छोड़ दिया गया था।

औरंगज़ेब की मृत्यु के समय शाह मुअज्ज़म अफगानिस्तान में जमरूद किले में था। उसको तो बाप की बीमारी का समाचार मिलते ही वह जमरूद से आगरा को चल पड़ा था।

शाह आज़म ने अपने लड़के विदर बख्त पर विश्वास न कर उसे आगरे की ओर जाने से रोक दिया था और स्वयं शहंशाह के जनाज़े में सम्मिलित होने के लिये रुक गया। तदनन्तर उसने अपनी ताजपोशी कराने में एक सप्ताह गँवा दिया।

इस समय शाह मुअज्ज़म का लड़का अज़ीमुलशान, जो कोटा में था और अपने बाबा के पास दक्षिण जा रहा था, उसे शहंशाह की मृत्यु का समाचार मिल गया. और वह आगरा को अपने पिता के लिये अधिकार में करने के लिये उस ओर लपका और अपने पिता और चाचा शाह आज़म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पहले वहाँ पहुँच गया और शाही कोष के कई करोड़ रुपये पर अधिकार प्राप्त कर बैठा।

शाह मुअज्ज़म आगरा में शाह आज़म से पहले पहुँच कर अपनी ताजपोशी की रस्म पूरी कर बैठा था। इस प्रकार देश के दो ताजपोश शहंशाह बन गये।

जब तक शाह आज़म आगरा के समीप जजाहू में पहुँचा तो शाह मुअज्ज़म ने अपनी शक्ति बढ़ा ली थी। गुरु गोविन्दसिंह जो चमकौर में पराजित हो चुका था और केवल धर्मगुरु के रूप में मुक्तसर में रहता हुआ जीवन व्यतीत कर रहा था, वह भी शहंशाह औरंगज़ेब से मिलने जा रहा था। गुरुजी अभी राजस्थान में ही थे कि शहंशाह की मृत्यु का समाचार आया। अतः वह भी आगरा की ओर घूम पड़ा।

शाह मुअज्ज़म तब तक आगरा पर अधिकार जमा चुका था और शाह आज़म आगरा की ओर बढ़ रहा था। गुरुजी अपने साथियों को लेकर शाह मुअज्ज़म की सहायता के लिये उपस्थित हो गये और जजाहू के युद्ध में शाह आज़म के पराजित करने में सहायता दी।

जजाहू के युद्ध से पहले शाह मुअज्ज़म ने अपने छोटे भाई शाह आज़म को यह प्रस्ताव भेजा था कि बिना युद्ध के सल्तनत का दो अथवा तीन भागों में बँटवारा हो सकता है; परन्तु शाह आज़म ने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। परिणामस्वरूप युद्ध हुआ और शाह आज़म उस युद्ध में मारा गया।

शाह मुअज्ज़म ने अपना नाम बहादुर शाह रख लिया और शाह आलम को पराजित करने के लिये दक्षिण को चल पड़ा।

हरिहर बम्बई को जाता हुआ विचार कर रहा था कि यह सब क्या हुआ है? महाराष्ट्र में महाराज शिवाजी, पंजाब में सिक्ख गुरुओं और राजस्थान में दुर्गादास राठौर इत्यादि का प्रयास सफल क्यों नहीं हुआ?

एक बात उसे स्पष्ट दिखायी देती थी कि शाह आज़म हिन्दुस्तान जैसे बड़े मुल्क की हुकूमत करने के योग्य नहीं है। औरंगज़ेब में सब प्रकार के दुर्गुण होते हुए भी दो बातें अद्‌भुत थीं। वह सल्तनत के प्रबन्ध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदैव सतर्क और परिश्रमी रहा था। साथ ही सैनिक चालों में भी वह अद्वितीय था। बड़े-बड़े बुद्धिमानों को भी वह चकमा दे जाता था। यदि उसे अपनी चाल और चालाकी में कोई बराबर का आदमी मिला था तो वह शिवाजी था।

इस पर भी मुगल सल्तनत को उलटने के लिये दो बृहद् प्रयास चलाये गए थे। एक महाराष्ट्र में और दूसरा पंजाब में। दोनों ही उस समय असफल सिद्ध हुए थे। महाराष्ट्र में शम्भुजी और कवि कैलाश के अपने वासनामय जीवन और अभिमान एवं स्वार्थमय व्यवहार ने मराठा सल्तनत को प्राय: समाप्त कर दिया था और पंजाब में सिक्खों में सैनिक प्रतिभा न होने के कारण महान् प्रयास मिट्टी में मिल गया।

राजपूतों के मस्तिष्क में तो सम्पूर्ण भारत का चित्र कभी बना ही नहीं। वे स्थानीय भक्ति से प्रेरित हो महान्-से-महान् त्याग में लगे रहे थे।

एक बात में हिन्दू पूर्ण मुसलमानी काल में भूल कर रहे थे। वह यह कि सामाजिक व्यवहार में स्वार्थ को गौण बनाना पड़ता है। कभी अपनी विशेष सूझ-बूझ का भी बलिदान करना पड़ता है।

एक जंगल में पड़ाव डाले हुए हरिहर और उसकी माँ रात-भर के लिये आराम कर रहे थे। हरिहर माँ के समीप बैठा पूछ रहा था, "माँ! गठरी में रखे इन पत्रों में क्या लिखा है?"

"बेटा! यह मेरी जीवन-कथा है। इसमें कुछ अंश छूट गये हैं और कुछ अंश खो गये हैं। उनको किसी स्थान पर बैठकर पूर्ण करूँगी।"

"माँ! इस कथा का निष्कर्ष क्या है?"

नीलमणि ने आँखें मूंद कर कह दिया, "कथा तो बहुत लम्बी है, परन्तु सार तो छोटा-सा ही है। वह यह कि मनुष्य में इन्द्रिय सुख की लालसा इतनी प्रबल होती है कि उसके सब-के-सब शुभ गुण उस लालसा के दबाव में आकर विलीन हो जाते हैं। शुभ गुणों को विजयी बनाने के लिये यह आवश्यक है कि उसके लिये त्याग और तपस्या की भावना उत्पन्न हो। यह तो बाल्यकाल से ही अभ्यास कराया जाये तभी सम्भव है।

"अन्तिम विजय और अन्तिम श्रेय मनुष्य को त्याग और तपस्या से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही प्राप्त होता है।"

हरिहर माँ के जीवन-भर की घटनाओं के निष्कर्ष को ठीक ही समझता था। इस निष्कर्ष को सुन उसे अपने गुरुजी के उपदेश जो उसे पूना में रहते हुए प्राप्त हुए थे, स्मरण हो आये। वह था दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष। आसुरी प्रवृत्तियाँ सुखकारक तो होती हैं, परन्तु कल्याण तो दैवी प्रवृत्तियों से ही प्राप्त होता है।

बम्बई में जब पूर्ण परिवार मिला और भावी कार्यक्रम बनने लगा तो विश्वनाथ का दृढ़ मत था कि उनको बम्बई छोड़ अपने गाँव में जाकर रहना चाहिये।

उस छोटे-से गाँव में जो सुख और कल्याण सम्भव है, वह नगरों में जीवन की दौड़-धूप में प्राप्त नहीं हो सकता।

विश्वनाथ का दृढ़ मत था, "हिन्दू-समाज में किसी ऐसे अवतार की आवश्यकता है जो एक ओर तो वह भगवान् कृष्ण का-सा नीतिमान हो तथा दूसरी ओर श्रीराम का-सा संगठन-कर्ता और शौर्यवान हो।

"अभी समाज में क्षात्र-बल और ब्राह्मण-बल का समन्वय नहीं हो पा रहा। कदाचित् इसलिये कि वास्तविक तेज-मूर्ति ब्राह्मणों का अभाव हो गया है।"

"तो मामाजी!" हरिहर की चंचल आत्मा बोल उठी, "अब इस देश और जाति की कोई आशा नहीं।"

"नहीं हरिहर! मैं ऐसा नहीं समझता। हमारी जाति में एक अद्भुत दिशा-निर्देशक यंत्र विद्यमान है। वह है वेद-ज्ञान। उसको समझने वाला जिस समय भी कोई उत्पन्न हुआ तभी हिन्दू जाति और भारत देश पुनः भूमण्डल में अपना कीर्तिमय स्थान प्राप्त करेगा और उस समय ही मानव-समाज सुख और कल्याण का मार्ग प्राप्त कर सकेगा।

"परन्तु अभी तो खण्डहर ही बोल रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास पर खोजपूर्ण रचनाएं

पुरुषोत्तम नागेश ओक

भारत का द्वितीय संग्राम अर्थात् आज़ाद हिन्द फौज की कहानी

भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें

ताज महल मन्दिर भवन है

भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग - 1

भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग - 2

हास्यास्पद अंग्रेज़ी भाषा

कौन कहता है अकबर महान था?

विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय

ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है

आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है

दिल्ली का लाल किला लाल कोट है

फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है

लखनऊ के इमामवाड़े हिन्दू भवन हैं

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 1

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास -2

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास -3

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास -4

क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखित है ?

क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा उत्कृष्ट किशोरोपयोगी साहित्य

धर्मवीर हकीकत राय	रु 25	श्री राम	रु 25
महाभारत	रु 20	पाण्डवप्रिया पांचाली	रु 30
जगत की रचना	रु 30	श्री कृष्ण	रु 30
हिटलर की कहानी	रु 30	स्वामी विवेकानन्द	रु 30
सदाचार की कथाएं	रु 30	महर्षि दयानन्द	रु 30
बोध कथाएं	रु 30	पौराणिक कथाएं	रु 30
मानवता की कथाएं	रु 30	देवयानी व अन्य कथाएं	रु 30
धरती है बलिदान की	रु 30	हरिसिंह नलवा	रु 30
वीर बन्दा वैरागी	रु 30	रामप्रसाद बिस्मिल	रु 30
महाराणा प्रताप	रु 30	क्रान्तिकारी आज़ाद	रु 30
झांसी की रानी	रु 30	क्रान्तिकारी देशभक्त सिख	रु 30
अमर सेनानी सावरकर	रु 30	क्रा० सुभाष	रु 40
क्रा० भगत सिंह	रु 40	शक्तिपुत्र शिवाजी	रु 40
वीर पूजा	रु 40	देश के अमर सेनानी	रु 40

सावरकर साहित्य

मोपला	रु 30	गोमान्तक	रु 30
हिन्दुत्व	रु 30	हिन्दुत्व के पंच प्राण	रु 30
प्रतिशोध	रु 30		

हिन्दी साहित्य सदन E Mail -indiabooks@rediffmail.com

विक्री केन्द्र: 2,बी डी चैम्बर्स ,10/54 डी बी गुप्ता मार्ग

(समीप प्रह्लाद मार्केट) करोल बाग, न० दिल्ली-110005

(Tele/Fax - 51545969 , 23553624)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की प्रतिनिधि रचनाएं

हिन्दी साहित्य को श्री गुरुदत्त ने अपनी सशक्त लेखनी से **250** के लगभग अनुपम रचनाएं दी हैं। इन रचनाओं में से चुन कर कुछ विशिष्ट रचनाएं दस खण्डों में प्रकाशित की गई हैं। सभी विशुद्ध भारतीय विचारधारा को दृष्टिकोण में रखकर लिखे गए सामाजिक, ऐतिहासिक ,वैज्ञानिक ,राजनैतिक,व पौराणिक उपन्यास हैं — *<u>उनका विवरण इस प्रकार है:-</u>*

1 - मेघवाहन , सागर तरंग , विक्रमादित्य साहसांक	
(तीन ऐतिहासिक उपन्यास)	*150.00*
2 - सहस्त्रवाहू , गगन के पार , अन्तरिक्ष में	
(तीन वैज्ञानिक उपन्यास)	*150.00*
3 - कला, कामना, अनदेखे बन्धन	
(तीन सामाजिक उपन्यास)	*150.00*
4 - एक और अनेक, मानव	
(दो भावनाप्रधान सामाजिक उपन्यास)	*180.00*
5 - परित्राणाय साधूनाम्	
(सम्पूर्ण महाभारत कथा उपन्यास रूप में)	*550.00*
6 - स्वाधीनता के पथ पर , पथिक	
(राजनीतिक श्रृंखला के प्रथम दो उपन्यास)	*200.00*
7 - स्वराज्यदान , दासता के नए रूप	
(राजनीतिक श्रृंखला की दो कड़ियाँ)	*240.00*
8 - देश की हत्या , विश्वासघात	
(राजनीतिक श्रृंखला के अन्तिम उपन्यास)	*220.00*
9 - प्रभातवेला , कुमार सम्भव , उमड़ती घटाएं	
(तीन उपन्यास पौराणिक पृष्ठभूमि पर)	*280.00*
10- गंगा की धारा (मुगल काल पर उपन्यास)	*280.00*
इस सैट (10 खण्ड)का कुल मूल्य	*<u>2400.00</u>*

(Tele/Fax - 51545969 , 23553624) E Mail - indiabooks@rediffmail.com

हिन्दी साहित्य सदन -

2 बी डी चैम्बर्स , 10/54 डी बी गुप्ता मार्ग , (समीप पहलाद मार्केट)न० दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री मुकुन्दन के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर उपन्यास

परित्राणाय साधूनाम् (महाभारत पर आधारित - अवतरण, सम्भवामि युगे युगे (2 भाग) व विनाशाय च दुष्कृताम् (2 भाग) का सम्पूर्ण संयुक्त संस्करण।)

बहती रेता
(भारत के प्रथम गणतन्त्र वैशाली पर आधारित उपन्यास)

Central Library
167897
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

लुढ़कते पत्थर
सागर तरंग
मेघवाहन
महाकाल
भैरवी चक्र
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
उमड़ती घटाएं
(कश्मीर के इतिहास पर आधारित उपन्यास)

खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)
(शाहजहाँ औरंगज़ेब व शिवाजी के संघर्ष पर आधारित उपन्यास)

दिग्विजय
(आदि शंकराचार्य के जीवन काल पर उपन्यास)

081
167897

पत्रलता
(हर्षवर्धन के काल पर आधारित उपन्यास)

गंगा की धारा
(अकबर के जीवन काल पर एक रोचक उपन्यास)

वाम मार्ग
(वाम मार्गीय जीवन शैली पर ऐतिहासिक उपन्यास)

अमृत मन्थन, परम्परा, अग्नि परीक्षा
(राम कथा पर आधारित उपन्यास तीन खण्डों में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GURUKUL KANGRI LIBRARY
Signature Date
Access No.
Class No.
Cat No.
Tag
E.A.
Recd.
Data E.
Check

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143
वर्ग संख्या........ GUR-R आगत संख्या 167897

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

8-12-1894 से 8-4-1989

शिक्षा : एम. एस.सी.

प्रथम उपन्यास ''स्वाधीनता के पथ पर'' से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठिभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना स्व. गुरुदत्त की ही विशेषता थी।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डहर बोल रहे हैं

'मिर्ज़ा, तुमने कहा है कि मिर्ज़ा का लकब लिये आपकी पंद्रह पीढ़ीयाँ गुजर चुकी हैं।'

'जी! तेरह गुजर चुकी हैं। चौदहवीं, पंद्रहवीं और सोलहवीं अभी जीवित हैं। मेरे वालिद शरीफ अभी हैं। मेरी अपनी भी औलाद है। एक लड़का और एक लड़की।'

'इसका मतलब यह हुआ कि इस मुगल खानदान की शुरूआत हुए साढ़े तीन सौ साल से ज्यादा हो गए हैं। तो क्या औरंगजेब का इससे किसी किस्म का ताल्लुक है?'

'औरंगजेब का हमारे खानदान से तो इतना ही ताल्लुक है कि वह हमारी बरबादी में वजह हुआ था। उसने हमारे बुजुर्ग की माँ को बहुत तंग किया था।'

'तो ये सब बातें लिखी हैं इस किताब में?'

'जी, आप स्वयं पढ़ लें ....'

इसी उपन्यास में से –

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005
फोन : 23553624, 23551344 ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar